

प्राप्ति स्थानः—

जैन साहित्य शोध संस्थान

मंत्री कार्यालय

महावीर भवन सवाई मानसिंह हाईवे

जयपुर

प्रथम संस्करण : जनवरी १९६०
मूल्य ४)

मुद्रकः—
अजन्ता प्रिन्टर्स,
जयपुर

प्रकाशकीय

हिन्दी भाषा की प्राचीन रचना 'प्रद्युम्नचरित' को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति सर्व प्रथम हमें ४-५ वर्ष पूर्व जयपुर के बघोचन्दजी के मन्दिर के शास्त्रभण्डार की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् शास्त्रभण्डार कामा (भरतपुर) में भी इस ग्रंथ की एक प्रति मिल गयी। क्षेत्र को प्र० का० कमेटी ने ग्रंथ की उपयोगिता को देखते हुये इसके प्रकाशन का निश्चय कर लिया।

प्रद्युम्न चरित दि० जैन श्र० क्षेत्र धीमहावीरजी की ओर से संचालित जैन साहित्य शोध-संस्थान का आठवां प्रकाशन है। इस पुस्तक के पूर्व क्षेत्र की ओर से राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची के ३ भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वाय सिद्धिसार आदि खोज पूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इन पुस्तकों के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विद्वेषतः जैन साहित्य की कितनी सेवा हो सकी है इसका तो विद्वान एवं रिसर्च स्कालर्स ही अनुमान लगा सकते हैं लेकिन अपभ्रंश एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें जिनका अभी ५-७ वर्षों में ही प्रकाशन हुआ है उनमें जैन विद्वानों द्वारा लिखी हुई पुस्तकों का उल्लेख देखकर तथा हमारे यहां साहित्य शोध-संस्थान के कार्यालय में आने वाले खोज प्रेमी विद्वानों की राहया को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि क्षेत्र की ओर से जो ग्रंथ सूचियां, प्रशस्ति संग्रह एवं अनुपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित लेख आदि प्रकाशित हुये हैं उनसे साहित्यिक जगत् को पर्याप्त लाभ पहुंचा है।

यद्यपि हमारा प्रमुख ध्यान राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूचियां तैयार करवाकर उन्हें प्रकाशित कराने की ओर है लेकिन हम चाहते हैं कि ग्रंथ सूची प्रकाशन के साथ साथ भण्डारों में उपलब्ध होने वाली अज्ञान एवं महत्वपूर्ण सामग्री का भी प्रकाशन होता रहे। अब तक साहित्य शोध संस्थान की ओर से राजस्थान के ७० से भी अधिक ग्रंथ भण्डारों की सूचियां तैयार की जा चुकी हैं तथा उनमें उपलब्ध अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनाओं का या तो परिचय लिया जा चुका है अथवा उनकी पूरी प्रतिलिपियां उतार कर संग्रह कर लिया गया है। वे प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की रचनाएँ हैं। इन भण्डारों में हमें अपभ्रंश एवं हिन्दी की सबसे अधिक सामग्री मिलती है। अपभ्रंश का विशाल

साहित्य जो हमें प्राप्त हुआ है उसका अधिकांश भाग जयपुर, अजमेर एवं नागौर के भण्डारों में उपलब्ध हुआ है। इस प्रकार हिन्दी की १३-१४ वीं शताब्दी तक की प्राचीनतम रचनायें भी हमें इन्हीं भण्डारों में उपलब्ध हुई हैं। संवत् १३५४ में निबद्ध रहूँ कवि कृत जिनदत्त चौपई इनमें उल्लेखनीय रचना है जो अभी १ वर्ष पूर्व ही कासलीवालजी को जयपुर के पाठोदी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई थी।

हम राजस्थान के सभी ग्रंथ भण्डारों की चाहे वह छोटा हो या बड़ा ग्रंथ सूची प्रकाशित कराना चाहते हैं। इमते इन भण्डारों में उपलब्ध विशाल साहित्य तो प्रकाश में आ ही सकेगा किन्तु ये भण्डार भी व्यवस्थित हो जावेंगे तथा उनकी वास्तविक संख्या का पता लग जावेगा। किन्तु हमारे सीमित आर्थिक साधनों को देखते हुये इस कार्य में कितना समय लगेगा यह कहा नहीं जा सकता। फिर भी हम इस कार्य को कम से कम समय में पूर्ण करना चाहते हैं। यदि साहित्यिक यत्न के इस मुख्य कार्य में हमें समाज के विद्वानों एवं दानो सज्जनों का सहयोग मिल जावे तो हम इस ग्रंथ सूची प्रकाशन के सारे कार्य को ५-७ वर्ष में ही समाप्त करना चाहते हैं।

ग्रंथ सूची का चतुर्थ भाग जिसमें करीब ६ हजार हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण रहेगा प्रायः तैयार है तथा उसे शीघ्र ही प्रकाशनार्थ प्रेम में दिया जाने वाला है इसके अतिरिक्त १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई का भी सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और आशा की जाती है उसे भी हम इसी वर्ष पाठकों के हाथों में दे सकेंगे।

ग्रन्त में प्रद्युम्न चरित के सम्पादन एवं प्रकाशन में हमें श्री कस्तूरचन्दजी कासलीवाल एम. ए. शास्त्री एवं पं० अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ आदि जिन २ विद्वानों का सहयोग मिला है मैं उन सभी का आभारी हूँ। राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री चैनमुखदासजी सा० न्यायतीर्थ, अध्यक्ष जैन संस्कृत कालेज का हमें जो ग्रंथ सम्पादन में पूर्णसहयोग मिला है उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। पंडितजी साहब से हमें साहित्य सेवा की सतत प्रेरणा मिलती रहती है। क्षेत्र की ओर से संचालित इस जैन साहित्य शोध संस्थान की स्थापना भी आप ही की प्रेरणा का फल है। पुस्तक का प्रावक्यन लिखने में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० माताप्रसादजी गुप्त ने जो बख्त किया है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमें उनका ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ कब से होता है, यह उसके इतिहास का सबसे अधिक विवादपूर्ण विषय रहा है। पहले कुछ विद्वानों का मत था कि पुंज या पुष्य हिन्दी का आदि कवि था जो आठवीं या नवीं शती में हुआ था किन्तु उसकी कोई रचना प्राप्त नहीं थी। इधर अपभ्रंश के एक सर्व श्रेष्ठ कवि पुष्यदन्त की रचनाओं के प्रकाश में आने पर अनुमान किया जाने लगा है कि पुष्य नाम के जिस कवि का हिन्दी के आदि कवि के रूप में उल्लेख होता रहा है, वह कदाचित् पुष्यदन्त था। किन्तु पिछले ५०-६० वर्षों की खोज में पुष्यदन्त ही नहीं अपभ्रंश के चार दर्जन से अधिक कवियों की रचनाएं प्रकाश में आई हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य से वृथक स्थान मिलना चाहिए या इसे पुरानी हिन्दी का साहित्य ही मान लेना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें भाषा के इतिहास की ओर मुड़ना पड़ता है। भारतीय भाषाओं पर जिन विद्वानों ने कार्य किया है, उनका मत है कि बंगला, मराठी, गुजराती आदि की भांति हिन्दी भी एक आधुनिक भारतीय धार्य-भाषा है। इसकी विभिन्न बोलियां उन उन क्षेत्रों में बोली जाने वाली अपभ्रंशों से विकसित हुई हैं, और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की भांति हिन्दी की विभिन्न बोलियों की भी कुछ विशपताएं हैं जो उन्हें उनके पूर्ववर्ती अपभ्रंशों से अलग करती हैं। उनका यह भी मत है कि समस्त अपभ्रंशों को मध्य कालीन भारतीय धार्य भाषाओं में स्थान मिलना चाहिए क्योंकि उनकी सामान्य प्रवृत्तियां मध्यकालीन भारतीय भाषाओं की हैं।

किन्तु यहां पर यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि बोलचाल की भाषाएं एक दम नहीं बदलती हैं, उनमें धीरे धीरे परिवर्तन होता चलता है और ऊपर मध्य कालीन और आधुनिक धार्य भाषाओं में जिस प्रकार का अन्तर बताया गया है, वह क्रमशः उपस्थित होता है। अतः काफी लंबे समय तक ऐसा रहा होगा कि अपभ्रंश के विशिष्ट तत्व धीरे-धीरे समाप्त हुए होंगे और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विशिष्ट तत्व अंकुरित होकर पल्लवित हुए होंगे। इसलिए जिस साहित्य में अपभ्रंश और आधुनिक धार्य भाषाओं दोनों के तत्व मिलते हैं उन्हें कहां रखना जाए, यह प्रश्न बना ही रहता है, भले ही हम सिद्धान्ततः यह मानें कि अपभ्रंश-

साहित्य को हिंदी साहित्य से अलग स्थान मिलना चाहिए। यह सन्धिकालीन साहित्य परिमाण में कम नहीं है। इसका सर्वे श्रेष्ठ व्यावहारिक उत्तर कदाचित् यही है कि इसे दोनों साहित्यों की सम्मिलित सम्पत्ति माना जाए। इसे उतना ही ह्रासकालीन अपभ्रंश का साहित्य माना जाए जितना इसे आधुनिक भाषाओं के प्रादुर्भाव काल का। और विद्वानों का यह कर्तव्य है कि इस संधिकालीन साहित्य को शेष समस्त अपभ्रंश साहित्य से भाषा तत्वों के आधार पर अलग करके इसे सूची बद्ध करें, तभी हमारे साहित्य के इतिहास के इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उचित रीति से समाधान हो सकता है कि उसका प्रारंभ कब से होता है।

यदि इस संधिकालीन साहित्य का अनुशीलन किया जावे तो यह सुगमता से देखा जा सकता है कि इसके निर्माण में सबसे बड़ा हाथ जैन विद्वानों और महात्माओं का रहा है, और वस्तुतः साहित्य में इनका इतना बड़ा योग रहा है जो कि इस संधिकाल से पूर्व निर्मित हुआ था। इतना ही नहीं विभिन्न मात्राओं में आधुनिक आर्य भाषाओं के मिश्रण के साथ जैन विद्वान और महात्मा सत्रहवीं शती तक बराबर अपभ्रंश में रचनाएँ करते आ रहे हैं। अभी अभी जैन कवि पं० भगवतीदास कृत 'मङ्कलेहचरित' (मृगाकलेखाचरित) नाम की रचना मेरे देखने में आई है जो विक्रमीय अठारहवीं शती की रचना है। इसलिए यह प्रकट है कि अपभ्रंश के साहित्य की शीवुद्धि में जैन कृतिकारों का योग असाधारण रहा है। जब अपभ्रंश बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी और उसका स्थान आधुनिक आर्य भाषाओं ने ले लिया था, उसके बाद भी सात आठ शताब्दियों तक जैन कृतिकारों ने अपभ्रंश की जो सेवा की, वह भारतीय साहित्य के इतिहास में एक ध्यान देने की वस्तु है। इससे उनका अपभ्रंश के प्रति एक धार्मिक अनुराग सूचित होता है; इसलिए यदि परिनिष्ठित अपभ्रंश और संधिकालीन अपभ्रंश का सबसे महत्वपूर्ण अंश हमें जैन विद्वानों और कवियों की कृतियों के रूप में मिलता है तो आश्चर्य न होना चाहिये।

किन्तु एक कारण और भी इस बात का है जो इस साहित्य के कृतिकारों में जैन कवियों और महात्माओं का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। वह यह है कि जैन धर्मावलंबियों ने अपने साहित्य की बड़ी निष्ठा पूर्वक सुरक्षा की है। अपभ्रंश तथा संधियुग का जितना भी भारतीय साहित्य प्राप्त हुआ है, उसका सर्व प्रमुख अंश जैन भंडारी से ही प्राप्त हुआ है, इसलिए उस साहित्य में यदि जैन कृतियों का बाहुल्य हो तो उसे स्वाभाविक ही मानना चाहिए और इसके प्रमाण प्रचुरता से मिलते हैं कि अपभ्रंश और संधि युग में साहित्य-रचना अनेक जनेतर कवियों ने

की है; उदाहरणार्थ 'प्राकृत 'पंगल' में उदाहरणों के रूप में संकलित अधिकतर छन्द जँनेतर कवियों के प्रतीत होते हैं; हेमचन्द्र द्वारा उदाहृत तथा जँन प्रबंधकारों द्वारा उद्धृत+ छंदों में भी एक बड़ी संख्या जँनेतर कृतियों के छंदों की लगती है। बौद्ध सिद्धों की रचनाएं तो सर्व विदित ही हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि इन दोनों युगों का जँनेतर साहित्य भी बहुत था और उसकी खोज अधिक-अधिक की जानी चाहिए।

कुछ पूर्व तक जँन भंडारों में प्रवेश असंभव—सा था, किंतु अब अनेक भांडारों ने अपने संग्रहों को दिखाने के लिए प्रवेश की व्यवस्था कर दी है। उधर उनके संग्रह को सूचीबद्ध करने का भी एक व्यवस्थित आयोजन प्रतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग द्वारा प्रारंभ हुआ है, जिसके अन्तर्गत राजस्थान के जँन भण्डारों की पोथियों के विवरण संकलित और प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस खोज कार्य में अनेकानेक अपभ्रंश, सधिकांतीन हिंदी तथा प्रादि-कालीन हिंदी की रचनाओं का पता लगा है, जिससे हिंदी साहित्य के बहुत से परमोच्च रत्न प्रकाश में आने लगे हैं। इन्हीं में से एक सबसे उज्वल और मूल्यवान रत्न सघाव, कृष्ण प्रद्युम्न चरित है। इसकी रचना विभिन्न पाठों के अनुसार सं० १३११, १४११ और १५११ में हुई है, किंतु गणना के अनुसार सं० १४११ की निया ठीक आती है, इसलिये वही इसकी वास्तविक रचना निया है। इस समय के प्राप्त-पास की निश्चित नियों की रचनाएं इनी-गिनी हैं, और जो हैं भी, इनने अधिक निश्चित रूप और पाठ की और भी कम है। आकार में यह रचना छउपई छंदों की एक सतमई है और काव्य दृष्टि से भी बड़े महत्व की है। इसलिये इस रचना की खोज से हिन्दी साहित्य के आदिकाल की निश्चित थी वृद्धि हुई है। यह बड़े ह्यं की बात है कि श्री पं० चँनमुलदास न्यायतीर्थ तथा श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल शास्त्री द्वारा इसका सम्पादन करा कर प्रतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर के शोध-विभाग ने इसके प्रकाशन की व्यवस्था की है। उसकी इस सेवा के लिये हिन्दी जगत् की प्रतिशय क्षेत्र का आभार मानना चाहिए।

श्री पं० चँनमुलदास तथा श्री कासलीवाल ने इसका सम्पादन बड़े ही परिश्रम और योग्यता के साथ किया है। उन्होंने इसकी सर्वोत्तम कृतियों का उपयोग सम्पादन में करते हुए उन सब के पाठान्तर विस्तारपूर्वक इस संस्करण में दिये हैं

• सम्पादक—चन्द्रमोहन पोथ, प्रकाशक—एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, कलकत्ता।

+ देखो, हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण, मेरुद्वार का प्रबन्ध चिन्तामणि तथा मुनिविन विषय द्वारा सम्पादित—पुगतन प्रबन्ध संग्रह।

जिनकी सहायता से इस रचना का पाठ निर्धारण पाठानुसंधान की आधुनिक प्रणाली पर भी करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी फिर उन्होंने हिन्दी में अर्थ भी सम्पूर्ण रचना का दिया है। हिन्दी की प्राचीन कृतियों का सन्तोषजनक रूप से अर्थ लगाना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, कारण यह है कि उसके लिये आवश्यक कोषों का अत्यन्त अभाव है। हिन्दी के सबसे बड़े और सबसे मूल्यवान कोष 'हिन्दी शब्द सगर' में ऐसे ग्रन्थों का अर्थनिर्धारण में कोई सहायता नहीं मिलती। पुरानी हिन्दी का भाषात्मक अध्ययन भी अभी तक नहीं हुआ है, यह भी खेद का विषय है। ऐसी बशा में किसी भी पुरानी हिन्दी कृति का अर्थ देना स्वतः एक कष्ट साध्य कार्य हो जाता है। सम्पादकों ने रचना का यथासम्भव ठीक-ठीक अर्थ लगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। उन्होंने रचना की समीक्षा भी विभिन्न दृष्टियों से उसकी भूमिका में की है। इससे सभी प्रकार के पाठकों को, रचना को और उसके महत्व को समझने में सहायता मिलेगी। अतः मैं सम्पादकों को इस सम्पादन के लिये हृदय से बधाई देता हूँ। वे इस ग्रन्थमाला से अनेक नय-प्राप्त प्राचीन हिन्दी की रचनाओं का सम्पादन करना चाहते हैं। मेरी यही शुभकामना है कि वे अपने सकल्प को पूरा करने में सफल हों।

इस संस्करण में पाठ-निर्धारण के लिये वे आधुनिक पाठानुसन्धान की प्रणाली का आश्रय नहीं ले सके हैं अथवा पाठ कुछ और अधिक प्रामाणिक हो सकता था। आशा है कि वे इसके अगले संस्करण में इस अभाव की पूर्ति करेंगे।

प्रयाग

माताप्रसाद गुप्त

३१-६-५६.

प्रस्तावना

प्रद्युम्न चरित का हमें सर्व प्रथम परिचय देने का श्रेय स्व० रायबहादुर डा० हीरालाल को है, जिन्होंने 'सर्च रिपोर्ट' सन् १९२३-२४ में इसका उल्लेख किया था। इसके पश्चात् श्री बाबू कामताप्रसाद अलीगंज (एटा) द्वारा लिखित "हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक से इसका परिचय प्राप्त हुआ, किन्तु उन्होंने अपनी उक्त पुस्तक में इसका उल्लेख वीर सेवा मन्दिर देहली के मुख-पत्र 'अनेकान्त' में प्रकाशित एक सूचना के आधार पर किया था और इस सूचना में इसे गद्य की रचना बतलाया था। इसी पुस्तक के प्राक्कथन में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उसे गद्य ग्रन्थ मान कर शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था। श्री अग्ररचन्द नाहटा बीकानेर को जब उक्त पुस्तक पढ़ने को मिली तो उसे देखने पर उन्हें पता चला कि 'प्रद्युम्न-चरित' गद्य रचना न होकर पद्य रचना है एवं उसका रचना संवत् १४११ है। इसके बाद नाहटाजी का जयपुर से प्रकाशित 'वीरवाणी' पत्र के वर्ष १ अङ्क १०-११ (सन् १९४७) में "सं० १६८८ का लिखित प्रद्युम्न-चरित्र क्या गद्य में है?" नामक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने ग्रन्थ के सम्बन्ध में संक्षिप्त किन्तु वास्तविक परिचय दिया और लेख के अन्त में निम्नलिखित परिणाम निकाला :—

"उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि कवि का नाम रायरच्छ नहीं, पर साधारण या मधारु था। वे अग्ररोवह से उत्पन्न अग्रवाल जाति के शाह महाराज (महाराज नहीं) एवं गुणवती के पुत्र थे। इनका निवास स्थान सम्भवतः रायरच्छ था। इसे ही सूचीकर्ता ने रायरच्छ पढ़ कर इसे ग्रन्थकर्ता का नाम बतला दिया है। नगधर मन्त पाठ अशुद्ध है सम्भवतः र घ शब्द को आगे पीछे लिख दिया है। शुद्ध पाठ नगर धमन्त होना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण सूचना प्रति से रचना काल की मिली है। अभी तक सम्बन् १४११ की टठनी स्पष्ट रचना ज्ञात नहीं है इस दृष्टि में इसका बड़ा महत्व है।"

इसके पश्चात् प्रद्युम्न चरित के महत्व को प्रकाश में लाने अथवा उसके प्रकाशन पर किसी का ध्यान नहीं गया। इधर हमारा राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूचियां तैयार करने का पुनीत कार्य चल ही रहा था।

सन् १९५४ में जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार की सूची बनाने के अवसर पर उसी भण्डार में हमें 'प्रद्युम्न-चरित' की भी एक प्रति प्राप्त हुई। जयपुर के उक्त भण्डार की ग्रन्थ सूची बनाने का काम जब पूरा हो गया तो इस पुस्तक के सम्पादक श्री कासलीवाल और श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ को भरतपुर प्रान्त के जैन ग्रन्थ भण्डारों को देखने के लिये जाना पड़ा और कामों (भरतपुर) के दोनों ही मन्दिरों के शास्त्र भण्डारों में 'प्रद्युम्न-चरित' की एक एक प्रति और भी उपलब्ध हो गई लेकिन जब इन दोनों प्रतियों को परस्पर में मिलाया गया तो पाठ भेद एवं प्रारम्भिक पाठ विभिन्नता के अतिरिक्त रचना काल में भी १०० वर्ष का अन्तर मिला। अग्रवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना सम्यत् १३११ दिया हुआ है किन्तु यह प्रति अपूर्ण, फटी हुई एवं नवीन है। भाषा की दृष्टि से भी वह नवीन मालूम होती है। खडेलवाल पंचायती मन्दिर वाली प्रति में रचना काल सम्यत् १४११ दिया हुआ है तथा वह प्राचीन भी है। इसी प्रति का हमने सम्पादन कार्य में 'क' प्रति के नाम से उपयोग किया है।

इसी बीच में नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से रीवां में हिन्दी ग्रन्थों के शोध का कार्य प्रारम्भ किया गया और सभा के साहित्यान्वेषक को वही के दि० जैन मन्दिर में इस ग्रन्थ की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसका संक्षिप्त परिचय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' देहली में प्रकाशित हुआ। पर इस लेख से भी 'प्रद्युम्न-चरित' के सामान्य महत्व के अतिरिक्त कोई विशेष परिचय नहीं मिला। साहित्यान्वेषक महोदय ने लिखा है कि "इसके कर्ता गुण सागर (जैन) आगरा निवासी सम्यत् १३११ में हुए थे" लेखक ने इस रचना को ७०१ वर्ष पहले की बताया। ग्रन्थ का वही नाम देस कर हमने उसका आदि अन्त का पाठ भेजने के लिये श्री रघुनाथजी शास्त्री को लिखा। हमारे अनुरोध पर नागरी प्रचारिणी सभा ने रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का पाठ भेजने की कृपा की। इसके कुछ दिन पश्चात् ही क्षेत्र के अनुमन्धान विभाग को देखने के लिये श्री नाहटाजी का आगमन हुआ और वे रीवां वाली प्रति का आदि अन्त का भाग अपने साथ ले गये। तदनंतर नाहटाजी का प्रद्युम्न-चरित पर एक विस्तृत एवं खोजपूर्ण लेख 'हिन्दी अनुशीलन' वर्ष ६ अक्टू १-४ में 'सम्यत् १३११ में रचित प्रद्युम्न-चरित का कर्ता' शीर्षक प्रकाशित हुआ।

इसके बाद इस रचना को श्री महावीर क्षेत्र की ओर से प्रकाशित कराने का निरवय किया गया। दो प्रतियां तो हमारे पास पहिले ही से थीं और दो प्रतियां श्री नाहटाजी द्वारा प्राप्त हो गईं। नाहटाजी द्वारा प्राप्त इन

दो प्रतियों में से एक प्रति देहली के शास्त्र भण्डार की है और दूसरी सिंधी ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्राहलय की है। इन चारों प्रतियों का सक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है :—

(१) यह प्रति जयपुर के श्री बधीचन्दजी के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है। इस प्रति में ३४ पत्र हैं। पत्रों का आकार ११ $\frac{१}{२}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इञ्च का है। इस प्रति का लेखन काल सम्वत् १६०५ आसोज बुदी ३ मंगलवार है। प्रति प्राचीन एवं स्पष्ट है। इसमें पद्यों की संख्या ६२० है। इस संस्करण का मूलपाठ इसी प्रति से लिया गया है। लेकिन प्रकाशित संस्करण में पद्यों की संख्या ७०१ दी गई है। इसका मूल कारण यह है कि वस्तुबंध छंद के साथ प्रयुक्त होने वाली प्रथम चौपई को भी लिपिकार अथवा कवि ने उसी पद्य में गिन लिया है इसी से पद्यों की संख्या कम हो गई। इस प्रति के अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियों में वस्तुबंध के परचात् प्रयुक्त होने वाली चौपई छंद को भिन्न छंद माना है तथा उसकी संख्या भी अलग ही लगाई गई है। प्रस्तुत पुस्तक में १७ वस्तुबंध छंदों का प्रयोग हुआ है इसलिये १७ चौपई तो वे बढ़ गईं, शेष ४ छंदों की संख्या लिखने में गलती होने के कारण बढ़ गई हैं, इसलिये इस संस्करण में ६२० के स्थान में ७०१ संख्या आती है। कहीं कहीं चौपई छंद में ४ चरणों के स्थान पर ६ चरणों का भी प्रयोग हुआ है।

(२) दूसरी प्रति ('क' प्रति)

यह प्रति कामां (भरतपुर) के खण्डेलवाल जैन पंचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार की है जिसकी पत्र संख्या ३२ है तथा पत्रों का आकार १० × ४ $\frac{३}{४}$ इञ्च है। इसकी पद्य संख्या ७१६ है, लेकिन ७०० पद्य के परचात् लिपिकार ने ७०१ संख्या न लिख कर ७१० लिख दी है इसलिये इसमें पद्यों की कुल संख्या वास्तव में ७०७ है। प्रति में लेखन काल यद्यपि नहीं दिया है, किन्तु यह प्रति भी प्राचीन जान पड़ती है और सम्भवतः १७ वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व की लिखी हुई है। इस प्रति में २३ वें पत्र से २२ वें पत्र तक अर्थात् मध्य के ६ पत्र नहीं हैं।

(३) तीसरी प्रति ('ख' प्रति)

यह प्रति देहली के सेठ के कूचे के जैन मन्दिर के भण्डार की है, जो वहां के साहित्य सेवा ला० पन्नालाल अप्रवाल को कृपा से नाइटाजी को प्राप्त हुई थी। यह प्रति एक गुटके में संग्रहीत है। गुटके में इस रचना के ७२ पत्र हैं। प्रति की लिपि स्पष्ट तथा सुन्दर है। इस प्रति में पद्यों की संख्या

७१४ है जो मूल प्रति से १३ अधिक हैं। यह सम्बन्त १६४८ जेठ सुदी १२ गुरुवार को हिसार नगर में दयालदास द्वारा लिखी गई थी। पांडे प्रह्लाद ने इसकी प्रतिलिपि की थी। इनकी लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है :—

सवन् १६४८ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे १२ द्वादश्यां गुरुवासरे श्री साहजहा राज्ये श्री हिसार नगर मध्ये लिखितं दयालदासेन लिखापितं पांडे पहिलाद । शुभमस्तु ।

(४) चौथी प्रति ('ग' प्रति)

यह प्रति मिथिया ओरिन्टियल इन्स्टीट्यूट उज्जैन के संग्रहालय की है। इस प्रति में ७१३ छंद हैं। इसका लेखनकाल सवन् १६३४ आसोज बुदी ११ आदित्यवार है। इस प्रति को राजगच्छ के उपाध्याय दिनचमुन्दर के प्रशिष्य एवं भक्तिरत्न के शिष्य नवरत्न ने अपने पढ़ने के लिये लिखा था। पाठ भेदों में इस प्रति को 'ग' प्रति कहा गया है।

इसमें प्रारम्भ से ही चौबीस तीर्थकरों को नमस्कार किया गया है जब कि अन्य तीन प्रतियों में ८ वें पद्य से (ख प्रति में ७ वें पद्य से) नमस्कार किया गया है। मंगलाचरण के प्रारम्भ के १२ पद्य निम्न प्रकार हैं—

रिपभ अजित संभो जिनस्वामि, कम्मनि नासि भयो शिवगामी ।
 अभिनदनदेउ सुमति जगईस, तीनि वार तिन्ह नामउ सीस ॥ १ ॥
 पद्मप्रभ सुपास जिणदेव, इन्द फनिद करहि तुम्ह सेव ।
 चन्द्रप्रभ आठमउ जिणिणद, चिन्ह धुजा सोहइ वर चन्दु ॥ २ ॥
 नवमउ सुविधि नवहु भवितासु, सिद्ध सरुपु मुकति भयो भासु ।
 सीतल नाथ श्रेयांस जिणंदु, जिण पूजत भवो होइ आनंद ॥ ३ ॥
 वासपूज्य जिणधर्म मुजाण, भवियण कमल देव तुम्ह भाणु ।
 चक्र भवनु साई ससार, स्वर नरकउ सु उलघण हारु ॥ ४ ॥
 विमलनाथ जउ निर्मलबुधि, तजि भउ पार लही सिव सिद्धि ।
 सो जिण अनंतु वारंवार, अष्ट कम्मं तिणि कीन्हे छार ॥ ५ ॥
 जउ रे धम्मं धम्मधुरवीर, पच मुमति वर साहस धीर ।
 जरे सति तजी जिणि रीस, भवीयण संति करउ जगईस ॥ ६ ॥

कथु अरह चषकवइ नरिंद, निज्जंर कम्म भयो सिव इन्द ।
 जोति सरुपु निरंजण कारु, गजपुर नयरी लेवि अवतारु ॥ ७ ॥
 मल्लिनाथ पंचेन्द्री मल्ल, चउरासी लक्ष कियो निसल्ल ।
 जउरे मुनिसुव्रत मुनि इंद, मन मर्दन वीसवे जिन्द ॥ ८ ॥
 जउरे नामि गुण ग्यांन गंभीर, तीन गुपति वर साहसघोर ।
 निलोपल लंछन जिनराज, भवियण बहु परिसारइ काज ॥ ९ ॥
 सोरीपुरि उपनउ वरवीरु, जादव कुल मंडण गंभीरु ।
 जाउरे जिणवर नेमि जिणद, रतिपति राइ जिण पूनिमचंदु ॥ १० ॥
 आससेन नृप नंदनवीर, दुष्ट विघन संतोषण धीर ।
 जाउरे जिणवर पास जिणंद, सिरफन छत्र दीयो धरणिंद ॥ ११ ॥
 मेर सिखर पूरव दिसि जाइ, इन्द्र सुर त्रिभुवन राइ ।
 कंचन कलस भरे जल क्षीर, ढालहि सीस जिणोसर वीर ॥ १२ ॥

उक्त ४ प्रतियों के अतिरिक्त जब नवम्बर सन् १२ के प्रथम सप्ताह में श्री नाहटाजी जयपुर आये तो उन्होंने 'प्रद्युम्न-चरित' की एक प्रति का जिक्र किया और उसे हमारे पास भेज दिया। यद्यपि इस प्रति का पाठ भेद आदि में अधिक उपयोग नहीं किया जा सका, किन्तु फिर भी कुछ सन्देहास्पद पाठ इस प्रति से स्पष्ट हो गये। यह प्रति भी प्राचीन है तथा सम्वत् १६६६ श्रावण बुदी ६ आदित्यवार की लिखी हुई है। प्रति में २७ पत्र हैं तथा उनका $१०\frac{१}{२} \times ४\frac{३}{४}$ इञ्च का आकार है। इसमें पद्य संख्या ७०१ है। इस प्रति की विशेषता यह है कि इसमें रचना काल सम्वत् १३११ भाद्रवा सुदी ५ दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त मूल प्रति के प्रारम्भ में जो विस्तृत स्तुति खण्ड है वह इस प्रति में नहीं है। प्रति के प्रारम्भ में ६ पद्य निम्न प्रकार है।

अठदल कमल सरोवरि वानु, कासमीरि पुरियउ निवासु ।
 हंसि चडी करि वीणा लेइ, कवि सधारु सरसं पणवेइ ॥ १ ॥
 पणभावती दंडु करि लेइ, ज्वालामुखी चषकेसरि देइ ।
 अंवाइणि रोहण जो सारु, सासण देवि नवइ साधारु ॥ २ ॥

स्वेत वस्त्र पदमासणि लीण, करहि आलवणि वाजहि वीण ।
 आगमु जाणि देइ बहुमती, पुणु परावों देवी मुरस्वती ॥ ३ ।
 जिण सासण जो विघन हरेइ, हाथि लकुटि ले आगे होइ ।
 भवियहु दुरिय हरइ असरालु, आगिवाणि परावउ खितपालु ॥ ४ ।
 संवत् तेरहसइ होइ गए, ऊपरि अधिक एयारह भए ।
 भांदव सुदि पंचमि जो सारु, स्वाति नक्षत्रु सनीश्चरु वारु ॥ ५ ॥
 वस्तुबंधः—

शिवि जिणवर सुद्ध सुपवित्तु

नेमीसरु गुणनिलउ, स्याम वरुणुं सिवएवि नंदणु ।
 चउतीसह अइसइ सहिउ, कमकणी घण मारण मइणु ।
 हरिवंसह कुल तिलउ, निजिय नाह भवणासु ।
 सासइ सुह पावहं हरणु, केवलणण पसु ? ॥ ६ ॥

विभिन्न भाषाओं में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित रचनायें:—

प्रद्युम्न कुमार जैनों के १६६ पुण्य पुरुषों में से एक हैं । इनकी गणना चौदीस कान्देवों (अतिशय रूपवान) में की गई है । यह नवमें नारायण श्री कृष्ण के पुत्र थे । यह चरमशरीरी (उमी जन्म से मोक्ष जाने वाले) थे । इनका चरित्र अनेक विशेषताओं को लिये हुए होने के कारण आर्कषणों से भरा पड़ा है । मनुष्य का उत्थान और पतन एवं मानव-हृदय की निर्धलताओं का चित्रण इस चरित्र में बहुत ही सूची से हुआ है और यही कारण है कि जैन वाङ्मय में प्रद्युम्न के चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है । न केवल पुराणों में ही प्रसंगानुसार प्रद्युम्न का चरित्र आया है अपितु अनेक कवियों ने स्वतन्त्र रूप से भी इसे अपनी रचना का विषय बनाया है ।

प्रद्युम्न का जीवन चरित्र मघं प्रथम जिनसेनाचार्य कृत 'हरिवंश पुराण' के ४७ वें सर्ग के २० वें पद्य से ४८ वें सर्ग के ३१ वें पद्य तक मिलता है । फिर गुणभद्र के उत्तर पुराण में, स्वयम्भू कृत रिट्टणैमिचरिउ (८ वीं शताब्दी) में, पुण्ड्रन्त के महापुराण (६-१० वीं शताब्दी) में तथा धवल के हरिवंश पुराण (१० वीं शताब्दी) में यह प्राप्त होता है । इन रचनाओं

में से प्रथम दो संस्कृत एवं शेष अपभ्रंश भाषा की हैं। उक्त पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन से सम्बन्धित जो स्वतन्त्र रचनाएँ मिलती हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

क्र० सं०	रचना का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	रचना काल
१.	प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	संस्कृत	११वीं शताब्दी
२.	पञ्जुणकदा	सिंह अथवा सिद्ध	अपभ्रंश	१३वीं शताब्दी
३.	प्रद्युम्नचरित	कवि मधारु	हिन्दी	सं० १४११
४.	प्रद्युम्नचरित्र	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	१५वीं शताब्दी
५.	प्रद्युम्नचरित्र	रङ्गधू	अपभ्रंश	१५वीं शताब्दी
६.	प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	सं० १५३०
७.	प्रद्युम्न चौपई	कमलकेशर	हिन्दी	सं० १६२६
८.	प्रद्युम्नरासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	सं० १६२८
९.	प्रद्युम्नचरित्र	रविसागर	संस्कृत	सं० १६४५
१०.	शाम्भुप्रद्युम्न रास	समयसुन्दर	राजस्थानी	सं० १६५६
११.	प्रद्युम्नचरित्र	शुभचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१२.	प्रद्युम्नचरित्र	रतनचन्द्र	संस्कृत	सं० १६७१
१३.	प्रद्युम्नचरित्र	मल्लिभूपण	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१४.	प्रद्युम्नचरित्र	वादिचन्द्र	संस्कृत	१७वीं शताब्दी
१५.	शाम्भुप्रद्युम्न रास	ज्ञानभागर	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१६.	शाम्भुप्रद्युम्न चौपई	जिनचन्द्र मूरि	हिन्दी	१७वीं शताब्दी
१७.	प्रद्युम्नचरित्र	भोगकीर्ति	संस्कृत	—
१८.	प्रद्युम्नचरित्र	जिनेश्वर सूरि	संस्कृत	—
१९.	प्रद्युम्नचरित्र	यशोधर	संस्कृत	—
२०.	प्रद्युम्नचरित्र भाषा	—	हिन्दी गद्य	—
२१.	प्रद्युम्नप्रबन्ध	देवेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	सं० १७२२
२२.	प्रद्युम्नरास	मायाराम	हिन्दी	सं० १८१८
२३.	शाम्भुप्रद्युम्न रास	हर्षविजय	हिन्दी	सं० १८४२
२४.	प्रद्युम्नप्रकाश	शिवचन्द्र	हिन्दी	सं० १८७६
२५.	प्रद्युम्नचरित	वन्तावरसिंह	हिन्दी गद्य	सं० १९१४

उक्त रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्र रूप से महासेनाचार्य (११ वीं शताब्दी) के संस्कृत 'प्रद्युम्न चरित्र' एवं सिंह कवि के अपभ्रंश पञ्जुणकदा (१३ वीं शताब्दी) के पश्चात् हिन्दी में

सर्व प्रथम रचना करने का श्रेय कवि सवारु को है। इसी रचना के परचात् संस्कृत और हिन्दी में प्रद्युम्न के जीवन पर २३ रचनायें लिखी गईं। इससे विद्वानों एवं कवियों के लिये प्रद्युम्न का जीवन चरित्र कितना प्रिय था, इसका स्पष्ट पता हागता है।

प्रद्युम्न चरित की कथा—

द्वारका नगरी के स्वामी उन दिनों यादव-कुल-शिरोमणि श्री कृष्णजी थे। सत्यभामा उनकी पटरानी थी। एक दिन उनकी सभा में नारद ऋषि का आगमन हो गया। श्री कृष्ण ने तो उनका आदर सत्कार कर अपने सभा भवन से उन्हें विदा कर दिया, पर जत्र वे सत्यभामा का कुशल-लक्ष्म पूछने उसके महल में गये तो उसने उनका कोई सम्मान नहीं किया। इससे ऋषि को बड़ा क्रोध आया और अपमान का बदला लेने की ठान ली। वे सत्यभामा से भी सुन्दर किसी स्त्री का कृष्णजी के साथ विवाह करने की सोचने लगे। बहुत खोज करने पर उन्हें रुक्मिणी मिली, किन्तु उसका विवाह शिशुपाल से होना तय हो चुका था। नारद ने वहाँ से लौट कर श्रीकृष्णजी से रुक्मिणी के सौन्दर्य की खूब प्रशंसा की और अन्त में उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। श्री कृष्ण बड़े खुश हुए। उन्होंने बलराम को साथ लेकर छलपूर्वक रुक्मिणी का हरण कर लिया। रथ में बिठाने के पश्चात् उन्होंने रुक्मिणी को लुढ़ाने के लिये सभी प्रतिपत्नी योद्धाओं को ललकारा। शिशुपाल सेना लेकर श्रीकृष्ण से लड़ने आ गया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में शिशुपाल मारा गया और श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर द्वारका की ओर चले। मार्ग में विवाह सम्पन्न कर श्रीकृष्ण द्वारका पहुँच गये। नगर में खूब उत्सव मनाये गये। रुक्मिणी के विवाह के बाद बहुत समय तक श्री कृष्णजी ने सत्यभामा की कोई खबर न ली। इससे सत्यभामा को बड़ा दुःख हुआ। सत्यभामा के निवेदन करने पर श्री कृष्णजी ने उसकी रुक्मिणी से भेंट कराई। सत्यभामा और रुक्मिणी ने बलराम के सामने प्रतिज्ञा की कि जिसके पहिले पुत्र होगा वह पीछे होने वाले पुत्र की माता के वालों का अपने पुत्र के विवाह के समय सुएडन करा देगी।

दोनों रानियों के एक ही दिन पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों के दूतों ने जब यह सन्देश श्रीकृष्ण को जाकर कहा तब रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न को बड़ा पुत्र माना गया किन्तु उसको जन्म लेने की दृष्टी रात्रि को ही धूमकेतु नामक असुर हरण कर ले गया और पूर्व भव के वैर के कारण उसे वन में एक शिला के नीचे दबा कर चला गया। उसी समय विद्यावरों का राजा

कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के साथ त्रिमान द्वारा उधर से जा रहा था। उसने पृथ्वी पर पड़ी हुई भारी शिला को हिलते देखा। शिला को उठाने पर उसे उमके नीचे एक अत्यधिक सुन्दर बालक दिखाई दिया। तुरन्त ही उसने उस सुन्दर बालक को उठा लिया और अपनी स्त्री को दे दिया। कालसंवर ने नगर में पहुँचने के बाद उस बालक को अपना पुत्र घोषित कर दिया।

उधर रुक्मिणी पुत्र त्रियोगाग्नि में जलने लगी। उसी समय नारद ऋषि का वहाँ आगमन हुआ। जब उन्होंने प्रद्युम्न के अकस्मात् गायत्र होने के समाचार सुने तो उन्हें भी दुःख हुआ। रुक्मिणी को धैर्य बंधाते हुए नारद ऋषि प्रद्युम्न का पता लगाने विदेह क्षेत्र में केवली भगवान् के समवसरण में गये। वहाँ से पना लगाकर वे रुक्मिणी के पास आये और कहा कि १६ वर्ष बाद प्रद्युम्न स्वयं सानन्द घर आ जायेगा।

कालसंवर के यहाँ प्रद्युम्न का लालन पालन होने लगा। पाँच वर्ष की आयु में ही उसे विद्याध्ययन एवं शस्त्रादि चलाने की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा गया। थोड़े ही समय में वह सर्व विद्याओं में प्रवीण हो गया। कालसंवर के प्रद्युम्न के अतिरिक्त ५०० और पुत्र थे। राजा कालसंवर का एक शत्रु था राजा सिंहरथ जो उसे आये दिन तंग किया करता था। उसने अपने ५०० पुत्रों के सामने उस सिंहरथ राजा को मार कर लाने का प्रस्ताव रखा पर किसी पुत्र ने कालसंवर के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं की। केवल प्रद्युम्न ने इसे स्वीकार किया और एक बड़ी सेना लेकर सिंहरथ पर चढ़ाई कर दी। पहिले तो राजा सिंहरथ प्रद्युम्न को बालक समझ कर लड़ने से इन्कार करता रहा, पर बार बार प्रद्युम्न के ललकारने पर लड़ने को तैयार हुआ। दोनों में घोर युद्ध हुआ और अन्त में विजयश्री प्रद्युम्न को मिली। वह राजा सिंहरथ को बाँध कर अपने पिता कालसंवर के सामने ले आया। कालसंवर अपने शत्रु को अपने अधीन देखकर प्रद्युम्न से बड़ा खुश हुआ और उसे युवराज पद दिया एवं इस प्रकार उन ५०० पुत्रों का प्रधान बना दिया।

इस प्रतिफल व्यवहार के कारण मय कुमार प्रद्युम्न से द्वेष करने लगे एवं उसे मारने का उपाय सोचने लगे। उन मय कुमारों ने प्रद्युम्न को बुलाया और उसे धन क्रीड़ा के वहाने धन में ले गये। अपने भाइयों के कहने से प्रद्युम्न जिन मन्दिरों के दर्शनार्थ सर्व प्रथम विजयगिरि पर्वत पर चढ़ा, पर वहाँ उमने कुंभार करता हुआ एक भयंकर सर्प देखा। प्रद्युम्न तुरन्त ही उस वरावने सर्प से भिड़ गया तथा उसकी पूँछ पकड़ कर उसे जमीन पर दे

मारा इसे देखकर वह सर्प यज्ञ रूम में प्रद्युम्न के सामने आकर खड़ा हो गया और वीर प्रद्युम्न को प्रसन्न होकर १६ विद्यायें दी। फिर प्रद्युम्न दूसरी काल गुफा में गया। वहाँ के रक्षक कालासुर दैत्य को हरा कर वहाँ से चवर ध्वज प्राप्त किया। तीसरी गुफा में जाने पर उसे एक भयावह नाग से लड़ना पड़ा। किन्तु उस नाग ने भी हार मानली एवं भेंट स्वरूप नागशय्या, पावड़ी, धीणा और अन्य तीन विद्यायें दीं। जब प्रद्युम्न उन कुमारों के साथ एक सरोवर के पास पहुँचा तो उन्होंने उसे स्नान करने को कहा। पहिले तो उस सरोवर के रक्षक प्रद्युम्न को सरोवर में प्रवेश करते देख कर बड़े क्रुद्ध हुए पर अन्त में बलवान जानकर मकर पताका प्रदान की। इस प्रकार प्रद्युम्न जहाँ भी गये वहाँ से ही उन्हें अच्छी २ भेंटें मिलती रही इतना ही नहीं, एक वन में उन्हें एक रती नामकी सुन्दर कन्या भी मिली, जिससे बनने विवाह कर लिया।

इस प्रकार जब वह अनेक विद्याओं का लाभ लेकर कालसंवर के पास आया तब वह उम पर बड़ा खुश हुआ। इस अरसर पर वह अपनी माता कञ्चनमाला से भी मिलने गया। उस समय वह प्रद्युम्न के रूप और सौंदर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो गई और उससे प्रेम-याचना करने लगी। प्रद्युम्न को इससे बड़ी ग्लानि हुई और वह जैसे जैसे अपना पीड़ा छुड़ाकर अपना कर्तव्य निश्चित करने के लिए वन में किसी मुनि के पास गया और उनका पथ प्रदर्शन चाहा। प्रद्युम्न ने अपनी चतुरता से कञ्चनमाला से तीन विद्यायें ले ली। कञ्चनमाला ने अपनी इच्छा पूरी न होने एवं तीनों विद्याओं के दिन जाने पर स्त्री चरित्र फैलाया और प्रद्युम्न पर दोषारोपण किया। उसने अपना अङ्ग प्रत्यङ्ग विकृत कर लिया। कालसंवर यह सब जानकर बड़ा दुखी और क्रोधित हुआ। उसने अपने ५०० पुत्रों को बुलाकर प्रद्युम्न को मारने के लिए कहा। कुमार पिता की बात सुन कर बड़े खुश हुए। वे प्रद्युम्न को बुला कर वन में ले गये किन्तु उसे आलोकिकी विद्या द्वारा अपने भाइयों के इरादे का पता लग गया और उसे बड़ा क्रोध आया। उसने सभी कुमारों को नागपाश से बाँधकर एक शिला के नीचे दबा दिया।

कालसंवर यह वृत्तान्त जानकर बड़ा कुपित हुआ। वह एक बड़ी सेना लेकर प्रद्युम्न से लड़ने चला। प्रद्युम्न ने भी विद्याओं के द्वारा मायामयी सेना एकत्रित करदी। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। प्रद्युम्न के आगे कालसंवर नहीं टहर सका। तब कालसंवर अपनी प्रिया कञ्चनमाला के पास तीनों विद्यायें लेने के लिए दौड़ा किन्तु जब उसे यह ज्ञात हुआ कि प्रद्युम्न पहिले से ही विद्याओं को छल कर ले गया है तो उसे कञ्चनमाला के सारे भेद का

पता लग गया। फिर भी कालसंवर प्रद्युम्न से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा इतने में ही नारद ऋषि वहां आगये। उन्होंने जो कुछ कहा उससे सारी स्थिति बदल गई और युद्ध बन्द हो गया। इससे कालसंवर को बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रद्युम्न ने भी सब कुमारों को बन्धन मुक्त कर दिया।

कालसंवर से आज्ञा लेकर प्रद्युम्न ने नारद ऋषि के माथ द्वारका-नगरी के लिए विमान द्वारा प्रस्थान किया। मार्ग में हस्तिनापुर पड़ा। वहा दुर्योधन की कन्या उदधि कुमारी का सत्यभामा के पुत्र भानुकुमार के साथ विवाह होने के लिए अभिप्रेक हो रहा था। नारद द्वारा यह जानकर कि उदधि कुमारी प्रद्युम्न की मांग है वह भील का भेष धारण कर उन लोगों में मिल गया और उदधि कुमारी को बलपूर्वक छीन कर ले गया। प्रद्युम्न उस कन्या को विमान में बैठा कर द्वारका की ओर चल पड़ा। द्वारका पहुँच कर नारद ने वहां के विभिन्न महलों का उसे परिचय दिया।

जब चतुरंगिणी सेना के साथ आते हुए भानुकुमार को देखा तब प्रद्युम्न विमान से उतरा और उसने एक घूड़े विप्र का भेष बना लिया। एक मायामय चंचल घोड़ा अपने साथ ले लिया। घोड़े को देखकर भानु का मन ललचाया। उसने विप्र से उसका मूल्य पूछा। विप्र ने घोड़े का इतना मूल्य मांगा जो भानु को बचित नहीं लगा। भानुकुमार विप्र के कहने पर घोड़े पर चढ़ा और घोड़े को न संभाल सकने के कारण गिर पड़ा जिसे देखकर सारे लोग हंसने लगे। जब बलदेवजी ने विप्र भेषधारी प्रद्युम्न से ही घोड़े पर चढ़ने को कहा तो वह बहुत भारी बन गया और घोड़े पर चढ़ाने के लिए प्रार्थना करने लगा। दस बौस योद्धा भी उमे उठाकर घोड़े पर न चढ़ा सके तो भानुकुमार स्वयं उसे हटाने आगे आया। तब वह भानु के गले पर पैर रखकर चढ़ गया और आकाश में उड़ गया।

पुनः प्रद्युम्न ने अपना रूप बदलकर दो मायामय घोड़े बनाये। उन मायामय घोड़ों को उसने राजा के उद्यान में छोड़ दिया। घोड़ों ने राजा के सारे उद्यान को चौपट कर दिया। इसके पश्चात् उसने दो बन्दर उत्पन्न किये जिन्होंने सत्यभामा की यात्री को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जब भानुकुमार यात्री में आया तो मायामय मच्छर उत्पन्न कर उसे यात्री से भगा दिया। इतने में ही प्रद्युम्न को मार्ग में आती हुई बुद्ध स्त्रियां मिली, जो मंगल गीत गा रही थी। उनको भी बमने रथ में घोड़े और ऊंट जोड़ कर रास्ते में गिरा दिया। इसके बाद वह एक प्रादराय का रूप धारण कर लाठी टेकता हुआ सत्यभामा की यात्री पर गया और कमंडलु में जल मांगने लगा। पानी भरने से मना

करने पर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने बावड़ी की रक्षा करने वाली दासियों के केश मूढ़ लिये। जल सोखिणी विद्या द्वारा उसने बावड़ी का सारा पानी सुखा दिया तथा कमंडलु में भर लिया और फिर नगर के चौराहे पर उस कमंडलु के पानी को उड़ेल दिया जिससे सारे बाजार में पानी ही पानी हो गया।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न मायामय मंडा बना कर वसुदेव के महल पर पहुँचा। वसुदेव मेंढे से लड़ने लगे। वे मेंढे से लड़ने के शौकीन थे। मेंढे ने वसुदेव की टांग तोड़ कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। फिर प्रद्युम्न वहाँ से सत्यभामा के महल पर जाकर भोजन-भोजन चिल्लाने लगा। सत्यभामा ने उसे आदर से भोजन कराया, पर उस भेषधारी ब्राह्मण ने सत्यभामा का जितना भी सामान जौमन के लिये लिया था सभी चट कर दिया और फिर भी भूखा ही बना रहा। इसके पश्चात् उसने एक और कौतुक किया कि जो कुछ उसने खाया था वह सब धमन कर उसका आंगन भर दिया। इससे सत्यभामा बड़ी दुखी एवं तिरस्कृत हुई।

इसके बाद वह ब्रह्मचारी का भेष धारण कर अपनी माता रुक्मिणी के महल में गया। रुक्मिणी अपने पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में थी क्योंकि केवली कथित उसके आने के मभी चिह्न दिखाई दे रहे थे। इतने में ही उसने एक ब्रह्मचारी को आता हुआ देखा। रुक्मिणी ने उसे सत्कारपूर्वक आसन दिया। वह ब्रह्मचारी बड़ा भूखा था, भोजन की वाचना करने लगा। प्रद्युम्न की माया से रुक्मिणी को घर में कुछ भी भोजन नहीं मिला तो उसने नारायण के खा सकने योग्य लड्डू उस ब्रह्मचारी को परोस दिये। उन अत्यन्त गरिष्ठ सारे लड्डूओं को उसे खात देख कर रुक्मिणी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसकी बातचीत से उसको सन्देह हुआ कि सम्भवतः वही उसका पुत्र हो। जब सचाई जानने के लिए माता बहुत बेचैन हो गई तब अकस्मात् प्रद्युम्न अपने असली सुन्दर रूप में प्रकट हो गया और उसे देख कर माता की प्रसन्नता का पार न रहा।

सत्यभामा की दासियां जब पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार रुक्मिणी के केश लेने आईं तो प्रद्युम्न ने उन्हें भी विकृत कर दिया। इस समाचार को सुन कर बलभद्र बड़े क्रुपित हुए और रुक्मिणी के पास आये। प्रद्युम्न विक्रिया से अपना स्थूलकाय ब्राह्मण का रूप बना कर महल के द्वार के आगे लेट गया। बलभद्र ने बड़ी कठिनता से उसे हटा कर महल में प्रवेश किया, पर इतने में ही प्रद्युम्न ने सिंह रूप धारण किया और बलभद्र का पैर पकड़ कर

अखाड़े में डाल दिया। फिर उमने माता को उस विमान में ले जाकर बैठा दिया जहाँ नारद और उद्धि कुमारी बैठे थे।

इसके पश्चात् प्रद्युम्न ने मायामयी रुक्मिणी की चाँह पकड़ कर उसे श्रीकृष्ण की सभा के आगे से ले जाते हुए ललकारा कि यदि किसी वीर में सामर्थ्य हो तो वह श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी को छुड़ा कर ले जावे। फिर क्या था, सभा में बड़ी खलबली मच गई और शीघ्र ही युद्ध की तैयारी होने लगी। श्रीकृष्ण अपने अनेक योद्धाओं को साथ लेकर रणभूमि में आ बटे किन्तु प्रद्युम्न ने सभी योद्धाओं को मायामय नीद में सुला दिया। इससे श्रीकृष्ण थड़े क्रोधित हुए और प्रद्युम्न को ललकार कर कहने लगे कि यह रुक्मिणी को वापस लौटा कर ही अपने प्राणों की रक्षा कर सकेगा। किन्तु वह कब मानने वाला था। आखिर दोनों में युद्ध होने लगा। श्रीकृष्ण जी जो भी धार करते उसे प्रद्युम्न अतिलम्ब काट देता। इस तरह दोनों वीरों में भयंकर लड़ाई हुई। जब श्री कृष्ण कुपित होकर निर्णायक युद्ध करने को तैयार होने लगे तो नारद वहाँ आ गये और दोनों का परस्पर में परिचय करवाया। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के पैरों में गिर गया और श्रीकृष्ण ने आनन्द विभोर होकर उसका सिंग चूम लिया। प्रद्युम्न ने अपनी मोहिनी माया को समेटा और मारी सेना उठ खड़ी हुई। घर घर तोरण द्वार बाँधे गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल कलश स्थापित कर नगर प्रवेश पर उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। इस तरह यह कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। फिर प्रद्युम्न का राज्याभिषेक का महोत्सव हुआ, तब कालसवर और कंचनमाला को भी बुलाया गया। इसके पश्चात् प्रद्युम्न का विवाह थड़े ठाठ धाट से किया गया। मत्स्यभामा ने अपने पुत्र भानुकुमार का विवाह भी सम्पन्न किया। वे सब बहुत दिनों तक सुखपूर्वक जीवन की सुविधाओं का उपभोग करते रहे।

कुछ समय पश्चात् शंभुकुमार का जीव अच्युत स्वर्ग से श्री कृष्ण की सभा में आया और एक अनुपम हार देकर उनसे कहने लगा कि जिस रानी को आप यह हार देंगे उसी की कृष्ण से उमका जन्म होगा। श्रीकृष्ण यह हार मत्स्यभामा को देना चाहते थे, किन्तु प्रद्युम्न ने अपनी विद्या के बल से जामवन्ती का रूप मत्स्यभामा का सा बना कर श्री कृष्ण को धोरे में डाल दिया और यह हार उमके गले में डलवा दिया। इसके बाद जामवन्ती और मत्स्यभामा दोनों के क्रमशः शंभुकुमार और सुभानुकुमार नाम के पुत्र हुए। दोनों साथ साथ ही वृद्धि को प्राप्त हुए। जब वे थड़े हुए तो एक दिन दोनों

कुमारों ने जुआ खेला और शत्रुकुमार ने सुभानुकुमार की सारी सम्पत्ति जीत ली ।

जब समयानुसार सुभानुकुमार का विवाह हो गया तो रुक्मिणी ने अपने भाई रूपचन्द के पाम कुण्डलपुर प्रद्युम्न एवं शत्रुकुमार को अपनी कन्या देने के लिये दूत भेजा, किन्तु रूपचन्द ने प्रस्ताव स्वीकार करने के स्थान पर दूत को बुरा भला कहा और यादव वंश के साथ कभी सम्बन्ध न करने की प्रतिज्ञा प्रकट की । रुक्मिणी यह जान कर बहुत दुखी हुई । प्रद्युम्न को भी बड़ा क्रोध आया । प्रद्युम्न भेष बदल कर कुण्डलपुर गया, तथा युद्ध में रूपचन्द को हरा कर उसे श्री कृष्ण के पैरों पर लाकर डाल दिया । अन्त में दोनों में मेल हो गया और रूपचन्द ने अपनी पुत्रियां दोनों कुमारों को भेंट कर दी ।

प्रद्युम्न कुमार ने बहुत वर्षों तक सांसारिक सुखों की भोगा । एक दिन यह नेमिनाथ भगवान के समवसरण में पहुँचा । वहाँ केवली के मुख से द्वारका और यादवों के विनाश का भविष्य सुना तो उसे संसार एवं भोगों से विरक्ति हो गई । माता-पिता के बहुत समझाने पर भी उसने न माना और जिन दीक्षा ले ली । तपश्चरण कर प्रद्युम्न ने घातिया कर्मों को नाश किया और केवल ज्ञान प्राप्त कर आयु के अन्त में सिद्ध पद को प्राप्त किया ।

प्रद्युम्न चरित की कथा का आधार एवं उसके विभिन्न रूपः—

जैन चरित काव्यों एवं कथाओं के मुख्यतः दो आधार हैं—एक महापुराण तथा दूसरा हरिवंश पुराण । आगे चल कर इन्हीं दो पुराणों की धारों विभिन्न रूपों में प्रवाहित हुई हैं । प्रद्युम्न चरित की कथा जिनसेना-चार्य कृत हरिवंश पुराण से ली गई है । यद्यपि कवि ने अपनी रचना में इसका कोई उल्लेख नहीं किया है, किन्तु जो कथा प्रद्युम्न के जीवन के संबन्ध में हरिवंश पुराण में दी हुई है । उसी से मिलता जुलता वर्णन प्रद्युम्न चरित में मिलता है । दोनों कथाओं में केवल एक ही स्थान पर उल्लेखनीय विरोध है । हरिवंश पुराण में रुक्मिणी पत्र भेज कर श्रीकृष्ण को अपने घरण के लिये बुलाती है जबकि प्रद्युम्न चरित में नारद के अनुरोध पर श्रीकृष्ण विवाह के लिये जाते हैं ।

गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण (महापुराण का उत्तरार्द्ध) में प्रद्युम्न चरित की कथा सक्षेप रूप में दी गई है, इसलिये उसमें नारद का श्रीकृष्ण

कौसभा में आगमन, सत्यभामा द्वारा नारद को सम्मान न देना, नारद द्वारा सत्यभामा का मानमर्दन करने का संकल्प, श्री कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण एवं शिशुपाल घघ, प्रद्युम्न का मुनि के पास जाना आदि घटनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। प्रद्युम्न चरित में कंचनमाला द्वारा प्रद्युम्न को तीन विद्याओं का देना लिखा है जबकि उत्तरपुराण के अनुसार प्रद्युम्न ने इससे ब्रह्मपति नाम की विद्या लेकर उनकी सिद्धि की थी।

महाकवि सिंह द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के काव्य 'पञ्जुणकहा' (१३ वीं शताब्दी) और प्रस्तुत प्रद्युम्न चरित की कथा में भी साम्य है। केवल पञ्जुणकहा में प्रत्येक घटना का विस्तृत वर्णन करने के साथ-साथ प्रद्युम्न के पूर्वजों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है जबकि प्रद्युम्न चरित में इनका केवल नामोल्लेख है। इसके अतिरिक्त 'पञ्जुणकहा' की कथा श्रेणिकराजा द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर गौतम गणधर द्वारा कहलाई गई है किन्तु सधारु कवि ने मंगलाचरण के पश्चात् ही कथा का प्रारम्भ कर दिया है।

महासेनाचार्य कृत संस्कृत प्रद्युम्न चरित ११ वीं शताब्दी की रचना है। रचना १४ सर्गों में विभाजित है। पञ्जुणकहा की तरह घटनाओं का इसमें भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है इसमें और प्रद्युम्न चरित्र की कथा में पूर्णतः साम्य है।

इसी प्रकार हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिपिण्डालाकापुरुषचरित' में प्रद्युम्न के जीवन की जो कथा दी गई है उसमें और सधारु कवि द्वारा वर्णित कथा में भी प्रायः समानता है।

प्रद्युम्न का जीवन जैन साहित्यों के लिये ही नहीं किन्तु जैनतर साहित्यों के लिये भी आकर्षण की वस्तु रहा है। विष्णु पुराण के पंचम अंश के २६ वें तथा २७ वें अध्याय में रुक्मिणी एव प्रद्युम्न की जो कथा दी हुई है, वह निम्न प्रकार है :—

रुक्मिणी कुण्डिनपुर नगर के भीष्मक राजा की कन्या थी। श्री कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ और रुक्मिणी ने कृष्ण के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु भीष्मक ने शिशुपाल को रुक्मिणी देने का निश्चय कर लिया। इस कारण विवाह के एक दिन पूर्व ही श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया और इसके बाद उसके साथ उसका विधिवत् विवाह सम्पन्न

हुआ। काल क्रम से रुक्मिणी के प्रद्युम्न पुत्र उत्पन्न हुआ। इसे जन्म लेने के छठे दिन ही शम्भरासुर ने हर लिया और उसे लग्न समुद्र में डाल दिया। समुद्र में उस बालक को एक मत्स्य ने निगल लिया। मत्स्यों ने उस मत्स्य को अपने जाल में फाँस लिया और शम्भर को भेंट कर दिया। जब शम्भर की स्त्री मायावती उस मछली का पेट चीरने लगी तो यह बालक उसमें से जीवित निकल आया। इतने में ही वहाँ नारद ऋषि आये और रानी को सारी घटना सुना दी। मायावती उस बालक पर मोहित हो गई और उसका अनुरागपूर्वक पालन किया। उसने उसे संव प्रकार की माया सिखा दी। जब प्रद्युम्न को अपनी पूर्व घटना का पता चला तो उसने शम्भरासुर को लड़ने के लिये ललकारा और उसे युद्ध में मार दिया तथा अन्त में मायावती के साथ द्वारका के लिये रवाना हो गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो रुक्मिणी उसे पहिचान न सकी, किन्तु नारद ऋषि के आने पर सारी घटना स्पष्ट हो गई। कुछ दिनों परान् प्रद्युम्न ने रुक्मी की सुन्दरी कन्या को स्वयंवर में ग्रहण किया तथा उससे अनिरुद्ध नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ।

उक्त कथा और प्रद्युम्न चरित्र में निम्न प्रकार से साम्य एवं असाम्य है :—

- साम्य—(१) प्रद्युम्न को श्री कृष्ण एवं रुक्मिणी का पुत्र मानना।
 (२) जन्म के छठी रात्रि को ही असुर द्वारा अपहरण।
 (३) नारद ऋषि द्वारा रुक्मिणी को आकर सारी स्थिति समझाना।
 (४) रुक्मी की पुत्री से प्रद्युम्न का विवाह।

असाम्य—प्रद्युम्न को शम्भरासुर द्वारा समुद्र में डाल देना तथा वहाँ उसे मत्स्य द्वारा निगल जाना और फिर उसी के घर जाकर मत्स्य के पेट से जीवित निकलना, मायावती का मोहित होना और बालक प्रद्युम्न का पालन करना और अन्त में युवा होने पर शम्भरासुर को मार कर मायावती से विवाह करना।

कथाओं के साम्य और असाम्य होने पर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय वाङ्मय में प्रद्युम्न का चरित्र लोकप्रिय एवं आकर्षण की वस्तु रहा है।

और साहित्य में प्रद्युम्न का उल्लेख है या नहीं और यदि है तो किस रूप में है साधनाभाव के कारण इसका पता हम नहीं लगा सके।

कवि का परिचय

रचना के प्रारम्भ में कवि ने सरस्वती को नमस्कार करते हुए अपना नामोल्लेख 'सो सधार पणमइ सरसुति' इस प्रकार किया है। इसलिये कवि का नाम 'सधार' होना चाहिए, किन्तु अनेक स्थलों पर 'सधारु' नाम भी दिया हुआ है। अन्य प्रतियों में भी अधिकांश स्थलों पर 'सधारु' नाम आया है इसलिये कवि का नाम 'सधारु' ही ठीक प्रतीत होता है। कवि ने अपने जन्म से अग्रवाल जाति को विभूषित किया था। इनकी माता का नाम सुधन था जो गुण वाली थी। पिता का नाम साहू महराज था, अन्य प्रतियों में साहू महराज एवं समहराज भी मिलता है। वे एरच्छ नगर में रहते थे। एरच्छ नगर के नाम एरछ, एरिछि, एलच, एयरच्छ एवं एरस के पाठान्तर भेद से भी मिलते हैं। किन्तु इन सब में मूल प्रति वाला एरच्छ ही अधिक ठीक जान पड़ता है। इस नगर का उत्तर प्रदेश में होना अधिक सम्भव है। डा० प्रासुदेवशरण अग्रवाल ने भी जैन मन्देश आगरा के एक लेख में इसकी पुष्टि की है। नाहटाजी ने इस नगर को मध्य प्रदेश में होना माना है जो ठीक मालूम नहीं होता। उस समय उस नगर में बहुत से श्रावक लोग रहते थे जो दशलक्षण धर्म का पालन करते थे।

११११

अपना परिचय देने के पश्चात् कवि ने लिखा है कि जो भी प्रद्युम्न चरित को 'पढ़ेगा वही मरने' के पश्चात् स्वर्ग में देवता के रूप में उत्पन्न होगा तथा अन्त में मुक्ति रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करेगा। जो मनुष्य इसका श्रवण करेगा उसके अशुभ कर्म स्वयमेव दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसको दूसरों को सुनावेगा उस पर प्रद्युम्न प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ को लिखाने वाले, लिखने वाले, पढ़ाने वाले सभी लोगों को अपार पुण्य की प्राप्ति होना लिखा है, क्योंकि ग्रन्थ का चरित पुण्य का भण्डार है। अन्त में कवि ने अपनी लघुता प्रदर्शित करते हुए कहा है कि वह स्वयं कम बुद्धि वाला है तथा अक्षर मात्रा का भेद नहीं जानता, इसलिये छोटी बड़ी मात्रा

+ महसामी कउ वीयउ बलाणु, तुम पञ्जुन पायउ निरवाणु ।

अगरवाल की मेरी जात, पुर अग्रोए मुदि उतपाति ॥

सुधणु जणणी गुणवइ उर धारउ, सा महयव धरह अन्तरिउ ।

एरछ नगर वंसते जानि, मुण्डिउ चरित मह रचिउ पुराणु ॥

सावयलोय वसहि पुर माहि, दइ लक्षण ते धर्म कइ ।

दस रिम मानइ दुविया मेउ, भवहि चितह जियेसइ देउ ॥

अब रहा सम्यन् १४११ का रचना काल । इस रचना सम्वत् के सम्यन्ध में सभी विद्वान् एक मत हैं । श्री नाहटाजी ने प्रद्युम्न चरित के रचनाकाल का विवेचन करते हुए लिखा है ^१ कि संवत् १४११ वाला पाठ सही है किन्तु उनका कहना है कि यदी पचमी, सुदी पचमी और नवमी इन तीन दिनों में स्वाति नक्षत्र नहीं पड़ता । डा० माताप्रसाद जी ने गणित पद्धति के आधार पर जो तिथि शुद्ध करके भेजी है वह संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार है । सर्व रिपोर्ट के निरीक्षक रायब्राह्मदुर भव० डा० हीरालाल ने अपनी रिपोर्ट ^२ में लिखा है कि संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार का समय ठीक मालूम देता है । लेकिन उनका भी बुद्धि का उल्लेख नवीन गणना पद्धति के अनुसार ठीक नहीं बैठता है । इसलिए उक्त सभी दलीलों के आधार पर संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार वाला पाठ ही सही मालूम देता है । प्रद्युम्न चरित में जो 'भाद्र दिन पचमी सो सारु' पाठ है उसके स्थान पर सम्भवतः मूल पाठ 'भाद्र सुदी पचमी सो सारु' यही होना चाहिये ।

प्रद्युम्नचरित के पूर्व का हिन्दी साहित्य

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र शुक्ल नेदस बीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के काल को हिन्दी साहित्य का आदिकाल माना है । शुक्लजी ने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा—काव्य की १२ पुस्तकें इतिहास में विवेचनीय मानी है । इनके नाम ये हैं (१) विजयपाल रासो (२) हम्मीर रासो (३) कीर्तिलता (४) कीर्तिपताका (५) खुमानरासो (६) वीसलदेवरासो (७) पृथ्वीराजरासो (८) जयचन्द्रप्रकाश (९) जयमयक जय चन्द्रिका (१०) परमाल रामो (११) खुशरों की पहेलियां और (१२) विद्यापति पदावलि । उनके मतानुसार इन्हीं बारह पुस्तकों की दृष्टि से आदि काल का लक्षण निरूपण और नामकरण हो सकता है । इनमें से अन्तिम दो तथा 'वीसलदेवरासो' को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीर रसात्मक हैं । अतः आदिकाल का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है ।

किन्तु शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल के जिस रूप का

१. हिन्दी अनुशीलन वर्ष ६ अंक १-४

२. He wrote the work in Samvat 1411 on Saturday 5th of the dark of Bhadva month which on calculations regularly Corresponds to Saturday the 9th August 1354 A. D.

निर्देश किया है वह सही नहीं जान पड़ता। उससे हिन्दी के विद्वान् यथा राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि भी सहमत नहीं हैं। जिन वारह रचनाओं के आधार पर शुक्लजी ने हिन्दी का आदिकाल निर्धारित किया था उनमें से अधिकांश रचनायें विभिन्न विद्वानों द्वारा परवर्ती काल की सिद्ध कर दी गयी हैं। डा० द्विवेदी का कहना है 'कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश के बढ़ाव का ही काल है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी। इसी प्रकार जब से राहुलजी ने जैन कवि स्वयम्भू के पउमचरिय (जैन रामायण) को हिन्दी भाषा का आदि महाकाव्य घोषित किया है तब से हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काल ११ वीं शताब्दी से आरम्भ न होकर ८ वीं शताब्दी तक चला गया है। हिन्दी भाषा के इन प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी पहिले अपभ्रंश के रूप में (जिसका नाम प्राचीन हिन्दी अधिक उचित होगा) जन साधारण के सामने आयी और फिर शनैः शनैः अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया। इसलिये अब हमें हिन्दी साहित्य की सीमा को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा। हिन्दी के इन ६०० वर्षों में (७०१ से १३०० तक) अपभ्रंश साहित्य प्रचुरमात्रा में लिखा गया और वह भी पूर्ण रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण से। वास्तव में अपभ्रंश साहित्य के महत्त्व को यदि आज से ५० वर्ष पूर्व ही समझ लिया जाता तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास दूसरी तरह ही लिखा गया होता। लेकिन डा० शुक्ल तथा श्यामसुन्दरदास आदि हिन्दी इतिहास के विद्वानों का अपभ्रंश साहित्य की ओर ध्यान नहीं गया।

हिन्दी भाषा की इन प्रारम्भिक शताब्दियों में यद्यपि सभी घर्षों के विद्वानों ने रचनायें की थी, किन्तु प्राचीन हिन्दी भाषा का अधिकांश साहित्य जैन विद्वानों ने ही लिखा है। महाकवि स्वयम्भू के पूर्व भी अपभ्रंश साहित्य कितना समृद्ध था यह 'स्वयम्भू छन्द' में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ६० कवियों के उद्धरणों से अच्छी तरह जाना जा सकता है।

अब यहां ८ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक होने वाले कुछ प्रमुख कवियों का परिचय दिया जा रहा है :—

८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में योगेन्दु हुये जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार दोहा' की रचना की। दोनों ही आध्यात्मिक विषय की उच्चकोटि की रचनायें हैं।

के लिये अथवा अक्षरों के कम अधिक प्रयोग के लिये पहिले ही परिद्धत वर्ग से वह क्षमा याचना करता है ।

रचना काल :—

। अब तक प्रद्युम्न चरित्र की जितनी प्रतियां उपलब्ध हुई हैं उन, सभी प्रतियों में एकसा रचना काल नहीं मिलता है । इन प्रतियों में रचना काल के तीन सम्वत् १३११, १४११ एवं १५११ मिलते हैं । यहां हमें यह देखना है कि इन तीनों सम्वत्तों में कौनसा सही सम्वत् है । विभिन्न प्रतियों में निम्न प्रकार से रचना काल का उल्लेख मिलता है:—

(१) अमवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर रीवां एवं आत्मानन्द जैन सभा अम्बाला की प्रतियों में सम्वत् १३११ लिखा हुआ है ।

(२) धधीचन्दजी का जैन मन्दिर जयपुर, खण्डेलवाल पंचायती मन्दिर कामां, जैन मन्दिर देहली और वाराणसी वाली प्रतियों में रचना सम्वत् १४११ दिया हुआ है ।

(३) सिंधिया औरिएंटल इन्स्टीट्यूट उज्जैन वाली प्रति में सम्वत् १५११ दिया हुआ है ।

सम्वत् १३११ वाले रचना काल के सम्वन्ध में जो पाठ है, वह निम्न प्रकार है:—

संवत् तेरहसं हुइ गये ऊपर अधिक इग्यारा भये ।
भादो सुदि पचमी दिन सार, स्वाति नक्षत्र जनि सनिवार ।

इस पद्य के अनुसार प्रद्युम्न चरित्र सम्वत् १३११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुआ था ।

सम्वत् १४११ वाला रचना काल जो ४ प्रतियों में उपलब्ध होता है, निम्न प्रकार है:—

सरसकया रसु उपजइ घणउ, निसुराहु चरितु पजूसह तरणउ ।
संवत् चौदहसं हुइ गए, ऊपर अधिक इग्यारह भए ।
भावव दिन पंचइ सो सार, स्वाति नक्षत्र सनोश्चर वारु ॥१२॥

जयपुर वाली प्रात

सरसकथा रस उपजइ घणउ, निसुणउ चरित पज्जउवनतणउ ।
 संवत् चउदसइ इग्यार, ऊपरि अधिक भई ग्यार ।
 भादव सुदि नवमी जे सार, स्वाति नक्षत्र सनीचर वार ।
 देवलोक आणोत्तर सार, हरिवंश आव्याउ वंश सवार ॥१॥
 खण्डेलवाल जैन पंचायनी मन्दिर कामां

उक्त पत्रों में जयपुर वाली प्रति में सम्बन् १४११ भाद्रपद मास पंचम
 शनिवार स्वाति नक्षत्र एवं कामां वाली प्रति में सम्बन् १४११ भाद्रपद सुदी
 शनिवार स्वाति नक्षत्र रचना काल दिया हुआ है। दोनों प्रतियों में तिथि
 के अतिरिक्त शेष बातें समान हैं।

इसी प्रकार उज्जैन वाली प्रति में निम्न पाठ है :—

संवत् पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि श्ररु तह भया ।
 भादव वदि पंचमि तिथि सार, स्वाति नक्षत्र सनीस्वरवार ॥

इसके अनुसार 'प्रद्युम्न चरित' की रचना सम्बन् १५११ भाद्रपद शु
 ५ शनिवार स्वाति नक्षत्र के दिन पूर्ण हुई थी।

इस प्रकार सभी प्रतियों में भाद्रपद मास शनिवार एवं स्वाति नक्षत्र
 इन तीनों का एक-सा उल्लेख मिलता है। इसलिये यह तो निश्चिन्त है।
 प्रद्युम्न चरित की रचना भाद्रपद मास एव शनिवार के दिन हुई थी। कि
 रचना सम्बन् फौजना है, यह हमें देखना है। तीनों रचना सम्बन्धों में सम्बन्
 १५११ वाला रचना काल तो मही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि पद्य तो २
 सम्बन् अभी तक एक ही प्रति में उपलब्ध हुआ है। इसके अनि
 'पंचमइ' पाठ स्वयं भी गलत है। हमने पन्द्रहवीं का अर्थ नहीं निकल
 इसलिये सम्बन् १५११ वाले पाठ को मही मानना युक्तिमग्न नहीं है।
 सम्बन् १३११ वाला पाठ जो अभी तक ३ प्रतियों में मिला है, इसके सम्बन्
 में भी हमारा यही मत है कि गुण सागर नामक द्वितीय विद्वान् ने सम्बन्
 चौदहवीं के स्थान पर तेरहमइ पाठ परिवर्तित कर दिया तथा 'सुधि
 चरित मद्रचिउ पुताण' के स्थान पर इस रचना का कर्ता स्वयं बनने
 लोभ से प्रेरित होकर 'गुण सागर यह कियो यन्तान' पाठ बदल दिया। इस
 अनिच्छित इस कथिमाः प्रार्थी ने आरम्भ के तिन पत्रों में मथारु का नाम
 उनके स्थान पर नये दो मंगलाचरण के पद्य जोड़ दिये।

अब रहा सम्वत् १४११ का रचना काल । इस रचना सम्वत् के सम्वन्ध में सभी विद्वान् एक मत है । श्री नाहटाजी ने प्रद्युम्न चरित के रचनाकाल का विवेचन करते हुए लिखा है ' कि सम्वत् १४११ वाला पाठ सही है किन्तु उनका कहना है कि वदी पचमी, सुदी पचमी और नवमी इन तीन दिनों में स्वाति नक्षत्र नहीं पड़ता । डा० मानाप्रसाद जी ने गणित पद्धति के आधार पर जो तिथि शुद्ध करके भेजी है वह संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार है । सर्व रिपोर्ट के निरीक्षक रायबाहदुर ग्व० डा० धीरालाल ने अपनी रिपोर्ट ^२ में लिखा है कि संवत् १४११ भाद्रवा बुदी ५ शनिवार का समय ठीक मालूम देता है । लेकिन उनका भी बुद्धि का उल्लेख नवीन गणना पद्धति के अनुसार ठीक नहीं बैठता है । इसलिए उक्त सभी दलीलों के आधार पर संवत् १४११ भाद्रवा सुदी ५ शनिवार वाला पाठ ही सही मालूम देता है । प्रद्युम्न चरित में जो 'भाद्रव दिन पचमी सो सारु' पाठ है उसके स्थान पर संभवतः मूल पाठ 'भाद्रव सुदी पचमी सो सारु' यही होना चाहिये ।

प्रद्युम्नचरित के पूर्व का हिन्दी साहित्य

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् प० रामचन्द्र शुक्ल नेदस वीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के काल को हिन्दी साहित्य का आदिकाल माना है । शुक्लजी ने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा—काव्य की १२ पुस्तकें इतिहास में विवेचनीय मानी हैं । इनके नाम ये हैं (१) विजयपाल रासो (२) हम्मीर रासो (३) कीर्त्तिलता (४) कीर्त्तिपताका (५) खुमानरासो (६) वीसलदेवरासो (७) पृथ्वीराजरासो (८) जयचन्द्रप्रकाश (९) जयमयंक जय चन्द्रिका (१०) परमाल रासो (११) खुशरों की पहेलियां और (१२) विद्यापति पदावलि । उनके मतानुसार इन्हीं बारह पुस्तकों की दृष्टि से आदि काल का लक्षण निरूपण और नामकरण हो सकता है । इनमें से अन्तिम दो तथा 'वीसलदेवरासो' को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीर रसात्मक हैं । अतः आदिकाल का नाम वीरगाथा काल ही रखा जा सकता है ।

किन्तु शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के आदिकाल के जिस रूप का

१. हिन्दी अनुशीलन वर्ष ६ अंक १-४

२. He wrote the work in Samvat 1411 on Saturday 5th of the dark of Bhadva month which on calculations regularly Corresponds to Saturday the 9th August 1354 A. D.

निर्देश किया है वह सही नहीं जान पड़ता। उससे हिन्दी के विद्वान् यथा राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि भी सहमत नहीं हैं। जिन वारह रचनाओं के आधार पर शुक्लजी ने हिन्दी का आदिकाल निर्धारित किया था उनमें से अधिकांश रचनायें विभिन्न विद्वानों द्वारा परवर्ती काल की सिद्ध कर दी गयी हैं। डा० द्विवेदी का कहना है कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का काल जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश के बढाव का ही काल है। इसी अपभ्रंश के बढाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी। इसी प्रकार जब से राहुलजी ने जैन कवि स्वयम्भू के पत्रमचरिय (जैन रामायण) को हिन्दी भाषा का आदि महाकाव्य घोषित किया है तब से हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक काल ११ वीं शताब्दी से आरम्भ न होकर ८ वीं शताब्दी तक चला गया है। हिन्दी भाषा के इन प्रारम्भिक वर्षों में हिन्दी पहिले अपभ्रंश के रूप में (जिसका नाम प्राचीन हिन्दी अधिक उचित होगा) जन साधारण के सामने आयी और फिर शनैः शनैः अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया। इसलिये अब हमें हिन्दी साहित्य की सीमा को अधिक विस्तृत करना पड़ेगा। हिन्दी के इन ६०० वर्षों में (७०१ से १३०० तक) अपभ्रंश साहित्य प्रचुरमात्रा में लिखा गया और वह भी पूर्ण रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण से। वास्तव में अपभ्रंश साहित्य के महत्त्व को यदि आज से १० वर्ष पूर्व ही समझ लिया जाता तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास दूसरी तरह ही लिखा गया होता। लेकिन डा० शुक्ल तथा श्यामसुन्दरदास आदि हिन्दी इतिहास के विद्वानों का अपभ्रंश साहित्य की ओर ध्यान नहीं गया।

हिन्दी भाषा की इन प्रारम्भिक शताब्दियों में यद्यपि सभी धर्मों के विद्वानों ने रचनायें की थी, किन्तु प्राचीन हिन्दी भाषा का अधिकांश साहित्य जैन विद्वानों ने ही लिखा है। महाकवि स्वयम्भू के पूर्व भी अपभ्रंश साहित्य कितना समृद्ध था यह 'स्वयम्भू छन्द' में प्राकृत एवं अपभ्रंश के ६० कवियों के उद्धरणों से अच्छी तरह जाना जा सकता है।

अब यहाँ ८ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक होने वाले कुछ प्रमुख कवियों का परिचय दिया जा रहा है :—

८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में योगेन्दु हुये जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में 'परमात्म प्रकाश' एवं 'योगसार दोहा' की रचना की। दोनों ही आध्यात्मिक विषय की उच्चकोटि की रचनायें हैं।

वर्तमान उपलब्ध कवियों में स्वयम्भू अपभ्रंश के पहिले महा कवि हैं जिनकी रचनायें उपलब्ध होती हैं। 'पञ्चमचरित', 'रिट्टणेमिचरित' तथा 'स्वयम्भू हृन्द' इनकी प्राप्त रचनाओं में तथा 'पंचमीचरित' अनुपलब्ध रचनाओं में से हैं। 'स्वयम्भू' अपने समय के ही नहीं किन्तु अपने बाद होने वाले कवियों में भी उत्कृष्ट भाषा शास्त्री थे। इनके काव्यों में घटना बाहुल्य के वर्णन के साथ-साथ काव्यत्व का सर्वत्र माधुर्य दृष्टिगोचर होता है। स्वयम्भू युग प्रधान कवि थे, इनने अपने काव्यों की रचना सर्वथा निडर होकर की थी। इसके बाद के सारे अपभ्रंश एवं बहुत कुछ अंशों में हिन्दी साहित्य पर भी इनकी वर्णन शैली का पूर्णतः प्रभाव पड़ा है।

१० वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में देवसेन, रामसिंह, पुष्पदन्त, धवल, धनपाल एव पद्मकीर्ति के नाम उल्लेखनीय हैं। मुनि रामसिंह देवसेन के बाद के विद्वान् हैं। डा० हीरालालजी ने 'पाहुड दोहा' की प्रस्तावना में इन्हें सन् ६३३ और ११०० के बीच का अर्थात् सम्वत् १००० ई० के लगभग का विद्वान् माना है। रामसिंह स्वयं मुनि थे, इसलिये इन्होंने साधुओं को सम्बोधित करते हुए ग्रन्थ रचना की है। इनका 'पाहुड दोहा' रहस्यवाद एवं अध्यात्मवाद से परिपूर्ण है। १५ वीं शताब्दी में कबीर ने जो अपने पदों द्वारा उपदेश दिया था, वही उपदेश मुनि रामसिंह ने अपने 'पाहुड दोहा' द्वारा प्रसारित किया था।

देवसेन १० वीं शताब्दी के दोहा साहित्य के आदि विद्वान् कहे जा सकते हैं। 'सायवधम्म दोहा' उन्हीं की रचना है, जिसे इन्होंने सम्वत् ६६० के लगभग मालवा प्रान्त की धारा नगरी में पूरा किया था। महाकवि स्वयम्भू की टक्कर के अथवा किन्हीं बातों में तो उनसे भी उत्कृष्ट पुष्पदन्त हुए जिन्होंने 'महापुराण', 'जसहरचरित' एवं 'णायकुमारचरित' की रचना की। इनमें प्रथम प्रबन्ध-काव्य एव शेष दोनों खण्ड काव्य कहे जा सकते हैं। महापुराण अपभ्रंश का श्रेष्ठ काव्य है। पुष्पदन्त अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा उनके काव्यों में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है। धनपाल कवि ने 'भविष्यत्तकहा' की रचना की थी। कवि का जन्म धक्कड़ वैश्य वंश में हुआ था। कवि को अपनी विद्वत्ता पर अभिमान था, इसलिये एक स्थानपर इन्होंने अपने आपको सरस्वती पुत्र भी कहा है। १२२ संधियों और १८ हजार पद्यों में पूर्ण होने वाला 'हरिवंशपुराण' धवल कवि द्वारा इसी शताब्दी में रचा गया था। धवल के इस काव्य की भाषा प्रांजल और प्रवाह-पूर्ण है। स्थान-स्थान पर अलंकारों की छटा पाठक के मन को मोह लेती

है। इसमें अनेक रसों का संमिश्रण बड़े आरूपक ढङ्ग में हुआ है। पद्मकीर्ति ने अपने 'पासणाद्वचरित' को सम्वत् ६६६ में समाप्त किया। भाषा साहित्य की दृष्टि से यह काव्य भी उल्लेखनीय है।

११ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में धीर, नयनन्दि, कनकामर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महाकवि वीर का यद्यपि एक ही काव्य 'जम्बूसामीचरित' उपलब्ध होता है। किन्तु उनकी यह एक ही रचना उनके पाण्डित्य एवं प्रतिभा को प्रकट करने के लिये पर्याप्त है। 'जम्बूसामीचरित' वीर एवं गृहकार रस का अनोखा काव्य है। नयनन्दि ने अपने काव्य 'सुदंमण चरित' को सम्वत् ११०० में समाप्त किया था। ये अपभ्रंश के प्रकांड विद्वान् थे। इसीलिये इन्होंने 'सुदंमणचरित' में महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार पुरुष, स्त्री एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया है। वाण एवं सुवन्धु ने जिस क्लृप्त एव अलंकृत पदावली का संस्कृत गद्य में प्रयोग किया था नयनन्दि ने भी उसी तरह का प्रयोग अपने इस पद्य काव्य में किया है। विविध छन्दों का प्रयोग करने में भी यह कवि प्रवीण थे। इन्होंने अपने काव्य में ५५ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। सकलविधिनिधान काव्य में अपने से पूर्व होने वाले ४० से अधिक कवियों के नाम इन्होंने गिनाये हैं, जिनमें संस्कृत अपभ्रंश दोनों ही भाषाओं के कवि हैं। कनकामर द्वारा निबद्ध 'करकण्डु चरित' भी काव्यत्व की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्य है। इसका भाषा उदात्त भाषों से परिपूर्ण एवं प्रभाव गुणयुक्त है। इसी शताब्दी में होने वाले धादिल का 'पद्ममिरिचरित' एव अच्युत रहमान का 'सन्देशरामक' भी उल्लेखनीय काव्य है।

१२ वीं शताब्दी में होने वाले मुख्य कवियों में श्रीधर, यशःकीर्ति, हेमचन्द्र, हरिभद्र, सोमप्रभ, धिनयचन्द्र आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। हेमचन्द्राचार्य अपने समय के सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। संस्कृत एव प्राकृत भाषा के साथ साथ अपभ्रंश भाषा के छन्दों को भी उन्होंने अपने 'छन्दानुपासन' में उद्धृत किया गया है।

१३ वीं और १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश साहित्य के साथ साथ हिन्दी साहित्य का भी निर्माण होने लगा। इसी शताब्दी में पं० लाखु ने 'त्रिणयत्त चरित' जयनिब्रह्म ने 'शङ्कराणकव्य' कवि मिहने 'पञ्जुहण चरित' आदि काव्य लिखे। १४ वीं शताब्दी में धर्मनूरि का 'जम्बूस्वामीराम', रलह का 'त्रिणयत्त चरित' (सं० १३५४) चेलह का 'चउरीमी गीत' (सं० १३५१) भी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी की रचना

जिणदत्त चउपई है जिसे रलह कवि ने संवत् १३५४ में समाप्त किया था। ५४० से भी अधिक चउपई एवं अन्य छन्दों में निबद्ध यह रचना भाषा साहित्य की दृष्टि से ही नहीं किन्तु काव्यत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अपभ्रंश से हिन्दी में शनैः शनैः शब्दों का किम तरह परिवर्तन हुआ, यह इस काव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। यद्यपि कवि ने इस काव्य में अपभ्रंश शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है किन्तु उनका जिस सुन्दरता से प्रयोग हुआ है उससे वे पूर्णतः हिन्दी भाषा के शब्द मालूम पड़ते हैं। वास्तव में १३ वीं और १४ वीं शताब्दी हिन्दी भाषा की साहित्यिक रचनायें प्रयोग करने के लिये महत्वपूर्ण समय था।

पं० मोतीलाल मेनारिया ने 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में संवत् १०४५ से १४६० तक की रचनाओं के सम्बन्ध में लिखा है—“इस युग के साहित्य सृजन में जैन मतावलंबियों का हाथ विशेष रहा है। कोई पचास के लगभग जैन साहित्यकारों के ग्रन्थों का पता लगा है। परन्तु जैन विद्वानों का यह मधुर साहित्य जितना भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है उतना साहित्य की दृष्टि से नहीं है यद्यपि साहित्यिक सौन्दर्य भी इसमें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है।

मेनारियाजी की निम्न सूची से स्पष्ट है कि हिन्दी की नीव ११ वीं शताब्दी में रख दी गई थी और उसको जैन विद्वानों ने मजबूत बनाया था।

१. कुछ महत्वपूर्ण नाम ये हैं—धनपाल (सं० १०८१), जिनवल्लभसूरि (सं० ११६७), पल्ल (११७०), वादिदेवसूरि (सं० ११८४), वज्रसेनसूरि (सं० १२२५), शालिमद्रसूरि (सं० १२४१), नेमिचन्द्र मण्डारी (सं० १२४६), आसगु (सं० १२५७), धर्म (सं० १२६६), शाह खण और भक्तउ (सं० १२७८), विजयसेनसूरि (सं० १२८८), राम (सं० १२८९), सुमतिगणि (१२९०), जिनेश्वरसूरि (१२७८-१३३१), अभयतिलक (सं० १२०७), लक्ष्मीतिलक (सं० १३११-१७), सोममूर्ति (सं० १२६०-१३३१), जिनपद्यसूरि (सं० १३०९-२२), विनयचन्द्रसूरि (१३२५-५३), जगद्गु (सं० १३३१), सप्रामसिंह (सं० १३३६), पद्म (सं० १३५८), जयशेखरसूरि (सं० १३६०-६२), प्रह्लादिभक्तसूरि (सं० १३६३), वरितग (सं० १३६८), गुणाकर-सूरि (सं० १३७१), अंबदेवसूरि (१३७१), फेर (१३७६), धर्मकलश (सं० १३७७), मारमूर्ति (१३९०), जिनप्रभसूरि (१३६०-९०), सोलण (१४ वीं शताब्दी), राज-शेखर सूरि (सं० १८०५), जयानंदसूरि (सं० १८१०), तरणप्रभसूरि (१४११), विनयप्रभ (१४१२), जिनोदयसूरि (१४१५), ज्ञानकलश (१४१५), पृथ्वीचन्द (सं० १४२६), जिनगत्त सूरि (सं० १४३०), मेहनन्दन (सं० १४३२), देवसुन्दरसूरि (सं० १८४०), साधुहस (सं० १४४४)।

जैन विद्वानों की लोक भाषायें लिखने में रुचि होने के कारण उन्होंने हिन्दी को प्रारम्भ से ही अपनाया और उसमें अधिक से अधिक साहित्य लिखने का प्रयास किया ।

प्रद्युम्न चरित का समकालीन हिन्दी साहित्य

अब हमें प्रद्युम्न चरित के समकालीन साहित्य पर (सं १४०० से लेकर १४२५ तक लिखे गये) विचार करना है और देखना है कि इस समय लिखे गये हिन्दी साहित्य और प्रद्युम्न चरित में कितनी समानता है ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद की रचनाओं का उल्लेख नहीं के बराबर हुआ है । उसमें महाराष्ट्र के साधु नामदेव की स्फुट रचनाओं का उल्लेख अग्रथ किया गया है । इसके अतिरिक्त 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में १५ वीं शताब्दी के प्रथम पाद के जिन कवियों का नामोल्लेख हुआ है उसमें केवल एक कवि शार्ङ्गधर आते हैं । किन्तु इनकी जिन दो रचनाओं के नाम हम्मीर रासो तथा हम्मीर काव्य— गिनाये गये हैं वे भी मूल रूप में उपलब्ध नहीं होती हैं । हां, उनकी इन रचनाओं के कुछ पद्य इधर उधर जाकर मिलते हैं । शार्ङ्गधर के जो पद्य मिले हैं उन पर अपभ्रंश का पूर्ण प्रभाव है । एक पद्य देखिये—

पिघउ दिढ सणाह वाह उप्पर पक्खर दइ ।

बंधु समदि रण धसउ हम्मीर वध्रण लइ ॥

उड्डलणह पह भमउ खग्गा रिउ सोसहि डारउ ।

पक्खर पक्खर ठैल्लि पेल्लि पव्वअ अण्फालउ ॥

हम्मीर कज्जु जज्जल भणह कोहाणल मुहमह जलउ ।

सुलताण सीस करवाल दइ तज्जि कलेवर दिअ चलउ ।

श्री मनारियाजी ने जिन जैन कवियों के नाम गिनाये हैं उनमें राजशेखरमूरि (१४०५), जयानंदमूरि (१४१०), तरुणप्रसूरि (१४११), विनयप्रभ (सं० १४१२), जिनोदय मूरि (१४१५), सधारु कवि के समकालीन आते हैं । किन्तु एक तो इन कवियों की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त कोई बड़ी रचना नहीं मिलती दूसरे जो कुछ उन्होंने लिखा है वह प्राचीन हिन्दी (अपभ्रंश) से पूर्णतः प्रभावित है । विनयप्रभ कृत गौतमरासा का एक पद्य देखिये—

‘प्रद्युम्न चरित’ एक सुखान्त काव्य है। इसका नायक लौकिक एवं अलौकिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने एवं भोगने के परचात् जिन दीक्षा पारण कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करता है। जैन लेखकों के प्रायः सभी काव्य सुखान्त हैं; क्योंकि अपने काव्यों द्वारा सामान्य जन में घुसी हुई बुराइयों को दूर करने का उनका लक्ष्य रहता है।

इस काव्य में खलनायक अथवा प्रतिनायक का स्थान किसको दिया जावे यह भी विचारणीय प्रश्न है। पूरे काव्य में कितने ही पात्रों का चरित्र चित्रित किया गया है; जिनमें श्रीकृष्ण, रुक्मिणी, सत्यभामा, भानुकुमार, नारद, कालसंवर सिंहरथ, रूपचंद आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

खलनायक नायक का जन्म जात प्रतिद्वंद्वी होता है। उसका चरित्र उज्वल न होकर दूषित एवं नायक प्रत्यनीक होता है। वह अपने कार्यों के द्वारा सदा ही नायक को परेशान करता रहता है। पाठकों को उससे कदापि सहानुभूति नहीं होती किन्तु ‘प्रद्युम्न चरित’ में उक्त बातें किसी भी पात्र के साथ घटित नहीं होती। पूरे काव्य में प्रद्युम्न का सत्यभामा, भानुकुमार, सिंहरथ, रूपचंद, कालसंवर और उसके पुत्रों के अतिरिक्त कभी किसी से विरोध नहीं होता। यही नहीं सिंहरथ एवं रूपचंद से भी कोई उसका विरोध नहीं था। उनके साथ इसका युद्ध तो केवल घटना विशेष के कारण हुआ है। अब केवल दो पात्र बचते हैं जिनमें प्रद्युम्न का जन्म जात तो नहीं; किन्तु अपनी माता रुक्मिणी के कारण विरोध हो गया था। इनमें सत्यभामा को तो स्त्री पात्र होने के कारण खलनायक का स्थान किसी भी अवस्था में नहीं दिया जा सकता। अब केवल भानुकुमार बचते हैं; किन्तु भानुकुमार ने प्रद्युम्न के साथ कभी कोई विरोध किया हो अथवा लड़ाई लड़ी हो ऐसा प्रसंग पूरे काव्य में कहीं नहीं आया; हां इतना अवश्य हुआ है कि प्रद्युम्न अपने असली रूप में प्रकट होने के पहिले तक द्वारका में विभिन्न रूपों में उपस्थित होता रहा और सत्यभामा और भानुकुमार को अपनी विद्याओं के सहारे छकाता रहा। भानुकुमार सत्यभामा का पुत्र था और सत्यभामा प्रद्युम्न की माता रुक्मिणी की सौत थी। इसी कारण प्रद्युम्न का भानुकुमार के साथ मौमत्स्य नहीं था। भानुकुमार की मांग-चंद्रविकुमारी से प्रद्युम्न ने विवाह कर लिया था इसका कारण भी यही था और इसीलिये उमने दो अवसरों पर उन्हें नीचा दिखाया था। किन्तु इससे भानुकुमार को खलनायक मित्र नहीं किया जा सकता। नायक से विरोध एवं युद्ध होने के कारण ही किसी को खलनायक की कोटि में बैसे लिया जा सकता है। प्रद्युम्न का युद्ध तो अपना कौराल दिसलाने के लिये भीष्म

के साथ भी हुआ है। फलितार्थ यह है कि यह काव्य बिना ही खलनायक के है और यह इसकी एक खास विशेषता है।

रस अलंकार एवं छन्द—

‘प्रद्युम्न चरित’ वीर रसात्मक काव्य है। काव्य का प्रथम सर्ग युद्ध वर्णन से प्रारम्भ होकर अन्तिम सर्ग भी युद्ध वर्णन से ही समाप्त होता है। जैसे यद्यपि इसमें अन्य रसों का भी प्रयोग हुआ है; किन्तु वीर रस प्रधान रूप से इस काव्य का रस मानना चाहिये। श्रीकृष्ण-जरासन्ध युद्ध, प्रद्युम्न-सिंहरथ युद्ध, प्रद्युम्न-कालसंवर युद्ध, प्रद्युम्न श्रीकृष्ण-युद्ध एवं प्रद्युम्न रूपचन्द-युद्ध इस प्रकार काव्य का काफी हिस्सा युद्ध-वर्णन से भरा पड़ा है। पाठक को प्रायः काव्य के प्रत्येक सर्ग में युद्ध के दृश्य नजर आते हैं। “रहिवर साजहु, गयवर गुडहु, सजहु सुहह, आज रण भिडउ” के वाक्य काव्य में सर्वत्र प्रयोग किये गये हैं। सिंहरथ जब प्रद्युम्न को बालक समझ कर युद्ध करने में लज्जा का अनुभव करने लगता है तो उस समय उसे प्रद्युम्न जिस प्रकार जवाब देता है वह पूर्णतः वीरोचित जवाब है :—

बालउ सूरु आगासह होइ, तिन को जूझ सकइ धर कोइ ।
बाल बमंगु डसइ सउ आइ, ताके निसमणि मंतु न आहि ॥१६॥
सीदिणि सीहु जणै जो बालु, हस्ती जूह तणो वे कालु ।
जूह धाड़ि गए वण ठाउ, ताकह कोण कहै भरिवाउ ॥१६॥

इसी प्रकार जब श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न में युद्ध के समय वार्तालाप होता है तो वह वास्तव में वीर रसात्मक है। उनके पढ़ने से उसके नायक प्रद्युम्न की वीरता एवं शौर्य की आश्चर्य-कारी चतुरता का पता चलता है। यद्यपि उस जमाने में आज की तरह जन विनाश कारी आणविक व अन्य शस्त्र नहीं थे, किन्तु तलवार, धनुष, गदा, भाला, गोफन, बर्छा, बाण एवं चक्र ही प्रमुख हथियार थे। लड़ाई में योद्धा इतने कुशल थे कि एक समय में धनुष में ५० बाण तक चढ़ाकर चला सकते थे। अग्निबाण, जलबाण, वायुबाण, नागपाश आदि के प्रयोग करने की प्रथा थी। वायु बाण और जलबाण आदि कैसे होते थे कुछ कहा नहीं जा सकता। माया से अनेकानेक शस्त्रास्त्रों का निर्माण करके भी युद्ध लड़ा जाता था। कभी २ माया से विरोधी सेना मूर्च्छित भी करदी जाती थी जो अंत में पुनरुज्जीवित हो जाती थी। इन विद्याओं के कारण यह काव्य अद्भुत रस से ओत प्रोत है इसलिए इसका मुख्य रस घोर होने पर भी वह अद्भुत मिश्रित है।

इन दोनों रसों के अतिरिक्त शृंगार, करुण, रौद्र आदि रसों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। वात्सल्य रस भी जिसे कई लोग नव रसों के अतिरिक्त रस मानते हैं इस काव्य में प्रयुक्त हुआ है।

वात्सल्य-रस का एक नमूना देखिए—

जब रूपिणि दिठा परदवणु ।

सिर चुंमइ आकउ लीयउ, विहसि वयणु फुणि कंठ लायउ ।
अब मो हियउ सफलु, सुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ ॥
दस मासइ जइउ धरिउ, सहोए दुख महंत ।
वाला तुणह न दिठ मइ, यह पछित्तावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तणे वयणु निमुरोइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।
खण इकुमाह विरधि सोकयउ, फुणि सो मयण भयउ वेदहउ ॥४३०॥
खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाई ।
खण खण जेत्वणु मागइ सोइ, बहुवु मोह उपजावइ सोइ ॥४३१॥

इसी प्रकार बीभत्त रस का भी कवि ने बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। श्री कृष्ण और प्रद्युम्न में खूब जम कर लड़ाई हुई। युद्ध में अनेकों योद्धा काम आये। चारों ओर नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देने लगे।

कवि कहता है:—

हय गय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।
ठाठा रहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल ॥५०४॥
गोधीणी स्याउ करइ पुकार, जनु जमराय जणादहि सार ।
वेग चलहु सापडी रसोइ, प्रसइ आइ जिम तिपत होइ ॥५०६॥

प्रद्युम्न के छटी रात्रि में अपहरण हो जाने के कारण, रुक्मिणी की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी। उसका परिवेदन और आक्रन्दन वास्तव में हर एक के लिए हृदय द्रावरु था। वह पुत्र वियोग के कारण ऐसी संतप्त

रहने लगी कि उसका शरीर कृश हो गया और उसकी सारी प्रसन्नता जाती रही । करुण-रस का यह प्रसंग भी हृदयंगम करने लायक है—

जहि सो रूपिणि करइ, पूत्र संतापु हिय गहवरइ ।
निन नित छीजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
इक धाजइ अरू रोवइ वयण, आसू बहत न थाके नयण ।
पूव्व जन्म में काहुउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउः॥१४१॥
की मइ पुरिप विद्योही नारि, की दम्ब घाली वणह मभारि ।
की में लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संताप कवण गुण परयुउ ॥१४२॥

प्रद्युम्न ने जो नाना स्थलों पर अपनी अलौकिक विद्याओं का प्रयोग किया है उसे पढ़ कर पाठक आश्चर्य में डूब जाता है । ये विद्यायें सामान्य जन को प्राप्त नहीं हैं इसलिए प्रद्युम्न की अद्भुतता में कोई संदेह नहीं रहता यही चीज रस बन कर पाठक पर छा जाती है ।

सत्यभामा ने कपट-भेषी ब्राह्मण प्रद्युम्न को जितना सामान परोसा वह सभी खा गया । ८४ हांडियों में तैयार किये हुए व्यजनों को तो वह घात की बात में घट कर गया । यही नहीं इसके अतिरिक्त जो कुछ सामान सत्यभामा के पास था वह सभी प्रद्युम्न के उदरस्थ हो गया । फिर भी वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा इस अद्भुतता का भी पाठक रसा-स्वादन करें—

चउरासो हाडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि ।
माडे कडे परोसे तासु, सबु समेलि गउ एकइ गासु ॥३८७॥
भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी वैठि आइ ।
जेतउ घालइ सबु सघरइ, बडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥

काव्य में अलंकारों का भी खूब प्रयोग किया गया है । जैसे मुख्य मुख्य अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, दृष्टान्त, अपहृति अर्थात्-रन्यास एवं स्वभावोक्ति आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं । काव्य में अनूठी उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य-सौन्दर्य अधिक विकसित हुआ है । कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

१. सैन उठी बहु सादु समुदु, जाणी उपनउ उथल्यउ समुदु ॥५५७॥

वह मूर्च्छित सेना इस प्रकार उठी मानों सातों समुद्र ही उलट कर चले हों ।

२. वरसहि वाण सरे असराल, जाणौ घण गांजइ मेघ अकाल ।

वाणों की निरन्तर वर्षा इस प्रकार होने लगी मानों अकाल के मेघ गाज रहे हों ।

३. निसुणि वयण नरवइ परजलीउ, जाणौ घीउ अधिकु हुतासणु परिउ ।

वचनों को सुनकर राजा इस प्रकार प्रज्वलित हो उठा मानों अग्नि में खूब घो डाल दिया हो जिससे वह और भी प्रज्वलित हो गयी हो ।

इम काव्य में चउपई छन्द का मुख्य रूप से प्रयोग हुआ है । इस छन्द के अधिक प्रयोग होने के कारण ही किसी किसी लिपिकार ने तो 'प्रद्युम्न चउपई' ही प्रथम का नाम रख दिया है । चउपई छन्द के अतिरिक्त काव्य में वस्तुबन्ध, ध्रुवक, दोहा, शोरठा छन्दों का भी प्रयोग हुआ है । इस काव्य में प्रयुक्त वस्तुबन्ध तथा अन्य रचनाओं में प्रयुक्त वस्तुबन्ध छन्द में कुछ अन्तर है क्योंकि अन्य रचनाओं में प्रयुक्त छन्द की प्रथम पंक्ति को दो बार बोला जाता है और इम काव्य में प्रथम पंक्ति का एक बार ही प्रयोग करके छोड़ दिया है । चौपई छन्द के अन्त में वस्तुबन्ध का उपयोग किया है और इसके परचात् भी औपई छन्द का प्रयोग हुआ है ।

भाषा की दृष्टि से अध्ययन—

भाषा की दृष्टि से प्रद्युम्न चरित ब्रज भाषा का काव्य है । ब्रज भाषा के सर्व मान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में पूर्ण रूप से मिलते हैं । डा० शिवप्रसादसिंह ने 'सूर पूर्व ब्रज भाषा और उसका साहित्य' नामक पुस्तक में प्रद्युम्न चरित को ब्रज भाषा के अद्यावधि प्राप्त प्रथम में सबसे प्राचीन काव्य माना है । और उस पर अपनी पुस्तक में विस्तृत विवेचन किया है । ब्रज भाषा बनाम खड़ी बोली नामक पुस्तक में डा० कपिलदेव सिंह ने ब्रज भाषा के जो सर्व मान्य लक्षण बतलाये हैं वे निम्न प्रकार हैं—

१. ब्रज भाषा में एक ही कार्य को सूचित करने वाले संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि में अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है ।
२. ब्रज भाषा की श्रियाओं में 'लाप्य' है जो काव्य रचना के लिये बहुत ही उपयुक्त होता है ।

३. ब्रजभाषा का यह सर्वमान्य नियम है कि 'गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुमार'
४. ब्रज भाषा में कारक चिह्नों का लोप क्षम्य है।
५. ब्रज भाषा की प्रकृति सयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु कवियों ने दोनों प्रकार के प्रयोगों की छूट ली है।
६. ब्रज भाषा में तद्भव और अर्द्ध तरसम शब्दों का प्रयोग होना भी उसकी एक बड़ी विशेषता है —

अब हमें यह देखना है कि ये उक्त सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में कहां तक मिलते हैं।

१. प्रद्युम्न चरित में एक ही अर्थ को सूचित करने 'वाले संज्ञा सर्वनाम क्रिया अव्यय आदि में कितने ही पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे

संज्ञा—

कृष्ण—	कन्ह	(५०, ५७२)
	कान्ह	(६०, ६६)
	किसन	(५४२)

प्रद्युम्न—

	परदमणु	(४१३)
	प्रदधणु	(५२२) प्रदुधनु (१३६)
सर्वनाम—	तुम्ह	(२८) तुम्हि (१०८) तुहि (४७०)
	तुम्हि	(२४८) तुम्ही (४७०)
अव्यय—	इनु	(३८३) इह (२८, ३६) इहि (४०, ४७) उह (८१, ३१२)
क्रिया—	कंपइ, कंपत	(३७८) कंपिउ (६७) (५०२)
	दीठउ	(६२) दीठि (४०) दीठी (२७)
	दीठे	(३७)

दीणउ (६४८) दीनउ (२६) दीनी (४७)
दीने (३५०)

२. व्रज भाषा की दूसरी विशेषता—क्रियाओं को लाघव रूप बना कर प्रयुक्त करने की रही है। प्रद्युम्न चरित में भी यही विशेषता अच्युण रूप से दिखाई देती है यथा—

सुन करके— निसुणि (२४,४२)

बुला करके— बुलाइ (१८७)

देख करके— निरलि (१०६) देखि (३२,४३)

पढ़ता है— पढ़इ (३१८)

दीड़ा करके— दीड़ाइ (३३०)

लिख पढ़ करके—लिखितु पढ़ितु— १३७

३. व्रज भाषा के सर्व मान्य नियम—“गुरु लघु, लघु गुरु होता है निज इच्छा अनुसार” का भी कवि सधारु ने अपने प्रद्युम्न चरित की भाषा में पालन किया है—जैसे—

क. सति भामा हरि दीठउ नयणा, रुदनु करइ अरु बोलइ धयणा (६६)

ख. चाहुडि राउ विमाणा गयउ (१३३)

ग. जिन रुपिणि ह्रीयरा बिललाइ (१५६)

४. प्रद्युम्न चरित में कारक चिह्नों का प्रयोग प्रायः नहीं हुआ है। अधिकांश स्थलों पर शब्द बिना कारक चिह्नों के ही प्रयुक्त हुये हैं—

कर्त्ता कारक— सारंग पाणि धनुष लौ हाथि

काल संबर तव वीडा देइ (१७२)

नारद बात मयणस्यो कही (२४७)

मुनि जंपइ मुहि नाहीं खोडी (२४८)

कर्म कारक— सेस पाल पठउ जमपंथि

फुणिर नेम जिन केवल भयउ (६६४)

सम्बन्ध कारक— सिंघ जुघ जो जाणे भेड । (१६५)
 उवसंत मनि भयउ उछाहु (२२३)
 तीनि खड जो पुद्दामि नरेसु (३०६)

अधिकरण— इह वण चरण न पाव कोइ (३३६)

५. ब्रज भाषा की प्रकृति संयुक्त वर्ण से बचने की है किन्तु प्रद्युम्न चरित में दोनों ही प्रकार के प्रयोग हुये हैं—

संयुक्ताक्षर— ज्योति (६६०) ज्योनार (६५३)
 नक्षत्र (११) धर्म (५६२)
 प्रदवण (५४६)

असंयुक्ताक्षर— जालामुखी (५) चकेसरी (५)
 जादमराउ (४७५) कान्ह (४०)
 सनमधु (६८६) वांभण (३२५)

६. ब्रज भाषा के अन्य काव्यों की तरह प्रद्युम्न चरित में तद्भव और अर्द्धतत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे—

सतिभामा (६३) वरम्हंड (५३६) मोसिहु (१६०), हीयरा (१६०)
 सकति (२६८) विरख (८४) पुद्दिमि (८१)

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रजभाषा के सर्वमान्य लक्षण प्रद्युम्न चरित की भाषा में मिलते हैं ।

भाषा की अन्य विशेषतायें

प्रद्युम्न चरित में आद्य या अन्त के अक्षर में कभी कभी अ का इ रूप भी कर दिया गया है—

जैसे तिसु (२) किमाइ (१६) तिपत (५०१) हायि (७७)
 विवाहि (२२७)

अ+उ या अ+इ का औ या ऐ उद्बृत्त स्वर से संध्यक्षर रूप में परिवर्तन करने की प्रथा प्राचीन ब्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी मिलती है यथा—

चउवारे, चउक (५६२) चउरथउ, चउतीसह (१२) किन्तु उद्बृत्त स्वरों के साथ २ संध्यक्षरों के प्रयोग भी पर्याप्त संख्या में अन्य व्रज भाषा की रचनाओं के समान प्रद्युम्न चरित में भी यत्र तत्र देखने को मिलते हैं— यथा चोपास (३१४) चोपट्ट (३४२) चलयोउ (३३) पौरिप (४५३) सैन (२८८) रम्यो (२७०)

स्वर सकोच—प्रद्युम्नचरित में स्वर सकोच कितनी ही प्रकार से हुआ है जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

जादौराउ (यादवराव) ठाउ (स्थान) पून्न (पुण्य)

व्यञ्जन—प्रद्युम्नचरित में न और ण के विभेद को बनाये रखने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई नहीं देती जैसे—

मुनि के लिये मुणि

मानस ,, माणस

मदन ,, मयण

भानइ ,, भाणइ

किन्तु कहीं कहीं न के स्थान पर 'न' का ही प्रयोग हुआ है यथा— भानकुमार, मन, भामिनी आदि ।

काव्य में ङ और र की ध्वनियां भी कितने ही स्थानों पर आपस में मिल सी गयी है यथा—

पकडि तथा पकरि, लडइ और लरइ, वाहुडि तथा वाहुरि मुदडी एवं मुदरी तथा भिडे एव भिरे ।

प्रद्युम्नचरित में न्ह, म्ह एवं म्र का प्रयोग खूब किया गया है यथा पम्बाण (४१६) न्हाइ (५०६) तुम्ह (१२७) तिन्हि (५२६) जेम्बणु (३६१) तिन्हि (१)

इसी तरह 'त्त' का छ बनाकर शब्दों को अधिक मधुर बनाने की चेष्टा की गयी है यथा—नद्धत्र (नक्षत्र) जन्द्ध (यत्त) द्दण (त्तण) छत्री (त्तत्री)

सर्वनाम

प्रद्युम्नचरित में सर्वनामों के तीन ही भेदों का खूब प्रयोग हुआ है। यद्यपि शब्दों में समानता नहीं है फिर भी काव्य में उनका विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है यथा—

उत्तम पुरुष—	एक वचन	बहु वचन
	हउं (१) मैं (१४१)	हमि (२७) हमइ (६५०)
	हौं (१४७)	हमारी (११३) हमारे
	मेरो (५४२) मेरी (३०१) मे (६०३)	
मध्यम पुरुष—तू, तुमि (१०६)		तुम्हारउ (२६) तुम्हि (२४५)
	तु, तुम्ह (१२५)	तुमहि (४७०)
अन्य पुरुष—वह (७६) सो (१)		ते (६३२) आदि ।

अनिश्चय वाचक एवं प्रश्नवाचक सर्वनाम के लिये—कोउ (२) काके (५५) किमइ (४४०) किम (४०५) आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यद्यपि काव्य में कारक चिह्नों का अधिक प्रयोग नहीं किया गया है किन्तु फिर भी रचना में कितने ही स्थलों पर उनका प्रयोग कर भी दिया गया है। इन कारकों में कर्मकारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक एवं अधिकरण कारक मुख्य हैं। यथा—

कर्म कारक—चाइ कम्मु को किउ विणासु

संख्या वाचक विशेषण—प्रद्युम्नचरित में संख्या वाचक विशेषणों का निम्न प्रकार से वर्णन हुआ है—

१. इकु (३४) इक (३५) एकु (२३५) एक (३०३) एकइ (५३६)
२. दुइ (३३) दूजी (१६७) दोइ (१८१)
३. तीजी (२००) तीजे (२०३) तीनि
४. चारयो, चारि (३२४) च्यारि (२०) चउत्थउ (८)
५. पांच (१३६) पंचति (४५६) पंचम (५६६)

६. छइ (८६) छठि (१२२)
 ७. सात (५१)
 ८. अठ (३) आठमउ (८)
 ९. नवउ (६)
 १०. दसह (४६६) दस (४)
 ११. ग्यारह (११)
 १२. द्वादस (३७४)
 १३. तेरह (६८६)
 १४. पंद्रह (५४८)
 १५. सोलह (८०) सोलहउ (६)
 १६. सतरह (१०)
 १७. अठारह (२०) अठार (१७६)
 १८. एगुणसीवार (१०)

क्रिया पद

ब्रजभाषा में सयुक्त क्रिया का बहुत प्रयोग होता है प्रथुम्नचरित में भी ऐसे प्रयोग खूब देखने को मिलते हैं। सहायक क्रिया एवं मुख्य क्रिया दोनों के ही पदों का प्रयोग देखने को मिलता है। सहायक क्रिया मुख्य रूप से भू धातु से बनी है और उसके प्रथुम्नचरित में निम्न रूप प्राप्त होते हैं—

वर्तमान काल—होइ (१) कवितु न होइ
 होहि (७४) रहि रूपिणी वामा काहरि होहि
 हुइ (११) संवतु चौदहसै हुई गये

भूतकाल—(१) टाउउ भयउ (२६)
 (२) उपर अधिक ग्यारह भए (११)
 (३) आज पवित्तु भयो इह टाउ (२८)
 (४) निमुण्णि वयण कोप्यो परदवणु (१७८)

मुख्यक्रिया पदों का प्रयोग भी प्रथुम्नचरित में ब्रजभाषा के अन्य अन्य काव्यों के समान ही हुआ है।

सामान्य वर्तमान—सामान्य वर्तमान काल में सभी क्रिया पदों को इकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है—यथा—

१. सो सधार पणमइ सरसुति । (१)
२. तिस कउ अंतु न कोउ लहइ । (२)
३. करइ गर्ज मेदनी विलसंतु । (२१)
४. रहटमाल जिउ यह जीउ फिरइ (६२६)
५. फुणि मयरद्धउ जंपइ ताहि (५२४)

आज्ञार्थ—वर्तमान आज्ञार्थ के रूप कभी भी शुद्ध रूप में प्राप्त नहीं होते । इसकी रचना अंशतः प्राचीन विधि (Potential) अंशतः प्राचीन आज्ञार्थ और अंशतः प्राचीन निश्चयार्थ से होती है (पुरानी राजस्थानी पृष्ठ ११६) । प्रद्युम्नचरित में आज्ञार्थ क्रिया पदों के निम्न रूप से प्रयोग मिलते हैं—

- | | |
|--------------------------------|---------|
| (१) रथ साजिउ सारथि वयसारि | (५२) |
| (२) रहिवर साजहु गयवर गुरहु | (७०) |
| (३) उदधिमाल तुमि मो कहु देहु | (३०५) |
| (४) हीण अधिक जण लावहु खोडि | (७०१) |
| (५) घर वेगे सामहणी करहु | (२२६) |

विष्यर्थ—

- | | |
|------------------------------|---------|
| (१) कछुस मोल आइ तुमिह लेहु | (३४०) |
| (२) दुइ घोड़े ए परहु अघाइ | (३४१) |
| (३) नयर मंगल किजइ | (५६६) |

भूत काल—वर्तमान काल में इकारान्त क्रिया पदों के समान भूत काल की क्रिया भी उकारान्त बनाकर प्रयोग की गयी है यथा—

- (१) तिहि कुरखेत महाहउ भयउ (६६१)
- (२) सतिभामा महिलउ पठयउ (४३३)
- (३) रहवरु मोडि नयर महगयउ (२६२)
- (४) कठिया जाइ संदेसउ कहिउ (३६२)

भविष्यत्काल—भविष्यत्काल में अधिकांश 'ह' वाले रूप ही मिलते हैं
ग वाले रूप बहुत थोड़े तथा कहीं २ ही मिलते हैं ।

(१) सो काहो जेम्बहिगे आइ (३६२)

(२) किम रण जीतहुगे महमहण (७३)

अन्य भाषाओं का प्रभाव—

ब्रज भाषा के अतिरिक्त प्रद्युम्नचरित की भाषा पर मुख्य रूप से अपभ्रंश एवं राजस्थानी भाषा का प्रभाव पड़ा है । वास्तव में १४ वीं शताब्दी में अपभ्रंश भाषा के प्रभाव रहित किसी भाषा का काव्य लिखना भी दुष्कर कार्य रहा होगा । कवि ने यद्यपि अपभ्रंश के शब्दों का कम से कम प्रयोग करने का प्रयास किया है और पूरे काव्य में अपभ्रंश को एक गाथा उद्धृत की है, जिसके सम्बन्ध में अभी तक यह पता नहीं लग सका है कि वह स्वयं कवि द्वारा निबद्ध है अथवा किसी अन्य रचना में से उद्धृत की है, किन्तु फिर भी रचना में अपभ्रंश शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता । यहाँ अपभ्रंश के कुछ शब्द रचना में से उद्धृत किये जा रहे हैं—

अवलोइ (५४२) असराल (२८२) उच्छाह (५८६) तिजयणाहु
(१२) शिव्याणा (२३२) वीण (४) जइउ (४२६) अपमाण (४८३) अवरइ
(३८१) उमइ (१७०) कुकडहि (६१०) कोह (२८७) रोमु (६५४) खग
(२१३) लोयपमाणु (६६०) लोयणु (५०७) वण (५६) विविह (१०७) सवेहु
(५८८) सयज (२५८) सरसइ (३) नयर (१५) दुजण (६८६)

ब्रजभाषा के अतिरिक्त राजस्थानी भाषा के शब्दों का भी कहीं कहीं प्रयोग स्तन; ही हो गया है जैसे—आगि (४७८) आपखी (६३१) दूख्यो (६३०) न्हानी (२३६) आदि ।

प्रद्युम्न चरित की अन्य विवेकतायें—

प्रद्युम्न चरित यद्यपि अधिक बड़ा काव्य नहीं है । ३१० माताप्रसादजी गुप्त के शब्दों में हम उसे सतमई कह सकते हैं क्योंकि पूरे काव्य में ७०१ पद्य हैं । प्रद्युम्न चरित में वस्तु व्यापारों और जीवन दशाओं का भी अच्छा वर्णन किया गया है जिन में से कुछ का यहाँ संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है :—

१. सामाजिक सम्बन्ध, कृत्य उत्सव आदि--
सन्तानोदय, विवाह, स्त्री समाज
२. सेना के अस्त्र शस्त्र
३. नगर वर्णन
४. प्रकृति वर्णन

१:—सामाजिक सम्बन्ध कृत्य उत्सव आदि :—

(अ) सन्तानोदय—समाज में पुत्र होने पर खूब उत्सव मनाये जाते थे । प्रद्युम्न के जन्म पर द्वारका में खूब उत्सव मनाये गये । प्रत्येक घर में बधावा गाये गये तथा सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल गीत गाये :—

दूहु नारि घर नदण भए, घर घर नयरि बधावा गए ।
सूहो गावइ मंगलचार, वंभण वेद पढ़इ भुणकार ॥१२०॥
वाजहि तूर भेरि अनिवार, महुवरि भेरि संख अनिवार ।
घरि घरि कूं कूं थापे देह, मंगल गावहि कामिनि गेह ॥१२१॥

(ब) विवाह—विवाह बड़ी धूमधाम से किये जाते थे प्रद्युम्न के विवाह के अत्रसर पर देश विदेश के राजा महाराजा सम्मिलित हुए थे । नगर को सजाया गया. बाजे बजाये गये तथा विवाह विधि पूर्वक सम्पन्न किया गया था । ऐसे शुभ अवसरों पर ब्राह्मण लोग मंत्रोच्चारण करते थे एवं सौभाग्यवती स्त्रियां मांगलीक गीत गाती थी । प्रद्युम्न के विवाह का वृत्तान्त पढ़िये :—

सख सबुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।
भेरि तूर वाजइ असराल, महुवरि वीण अलावणि ताल ॥१८०॥
विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु करइ ।
वहु कलियरु नयरि उछलिउ, जन मयरद्धु विवाहण चलिउ ॥१८१॥

(स) कवि और स्त्री समाज—

कवि ने प्रद्युम्न चरित में एक प्रमग पर स्त्री समाज पर खूब आक्रमण किया है । तुलसीदासजी ने तो अपनी रामायण में स्त्री को 'ताड़न

का अधिकारी' कह कर ही सन्तोष कर लिया था, किन्तु सधारू कवि उनसे भी ४ कदम आगे चलते हैं। स्त्री समाज की निन्दा करते हुये कवि कहता है कि वह असत्य बोलती है और असत्य कार्य करती है तथा अपने पति को छोड़ कर अन्य के साथ रमती है। कवि ने अपनी बात की पुष्टि के लिये कुछ ऐसे-वदाहरण भी दिये हैं जिन अवसरों पर स्त्रियों ने पुरुषों को धोखा दया था।

तिरिय चरितु निसराउ भरिभाउ,

बिलस वदन भउ रगवइराउ ।

अलियउ बोलइ अलियउ चलइ,

निउ पिउ छोड़इ अवरु भोगवइ ॥२६६॥

तिरियहि साहस दूणो होइ,

तिरिय चरित जिण फुलइ कोइ ।

नीची बुधि तिम्वइ मनि रहइ,

उतिमु छोड़ि नीच रांगइ ॥२६७॥

पयढी नीच देख सो पाउ,

एगो तिबट तणउ महाउ ॥२६८॥

२.—मेना प्रयोग :—

१. मेना के अश्र राश्र—

राजाओं के पास नियमित मेना होती थी जो मंत्रों मात्र से युद्ध के लिये सेतवार हो जाती थी। मिथुपाल, पालमथर भीष्टण एवं रूपचंद की मेना युद्ध के लिये मंत्रों मिलने ही सेतवार हो गयी थी तथा अपने २ राश्रों की संभाल लिया था। राज, अश्र एवं पदानी मेना होती थी। राश्रों में बौजु, लम्पार, मेस, बटारी, रदुरी, धनुष बाण आदि राश्र प्रयोग में लाये जाते थे। इन राश्रों के अतिरिक्त विद्यापन में भी युद्ध सड़ा जाता था।

२. विद्याओं के बल पर युद्ध करने की परम्परा—

दशममन्थन में सभी अरवमंत्रों पर विद्याओं के बल पर युद्ध बरपाये गये थे। अग्निबाण, जलबाण, वायुबाण आदि विद्यों ही प्रथमों के बालों का उद्योग होना, दशममन्थन का विजय ही विद्याओं में प्रयोग होना तथा इनके आधार पर मिहथ, बाण मंत्र एवं भीष्टण की मेनाओं की मूर्तिन करके दश देना, बलमन्थन में तीनों विद्याओं की प्राप्ति एवं उनके बल पर वायुमन्थन

को हताना आदि घटनाएं प्रद्युम्न की लोकोत्तर शक्ति का परिचय देती हैं कि उस समय के युद्ध इस प्रकार की आश्चर्यकारी विद्याओं के द्वारा भी लड़े जाते थे ।

कवि को अलौकिक विद्याओं पर खूब विश्वास था । प्रद्युम्न जहां भी गया वहीं उसे विद्याएं प्राप्त हुईं । कवि ने जिन १६ विद्याओं के नाम गिनाये हैं वे सभी अलौकिक विद्याएं हैं । यदि प्रद्युम्न को वे विद्याएं प्राप्त नहीं होती तो वह कभी किसी युद्ध में नहीं जीत सकता था क्योंकि सिंहरथ, फालसवर एवं श्रीकृष्ण सभी उससे बल पौरुष में बढ़ कर थे । इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसकी प्रत्येक सफलता का कारण उसकी अलौकिक विद्याएं थी ।

३. नगर वर्णन—

प्रद्युम्नचरित में द्वारका का वर्णन किया गया है । यद्यपि वर्णन विस्तृत नहीं है किन्तु थोड़े से शब्दों में ही कवि ने नगर का काफी अच्छा वर्णन किया है । नगर में ऊंचे २ महल थे जिन पर विभिन्न प्रकार की पताकायें फहराती थीं । प्रद्युम्न जब नारद के साथ विमान द्वारा द्वारका पहुँचा तो नारद ने नगर के प्रमुख महलों का वर्णन करके उसे परिचित कराया था ।

४. प्रकृति-वर्णन (वृक्ष एवं पुष्पलताओं का वर्णन)

सधारु कवि को प्रकृति-वर्णन भी प्रिय था । सत्यभामा के वाग का वर्णन करते हुये उसमें २५ से भी अधिक वृक्षों, पुष्पों एवं लताओं का वर्णन किया है । इस प्रकार का वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन अपभ्रंश साहित्य में भी मूल्य हुआ है और उसी का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा है । प्रद्युम्नचरित में जिन वृक्षों एवं पौधों का वर्णन किया गया है वह निम्न प्रकार है—

जाइ जुही पाडल कचनारु, ववलसिखि वेलु तिहि सारु ।

कूजड महकइ अरु कणवीरु, रा चंपड केवरड गहीरु ॥३४५॥

कुंठं टगरु मंदारु, सिंदूरु, जहि वंधे महइ सरीरु ।
 दम्बणा मरुवा केलि अणंत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥
 भ्राम जंभीर सदाफल घणे, बहुत विरख तह दाडिम्ब तणे ।
 केला दाख विजउरे चारु, नारिग करुण खीप अपार ॥३४७॥
 नीवू पिंडखजूरो संख, खिरणी लवंग छुहारी दाख ।
 नारिकेर फोफल बहुफले, वेल कइथ घणे आवले ॥३४८॥

षपसंहार—

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा के प्राचीन चरित काव्यों में प्रद्युम्न चरित एक उत्तम रचना है और इसका हिन्दी साहित्य में भाषा और वर्णन शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय स्थान है। इसे ब्रज भाषा का आदि काव्य होने के कारण भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिये आधार भूमि भी माना जा सकता है। ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी के अवलोकन से पता चलेगा कि कवि ने शब्दों के प्रयोग में कोई निरिचत लक्ष्य नहीं रखा किन्तु एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किया है। इससे कवि की भाषा विषयक विद्वत्ता एवं तत्कालीन प्रचलित भाषा के विभिन्न प्रयोगों का भी पता चलता है। कवि ने कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो हमें हिन्दी के अनेकानेक शब्दकोशों में नहीं मिले हैं इसलिये इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी शब्दकोश में भी अभिवृद्धि होगी ऐसा हमारा विश्वास है।

इस काव्य के प्रकाशन से हिन्दी भाषा के आदि कालिक काव्यों की संख्या में एक और की अभिवृद्धि ही नहीं होगी किन्तु विद्वानों को प्राचीन काव्यों की परम्परा जानने में भी सहायता मिलेगी। हिन्दी भाषा के अन्वेषण प्रिय विद्वानों को इस काव्य से एक दिशा निर्देश प्राप्त होगा और खोज के लिये अधिकाधिक प्रेरणा मिलेगी। प्राचीन हिन्दी साहित्य की अवतक पूरी खोज नहीं हुई है, नहीं कह सकते सधारु जैसे महान् कवियों की कितनी अमूल्य रचनाएँ ग्रन्थ भण्डारों के गहनाघर में हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं और हिन्दी सेवकों को कह रही हैं कि यदि अब भी तुमने ध्यान नहीं दिया तो हम सदा के लिए महाकाल के मुँह में विलीन हो जायेंगी।

ग्रन्थ का सम्पादन—

इस ग्रन्थ का सम्पादन कैसा हुआ है और उसमें किस सीमा तक सफलता मिली है इसका निर्णय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं। हमें इस बात का सतोष है कि हमसे इस ग्रन्थ का उद्धार हो सका और इस पहाने हम हिन्दी की यह सेवा पा सके। ग्रन्थ सम्पादन में मूल प्रति के अतिरिक्त तीनों प्रतियों के पाठ में यदि थोड़ा भी अमान्य ज्ञात हुआ तो उसे पाठ भेद में दे दिया गया है। यद्यपि मूल प्रति अपेक्षाकृत शुद्ध एवं सुन्दरता से लिपि की हुई है फिर भी कुछ पाठ अशुद्ध लिखे होने के कारण उनके स्थान पर अन्य प्रतियों के शुद्ध पाठ को ही देना अधिक उपयोगी समझा गया है। इसके अतिरिक्त मूलपाठ में कोई संशोधन अथवा संवर्द्धन नहीं किया गया है। शब्दानुक्रमणिका काफी विस्तृत होगई है किन्तु कवि द्वारा एक ही शब्द को विभिन्न रूपों में प्रयोग किये जाने के कारण उन सभी शब्दों को देना आवश्यक समझा गया, यही इसके विस्तृत होने का कारण है। हमें मूल ग्रन्थ का हिन्दी अर्थ लिखने में पर्याप्त कठिनाई का सामना करना पड़ा; क्योंकि प्रशुम्नचरित के बहुत से शब्द तो ऐसे हैं जो हिन्दी कोशों में खोजने पर भी नहीं मिले; तो भी जहां तक हो सका है शब्दों का ठीक अर्थ देने का ही प्रयत्न किया गया है।

गच्छतः स्वल्पं वपापि, भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

धन्यवाद समर्पण—

ग्रन्थ में हम क्षेत्र कमेटी एवं विशेषतः कमेटी के मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बरूजी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ को क्षेत्र द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित कराने का प्राचीन हिन्दी ग्रन्थों को प्रकाश में लाने में सहयोग दिया है। श्री अनूपचन्द्रजी न्यायनीर्थ एवं श्री सुगनचन्द्रजी जैन के हम विशेष रूप से ध्याभारी हैं जिन्होंने प्रशुम्नचरित के पाठ भेदों, शब्दानुक्रमणिका एवं प्रूफ रीडिंग में हमें पूरा सहयोग दिया है। श्री भंवरलालजी पोल्यादा जैनदर्शनाचार्य के

भी हम आभारी हैं जिनसे हमें ग्रन्थ की शब्दानुक्रमणी तैयार करने में सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके अतिरिक्त डा० माताप्रसादजी गुप्त के भी हम बहुत आभारी हैं जिन्होंने हमारे अनुरोध पर भूमिका लिखने एवं शब्दार्थ के निर्णय में भी सहायता दी है। श्री अजरचन्दजी नाहटा के प्रति भी हम आभार प्रदर्शित किये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने प्रद्युम्न चरित की प्रतियां उपलब्ध करने में अपेक्षित सहयोग दिया है। खण्डेलवाल पचायती दि० जैन मन्दिर कामां (भरतपुर) एवं वधीचन्दजी दि० जैन मन्दिर जयपुर के व्यवस्थापकों के भी हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने हमें अपने भण्डार की हस्तलिखित प्रतियां सम्पादनार्थ दी हैं।

चैनसुखदास
कस्तूरचन्द कासलीवाल

दिनांक १-१-६०

पं॥ ॐ नमः सिद्धेन्द्रः ॥ ॥ सारदविणमसि कवितुन होइ । मरुआ प्रसंग विबुजइ कोइ । सो प्रसर
 पाणमइ सरसुती । तिन्दिकं बुद्धि होइ केत रुती ॥ २ ॥ मनुको सारद सारद करइ । तिमक उन्न
 केउल हइ । निणवर सुषुद्ध निगाय वाणि । सा सारद पणव कुपरियाणि अणवदल म्क मले
 भे शिवरुवा सु । काम मीरपुरलनिका सु । देसवटी कर लेषणि देइ । कवि मधर सारम इयन ए
 पा ॥ ३ ॥ भेतव स्रपदम वतीपा । करहं प्रलावणि वाइ द्वि वीणा । आगम ज्ञाणि दे कुम झमती ॥
 बुण्डु जे पाणव प्रसर स्वती ॥ ४ ॥ प्रदमावती टंड कर लेइ । जाला सुधी वके सरी देइ । अं वं
 इरो दिशि जो साको सामण देवी नवइ सअरु ॥ ५ ॥ निणसास एको विध न होइ ॥ द्वायल कुं
 सेउ भोदाइ । लविय रुद्र रिउ हर प्रसर लु । अणि वाणी उं पण उषि उ पा लु ॥ ६ ॥ वउवी सउ
 मी उरुहरण । वउवी सउ केजर मरण । निणवउ वी सन उधरि सेउ । कउ कवि बुजइ होइ
 पसाउ ॥ ७ ॥ रिष बुद्धि निवु सं उत दिसयउ । अति नंद एणु वउ उव न्न यउ । सुमति पद सुप्र
 अवरु सुपा सु । चट्ठण उ आठ मउ निकामु । ण सु विध न वउं सी तलु दस नयउ । अरु अयं उ
 ग्गार हइ उणउ । वा सु प्र सु अरु वि मलु अने तु । अमु सं ति सो लु उं प रू प रू ता । एं कुं थु म तार
 अरु सु प्र उअर । मद्धि ना थु पण सा वारा । मुणि मु व वु न भिने मि वा वी सा पा सु धी रु म कु दे वि

प्रद्युम्न चरित

स्तुति खण्ड

चौपई

सारद विणु मति कवितु न होइ, सरू आखरू एवि बूभई कोइ ।
 सो सधार पणमइ सरसुति, तिन्हि कहु बुधि होइ कतहुती ॥१॥
 सवु को सारद सारद करइ, तिस कउ अंतु न कोउ लहइ ।
 जिणवर मुखह जु गिणाय वाणि, सा सारद पणवहु परियाणि ॥२॥
 अठदल कमल सरोवरू वासु, कासमीरपुर लियो निकासु ।
 हंस चढी कर लेखणि देइ, कवि सधार सरसइ पभरोइ ॥३॥
 सेत वस्त्र पदमवतीण, करहं अनावणि वाजहि वीण ।
 आगम जाणि देहु बहुमती, पुणु दुइजे पणवइ सरसुती ॥४॥

(१) १. सार (क) साह (ग) २ अखिर (क) अखर (ख) अक्षर (ग) ३. नवि (क) नउ (ख) कहइ सभु (ग) ४ बूभं (ख) ५. जोइ सधारि जणणि सरसति (क) जो सधार पणवइ सरसुती (ख) जउ सधार पनमइ मुरसती (ग) ६. ननमइ निह नइ बुधि न हरती (क) तिन्हि कहु बुद्धि होइ गति (ग)

(२) १. सह (क) २ कहइ (ख) ३. को (क) ताकउ (ग) ४. कोइ (क, ख) ५. मुखि सो निश्चं जाणि (क) जउ मुख हति विद्या खणी (ग) ६. पणवउ परमाणि (क) सारद पनव बहुविधिघणी (ग)

(३) १. अठदल (क ख, ग) २. कवल (ग) ३. मुखमंडणवामु(क) पुरलिउनिघास (ख) पुरी लियो निवामु (ग) ४. हंसि चडि करि पुस्तकि लेइ (ग) (क) प्रति में तीसरा और चौथा पद्य निम्न प्रकार है—

जोइ सधारि पणवउं पणमेवि, सेत वस्त्र पदमावति देवि ॥३॥

करहि कला करि वीणा अति, आगम जाण देहु बहुमती ।

हंसासणि लेहइ दुख अति, बोइ कर जोइ एमउ सरसती ॥४॥

५. साधार (ग) सधार (ख)

(४) १. श्वेत (ख) २. पदमासण (ग) पदमावतीलीण ३. आगमु (ख, ग) ४. विनउ (ग) ५. पुणि (ग) ६. दुजे (ग) ७. पणवउ (ग) पणवउं (ख) ८. बहु सरसुती (ग)

पदमावती दंड कर लेइ, जालामुखी चकेसरी देइ ।

अंवमाइ रोहिणि जो सारु, सासण देवी नवइ सधारु ॥५॥

जिण सासण जो विघन हरेइ, हाथ लकुटि लै उभी होइ ।

भवियहु दुरिउ हरइ असरालु, अगिवाणीउ पणउ खिन्नपालु ॥६॥

चउवीसउ स्वामी दुह हरण, चउवीसउ मुक्के जर मरण ।

जिण चउवीस नमउ धरि भाउ, करउ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥

रिपभु अजितु संभउ तहि भयउ, अभिनंदणु चउत्थउ वन्नयउ ।

सुमति पदमुप्रभु अवरु सुपासु, चंदप्पउ आठमउ निकासु ॥८॥

सुविधु नवउ सीतलु दस भयउ, अरु श्रेयसु ग्यारह जयउ ।

वासुपूजु अरु विमलु अनतु, धम्मु सति सोलहउं पहूपहंत ॥९॥

(५) १. भुरि करि लेइ (क) बंडु (ख, ग) २. सकेसरी (ग) चक्केसरि (क)
३. देवि (क) ४. अंवमाइ रोहिणि जे सार (क) अंवउ हीनउ छंडि, जी सार (ग)
५. सा सा प्रणमो नोइ सधार (क) सासण देवि कथइ साधार (ख)

(६) १. जिन शासनि (क) सासणि (ग) २. रहाइ (ग) ३. हाथि लकुटि सो
उभउ होइ (क) हाथ लकुटि टाढा लिउ लाइ (ग) ४. भवियण (क) ५. दुरी (क) दुरतु
(ग) ६. असराल (क) ७. क्षेत्रपाल (क) क्षेत्रपालु (ख)

(७) १. चउवीसइ (क) २. सामी (क) ३. जे चउवीसइ मुक्का (क) चउवीसइ
मुक्के ४. चउवीस नमो धरि भाव (क) जिण चउवीस रामउ धरि भाउ ५. करो
(क) ६. जे (क)

नोट—७ वा पद्य ग प्रति मे नही है ।

(८) १. रिपभ अजित सभउ तह भयउ (क) २. तहि थयउ (क) हरि सुयउ
(ख) ३. पदम (क, ख) ४. यह (ग) ५. पासु (ग) ६. चन्द्रप्रभु (क) चदप्पहु (ख)
७. आठमउ सुभागु (क) अट्टमु सतिभागु (ख)

(९) १. सुविधि (क) सुविहि (ख) २. शीतल तह दसमउ भयउ (क) सु
नवउ शीतलु दसमउ (ख) ३. जिण धीमणइ ग्यारमो थयउ (क) जिण स्यमु
ग्यारहमउ जयउ ४. धम्मं संति सोलहउं जिणइ (क) धम्मु संति सोलहमु निरुतु (ख)

कुंथु^१ सतारह^२ अर सु अत्थार, मल्लिनाथु^३ एगुणसी वार ।

मुणिसुन्नतु^४ नमि नेमि^५ वावीस, पासु^६ वीरु महु देहि^७ असीस ॥१०॥

सरस^१ कथा रसु^२ उपजइ^३ घणउ, निमुणहु^४ चरितु^५ पजूसह^६ तणउ ।

संवतु^७ चौदहसै^८ हुई गए,उपर अधिक^९ ग्यारह^{१०} भए ॥

भादव दिन^१ पंचइ^२ सो सारु, स्वाति^३ नक्षत्र^४ सनीश्चरवारु ॥११॥

वस्तु बंध छन्द—

एविवि^१ जिणवरु^२ सुट्टु^३ सुपवित्तु^४ ।

नेमिसरु^५ गुण^६ णिलउ^७ सामि^८ वपु^९ सिवदेवि^{१०} नंदणु ।

चउतीसह^१ अइसइ^२ सहिउ^३ कम्मवारण^४ घण^५ मान महणु ॥

हरिवंसर^६ रुहइ^७ मणि^८ तिजयणाहु^९ भय^{१०} सासु ।

समयमुहं^१ पंचज^२ णाणु^३ केवलणाण^४ पयासु ॥१२॥

(१०) १. कुंथ सतारह अर अठार (क) कुंथु भतारह अर अठार (ख)
२. मल्लिनाथ उगणीस कुमार (क) मल्लिनाहु उगणीसमउ कुमार (ख) ३. मुणिसुन्नत (क, ख) ४. निमि (ख) ५. पास वीर ए इम चौबीस (ख) पासु वीरु अन्तिम चौबीस ।

(११) १. रस (क) २. उपइ (ख) ३. निमुण (क) ४. पजउवन (क) पजुअह (ख) ५. चउदसइ इग्यार (क) चउदहसइइसु (ख) ६. अधिकइ (ख) ७. भईए ग्यार (क) संवत पंचसइ हुई गया, गरहोतराभि अर तह भया (ग) ८. भाद्रवमु दिनम धोजे सार (क) भादव सुदी पंचमी सो सार (ख) भादव वदि पंचमि तिथि सार (ग) ९. नक्षत्र (क) नक्षित्र (ख) १०. सनीश्चरवार (क)

(१२) १. नमिय (क) नविवि (ख) २. जिणवर (क) ३. सुट्टु (ख) सनु (ग) ४. सुपवित्तु (क) ५. सोमवयणु (क) सामवणु (ख) श्यामवणु (ग) ६. एवि (ख) ७. वावीसमउ जिणेसह (क) वावीसमु दयसहिउ (ख) ८. मर मोह खंणु (क) मयमोहखणु (ख) ९. हरिवंसह तमु कमल रवि (क) हरिवंसह तह कमल रवि (ख) १०. तिजइ णाहु पयासु (क) तिजय नाहु हय पासु (ख) ११. चउयइ संधह तमु हरइ (क) चउविह संधह तमु हरइ (ख) १२. केवल ज्ञान प्रकासि (क) केवलनाण पयासु (ख) केवलज्ञान प्रगास (ग) • मूलपाठ "चउवीसह हय दय सहिउ"

पढमद्य पंच परम गुरु नवणी, वीय जिणवर पय सरण
गुरु णीगांथु नउं धरि भाउ, करउं कवितु जउ होउ पसाउ ॥१३॥

द्वारिका नगरी वर्णन

जंबूदेशु सुदंसणु मेरु, लवणवुहि वेढियउ सु फेरु ।
भरहखेत दाहिण दिसि अहइ, सोरठ देसु माहि तिही वसइ ॥१४॥
वसइ गाम्व'ते नयर समान, नयर विसेपइ देव समाण ।
यह मंदिर धवल हर उतंग, कणइ कलस भलकंति सुचंग ॥१५॥

(१) पणवरि पणमो जिनवर वाणि, जामइ सुध वच्च गुण खाणि ।

करउ कवित जे करउ पसाउ, मोहिय जन तरण भनि भाइ (क)

पढम पंच परमेष्टि एवेवि, वीरणाहु भतिय पणवेवि ।

जामु तित्थि मइ जिणवर धम्म, पाविवि सहलु कियउ नर जम्मु । (ख)

पुणु पुणु पणविवि जिणवर वाणि जामइ सहअच्छ मणि खाणि ।

करइ कवित्तु जइ करइ पसाउ । मह पजुअ करणें अथुराउ ॥

नोट—ग प्रति मे प्रथम २ पंक्ति पीछे निम्न पाठ है—

दया धम्मं दिनु रयणि, नरइ रतुति चउवीस वंदनु ।

सभम भाग बहुविधि सहिउ, केवल ज्ञान प्रगास ॥

मुक्त गउ दिई कम्मकरि, बुहिषण वदइ तामु ॥

चौपई

पहिलइ माइ पिता गुरु सरण, वीतराग जिणवर पाइ सरण ।

गुरु निरगयु नवउ धरि भाउ, हुइ इक चित्ति मुभु करी पसाउ ॥

(१४) २. वीप (क) डीउ (ख) डीप (ग) १. सुदंसण (क,ख,ग) ३. लवणोदधि (क,ग) ४. वेढयउ चहु फेर (क) वेढिउ चउ फेर (ख) वेढघो चउ फेरि (ग) ५. भरत (क,ग) ६. पेत्र (क,ग) सेत्रु (ख) ७ तिह दाहिण दिसइ (क) तहो दाहिणा दिसइ (ख) दाहिणी दिसा (ग) ८ देसु (ख) देश (ग) ९. माभि सो वसइ (क) माभि तहो वमइ (ख) माहि तिसु वसा (ग)

(१५) १. वसहि (ख,ग) २ गाम (क,ख) गाव (ग) ३. तिह नगर समान (क) ते नयर समाण (ख) तहि नगर समाण (ग) ४. नयर सेवही (क) नयर विसेषहि (ख) नगर विसेषहि (ग) ५ विमाणु (क) विमाण (ख,ग) ६ मड (क,ख) गड (ग)

सायर माहि द्वारिकापुरी, धणय जंक्ष जो रचि करि धरी ॥

वारह जोजण कै विस्तार, कंचण कलस ति दीसइ वार ॥१६॥

छाए चउवारे बहुभति, मुद्ध फटिक दीसह ससि कंति ।

माग्रंज मणि जाणां जडे किमाड, सोहहि मोती वंदनमाल ॥१७॥

इकु सोवन धवलहर अवास, मढ मंदिर देवल चउपास ।

चौरासी चौहटे अपार, बहुत भाति दीसह सुविचार ॥१८॥

चहु दिम राइर गहिर गंभीर, चहु दिस लहरि भुकोलइ नीर ।

सो वारवइ पयण जाणिए, कोडिध्वज निवसहि वाणिये ॥१९॥

७. धवल हर उतुंग (ख) देवल उरांग (ग) ८. कण्ड कलस भलकंति सुचंग
(क) काणय कलस धय मंडिय तुंग (ख) विविह भंति दीसहि भति चंग (ग)

(१६) १. मद्रिभ (क) माहि सो (ख) २. धणय जलि सु रचिकरि धरी (क)
धणय जक्ष सो रचि करि धरी (ख) धनयर जल बहुत विधि करी (ग) ३. जोयण
कद विस्तारि (क) जोयण कै विचारि (ख) जोजन कद विस्तारि (ग) ४. शाहति
भलकहि वारि (क) सोहत दीसहि वारि (ख) कलसज दीपहि वार (ग)

(१७) १. छाजे (क, ग) छाजे (ख) २. ससि उदौ करंति (ग) ३. भरवत
मणि बहु जड़े किवाड (क) मरगज मणि बहु जड़िय किवाड (ख) मरगज मणिक
जडे किवाड (ग) ४. मोतिय (ख) ५. चन्द्रबाल (क, ख, ग)

(१८) १. एक सुवन (क) इक सोवन (ख) इक सोवन (ग) २. आवास
(क, ग) ३. देवल (क, ग) ४. चउरासी (क, ख, ग) ५. चउहटे (क, ख, ग) ६. बहुत भंति
(क) विविह भति (ग) ७. सविभार (क)

(१९) १. चउ (ख) २. दिसु (ख) दिसि (ग) ३. सायर (क) सायर (ख)
भाइर (ग) ४. गहिर (ख) गहर (ग) ५. गंभीर (ख, ग) ६. पयन (ग) ७. नीर (क)

नोट—(ग) प्रि में निम्न पंक्ति श्रौर है—

चहुं दिसि नाना वरुं सिगार, चहुं दिसि हाट अनुपम अपार ।

८. चौवारे चौहटे जाणिया (क) सा द्वारवइ पयण जाणियद (ख) धन धान सहित
जाणिया (ग) ९. कोटीधुज (क) कोडीधुज (ख) कोडिधुज (ग) १०. वसहि (ग)

धर्म^१ नेम को जाणहि^२ गम्बगि^३, ग्रंरू^४ तहि वसइ अट्टारह^५ पवणि,
 ब्राह्मण^६ खत्री वसहि^७ तियवर^८, वस^९ सुद तहि^{१०} निमसहि^{११} अवर ।
 कुली^{१२} छतीस त सूअइ^{१३} ठाइ, तिहि^{१४} पुरि सामिउ जादउ राउ ॥२०॥
 दल दल साहण^१ गगत अनंत, करइ गज^२ मेदनी विलसंतु ।
 तीनखड चक्केसरी राउ, अरियणदल भानइ भरिवाउ ॥ २१॥
 तिहि वलिभद्र सहोदरू^३ अवरू, तिहि सम पवरीप दीसह अवरू ।
 कोडि छपन जादउ अनिवार^४, करहि राज ते सब परिवार ॥२२॥
 सभा पूरि वइठउ हरि राउ, चउवल सइन न सूभइ ठाउ ।
 अंगर सुगंध वास परिमलइ, कनक दंड सिर चामरि ढलइ ॥२३॥
 पंच सबदु तहि वाजइ घरो, बहुत भाति पावल पेखरो ।
 भरिहि भाइ नाचणि^२ पउ धरइ, ताल विनोद कला अणुसरइ ॥२४॥

(२०) १. धम्म (ख) २. जाणइ (क) ३. गमणि (क), गमणि (ग) ४. धवर (ग) ५. अठार (ख) छतीसइ (ग) ६. ब्राह्मण (ख,ग) ७. वस (क) ८. अपार (ग) ९. वसहि (क) वइस (ख) विस (ग) १०. सुद (क) ११. को जाणइ सार (ग) १२ कुलिय (ख) (१३) छतीसइ निवसइ ठाउ (क) छतीसउ सूअइठाउ (ख) छतीस इन सूअइ ठाउ (ग) १४. निन पुरि निवसिइ जादम राउ

(२१) १. वाहण (ख) सह साहण (ग) २. गिणत न अन्त (क) गणिउ न अन्तु (ख) सयत (ग) ३. राज (क ख ग) ४. मेइण (ख) ५. पहतु (ग) ६. भंजइ (ग) ७. भरिवाउ (क,ख,ग)

(२२) १. वलिभद्र धीरू सहाई तात (ग) २. सहोयर (ख) ३. जेय (क) जेट्टु (ख) ४. नीलवर मूशल उक्किट्ट (क) नीलंबर हलु मूमल उक्किट्टु (ख) रणि अजोत मो सय विनामु ग) ५. धर धीर (क) (यह पंक्ति ग प्रति में नहीं है ।)

(२३) १. जिह सामनन सूभइ ठाउ (क) जिहि सामन चक्कवइ राउ (ख) चउवरग दल नाहिन सूभइ ठाउ (ग) २. गंध वास परिमत मह महइ (क) सबहि भवर परिमतइ (ख) ३. वणइ (क) कनकनि (ग)

(२४) १. पाय वेणणा (क) परयत वेणणे (ख) भरहि तिभाउ धधिधु वेणणा (ग) २. नाचहि (क) ३. बहुभाति (क) (ततिरा चररा ग प्रति में नहीं है) ४. गुणमनि (क) ऊगारहि (ग)

नारद ऋषि का आगमन

छत्रो हाथ कमंडल धरहि, मूडे मूड चूटी फरहरड ।
 चढिउ विमाण मन विहसंतु, नानारिपि तहां आइ पहुंत ॥२५॥
 नमस्कार करि सारंग-पाणि, कराय सिंघासण दीनउ आणि ।
 रहस भाइ पूछइ नारायणु, कहा तुम्हारउ भो आगमणु ॥२६॥
 हमि आकासत करि उपण, मंत लोग वंदे जिणभूवण ।
 द्वारिका दीठी उपनउ भाउ, तउ तू भेटिउ जादउराउ ॥२७॥
 तउ नारायण विनवइ सेव, भलउ भयउ जो आयउ देव ।
 नानारिपि तुम कीयउ पसाउ, आज पवित्तु भयो इह ठाउ ॥२८॥
 निमुणि वषण रिपि मन विहमाइ, दुसल वात पूछि मतभाइ ।
 दइ असीस सो टाढउ भयउ, फुनि नारद रणवामह गयउ ॥२९ ॥
 जहि सिंगार मतभामा करइ, नयण रेस कजल संचरइ ।
 तिनकु लिलाट ठवइ समिभाइ, पण नानारिपि गो तिहि ठाइ ॥३०॥

(२५) १. करहइ (क) करहि (ग) २. चोटी (ल) उचते घणुगरइ (क)

४. नारद (क) नारदु (ल)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

वास एपि वनि देवी जहा, राउ नरायणु घइठा तिहा ।

(दूसरा तथा तीसरा घरण नहीं है)

(२६) १. अर्ध (क) २. शेषउ (क) ३. कुगल (ग) ४. महमहणु (ग) ५. भयो

(क) भउ (ल) भईया (ग)

(२७) १. भए उत पवणु (क) ते वियउ आगमणु (ल) ते बीया गमणु (ल)

२. धारिणी (क, ल, ग) ३. देनि द्वारिका (ग) ४. भेटियउ दनिमउ घारव राउ (क)

वनिभइ भेटयउ नारउ राउ (ल) तउ तुणह उलटे जःदमगाउ (ग)

(२८) प्रथम दो घरण ग प्रति में नहीं है ।

(२९) १. 'रहमिभाइ पूछइ हरिराउ, तउ नाना रिपि उपना भाउ' प्रथम दो

घरण के स्थान पर ग प्रति में है । २. तउ (ग)

(३०) १. रेह (ल ग) २. बाणु (ल) ३. मबरद (ल)

नारद हाथ कमंडल धरइ, काल रूप कलि देखत फिरइ ।
 सो सतभामा पाछइ ठियउ, दर्पण मांभ विरूप देखियउ ॥३१॥
 विपरित रूप रिपि दिठउ जाम, मन विसमादी सुंदरि ताम ।
 देखि कूडीया कीयउ कुतालु, सांति करत आयउ वेतालु ॥३२॥

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

बडी वार रिपि ठाढउ भयउ, दुइ कर जोड न वणिसण कहिउ ।
 उपनो कौपु न सकयउ सहारि, तउ नानारिपि चलयोउ पचारि ॥३३॥
 विणहं तूर जु नाचण चलइ, ताकहं तूर आणि जउ मिलइ ।
 इक स्याली अरू वीछी खाइ, इकु नारदु अरू चलीउ रिसाइ ॥३४॥
 नानारिपि सण चलयो रिसाइ, श्रीगी पर्वत बइठी जाइ ।
 मनमा बइठउ चितइ सोइ, कइसइ मान भंग या होइ ॥३५॥

नोट—(ग) प्रति में प्रथम दो वरण निम्न प्रकार हैं—

सो नानारिपि घाया लही, सत्यभामा का मन्दिर जहाँ

४ निस्ताउ (ग) ५. तिह टाइ (ग) ६. पट्टो (क ग) गउ (ग)

(३१) १. करइ (ग) २. घाणे (क) ३. टपउ (क ल) गवा (ग) ४. माहि
 (क ल ग) ५. हप (क ग) ६. वेणिया (ग)

(३२) १. विप्रत (ग) विपरीत (क) विप्र (ग) २. कूइए (क) ३. संति (बलग)

(३३) १. वेर (क) २. न वेणण दियो (क) न बइगण कहिउ (ग) न
 बइगण क्या (ग) ३. रोय (ग) ४. सकयो (क) गवया (ग) सण्डि (ग)

(३४) १. विना (क) २. बट्टइ (क) ३. निगट्ट तूर जय घइवि मिसइ (क)
 नाचहु नुप घाइ जहि मिसइ (ग) ४. वानर (क)

नोट—(ग) प्रति में निम्न पाठ है—

साहू तूरि जो नाचण सुरिउ, निगहि तूरण घापनउ मिंगउ (ग)

(३५) १. श्रीगी (क ल ग) २. माहि (ग) ३. वितवइ (क ल ग) ४. एह
 (क) इहि (ल) मानभंग जिउ इगवा होइ (ग)

ताम चितडत वड मुनिराड

कोवानल पजलइ सचभामु अरमान खंडउ ।

कहि काहुस्पउ हहडउ अरव सिला तत्तपि चंपि छडउ ॥

तउ पछिताउ हरि करड मन तह एम्ब विचारि ।

इह पह रूप जु आगली सो परगाउ गारि ॥ ३६ ॥

बोपई

गाउ गाउ तिहि फिरे असेमु, नयर सयलु फिरि दीठे देस ।

सउजु दहोतरू खग वड पुरी, न नारद क्षण इक फिरि ॥ ३७ ॥

नारद का कुंडलपुरी में आगमन

फिरत देस मन चितड सोइ, कुवरि सन्प न देखइ कोइ ।

फुणै नानारिपि आयो तहां, कुंडलपुरि विजाहर जहां ॥ ३८ ॥

भीमुराउ आहि तिस तगाउ, घरम नेम जागाइ ते घगाउ ।

अतिमरूप बहु लक्षण मान्, बेटा बेटी रूप कुम्वारू ॥ ३९ ॥

दीठि पमारि कहइ मुनि जांड, इहि उगाहारि कुम्वरि जो होइ ।

विहि पासाड जड घटड संजोगु तउनि जु होइ नरायणु जोगु ॥ ४० ॥

(३६) १ चितपड (ग) २ मनहि (ल) मनहि फर भाउ (ग) ३. कोहानलु (ल) कोवानल (क) कोवि होइ (ग) ४. परजलइ (क) परजलइ (ल) परजलित (ग) ५. बट्टइ तया पए हराउ (क) बहि बट्टइ होया हरउ (ग) ६ तपि एह चपउ (क) तपि चप उडउ (ल) ७ पछितायो (क) पछित उ (ल) पछिताया (ग) ८. महि (क ल ग) ९. तहि (ल) इम ते (ग) एह पड (क)

(३७) १. गाम गाम (क ल ग) २. मय जगु होया गावांगुरि (ग) ३. तिपि नारद रिपि निरि महि फिरि (क) ते मय नारद तिस इकु फिरि (ल ग)

(३८) १. कुमारी (क ल) २. फिरि (ल)

(३९) १. भीयमु (क ल ग) २. घापि (ग) ३. तिहि (ल) ४. बट्ट (क) लो (ल) ५. बेटा रूपयंजु मुकुमान (ल) बेटा बीया रूपि चवारू (ग)

(४०) १. हट्टि पमारि (क ग) २ मोइ (क ल ग) ३ बगाइ (क) बुरइ (ग)

मन मां डम नारद नितवड, दड अमीम रणवासह गयउ ।

दीठी मुरमुंदरि तंधिणी, अरु तिहि छोलि कुम्बरि र्कमिणी ॥४१॥

नारद से र्कमिणी का साक्षात्कार

अति सरूप बहु लक्ष्मणावत, चन्द्रवयणि ससि उदउ करंत ।

हमगमिणि मनु सोहइ सोइ, तिहिं समु तिरिय न पूजइ कोइ ॥४२॥

नारदु आवत जवु देवियउ, नमस्कार सुरसुंदरि कीयउ ।

देखि र्कमिणी बोलइ मोइ, पाटघरणि नारायणि होइ ॥४३॥

भणइ सहोदरि भीषमु तणी, सेमपाल दीनी र्कमिणी ।

इहि वर नयरी बहुत उछाहु, धरी लगन ठयउ विवाहु ॥४४॥

सुरश्रुंदरि बोलइ सतभाउ, नाहिन बोल तिहारउ ठाउ ।

जो अरिराउ मानपइ कालु, सबुपरिमहं आयो सुसपालु ॥४५॥

(४१) १. महि (क ख ग) २. धनतइ छोडि कुमरी र्कमिणि (क) अरु तिहि छोलि कुमरि र्कमिणि (ख) आयत बोलि तव र्कमिणि (ग)

(४२) १. चन्द्रवदनि ससि सोह वरंनि (क) चन्द्रवदना मणभलकंति २. मोहइ (क ख ग) ३. तिहि मरि तियंग न पूजइ कोइ (ख)

(४३) १. पेलिया (ग) २. कियो (क) किया (ग) ३. कामिणी (ग) ४. बोलो (ग) ५. पटराणी (क) पटघरणी (ग)

(४४) १. सहोदरि (ख) सोडरि (ग) २. भणी (क) ३. तिसुपाल (क) मिसवान (ख) भीमपालि (ग) यह मार्गी मिसपालह धणी (ख) प्रति में यह पाठ है। ४. दीवी (क) ५. तणउ न दीउ वाह (क) ६. वरी (क ख) धन्य (ग) ७. लगनु (क ख ग) ८. पापउ (क) हइ ठयउ (ख) हो ठयो (ग)

(४५) १. नानारिष तव बोल पसाउ (क) नाही इन बोलह का ठाउ (ख) नही इव बोलण का ठाउ (ग) २. मनावे (ख) जे सिरि राउ मनहि लइ कालु (ग) ३. तव (ख) शिव (ग) ४. परिगह (ख) पुरगिह (ग) ५. आवं (ख) आया (ग)

नोट—तीमरा व चौथा चरण (क) प्रति में नहीं है !

निसुणि वयण नारदरिपि चवइ, तिनि खंड मह जो चकवइ ।

छपन कोडि जादउं मुहवंतु, अइमइ छोडि विवाहहि अं नु ॥४६॥

पूर्व रचित न मेटइ कोइ, जिहि कीहु रची विवाहइ सोइ ।

घालहु छोडि वात आपणी, नारायण परणइ हकिमिणी ॥४७॥

तउ सुरसुंदरि मनमा रली, मुणिवर वात कहि सो मिली ।

नारद निसुणि कहउ सतिभाउ, कहहु जुगति किमहोड विवाहु ॥४८॥

रिपि जपइ तुम अइसउ करहु, पूजा करण देहुरइ चलहु ।

नंदणवण की करहु सहेउ, तिहि ठा आणि कराउ भेट ॥४९॥

तव जपइ रुपिणि सुरतारि, को पहिचाणइ कन्ह मुरारि ।

तउ नारदुरिपि कहइ मुजागु, तउ तुहि कहइ ताहि महनागु ॥५०॥

(४६) १. वचन (ल) २. रिपि नारदु (ल) नाना रिद्धि (ग) ३. कहइ (ल)

४. जाइव (क) जावो (ल) ५. महमत (क) मुहकंतु (ल) ६. तेमम (क) घइसउ

७. घंत (क)

नोट—(ग) प्रति में ३-४ चरण म निम्न पाठ है—

छपन कोडि माहि जितनी घाल, घइता पुणु न घउर सवाल ।

२ मूल प्रति में "करउ कथित जउ मइ" डूगरे घोरसोमरे चरणवे घेसम घोर हें ।

(४७) १. तिमनु (क ग) २. कि भू टउ होइ (ल) ३. जेह कउं (क) जिह

कहु (ल) जित कहु (ग) ४. घशो (क) ५. वान्पभ (क) घाउउ (ग) ६. सहल

आपणी (ग) ७. घ्याहइ (क)

(४८) १. तव (ग) २. स्वदरि (क) ३. माहि (क ग) मट (ल) ८. गा

भिषी (क) तउ भरी (ग) ५. नानारिपि मुहि माघी क्हाउ (ग)

(४९) १. एगी (क) ऐमा (ग) २. पूवा बारण (ग) ३. टाउ (र)

टाइ (ल) टाड (ग)

(५०) १. तउ (क) तो (ल) इम (ग) २. जंइ (ल) घोवइमा (ग)

३. हकिमिणि (क ल ग) ४. नारि (ल) मुतारि (ग) ५. सिहालउ (क) सिहालइ (ग)

नोट—२ वा चरण (ग) प्रति में नहीं है ।

६. नानारिपि (ग) ७. हो मुभ (क) हो मुहि (ल) तउमउ (ग) ८. क्हाउ

(क ग) ९. ताम (ग) १०. मुतारि (क) महारि (ल) महाल (ग)

संख चक्र गजापहरण जानु, अरु बलिभद्र सहोदर तामु ।
 सात ताल जो बाणनि हराइ, सो नारायण नारद भणइ ॥५१॥
 आपी ताहि वज्र मुंदड़ी, सोहइ रतन पदारथ जड़ी ।
 कोमलि हाथ करइ चक्रचूरु, मो नारायणु गुण परिपूनु ॥५२॥
 नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन
 खडी वात करि नारदु गयउ, पट्टु लिखाइ रूपीणि को लियउ ।
 चहि विमाण मुनि आयउ तहा, सभा नारायणु वयठउ तहां ॥५३॥
 पुगु पुडु छोड़ि दिग्यालिउ जाम, मन अकुलाणउ नरवइ ताम ।
 काम बाण तमु हयउ सरोर, भउ विहलंधण जादउ वीरु ॥५४॥
 कीयह आछर की वणदेइ, के मोहणी तिलोत्तम कोइ ।
 की विजाहरि रूप मुतारि, काके रूप लिगो यह नारि ॥५५॥

(५१) १. गजापहरण (क) गज पहिरण (ख) गज बहरण (ग) २. जो बाणइ (म) जो बाणहि (ल) इबाणलिहि (न)

(५२) १. आपी तामु (क) आफियहि (ल) आपीताह (ग) २. सोमलि (ल) ३. चक्रचूरु (ख ग) ४. उनपूर (क) मंगुतु (ल) परदुनु (ग)

(५३) १. सरो (क ल ग) २. पट्ट (क) पट्टु (ल) पाटु (ग) ३. रश्मिणी (क) तामु (ग) ४. चहि (क ल ग) ५. रिपि (क) मो (ग) ६. बाया (ल) वहुता (ग) ७. बेंडो (क) बेंडु (ल) बड्डा (ग)

(५४) १. पुगि (क) फलि (ग) २. पट्ट (क) पट्टु (ल) पट्टु (ग) ३. लोनि (ल ग) ४. दिग्यानि (क) दिग्यालउ (ल) दिग्याया (ग) ५. अकुलाणो (क) अकुलाणी (ल) अकुलाणि (ग) ६. नरव (ख) गुवर (ग) ७. हुषा (ग) ८. भयउ (क) भय (ग) ९. विहलंधण (क) विहलंधु (ल) विहलंधनि (ग)

(५५) १. कइ (क) कोइह (ल) केइ (ग) २. आछर (क ग) आचर (ल) ३. बाणदेवि (क ल) बाणदेव (ग) ४. निमानि (ल) नि सोवन (ग) ५. एट्ट (क) केव (ल) एव (ग) ६. विजाहरि (क) विजहरि (ल) विजापर (ग) ७. नगारि (ग) ८. कचइ (क) कां (ल) कचल (ग) कचलिया तिलोत्तम तारि । ग प्रति का घ ११५ कात

नानारिपि बोलइ सतिभाउ, आथि नयरु कुंडलपुर ठाउ ।

भीपमुराउ दीठ तंपीणी, रूपिणी कुवरि आहि तसु तंणी ॥५६॥

सोमइ तो कहु मागी देव, परणउ जाइ म लावहु खेड ।

मयण कामदेहुरे सहेट, तिहि ठा आणि कराउ भेट ॥५७॥

श्रीकृष्ण और हलधर का कुंडलपुर के लिये प्रस्थान

तउ तूठाउ महमहणुरिदु, मन में विहसि कीयउ आणुन्दु ।

रथ साजिउ सारथि वयसारि, गोहिण हलहर लियो हकारि ॥५८॥

तउ सारथि पण रथ साजियउ, पवण वेग कुंडलपुर गयउ ।

वण उद्यान देहुरउ जहा, हलहरु कान्हु पहुते तहां ॥५९॥

ठयो मनु नहु लाइ वार, पटए दूत जणाइ सार ।

कहि जाइ तिहि सारउ वयणु, नंदणवरणु आयो महमहणु ॥६०॥

निसुणि वयण रुपिणि विहसेड, मोती मारिणक थालु भरेइ ।

गोहिण मिली बहूत सहिलडी, पूजा करण देहुरे चली ॥६१॥

(५६) १. अथि नयर (क) आथि नयर (ख) अथि नयर (ग) २. दिठु (क) दिठु (ख) अथि (ग) ३. निहतिणी (क) ४. निते (क)

नो —तिमुकी कुवरि नाम रुचिमणी (ग) प्रति का अ निम चरण ।

(५७) १. स्वामी (ग) २. तुम्ह (ग) ३. न लावहु (क) म लावहि (ख) करहु सत (ग) मइ देहुरे इत करी सहेट, तहां करावउ तुम्ह कहु भेट ॥ (ग) प्रति के अंतिम दो चरण ।

(५८) १. तूठउ (क ख) ऊठयो २. महमहणुरिद (क) मह महणुरिदु (ख ग) ३. महि (क ख ग) ४. कीयो (क) कीया (ग) ५. आनन्द (क ग) आनंदु (ख) ६. साजिउ (क) मजोय (ग) ७. वंसारि (क ख) वदमालि (ग) ८. मुर तेतोत निये संभालि (ग)

(५९) १. तव सारथि मरत्य पेलिया (ग) = वलभद्र (ग) ३. कन्ह (कखग)

(६०) १. उठिउ मित्र (क) क्रिया मंत्र (ग) २. पूछनि दूति (क) ३. करी शुभति जउ साच वण ४. मारिउ (क)

(६१) १. मुणी वचन रूपणि विगणाइ २. नारदु (क) ३. मिलिय गोहिण (क) सखी सहेली बहूती लेइ (ग) ४. गयो (ग)

श्रीकृष्ण और रूक्मिणी का प्रथम मिलन

भेटिउ जाइ तहा हरिराउ, तउ चंपइ रूपिणि सतिभाउ ।
 रादउराइ वयण मुहु गुणहु, सात ताल तुम वाणनि हणउ ॥६२॥
 वज्र मुंदरी आपी आणि, तउ कर मसकी सारगपणि ।
 फुटि चून भइ मुंदड़ी, जनकु कणिक गरहट तल पड़ी ॥६३॥
 तउ कोवडु नरायणु लेइ, हलउ आइ अगूठा देइ ।
 सल केसे सति सूधे भए, सातउ ताल वेधि सर गये ॥६४॥
 नर रूपिणि मन भयो सनेहु, जाणिउ निज नारायणु एहु ।
 रथ चढाइ तिन्हि करी पुकारी, भीषमराइ जणाइ सारी ॥६५॥

वनपाल द्वारा रूक्मिणी हरण की सूचना

पाछइ गरव करइ जिन कोइ, चोरी गए रुक्मिणी लेइ ।
 तव वणवाल पुकारिउ आइ जहि वलु आइ सु लेहु छिड़ाइ ॥६६॥

(६२) १. रूक्मिणी (क) २. मुहि (क) हम (ग) ३. गुणहु (क ख ग)
 ४. तुम्हे वाराउ (क) तुम्हि वारणि (ख)

(६३) १. जव (क) २. मुंदड़ी (क ख ग) ३. ति आपी आणि (क) आपी
 आणो (ग) ४. तंकरि (क) तउ करि (ख) करी समकरी (ग) ५. फूटी (क ख ग)
 ६. जाइ रुक्मिणी लेइ मणि पड़ी (क) जाण्यो साकण हट ते पड़ी (ग)

(६४) १. हलहर (क ख) हलहर (ग) २. अगुडुउ (क) अगूठा (ग) ३. सल
 कितसे मत पूया भयउ (क) सल केस सति सूधा भयउ (ख) सल केधे सति उभे भये
 (ग) ४. वेधि (क) विधे (ख)

(६५) १. तव (क ग) तउ (ख) २. रुक्मिणी (क) ३. सनेहु (क ख) तव को
 मन गया सनेहु (ग) —पूरा चरण ४. देउ (क) ५. तिणि (क ख ग) ६. जणावहु (ग)

(६६) १. करी (क) २. ले गयो (क) पीछइ गरवु म करिज्यो कोइ, चोरी
 गया ते रुक्मिणि लेइ (ग) ३. पुकारिउ (क ख ग) ४. जाइ (ख) ५. आहि (ख) होय
 इमु लेउ छुड़ाइ (ग)

वस्तु बंध—नइय रूपिणि रयह चडाइ ।

पचायगु तेहि पूरियो, सांर सुर लोइउ संकिउ ।

महिमंडलु तहि थरहरिउ, टलिउ मेरु गामेमु कपिउ ॥

महले जाइ पुकारियउ, पुहमिराय अवधारि ।

उभी रूपिणि देवनाहि, हडिलई गयउ मुरारि ॥६७॥

तउ मन कोपिउ भीपमु राउ, ठां ठां भाए निमाणा घाउ ।

तुरीय पनागह गैयर गुडहु, कान रूप हुइ राम्वत चडहु ॥६८॥

सेमपाल राजा सुधि भइ, रूपिणि कुवरि चोरी हरीलइ ।

तवइ कोपि बोदियउ नरेस, नुरिय पनागह वेगि असेम ॥६९॥

रहियर माजहु गयवर गुरहु, मजहु सुहइ आजु रगव भिडहु ।

रावत कर माजहु करवान, धांगुक करहु धरगुह टकार ॥७०॥

सेसपाल अरु भीपमु राउ, दुइ दल भूइन न मुझइ ठाउ ।

घोडउ मुर नइ उछली घेह, जनु गाजहि भादी के मेह ॥७१॥

(६७) १. वेनाइ (क) २. जब (क) ग प्रति में नहीं है । ३. तवइ (क) सट्ट (स) सडहु (ग) ४. सब लोक घाइष (क) मुदलोक कप्यो (ग) ५. इस घलउ (क) ६. हरयो (ग) ७. चप्यो (ग) ८. तव सेस (क) गिरिमेग (ग) ९. महिला जाइ पुकारि करि (क) १०. देहरइ (क) ११. हरिसइ (ग)

(६८) १. घाडउ (क) टाडा (स) वेगे (ग) २. निमाणा (क) ल ग) ३. पत्याणा (क) गयवर (क) ल) ४. गुह्या (क) ५. गाम्ह चट्टया (क) तवहि चडहु (स) ग प्रति में निम्न पाठ है रूपिणी कुमरो घोरो हडिलेइ, कट्टु देव पर कइतो भई

(६९) ६९ को चौपाई ग प्रति में नहीं है ।

१. घलर रयल च करहि टकार (क)

(७१) १. दकुरम मेनन (क) दुइदल मेनन (स) दुइरम २. निसे मेर (क) ल ग) ३. त्रिम (क) जालो (ग) ४. गरजइ भरव घल मेहु (क) गरजइ भासो के मेहु (स) भारव गरजइ मेर (ग)

चिन्ह^१ चमर^२ दीसड^३ चमरत^४, जागौ^५ दावानल^६ करलेहि^७ निमजंत ।
 चतुरंग^८ दलु^९ भयो^{१०} मंजुत^{११}, पवण^{१२} वेग^{१३} रंग^{१४} आइ^{१५} पहुँत ॥७२॥
 आवत^{१६} दलु^{१७} दीठउ^{१८} अपवा^{१९}लु, उड़ी^{२०} खेह^{२१} लोपी^{२२} ससिभागु^{२३} ।
 अह^{२४} डरि^{२५} रुपिगी^{२६} लागी^{२७} कहण^{२८}, किम^{२९} रण^{३०} जीतहुगे^{३१} महमहण^{३२} ॥७३॥
 रहि^{३३} रपीणी^{३४} वामा^{३५} काहरि^{३६} होहि^{३७}, पवरिशु^{३८} आज^{३९} दिग्वाउ^{४०} तोहि^{४१} ।
 सेसपाल^{४२} भानउ^{४३} भरिवाउ^{४४}, वाधि^{४५} न^{४६} आगौ^{४७} भीपमराउ^{४८} ॥७४॥
 वात^{४९} कहत^{५०} दलु^{५१} आइ^{५२} पहुँत^{५३}, सेसपाल^{५४} बोलइ^{५५} प्रजलंतु^{५६} ।
 रावत^{५७} निमजि^{५८} लेहु^{५९} करवानु^{६०}, पडिउ^{६१} भेट^{६२} जिन^{६३} जाइ^{६४} गुवा^{६५}लु ॥७५॥

(७२) १. विहदिस (क) चीर (ग) २. चंवर (ग) ३. फरकंति (क)
 फरहरंत (ख) प्रहरंतु (ग) ४. ध्वजा पवण को जारौ अंभु (ग) ५. कमलिनि जुन (क)
 ६. अरद मनाहु भाय सारंत (क) चमर छत्र दल मिलिया संजुत (ग) ७. दल (क)

(७३) १. असमान (क) अयवाणु (ख) परवाणु (ग) २. मुढंकियो
 (क) सोप्या (ग) लोपिउ (ख) ३. अति (क) ४. महमहण (क) महमहिण (ख)

(७४) १. धोरी हकमिणी मुकंद लहोह (ग) २. भ कायिर (क) मत
 कातिर (ख) ३. दिखालउ (क ख) दिखावउ (ग) ४. भडि (क ख) भड (ग) ५.
 बधी करि आणउ (क) वाधि जु आणउ (ख) आणउ बधिव (ग)

(७५) १. घतिवंतु (क) मयमतु (ख) २. निजु (क) निवजि (ख)
 माजि (ग) ३. न्हामि जिनि मरइ गुवाल (क) अब भागा रित जाहि गोवालु
 (ग) ४. किम (ख)

मूल प्रति एव ग प्रति में निम्न छन्द नहीं है—

जब ससपाल जनमु महि भयउ, बटु सुव दंड गर्भु संभयउ ।

तब तिहि माता बोले बयण, सउ अयगुण सइ बोले तरण ।

तरा बारण हउ समुद्र विदत्त, फुण मुहि रुपिणि देलहि

धनु ॥ ७७ ॥ (ख)

वस्तु बंध—सेसपाल विठु हरिराउ ।

जउ वैसंदर घत ढल्यउ, घनुप वाण कर ले अफालिउ ।

अव समरंगिणि जाणिउ, पुव वयण नियमण सभालिउ ॥

चोरी रूपीणि हरिलइ, इहं तइ कीयउ उपाउ ।

कहा जाइ दिठि परचउ, अव भानउ भरिवाउ ॥७६॥

चोई

दुष्ट वयण सठ पूरे जाम, कोपारूढ विप्यु भौ ताम ।

सारंगमणि घनुप लौ हायि, सेसपाल पठउ जमपंयि ॥७७॥

श्री कृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

हाकि पचारि भिडइ दुइ वीर, वरसइ वाण संघण जाणी नीरु ।

तव वलिभद्र हलावभु लेइ, रहं चूरइ मइगल पहरेइ ॥७८॥

(७६) १. भिडइ (क) हमउ (स) २. जणु (क) जनु (स) ३. घोउ (स)—पूरा चरण—कोपि होइ प्रगतिउ (ग)

निम्न पाठ—(स) प्रति तथा (ग) प्रति में छोरे है—

घणुह बाण करह सइ अफिउ, घवसमरगणि जाणि जाणिघउ (स)

घनुप वाणि हयियार लिए, रे गवार संभार संभनि (ग)

४. पूरव घंरते (क) पुव घइर (स) किउ उपाइ बयों रहहि जीव (ग) ५.

नियमणह (स) ६. हइलेइ घानिउ (क) हइ चलउ (स) से चलयो (ग) ७. एतइ

(क) घहू से (ग) ८. माहउ रिम जाइस (क) कहा जाहि नू (ग) ९. पहियउ (क)

पठिउ (स ग) १०. हिउ (क) इव (ग)

(७७) १. तब (स) मुठु (ग) २. नामु (ग) ३. भयो (क) भउ (स) कोपरंतु

भय बगहूनाम (ग) ४. पालि (क स ग) ५. लइणु (ग) ६. से (क ग) नियो

(स) ७. पठयो (क) पठवउ (स) पठवउ (ग)

(७८) १. एक बार (क) २. पचारि (स ग) ३. उठहि (क) ४. घरा

(ग) ५. तिम (क ग) । किउ (ग) ६. हणामुप (क) हणामु (स) हमवपु

(ग) ७. रवमइ गलने चूरइ लेइ (क) रहं चूरइ मइगल पहरेइ (स)

(७८) का अन्तिम चरण ग प्रति में नहीं है ।

सेसपाल कर^१ धनहर^२ लेइ, वार^३ पचास^४ वाण^५ तो देइ ।
 नाराइणु सउ करइ^६ संघारुणु, वह^७ दूइ सइ^८ मेलहइ^९ सपराणु ॥७६॥
 वह^१ सइ च्यारि^२ वाण^३ पहरेइ, वह^४ सैइ^५ आठ^६ संघाण^७ करेइ ।
 वह^१ सोलह^२ धरि^३ मेलइ^४ चाउ, वह^५ वत्तीस^६ न^७ सूभइ^८ ठाउ ॥८०॥
 दोउ^१ वीर^२ खरे^३ सपराण, दूरो^४ दूरो^५ करइ^६ संघाण ।
 वाढी^१ राडी^२ न^३ उहरण^४ जाइ, वाणनि^५ पुहिमि^६ रहि^७ धरछाइ ॥८१॥

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

तव नारायणु^१ करइ^२ उपाय, नाहि^३ धनुष^४ बाण^५ को ठाउ ।
 फेरहु^१ चक्र^२ हाथि^३ करि^४ लियो, छिनि^५ सीसु^६ ससिपालह^७ गयो ॥८२॥
 सेसपाल^१ भानिउ^२ भरिवाउ, विलख^३ वदन^४ भौ^५ भीपमराउ ।
 भीष्म^१ मारि^२ रण^३ सहन^४ न^५ जाइ, चवरंगु^६ दलु^७ चलयो^८ पलाइ ॥८३॥

(७६) १. घणहणु (क) घणहर (ख) प्रथम चरण ग प्रति में नहीं है ।
 २. वाण (क ख) ३. संघाणु करेहु (ग) ४. करउ (क) देइ (ग) ५. संघाण (क)
 संघाह (ख) संघाणु (ग) ६. बहु (क) उहु (ख ग) ७. पराण (क) शिशुपाल (ख)
 परवाणु (ग)

(८०) १. उसा चारि (क) उहु सय (ख) २. ए छत्तीस न सूभइ ठाउ (क)
 उहु वत्तीस न सूभइ नाउ (ख) रथ चूरे मइगल पुहरेइ, सीसपाल का
 पुणहलु लेइ (ग)

(८१) १. दोइ (क) दोहिमि (ख) २. सपराण (ख) ३. छई सेननउ उठिउ
 जाहि (क) ४. हटण (ख) ५. वाणउ (क) ६. पुहुवि (क) ७. सब (क)

ग प्रति—वधी सुराउ न हटनउ जाइ. वाणिहि पुहवी रहि धर छाइ

(८२) १. करे उपाव (क) करइ उपाउ (ख) २. वाणनी (क) ३. फिरि
 धाणु (क) फेरि चक्रु (ख) केरि चक (ग) ४. हाय हिलउ (ग) ५. छेइ (ग)

(८३) १. धयो (क) २. विषम (क ग) ३. चउरंगु (ख) चावरंग (क)
 चतुरंग (क) ४. बलु (ख) ख प्रति में तीसरा चरण नहीं है ।

तव रूपिणि वोलइ सतभाउ, राखि रूपचंदु भीष्मराउ ।

करइ साथ मन छाडइ वयरु, बहुडि आपि कुंडलपुर नयरु ॥८४॥

तउ नारायणु करइ पसाउ, वाघिउ छोडउ भीपमुराउ ।

रूपचन्द कहु आफहु भरइ, पुणि गिय गयर बहुडि हरि चलइ ॥८५॥

श्री कृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

वाहुडि हलहरु चलै मुरारि, दीठउ मंडपु वराह मंभारि ।

विरख असोग तरा छइ जिहा, तिनी जगे सपते तथा ॥८६॥

तव तिनके मन भयो उछाहु, आजु लग्न हइ करइ विवाहु ।

महुवर भुणि जगु मंगलचार, सूवा पढइ वेद भुण कार ॥८७॥

वसासइ तिनि मंडपु कीयो, दे भावरि हथलेवो कियो ।

पाणि—ग्रहण करिपरणी नारि, फुणि घर चाले कन्ह मुरारि ॥८८॥

(८४) १. थापउ (क) वंयहु (ख) २. कराउ (क) अर राउ (ख ग) ३. संति (क ख) सांत (ग)

ग—करहु सांत तुम षडुल जाउ, चालहु कुंडलपुर हरिराउ (ग)

(८५) १. को आगे करइ (क) कहु आंकउ भरइ (ख) षहु अंक भरिउ (ग) २. वाहुडि नृप नयर कहु चलइ (क) फिरि गिय नयरि बहुडि हर चलइ (ख) पुणि तिहि नयरि बहुडि चालिबउ (ग)

(८६) १. विरखु (ख) वृष्य (ग) २. तराउ (ख) तरा (ग) ३. है (ख) हइ (क) ४. तीनों (ग) ५. पढते तहां (ग) सुपढते तहां (ख)

८६ वां छन्द क प्रति में नहीं है

(८७) १. ठया (ग) है करहु (ख) २. महुवर भुणि जगु मंगलचार (ख) मपुर धनिहि होइ मंगलचार (ग) ३. मून पाठ महु में चरित्र सु जाणो मंगलचार सुवर (घ) सोइ (ग)

(८८) १. वणह माहि (क) वणसइ महि (ख) हरइ वंसका मंडप घया (ग) २. थपउ (क) थपउ (ख) ३. देवि समरि (क)

श्रीकृष्ण का रूक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

जव वाइस नारायणु गयो, छपन कोड़ी मिलि उछव कीयउ ।
गूडी ; उछली घर घर वार, उभे तोरण वंदनमाल ॥८६॥
इक रुपिणि अरु कान्ह मुरारि, विहसत पैठा नयर मंभारि ।
ठाठा लोग र्हाए घरणे, उइ पइ पठे मंदिर आपणे ॥८७॥
गये विवस बहु भोग करंत, सतभामा की छोड़ी चित ।
नित नित सुख विलखी खरी, सवतिसाल बहु परिहस भरी ॥८८॥

सत्यभामा के दूत का निवेदन

महलउ राणी पठयो तहा, बलिभद्र कुवर वइठे जहा ।
सीस नाइ तिहि विनइ सेव, सतीभामा हौ पठयो देव ॥८९॥
हाथ जोड़ि महले वीनयो, सतिभामा हइ अइसउ कहउ ।
कवरणु दोसु मो कहहु विचारि, वात न पूछइ कन्ह मुरारि ॥९०॥
निसुणि वयणु हलहलु गऊ तहा, राउ नरायणु वइठउ जहा ।
विहसि वात तिहि विनइ घणी, करइ सार सतिभामा तणी ॥९१॥

(८६) द्वारावइ (क) जव सौ नयरी (ख) २. जाय (ग) ३. महलउ (घ)

आनन्द कराइ (ग) ४. बाधे (ख) रोपी (ग) ५. बंदरवाल (क ख ग)

(८७) १. विपसत (ग) २. सवि (क) अइ (ख) दुइ (ग)

(८८) १. एक (क) २. नारि (क) रोवइ (ख) भुरवइ (ग) ३. सोउ
किसात (क) ४. दुखह भरी (क ग)

(८९) महिला (ग) २. जहाँ (क) ३. कुमर (क) कुमरू (ख) कह (ग)
४. हमि (क) हउ (ख ग) ५. पठए (क) पठयउ (ख) पठई नू (ग)

(९०) १. हिव (क) तुम्ह (ग) २. अइसा घनइ (ग) ३. कयणु (क ख ग)
४. मोहि (क) मुहि (ख) हम (ग) ५. बुधात (ग)

(९१) सुणी वात (ग) हलहर (क ख ग) ३. गयो (क) गयी (ग) ४. तवइ
(ग) तिह (क) ५. वीनयो (क) विनत्रं (ग) ६. करउ (ग)

तउ नारायणु करइ कुतालु, जूठउ रुपिणि तरणउ उगालु ।
 गांठि वाधि संपतउ तहा, सतिभामा कइ मन्दिर जहा ॥६५॥
 सतिभामा हरि दीठउ नयणा, रुदनु करइ अरु वोलइ वयणा ।
 कहइ वात बहु परिहस भरी, कवण दोस स्वामी परहरी ॥६६॥
 तउ हंसि वोलइ कन्ह मुरारि, मधुर वयण समभाइ नारि ।
 कपट रूप सो निद्रा करइ, गाठी भुलाइ खाट तर धरइ ॥६७॥
 गाठी भूलति जव दीठी जाम, उठि सतभामा छोरी ताम ।
 परीमलु महकइ खरी सुगंध, देखी सुगंध लगाइ अंग ॥६८॥
 अंगु मलति जव दीठी राइ, जागि कान्ह वोलइ विसधाइ ।
 तेरउ जाणु गयउ सवु आलु, इह तउ रुपिणि तरणउ उगालु ॥६९॥

(६५) १. गंठि (क ख) २. बंध (ग) ३. संपतो (क) संपता(ग) ४. कउ (क ख) का (ग)

(६६) १. दीठा (ग) २. जाम (क) ३. बोली इक माम (क) ४. रोसह (क)
 ५. दोसि (क ख) दोसे (ग)

(६७) १. समभावइ (क ख ग) २. तलि (क ख ग)

(६८) गंठडी भूलत वेखी (ग)

नोट—दूमरा चरण क प्रति में नहीं है

२. छोडी (ख) दीठी (ग) ३. वहइ धरिय (ख) दीठा गध मुचंग (ग) ४. दोडि (क) ५. लावइ (ख ग)

(६९) १. नारि (ग) २. जागु कन्ह बोलीया विचारि (क) ३. विहमाइ (ख)
 ४. तेरा (ग) ५. सिगारु गयउ सवु अहव (ख) अदगुणु गया सभु आलु (ग) ६. ऐह (क) इह है (ख)

निम्न धन्द मूल प्रति तथा क और ख प्रति में नहीं है—

वितयेते बचो घृत टनि जाइ, धरणभावना न रुपा लाइ ।

बहा नाराइणु भंतहि आलु, इह मुहु बहणि तरण उगालु ॥

सत्यभामा का रूक्मिणी से मिलने का प्रस्ताव

सतिभामा बोलइ सतिभाउ, मो कहु रूपिणी आसि भिटाउ ।
 तव हसि बोलइ कान्ह मुरारि, भेट कराउ वणह मभारि ॥१००॥
 उठि नारायण गयो अवास, वैठउ जाइ रूकिमिणी पास ।
 वहु फुलवाडि वसइ वण भाहि, चलहु आजि जह जेवण जाहि ॥१०१॥
 रूपिणि सरिस नारायण भये, चढे सुखासण वाडि गये ।
 विरख असोग वावरी जहा, लइ रूकिमिणि उतारी तहा ॥१०२॥
 सेत वस्त्र उज्जल आभरण, करकंकण सोहइ आभरण ।
 देवी रूप अला वइसारि, जपइ जाप तहा गयउ मुरारि ॥१०३॥

सत्यभामा और रूक्मिणी का मिलन

पुणि सतिभामा पठइ जाइ, हउ रूपिणि कहुं लेउ बुलाइ ।
 जाइ वावरी ठाढी होइ, जिम रूकिमिणी भिटाउ तोहि ॥१०४॥

(१००) भिताइ (ग) करावहुं (ग)

(१०१) १. ब्रिहउ (क) बइठा (ग) २. फल धादि (क) फुलवाड (ख)
 फुलवावि (ग) ३. अछइ (क) अछे (ख) अछहि (ग) ४. सुम भेटण जाहु (क) तहं
 भेटण जाहि (ख) तिन्ह देलण जाहि (ग)

(१०२) १. भयउ (क) गये (ख) भया (ग) २. वृक्ष अशोक (ग) ४.
 वाषडी (क ख ग)

(१०३) १. श्वेत (ग) २. सोहइ अनियर काठल नयण (क) कर कंकण
 सोह सडिबण (ख) कर कंकण पहरे मन हरण (ग) ३. अयल वइसारि (क)
 धार्ल धंसारि (ख) ४. जपे (क) जपहि (ख) अनियऊ (ग) ५. बहि (क ख ग)

(१०४) १. किरि (क) कुलि (ग) कुनि (ग) २. पहिरी (क) पडई (ख) पडलं
 (ग) ३. बहे धाम नरउइ सतिभाउ (क) ४. अछइ (ग) ५. क प्रति में निद्र पाठ है—
 धारि गेहियो मू धलि होइ, वन रूकिमलि भेटाउ तोहि ।

नोट—दूगल धोर सीगल चणु म प्रति में नहीं है ।

६. भेटाउ (क) भितापउ (ख) भितावहु (ग)

गोहिण मिलो बहुत सहिलडी, वाडी गइ जहा वावडी ।
 नयण निरखि जद देखइ सोइ, वण देवी वह वैठी कोइ ॥१०५॥
 पय ससि चेली जल मह हाइ, पुणि देवी के लागइ पाइ ।
 सामिणि मुहिकहु देहु पसाउ, जिम मुहि मानइ जादउराउ ॥१०६॥
 अरु वह देवी मनावहि सोइ, जिमि रुकिमिणि दुहागिणी होइ ।
 विविह पयार पयासइ सोउ, आगइ आइ हमइ हरिदेउ ॥१०७॥
 सतभामा तुमि लागी वाइ. वार वार कत लागइ पाइ ।
 काहो भगति पयासहु घणी. यह आलइ वयठी रुकिमिणी ॥१०८॥
 नतिभामा बोलइ तिहि ठाइ, कहा भयो जइ लाइ पाइ ।
 कूडी वूधी करइ तू घणी, यह मो वहिणी होइ रुकिमिणी ॥१०९॥

(१०५) १. बहुतु सटेमी मिली (ग) २. गयी जिरां घारी वावडी (क) वाडी माहि देखहि एवती (ग) ३. जो नयण दिराइ (क) जिव देखइ ताइ (ल) ४. देव्या (ग) ५. जइ लागइ पाइ (क ल) ६. घट (क)

(१०६) १. परहति बोलि पणवहि गाइ (ल) २. लागी (ग) लागं (ल) ३. पाय (ल ग) ४. मोरहु (क ल) हमको (ग) ५. वरहु (क) ६. जउ हउ मारो जादमराय (ग)

(१०७) १. इम (क ल) जउ (ग) २. ऊहु (ल) ३. तउ (ग) ४. मेव (क ल) ५. धामनि (क) ६. हने ।

नोगरा घोर घोडा परग म प्रति में रही है ।

(१०८) १. वरु लागइ पाइ (क) तुमि लागी पाइ (ल) तुमह कहउ सभाउ (ग) २. वय (ग) ३. भाइ (ल) ४. वाइउ भगति वरहि घहु घणी (क) वाहुउ भगति पयासहु घणी (ल) ५. वरा आनि बोवहि धारणी (ग) ६. घगाइ (ग) घट जो बगिनि घाटि वरगिली (क)

(१०९) १. दूसा (ग) २. कूड कुडि (क ल) कूरी कुडि (ग) इनरी कुडि (ग) ३. कूमी कूट लणी (ग) ४. मोहि (क) लु (ल) मउ (ग)

राति दिवस तू करिहि कुतालु. वंस सहाउ न जाइ गुवालु ।
 फुणि रूपिणी सहु करह सभाइ. चालइ वहिण अवसइ जाइ ॥११०॥
 चढि याण ते गइ अवास, सब सुख भूजहि करहि विलास ।
 राजु करत दिन कछुक गये, राणी दुहु गर्भ संभये ॥१११॥
 तव सतिभामा चवइ निरुत, जाके पहिलइ जामइ पूत ।
 सो हारइ जाहि पाछइ होइ, तिहि सिहु मूंडि विकाहइ सोइ ॥११२॥
 सतिभामा अरु रूपिणि तरणी, वलिभद्र आई भयउ लागणउ ।
 तुम जिण करहु हमारी काणि, जे हारहि तिहि मूडहु आणि ॥११३॥
 एतह कुरवइ पठयउ दत, नारयण पह जाइ पहुत ।
 तुम घर जेठउ नंदन होइ, ता दूतह करावहु सोइ ॥११४॥

(११०) १. कोताल (क) डमाल (ग) २. वस वजाहें नही गोवाल (क) मुभ कहु कहा भोलवहि गोवाल (ग) ३. त्यो कहे सुभाइ (क) सहु कहइ सुभाइ (ख) बोलत सतभाउ (ग) ४. चालि (क ख) चलहि (ग) ५. बहण (क) बहण (ख) बहुण (ग) ६. भरणे घरि जाहि (क) आवासहि जाहि (ख) आषासहि जाइ (ग)

(१११) १. चकडोल (क) विमणि (ख ग) २. गए (क) चली (ग) ३. आवास (क) आवासि (ग) ४. भोग (ग) करत केलि दिन केतक गये (ख) ५. बहुत (क ग) ६. विहुकर (क) दुहु कहु (ख) दुह (ग) ७. ज भए (क) ८. गर्भ (ख)

(११२) १. जिहि घरि पहिला जन्मे पूत (ग) २. जिह (क) जिमु (ख) जिहि (ग) ३. पोदे (ग) ४. तिर (क) तिस (ख ग) ५. विवाहइ (क ख) विवाहै (ग)

(११३) १. भणउ (क) तरणउ (ख) तरण (ग) २. कुमर (क ग) ३. भयो (क) सयउ (ख) हुवा (ग) ४. लागण (ग) ५. मत (क ग) ६. तिह (क) तिस (ग)

(११४) १. एतइ (क) तिहि (ग) २. कडरविहि (ग) ३. तह (ग) ४. घाइ (क ख) जिह को निय घुव घ्याहइ सोइ (क) कुरवइ धीप विवाहइ सोइ (ख ग)

सत्यभामा और रुक्मिणी को पुत्र रत्न की प्राप्ति

एतह^१ आइ^२ बहुत^३ दिन^४ गये, दुहु^५ नारि^६ कह^७ नंदन^८ भये ।

लक्षणवंत^९ कला^{१०} समजुत, ऐसे^{११} भये^{१२} दुहु^{१३} घर^{१४} पूत^{१५} ॥११५॥

सतिभामा^१ तणउ^२ वधावउ^३ गयउ, जाइउ^४ सेसे^५ ठाढउ^६ भयउ ।

रूपिणि^१ तणउ^२ वधावउ^३ जाइ, पाइत^४ सो^५ पुण^६ वयठउ^७ जाइ ॥११६॥

जागि^१ नरायणु^२ वइठो^३ होइ, रूपिणि^४ दूत^५ वधावउ^६ देइ ।

हाथ^१ जोडि^२ बोलइ^३ विहसंतु, रूपिणि^४ घरह^५ उपनउ^६ पूत^७ ॥११७॥

दूजउ^१ दूत^२ वधावउ^३ देइ, नारायण^४ सिहु^५ विनवइ^६ सोइ ।

हउ^१ स्वामी^२ तुम^३ पह^४ पठयउ, सतिभामा^५ फुणि^६ नन्दण^७ भयउ ॥११८॥

(११५) १. एतउ कहि दूत तब गये (क) २. भये (ग) ३. वेउ (क) दुहु (ग) ४. घरि (क) ५. लखिण (क ख) ६. धत्तीस (ग) ७. संयुत (क ग) संजुत (ख) ८. जइसे (ग) छइसे (ख) ९. विहु (क) १० के (ग)

(११६) १. जाइउ (क ख) जाइप्र (ग) २. सीसउ (क) सीसे (ख) सीसा (ग) ३. ठाडउ (क) ठाउ (ख) ठाडा (ग) ४. छ्राद (क) देइ (ग) ५. तालि से (क)—सो पुणि पाइवि खडा रहेइ (ग)

(११७) १. होइ (क)

ग प्रति का तीसरा चौथा चरण—

रुक्मिणि पुतु जण्यो छइ छ्राज, देवउ वधावा ता हरं कात्रि ।

(११८) १. बीजा तिहां (ग) (२) वधावा (ग) ३. स्यो (क ग) सट्ट (ख) ४. विनवे (क) विनवं (ख) विनउ (ग) ५. करेइ (ग) ६. हो (क) ७. पासि (ग) ८. पठाविउ (क) पाठयउ (ख) पाठियौ (ग) ९. घरि (ग)

तउ हरि हलहर लेइ हकारि, कहइ वात जा वलि वयसारि ।

भूठउ वोलि टलै जिन कम्बगु, जेठउ पूत भयउ परदवगु ॥११६॥

दूहु नारि घर नंदण भए, घर घर नयारि वधावा गए ।

सूहो गावइ मंगलचार, वंभण वेद पढइ भ्रुणकार ॥१२०॥

वाजहि तूर भेरि अनिवार, महुवरि भेरि संख अनिवार ।

घरि घरि कूँ कूँ थापे देह, मंगलगावहि कामिणि गेह ॥१२१॥

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

छठि निसि जागरण करंतु, धूमकेतु तहा आइ पहंत ।

घोमि विम्बाणु रचितु छरण जाम, धूमकेतु मनि चितिउ ताम ॥१२२॥

उतरि विमाणु दिट्ठु परदवगु, भणइ जक्षु यहु खत्री कवगु ।

वयर सम्हालि कहइ तंखीणी, इणी हरी नारी मुहि तणी ॥१२३॥

(११६) १. तिहि (ग) २. लोयउ-हकारि (क) लीया बुलाय (ग) ३. वउसा विचारि (क) वलिवइ साइ (ग) ४. भूँठी वात कहइ पर कवणु (ग) ५. जेठ (ग) ६. पुत्र (क ग) ७. परदमणु (क ख)

(१२०) १. द्रुये (ग) २. महुउ गमिउ मंगलचार (क) सूहउ करहिणु मंगलघार (ख) अहि जो गावइ मंगलचार (ग) ३. जयकार (क) भणकार (ग)

(१२१) १. सविचार (क) २. शब्द बहुताल (ग) ३. अनेचार (ख) ४. कुँकम रोला (क) ५. मंगल चारुवर कामिणि करेह (ख) घरि घरि कामिणि गीत करेह (क) मूलपाठ - यह चरण मूल प्रति में न होने कारण 'घ' प्रति से लिया गया है ।

(१२२) १. छट्टा दिवसि निसि गीत चवति (ग) २. यामि (क) लोवि (ख ग) ३. रहइ (क) रहउ (ख) रहया (ग) ४. गरि (क) रणि (ख) तिसु (ग)

(१२३) १. उठिउ (क) २. देव (क) जसिय (ग) ३. वइर (क) वयर (ख) वइरू (ग) ४. एणि (क) वयर हडी (ख) यह हइ हारि नारि (ग)

हुइ प्रछन्न उठावइ सोइ, जैसे नयर न जाणइ कोइ ।
 घालि विमाणि चलिउ ले तहा, वनखंड माभ सिला हति जहा ॥१२४॥
 धूमकेतु ती काही करइ, घालउ समुद्र त वेलउ मरइ ।
 वामन हाथ सिला सो पेखि, इहि तल धरउ मरउ दुख देखि ॥१२५॥
 पूर्व रचित न भेटण कवणु, करम बंध भूँजइ परदवणु ।
 चापि सिलातल सो घर जाइ, तव रूपिणी जागइ तिहि ठाइ ॥१२६॥
 वस्तु बंध—छठि रयणि हरिउ परदवणु
 तह रूपिणि कारणु करइ, अरै पाहरू तुम्ह वेगि जागहु ।
 नारायण हरं निसुणि, तुम वलिवंत पुकार लागहु ॥
 सतिभामा आनंद भयउ, कलयर करइ बहूतु ।
 सो रूपिणि कारणु करइ जिहि रहस्यउ निसि पूत ॥१२७॥

(१२४) १. परछन्नि (क) परछन्नु (ख) प्रछन्नु (ग) २. उठाउ (क) तव उट्टियो (ग) ३. गयउ (क) चलया (ग) ४. सो (ग) ५. वनखंड राडि (क) वणिलइ राडइ सिला यो जह' (ख) वणुखइ राडि सिला हुइ जहा (ग)

(१२५) १. तह (क) तउ (ख) तुव (ग) २. काहउ (क) कहा (ग) ३. पामउ (क) ४. वेगिउ (क) वेगउ (ख) वेगि (ग) ५. वावन (क ख ग) ६. धरो (क) घालउ (ख) घरइ (ग)

(१२६) १. पूरव क्रम गु भेटइ कवण, तउ ए दुख देखे परदमण (क)
 पूरव बंध न भेटइ कोणु, करम बंध भूँचं परदौणु (ख)
 पूरव विभुन भेटइ कोइ, करम लिखा सो निदबइ होइ (ग)

२. चंपि (क ग) ३. रथि (क) ४. जाणइ (क) जगई (ग) धूमकेतु चंपि विणसाइ (ख)

(१२७) १. निसहि हडउ परदवणु, (ग) २. हो (ग) ३. पहखावे (ख) ४. हतहर (क ख) हरधर (ग) ५. मितहू (ग) ६. कुमार (क) ७. वतबंड (ग) ८. मनि (ग) ९. कलियन (क) करजत (ग) १०. हडियो पूत (क) हाडतियउ निसि पूत (ख) जिहि का हडिया तिस पुत (ग)

नयर मांही भयउ कहलाउ, सोवत जागिउ जादवराउ । -
छपन कोटि मिल चले पुकार, फुगि तिस तणी न पाइ सार ॥१२८॥

विद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिये प्रस्थान

एतइ मेघकूट जहि ठाउ, जमसंवर तहि निमसै राउ ।
वारहसइ विद्या जा पासु, कचणमाला गेहिण तासु ॥१२९॥
वहिकौ मन वनक्रीडा रल्यउ, चढि विम्वाण सकलत्तउ चलिउ ।
सोवण माभ पहुतउ जाइ, वीरु परदम्बणु चांपोही जहा ॥१३०॥
देखी सिला माभ वण धरी, वाम्बन हाथ जु उची खरी ।
खण उचसहौ खण तलही होइ, उतरि विम्वाणहु देखइ सोइ ॥१३१॥

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

विद्या के बल सिला उठाइ, तउ नरिद देखइ निकुताइ ।
लपण वत्तीस कनकमय अंगु, जमसंवर देखयउ अरांगु ॥१३२॥

(१२८) १. नयरि (ल ग) २. मांभ (ग) ३. हुआ (ग) ४. कलिहाउ (क)
(क) कलिहाइउ (ग) ५. जाग्या (ग) ६. तसु (क) तिन (ग)

(१२९) १. तहि (ग) २. मेघकुटिलपावइ (ग) ३. जिह (क) जिस (ल)
४. गोई भ्रवांसि (ग)

(१३०) १. उपवन (क) उनका (ग) २. क्रीडा (क) कोला (ल) ३. ऊपरि
भया (ग) उद्यक भयो (क) ४. वेइट्टि (क) ५. गयउ (क) गया (ग) ६. धरिउ (क)
चापिउ (ल) चांपी (ग)

(१३१) १. दीठी (क) २. सो (क ल) जी (ग) ३. कर (ग)

(१३२) १. बिहि सभोग (ग) २. सिललाई उट्टाइ (ग) ३. कनक मइ अंगु
(ग) उरांगु (ग) मूलपाठ—हचरोततु अंगु

कुम्बरू उठाइ उछंगह लयउ, वाहुडी राउ विमाणा गयउ ।
 पाट महा दे राणी जाणि, कंचणमालाहि आपिउ आणि ॥१३३॥
 कंचणमाला लयउ कुम्वारू, अति सरूपु बहु लक्षण सारू ।
 तिसके रूप न देखइ कोइ, राजा धर्मपूत सो होइ ॥१३४॥
 चढि विमाणु सो गयउ तुरंतु, पम्बण वेग सो जाइ पहुंत ।
 नयरि उछाउ करे सवु कवणु, कणयमाल हुवो परदवणु ॥१३५॥
 भो प्रदुवनु कुवर सुपियारू, अति सरूप गुण लक्षण सार ।
 दुइज चंद जिमि द्विधि कराइ, वरस पाच दस को भो आइ ॥१३६॥

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

फुणि सो पढण उभावलि गयउ, लिखितु पढितु सवु बुभिवि निर्यउ ।
 लक्षण छंदु तकु बहु सुणिउ, नाटक राउ भरथ सवु मुणिउ ॥१३७॥

(१३३) १. कर उचाइ (क) २. घटेइ (ग) ३. घाकिउ (क) बीन्ही (ग)

(१३४) १. तिहि के (क) तिहिइइ (ग) तिसइइ (ल) २. पूजाइ (ग) ३.
 राजाहि (ल) राया (ग) ४. सो होइ (ग)

(१३५) १. विमाण (क, ल, ग,) २. तुरंत (ग) ३. गया (ग) ४. धानंदु
 ५. (ग) वरइ(ल,ग) ६. भणइ (ग) ७. घरहि(ग)

(१३६) १. भो (क) तय (ल) सो (ग) २. करे (क) कुमाइ (ल) लरा (ग)
 ३. सुपियार (क) ४. बहू (क ल ग) ५. दोइज (क) दोज (ग) ६. विरधि (क ल ग)
 ७. वरस पंचनउ हुवो जाम (क) वरिस पांच दस का भउ राउ (ल) दग वरग को
 भयो तिहट्टाइ (ग)

(१३७) १. पडणउ (ल) २ परमाउ (ग) उभावहि (क) भावरि (ल)
 भाउरि (ग) ३. गुण (क) बुभिवि (ल) बुभिवि (ग) ४. लयो (ग) ५. बहून सो (क)
 कविनु बहु (ल) ६. राव (क) राउ (ग) मूय पाउ तहु

नोट—बीघरा मोर चौवा चरण ग प्रति में नहीं है ।

धनुष वाणको^१ बूझिउ^२ जाए, सिंघ^३ बूझकी जाणुउ जाए ।
 लडणु^४ पडणु^५ निकासु^६ पइसारू. सवु जाए प्रदुवनु कुम्वारू ॥१३८॥
 एसा^१ वीर भयउ परदवणु, तहि^१ सरिसु न बूझइ कवण ।
 कालसंवर^२ घर वृद्धि^३ कराइ. वाहुरि^३ कथा द्वारिका जाइ ॥१३९॥

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

जहि सो रूपिणि कारणु करइ, पूत्र संतापु हिय गह्वरइ ।
 नित^१ नित^२ छोजइ विलखी खरी, काहे दुखी विधाता करी ॥१४०॥
 इक धाजइ^१ अरू रोवइ^२ वयण, आसू वहत^३ न थाके^४ नयण ।
 पूव्व जन्म^५ में काहउ कियउ, अब कसु देखि सहारउ हियउ ॥१४१॥
 कीमइ^१ पूरिप विद्योही नारि, को^२ दम्ब^३ घाली वणह मभारि ।
 की^४ में लेणु तेल घृतु हरउ, पूत संतापु कवण गुण पर्यउ ॥१४२॥

(१३८) १. कउ (क ख) का (ग) २. विभविउ (क) बूझइ (ग) ३. भुझकउ
 (क) बुझावउ (ख) बूझ का (ग) ठाण (क) वाणु (ख) दूठाणु (ग) ४. भिउणु (ग)
 ५. निकसन पे (क) निकासु (ख) निकलु (ग)

(१३९) १. ताकी सुधि न जाएइ कवणु (क) तहि सम सरिसु न बूझं कवणु
 (ख) २. अइसा वीर भया तिह द्वार (ग ख) इह कथा द्वारिका जाइ (ग)

(१४०) १. ते तउ नारी (क) २. सुसो इव (ग)

(१४१) १. धूजइ (क) छोजइ (ख) २. इकु (ख) पर पूरइ वयण (ग) ३.
 ठलि (ग) ४. भइरसी (ग) ५. पाप मइ किया (ग)

(१४२) १. कइ मइ (क, ग) २. को (क) कइ (ग) ३. दवदीथी (क)
 दवलाई (ख) दवलाई (ग) ४. दुल पड्या (ग)

इम सो रूपिणि मन विलग्वाइ, ती हरि हलहरू वडठई जाइ ।
 मत तू सूंदरि विसमउ धरइ, अनजानत हमि काही करहि ॥१४३॥
 सरलि पयालि कहइ सुधि कम्बराणु, ती हमि चाहि लेहि परदम्बराण ।
 पलि एस्यो हमि करइ पराण, मारि उठावइ गीध मसाराणु ॥१४४॥
 इम समझाइ र्हाइ जाम, ती मन परिहस विसर्यो ताम ।
 आइसे भुरत वरिसुहु गयउ, ती नानारिपि द्वारिका गयउ ॥१४५॥

रूक्मिणी के पाम नारद का आगमन

मंडे मुंड चुटी फर हरै, छत्री हाथ कमंडल धरै ।
 ती नानारिपि आयो तहा, विलिग्य वदन भइ रूपिणि तहा ॥१४६॥
 जब तह नारद दीठउ नयण, गहवरि रूपिणि लागी कहण ।
 पद्मपूत ही स्वामी भयउ, जाणउ नही कवण हरि लयउ ॥१४७॥

(१४३) १. दिण दिण बिलली जाइ (क) २ तत्र (ग) ३. वडटा तिह घाइ (ग) ४. मत (क ल ग) ५. विषवाइ (क) विसमउ (ल) विसमाहु (ग) ६. अनजानते हम कहा करेहि (ग)

(१४४) १. मुरग (क) मुरगि (ल) गुग्गं (ग) २. सो मुधि—(क) तोधि कवणु (ग) ३. तउ वेगइ घाणउ वल मुधि (क) ४. वन्तिह संहणन को पूरनु (क) वनि गतिउ हमि करहि पराणु ५. गीरध (ग)

(१४५) १. हलपर (क) हरि गउ धरि (ल) २. मति परिहस विसारि ताम (क) ३. वन (ल)

नोट—प्रथम २ चरण (ग) त्रि में नहीं हैं ।

(१४६) १. घने (क) छोटी (ग) २. स्त्रिमिलि जहा (क ल) वरिलि हइ जिहा (ग)

(१४७) १. बोवद वयणु (ग) २. एक पुत मुहि सामी भया (क) एहु पुत, सो स्वामी भयउ (ग) एक पुत स्वामी हम भया (ग)

तुहि पसाइ मुहि अंसौ भयउ, पेट दाहुँ दे नंदण गयउ ।

हाथ जोडि वोलै रुकिमिणी, स्वामी सुधि करहु तसुं तणी ॥१४८॥

तव हसि नारद बोलइ वयणु, सुद्धि लेण चाल्यो परदवणु ।

सुर्ग पयालि पुहमि अह नहइ, चालि लेहु इम नारद कहइ ॥१४९॥

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

कही बात नारद समुभाइ, पूरव विदेह सपत्तउ जाइ ।

जहि खेमंधरू सामि पहाणु, तहि उपनू केवलज्ञानु ॥१५०॥

समवसरण नानारिपि गयउ, तह चकवइ अचंभउ भयउ ।

चक्कवंति मुणिं पूछिउ तहा, ऐसे माणस उपजइ कहा ॥१५१॥

सीमंधर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

तउ जिनवर बोलइ सतिभाउ, जम्बूदीप आहि सो ठाउ ।

भरहखेत तहां सोरठ देसु, जयन धर्म तहि चलइ असेसु ॥१५२॥

(१४८) १. तउ सामी किम जाइ कहियउ (क) २. बेटउ (क) ३. दुल (क)
४. ऐसे दे (क) ५. सुत (क)

(१४९) १. विहसि (क) २. सुधि करी लेस्यो परदमणु (क) सुधि करि
चाहि लेउ परदवणु (ख) सुद्ध करि चलहि लेहि परदवणु (ग) ३. पुहविहे जहा (क),
पुहमि जइ रहइ (ख) पुहवि जे अइहै (ग)

(१५०) १. पुण्व (क) २. पुणि पूर्वदिशि पहुता जाइ (ग) ३. सीमंधर (क) ख)
जमघुत (ग)

(१५१) १. अचभो (क) २. सभापेसि पुणि पूछण लिया (ग) ३. तउ छत्रो
(क) ४. जिन (क) नाना रिपि तउ पूछइ तिहां (ग) ५. निपजहि (ग)

(१५२) १. जिनवर (क) २. उपदेसइ (क) ३. भाउ (क) तिह ठाइ (ग)
४. सुणु नानारिपि कहउ सभाइ (ग) ५. भरत क्षेत्र (क) ६. जइन (क,ख) जैन (ग)

सायर मांभ द्वारिका पुरी, जगु सो इंद्रलोक तै पडी ।
 राउ नारायणु निमसइ जहा, एसं माणस उपजइ तथा ॥१५३॥
 ताकी घरणि आहि रुक्मीणी, घरम वात सो जाणइ घणी ।
 ताकी पूत प्रदवणु भयो, धूमकेतु ता हडि ले गयो ॥१५४॥
 वावण हाथ सिला हो जहा, वीर परदवणु चाप्पौ तथां ।
 पूरव जनम वरू ही घणौ, धूमकेत सारिउ आपणउ ॥१५५॥
 मेघकूट जे पवहि ठाउ, तहि निवसइ बीजाहरराउ ।
 काल संवर आयो तिहि ठाउ, देखि कुवरू लंगय उठाइ ॥१५६॥
 तहि ठा विरधि करइ परदवणु, तिसकी सुधि न जाणइ कवणु ।
 वारह वरिस रहइ तिहि ठाउ, फुणि सौ कुवर द्वारिका जाइ ॥१५७॥
 निमुणि वयण मनि नारद रलयउ, नमस्कार करि वाहुडी चलिउ ।
 चडि विवाण मुनि आयो तथा, मेहकूटि मयरदहु तथा ॥१५८॥

(१५३) १. मग्नि (क) माहि (ल,ग) २. जाणो (क) जाणो (ग) ३.

घवतारो (क) उतरो (ग) ४. तउ (ग) ५. निपजइ (क,ग)

(१५४) १. घटइ (ग) २. घम्मं तणो मनि जाणइ घणी (क) ३. तहु बटु (ग) ४. जनघउ(ल)

(१५५) १. हइ (क) धी (ल) (ग) २. लेइ कुंवर (ग) ३. चंपियउ (क) धापियउ (ल) चंपातो (ग) ४. पुव (ल) पुवं (ग) ५. बटु (क) हउ (ल) हइ (ग) ६. सापउ (क) साग्या (ग)

(१५६) १. जो (क) जउ (ल) हइ (ग) २. परवन (क) पावइ (ल) विपडा (ग) ३. विद्यापर (क) विद्याहइ (ल) विद्याहइ (ग) ४. धापिउ तह (क) धापउ ताहि (ग) धापनिउ (ग) ५. उठाइ (क) उषाइ (ग)

(१५७) १. मोरह (ल) २. जाहि (ग) ३. बाहुइ कया (क) पूत सो कुमव (ल) ४. कुवारिका (ल)

(१५८) १. रिनि (क) मो (ग) २. रनिपउ (क) चतिउ (ल) रनिउ (ग) ३. बिल बंरो रिनि (क) ४. मेघकूट (क,ल,ग) ५. महराणा (ग)

देखि कुवरु ररिपि मन विहसाइ. फुणि वारमइ सपतउ जाइ ।

भेटी जाइ तेरा रुकिमीणी. कही सार तसु नंदरा तरणी ॥१५६॥

जिन रूपिणि हीयरा विलखाइ, बरिस वारहै मिलिइ आइ ।

मो सिहु कहियउ केवली वंयरा, निश्चे आइ मिले परदवरा ॥१६०॥

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण -

उकठे आंव फलइ सहार, कंचरा कलसइ दीपइ वारि ।

कूवा वारि जे सूके खरे, दिसइ निम्पल पाणी भरे ॥१६१॥

खीर विरख सब दीसहि फले, अरु आंचलइ होइ हहि पियरे ।

थरा हर जुवल वहै जव खीरु, तव सो आवइ साहस धीरु ॥१६२॥

कहि सहनारा गयो मुनि जाम, रूपिणि मन संतोषो ताम ।

पाख मास दिन वरिस गराइ, बाहुरि कथा वीर पहजाइ ॥१६३॥

(१५६) मनइं (क) मनमहि (ग) २. धिगसाइ (ग) ३. खिणि वारवती
पहुती (क) फुणि वारवइ सपतउ (ख) फुनि सो नयरी द्वारिका (ग) ४ तिहा (क)
तहां (ख) तवते (ग) ५ ते (क) तिसु (ग)

(१६०) १. भन (ग) २. हियडइ (क,ख) हियइ (ग) ३. वारमइ (क) सोरह
(ख) ४. मिलसी (क) मे मिलहइ (ख) मिलइगी (ग) ५. मोहिसउ (क) मुहिसइ (ख)
मोस्यो (ग) ६. श्री जिनवर (क)

(१६१) १. सूके (क) उकठे (ग) २. आंव (क ग) ३. सेंवार (क) सहार
(ख) सहिसउ वार (ग) ४ दीसहि (क) ५. कूवावाविजे (क) कूव बाइजे (ख)
सूहडो बावडि (ग) ६ निरमल (क,ख ग)

(१६२) १. जपि (ग) २ सभि (ग) ३. आंचल (क ग) आंचल (ख) ४.
बोसइ (क) होसहि (ख) दीसहि (ग) ५. पोयले (क,ख,ग) ६. युयल (क) जुगलि (ग)
७. वहु (क) ८ ते (क) परि (ग)

(१६३) १. मु गयउ (ख)

नोट—(ग) प्रति का प्रथम चरण निम्न प्रकार है—

काहसि दिन पूगे सब जान तउ २. नइ (क) ३. बाहुडि (क ख) बाहडि (ग)

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

तहि निमसै^१ सिंघरहु^२ नरेसु, तिहिसिहु^३ विगहु^४ चलिउ असेस ।

जवसंवर^५ जव करइ उपाउ, को भाणइ इहि^६ को भरिवाउ ॥१६४॥

कुवर पांचसौ^१ लए हकारि, रण जीतहु^२ संघरहु^३ पचारि ।

सिंघ जुध जो जाणै भेउ, वेगि आइ सौ वीरा लेउ ॥१६५॥

कुवरन नियरौ आवै कोइ, तव विहसि करी वीवो लेइ ।

मोकहु सामी करहु पसाउ, हउ रण जिणामु सिंघरहु राउ ॥१६६॥

तउ नरवै वोलइ सतिभाउ, वाले कुवर न तेरउ ठाउ ।

जुम तणउ नहि जाणइ भेउ, तिम करि तुहिकहु^५ आइस देइ ॥१६७॥

(१६४) १. निमसइ (क ल ग) २. सिंघरथ (क) सिंघरहु (ल) सिंघरथ (ग) ३. तह सो विघट्टने (क) ताहि सहु विगाहु चलिउ (ल) निमस्यौ विघट्ट घत्या (ग) ४. जम (क) ५. तव (क ल ग) ६. पसाउ (क) ७. निम मानउ एह नउ भडिवाउ (क) निम मानइ इहि कउ भडिवाउ (ल) कोइ भानौ इमु का भडिवाउ (ग)

(१६५) १. पांचसइ (क ल) पंचसइ (ग) २. कुनाइ (ल, ग) ३. सिंघराउ रणि जीतहु जाइ (ग) ४. जुम (क) जुम्भ (ग) ५. तवहि विहसि तव वीवा लेइ (क) तइतुहि धतिरि वीवा लेइ (ल) वेगि आइ सो वीवा लेइ (ग)

(१६६) १. वेउउ (ल) निपटउ (ग) मेहा (ग) २. कवघ (ग) ३. वीवा माणइ सोइ (क) करिवीठ बोलेइ (ल) बोत्यो परदवघ (ग) ४. जीतर्यौ (क) रणि जीतउ (ल ग)

(१६७) १. कुवरन (क ग) कुमरन (ल) २. तेरा (ग) ३. महु (क) मउ (ल) ४. निम (क) निम (ल) निमइ (ग) ५. रिरि (क) ६. तावे तोहि (क)

वालउ सूर आगासह होइ, तिनको जूझ सकइ धर कोइ ।

वाल वभंगु डसइ सउ आइ, ताके विसमणि मंतु न आहि ॥१६८॥

सीहिणि सीहु जरी जो वालु, हस्ती जूह तरागे पै कालु ।

जूह छाडि गए वण ठाउ, ताकह कोण कहै भरिवाउ ॥१६९॥

वालउ जै वयसंदरू सोइ, तिहि सुधि न जाणइ कोइ ।

रउदवाँल हुइ जे परजलइ, पुहमि उभाइ भासमु सो करइ ॥१७०॥

तिम ही वालै राकौ पूत, मोहि आइस देहु तुरंतु ।

अरियण दलु भानउ भरिवाउ, जौ भाजउ तो लाजइ राउ ॥१७१॥

(१६८) १. वाला (ग) २. अगासह (क ल) आयसिहि (ग) ३. ताको तेज न सहिहइ कोइ (क) ताको तेज न यरने कोइ (ल) तिसुका तेज न सहई न कोइ (ग) ४. वालउ (क) बालइ (ग) ५. सर्प (क) भुयंगु (ल) भुयंगि (ग) ६. डसइ जो आवि (क) डसइ जइ कोइ (ल) डस्या जो कोइ (ग) ७. तिहके (क) ताके (ल) तिसुकइ (ग) ८. होइ (ल,ग) विशि कोइ नाहि उपाव (क)

(१६९) १. सीह (क) सीहु (ल) सिघु (ग) २. हायी (क) हसती (ल) ३. जूय (क) पूय (ग)

४. जवहि पडहि तव गिषइ भाउ । भाजि जूय जाहि पलाइ (क)

जवहि पडइ तहि कउ गय वाउ । भाजहि जूह छोडि वण ठाउ (ल)

जे उग्ह ताहि पडइ गंध वाउ । भाजहि पूय छोडि वन ठाउ (ग)

(१७०) १. बाले (ग) २. जे (क ग) ३. बेसंदर (क) वइसावरू (ल) वइसानद (ग) ४. होइ (क ल ग) ५. तिहकी (क) तहकी (ल) तिसुकी (ग) ६. बुडि (ग) ७. दव बाभइ सुह जग पजुने (क) सइभाल जे हुइ परजलइ (ग) ८. परजलइ (ल) ९. पुहमि (ग) १०. इभाइ (क ल) बाभावइ (ग) ११. भसम सो (क ल) भसमी (ग)

(१७१) १. तिमहो (क) तिबहउ (ग) २. वालउ (क) बालु (ल) बाला (ग) माइनो पुत्र (क) रायकउ पुत्र (ल) राइका पुत्र (ग) ४. मोहक (क) मुहिकठ (ल) मोहठ (ग) ५. जं जं भाजउ तउ लीजइ राउ (ग)

निसुरिण वयण^१ मन तूठउ राउ, मयण कुवर कहु करहु पसाउ ।
कालसंवर तव^२ वीडा देइ, हाथ पसारि मयणु तव लेइ ॥१७२॥

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिये प्रस्थान

वस्तुबंध—भयउ आयसु चलयउ परदवणु ।
चउरंग^२ दलु^३ साजिउ^४, पढहु तूर^५ बहु^६ भेरि वजइ ।
तहि कलियलु बहु उछलयउ, जाणी अकाल घण मेघ गजइ ॥
रह सज्जेह^७ गैयर गुडे^८ तुरिहय^९ पडियउ पलाणु ।
हुइ सनधु^{१०} चलिउ मयणु गयणि न सूभइ भाणु ॥१७३॥

चोपई

मयण चरितु निसुरणहु धरि भाउ, जहि रण जिणिवि सिधरह राउ
..... १७४॥

(१७२) १. मन हरपिउ (क) ग प्रति में—सुरिण करि वात अभेषउ
राउ, मयण कुवर कहु भया पसाउ (ग) २. अब (ख) ते तव (ग) ३. पदमणु
(क) परदमणु (ग)

(१७३) १. चलिउ (क) २. चाउरंगु (क ख) ३. दलु (ख) ४. साजियउ
(ख) ५. काइ (क) ६. वजइहि (ख) वाजहि (क) ७. तउ तिह (क) ८. जितउ (क)
जणु (ख) ९. अवरह (क) १०. गाजइ (क) गजइहि (ख) ११. साजे (क) सज्जे (ख)
१२. सुरीयण (क) १३. इसी सनिधि (क) सणइ (ख)

(१७४) १. त्रिणउ (क) जीतउ (ख) २. सिधरयु (क)

ग प्रति में १७३ और १७४ को छन्द निम्न रूप से है—

भया अइसु २ ताम परदवणु,

चतुरंगी सेन सज्जिय । पडहु भेरि बहुतु बजइहि ॥

तहु कलियलु बहु उछलयउ । जणु आजाय ते मेहु गजइ ॥

सर पाइक अर बहुतु दल । तुरियह पडे पलाणु कियो ॥

पयाणउ मयणि भइ । गयणम सुभइ भाणु ॥

तव रावत काढइ करवाल, वरिसहि वाण मेघ असराल ।
 भिडइ सुहड करि असिवर लेइ, रह चूरइ मइगल पहरेइ ॥१७६॥
 मैगल सिहु मैगल आ भिडइ, हैवर स्यो हैवर आ भिडइ ।
 पंचावथु जूमू तहि भयउ, गीध मसाण तहा उठीयउ ॥१८०॥
 सैन्य जूमि परीघर जाम, दोउ वीर भीरे रण ताम ।
 दोइ वीर खरे सपराण, दोइ करइ सिध जिमू ठाण ॥१८१॥
 मलु जूमते दोउ भोडइ, दोउ वीर अखाडो करहि ।
 हारिउ सिंह गयउ भरिवाउ, वांधिउ मयण गल दे पाउ ॥१८२॥
 वस्तुबंध—जवहि जित्यउ कुवर परददणु

सुर देखइ ऊपर भए, वांधि स्यघरहु कुमर चल्लिउ ।

मयण सुगुणु सधेहि वुल्लिउ, तव सज्जण आणंदियउ ॥

देखि राउ आणंदियउ, तू सिवि कीयउ पसाउ ।

महु रांदण जे पंच—सय, तिहि उपर तू राव ॥१८३॥

चोपई

मयण चरितु निसुणि सवु कोइ, सोला लाभ परापति होइ ।

(१७६) १. करि ले (ग) २. असराल (क ख ग) ३. कुमर (ख) ४. रहवर
 चूरमइ गल विहरेइ (क) तीसरा और चौथा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(१८०) १. स्यो (क, ग) २. रण (ग) ३. रहवर (ख ग) पाइक (क)
 ४. सिउ (ख) ५. संचडिउ (ख) तुलि चडं (ग) ६. हयवर सेतो हयवर मार (क) पचावथु
 (ख) पंचवरणु (ग) ७. जव (ख) ८. गिड (ख) गर्पे (ग) ९. उठि गयउ (ख) उठि
 करि गयउ (ग) (क) इणि जूम करत वडवार (क)

(१८१) १. सेना (क ख) संन्या (ग) २. रणि (ग) ३. बहरी (ग)

(१८२) १. मारण (क) माल (ख, ग) २. राउ (ग) ३. बंधि (ग)
 ४. गलि (ग)

(१८३) १. जाम (क ख) २. धचिरज (क) ग प्रति— जइ कीयो तव मूरि
 तहि ३. वांधि (ख ग) ४. ठिवि (ख) ५. इहु (ख)

(१८४) १. सोलह (क ख ग) २. देवा पड घण सो वन जयउ हयोह चडि
 निघरचु धरि गयउ (यह पाठ क प्रति में है) ग प्रति में इन छन्द का पूरा पाठ
 नहीं है ।

विजाहर तव करइ पसाउ, वांघ्यो छोडि स्यंघरउ राउ ।
 देइ पटु पुणि आकउ लयउ, समदिउ स्यंघराउ घरं गयउ ॥१८४॥
 तव कुम्बरन्हि मन विसमउ भयउ, जियत वुआल हमारउ भयउ ।
 इतडो राइ न राखियउ मान, पालकु आणि कीयउ परधानु ॥१८५॥
 तवहि कुवर मिल कीयउ उपाउ, अवं भानउ इनको भरिवाउ ।
 सोला गुफा दिखालइ आजु, जैसे होइ निकंटकु राजु ॥१८६॥
 कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखलाने के लिये ले जाना
 एह मंत्र जिण भेटइ कवरणु, लियउ वुलाइ कुमर परदमणु ।
 कियो मंतु सव कुमर मिले, खेलण मिसि वण क्रीडा चले ॥१८७॥
 भणहि कुवर निसुणहि परदवणु, विजयागिरि उपर जिण भवणु ।
 जो नर पूज करइ नर सोइ, तिहि कहु पुत्र परापति होइ ॥१८८॥

(१८५) १. सव्व (ग) २. कुमर (क) कुमारहं (ख) कुवरिहि (ग) ३. विशापो (क) विसमा (ग) ४. कियउ (क) भया (ग) ५. जीवत (क) जीवतु (ख) देखुषु (ग) ६. आलु (क) अहलु (ख) हालु (ग) ६. गयउ (ख) ययउ (क) कीया (ग) ७. एतउ (क) इतनउ (ख) इतना (ग) ८. राखिय (क) राखिउ (ख) राख्या (ग)

(१८६) १. तव (क) २. कुमर (क) कुमार (ख) कुवरिहि (ग) ३. एहनउ (क) इसुका (ग) ४. इव भागा (ग) इव भनि हिया कउ भडिवाउ (ख) ५. दिखालइ (क ग) ६. निकंटो (क) निकेरट्ट (ख) ७. जिउ हम (ग)

(१८७) १. मंतु (ख ग) २. भेटउ (क) भेटइ (ख) मोटइ (ग) ३. कवरण (क) कउण (ग) ४. चालहु जाहि लेण (ग) ५. भाई सवि (क) ते जिण महि (ग) ६. खेलउ (क) अन्तिम चरण का (ग) प्रति मे निम्न पाठ है—

जाइ जो लेण मुचति क्रीडा को चले ।

(१८८) १. भाजहु (ग) २. देखउ (ग) ३. तिह (क) तह (ख) तिन्ह (ग) ४. कोइ (क,ख,ग) ५. तिह को (क) तिसको (ग) ६. पुनि (क) पुन्न (ख,ग)

निमुण्णि वयण ह॑रप्यो परदव॑णु, च॒डि गिरव॑रि जोव॑इ जिणभव॑णु ।
 च॒ढी जो देख॑इ वीर॒ पगारु॑, विपमु॑ नागु करि मिल्यउ फु॒कारु॑ ॥१८६॥
 हाकि मय॑णु विसहर॑स्यो भीड॑इ, पकडि पूछ॑ तहि॒ तलसी॑उ करइ ।
 देखि वीरु॑ मन चिभिउ सोइ, जाख॑ रुप होइ ठाडो होइ ॥१६०॥
 दुइ कर जोडि करइ सतिभाउ, पूव्वहुँ हू तु कण्ण॑खउराउ ।
 राजु छाडि गयउ तप करण, सोलह विद्या आपी धरण ॥१६१॥
 हरि घर ताह होइ अवतरणु, तुहि निरखि लेइ परदवणु ।
 यह योषी तमु राजा तणी, लेइ सम्हालि वस्त आपणी ॥१६२॥

(१८६) १. हरपिउ (क,ख) जोपा (ग) २. ये चडि गिरि (क) चडिचि
 तिलर (ख) चडि गिरवरि (ग) ३. वंदे (क) ४. चडिपउ (क) चडिपउ जो (ख)
 चडिजे (ग) ५. जोवइ (ख) ६. वरि शृंगारि (क) वीर पगार (ख) वीर पगारि (ग)
 ७. मिल करइ (क) करि मिनिउ (ख) उठिउ (ग) ८. विचार (क) फुंकार (ख ग)

(१६०) १ तिहु (ख) सउ (ग) २ भिडिउ (क ख ग) ३ निन (क) तिहि
 (ग) ४. निह चिउउ (क) निह करिउ (ख) निह करया (ग) ५. मद (क) मनि
 (ख, ग) ६. विमानव होइ (क) जंपइ सोइ (ग) ७. जति (क) जगल (ख) जल (ग)
 ८. वरि (क) हूइ (ख) सो (ग) ९. हटउ कोइ (क) वडटा होइ (ग)

(१६१) १. बटइ (क, ग) २. पुवइ हूं (क) पूव्वह (ग) ३. हूं तउ (क)
 हिरु (ग) ४. करणउ (ख) कनसल (ग) ५. छोडि (क ग) ६. गयो (ख) बहुचण्या
 (ग) ७. धरणि (क ख ग) ८. घापी (क) घापी (ग)

(१६२) १. हरिपर (क) २. जाइ (क) जाह (ख) ३. धवनालि (क)
 धवनाली (ख) ४. लेहि (क ख) ५. न रागि (क) ६. चिहि परदमणु (क) विद्या
 धारणी (ख) ७. हइ छोइ (क) धवली (ख) ८. ममारि (क) ९. वगल (क) वगनु (ग)

१६ विद्याओं के नाम

हिय—आलोक अरू मोहणी, जल—सोखणी रयण—दरसणी ।
 गगन वयण पाताल गामिनी, सुभ—दरिसणी सुधा—कारणी ॥१६३॥
 अग्नि—थंभ विद्या—तारणी, बहु—रूपणि पाणी—बंधणी ।
 गुटिकासिधि पयाइ होइ, सवसिद्धि जाणइ सवु कोइ ॥१६४॥
 धारा—वधणी बंधउ धार, सोला विद्या लही अपार ।
 रयणह जडित अपूरव जाणि, कणय मुकटु तहि आफउ आणि ॥१६५॥
 आफि मुकट फुणि पायह पडिउ, विहसि वीरू तहा आगइ चलउ ।
 सो मयरदु सपत्तउ तहा, हरिसय पंच सहोयर जहा ॥१६६॥
 कुमारन्हि पासि मयणु जव गयउ, मन मह तिन्हहि अचंभो भयो ।
 उपरा उपरू करहि मुहं चाहि, दूजी गुफा दिखालइ आणि ॥१६७॥

(१६३) १. मोहणी (क) २. सुख कारणी (क) नोट—मूल प्रति से भिन्न प्रथम चरण के हिय के स्थान पर एक संमउ (क) एक मूड़ा (ख) एक मुरही (ग)

(१६४) १. विद्याकारणी (क) २. चन्द्ररूपिणी (क) ३. पवन-बंधणी (ख)

(१६५) १. जडित (क) राइ (ग) २. तिणि (क) तहि (ख) तिह (ग)
 ३. दीना (क) सो (ग)

(१६६) १. ति (क) २. ताहि (ख) तव (ग) ३. आगलि (क) पगहा (ग)
 ४. सरिउ (ग) ५. महरघउ (क) महरापा (ग) ६. पठतो (क) आयो (ग) ७. हिय पंचसह (क) हहिसयपंच (ख, ग) ८. सहोदर (क ग)

(१६७) १. बीजी (क) २. जाइ (क) आहि (ख) ताहि (ग)

काल गुफा कहिए तसु नामु, कालासुर दैयतु तहि ठाउ ।
 सुरव चरितुं न भेटइ कवणु, तिहि सिहु जाइ भिरइ परदवणु ॥१६८॥
 हाकि कुवर धर पाडिउ सोइ, हाथ जोडी फुणि ठाढो होइ ।
 मवरिद्यु देखि हियइ अहि डरइ, छत्र चवर ले आगइ घरइ ॥१६९॥
 वसुणंदउ आफइ विहसाइ, हुइ किकर फुणि लागइ पाइ ।
 फुणि सो मयणु अगुहडो चलइ, तीजी गुफा आइ पइसरइ ॥२००॥
 नाग गुफा दीठी वर वीर, अति निहालिउ साहस धीरु ।
 विपमु नागु घणघोर करंत, सो तिहि आइ भिडिउ मयमतु ॥२०१॥
 तव मयण मन करइ उपाउ, गहि विसहर भान्यउ भरिवाउ ।
 देखि अतुल बल संवयो सोइ, हाथ जोडि फुणि उभो होइ ॥२०२॥

(१६८) १. मुहनाणि (क) तिह नांव (ल) २. काल सरोवर (क) कालु संभु (ग) ३. देखो (क) दोन्हउ (ग) ४. ठाणि (क) ठाउ (ग) ५. रवित (क) वित्तु (ग) ६. तिह ठा (क) तिहि सट्ट (ल) तिन्हयो (ग) ७. भिइइ (क) भिडिउ (ल) सट्टपा (ग)

(१६९) १. हाषया (ग) २. सो (क) पद्या (ग) ३. पाइइ (क) पट्टया (ग) ४. छिलि (क) सो (ग) ५. वीरिय (क) पउरियु (ल) पउरयु (ग) ६. अति डरइ (क) गहवरइ (ग) ७. छत्र (ग) छत्तु (ल)

(२००) १. सागा (ग) २. ते (क) मु (ग) ३. भागउ चलइ (क) लो पगहा सरइ (ग) ४. जाइ (ग) ५. संवरइ (क)

(२०१) १. वेडी (क) जवदीठी (ल) २. वीरि (ल) ३. घूत (क) बडतु (ल) ४. निबलउ (क) निहाली (ग) ५. धूरवरंत (क)

(२०२) १. तवही (क ग) २. डरइ (क) बहुजिया (ग) ३. घब (क) तहि (ल) ४. भानो (क) भानउ (ल, ग) ५. अतिवद (ग) ६. संहिउ (क ल) संवयो ७. सोइ (ग) ८. करिविनयं सोइ (क) सो ऊभा होइ (ग)

मयण कुवर वलिवतउ जाणि, चंद्र सिधासगु आप्पउ आणि ।

नागसेज वीणा पावडी, विद्या तीनि आणि सो धरो ॥२०३॥

सेनाकरी गेह-कारणी, नागपासि विद्या-तारणो ।

इनडो लाभ तिहा तिह भयो, फुणि सो नाण सरोवर गयो ॥२०४॥

न्हात देखि धाए रखवाल, कवण पुरिपु तू चाहिउ काल ।

जो सुर राखि सरोवरू रहिउ, तिहि जल न्हाइ कवण तू कह्यउ ॥२०५॥

तवइ वीर वोलइ प्रजलेइ, आवत वज्र भेलि को लेइ ।

जै विसहर मुह घालै हत्य, सो मोसहु जुभरणह समत्य ॥२०६॥

तव रखवाले मिलइ साण, विपमु वीरू यह नाही मान ।

उपरा उपरू वरइ मुह चाहि, मयरघउ वरू अप्पहि आणि ॥२०७॥

(२०३) १. विय (ग) २. वीणउ (क) आफिउ (ख) ३. नाग पासि (क)
४. आई (क) ५. तिनि (क) तिहि (ख ग)

(२०४) १. सनारी (क) सेना कारणी (ख) २. एवडउ (क) घडतु (ख)
इतना (ग) ३. यो (क) ते (ग) ४. न्हाए (क ख ग)

(२०५) १. घाये (क) घाया (ग) २. चंपियो (क) चापिउ (ख) चत्पो (ग)
३. कालि (क) कालन (ग) ४. भरिउ (ख) ५. सो (क) ६. सरि (क) ७. न्हाए
(क ख) ८. तुह (क ख) ९. वयउ (क) कहिउ (ख)

ग प्रति म ३-४ चरण नहीं है ।

(२०६) १. प्रजलेइ (क) पगनेइ (ख) इतने मूलन मयण परजलेइउ (ग)
२. आवत तुभु भाइय करि लेहु (क) अबनु वजु भलिय को लेइ (ख) आवतु घालि
भकोलवि घाल्यो (ग) ३. जो (क) तव (ख) ४. हमसे या (क) ५. नहि
भूह करण (क) ६. मूनपाठ हाय घोर समथ

(२०७) १. रखवाल (क) २. मिलियर अथशाणि (क) मिलवहिमपनु (ख)
घोसए ३. हम (क) इहु (ग ग) ४. जाणइ कवणु (ख) सानि (ग) ५. हपु (ख)
६. कहहि (क, ख) करइ (ग) ७. मयरपा (क) मयरठ (ख) महराघ्य (ग) ८. वर
(क) वनु (ग) ९. पाफहि घाह (क) आफहि ताहि (ख ग)

अमिनिकुंड गउ जव वर वीरू, करइ आण हिव साहस धीरू
 उठउ सरवरू चलियउजाणि, अग्नि कपड तहि आपिउ आणि॥२०८॥
 लेतइ वीरू अगाडो चलइ, विरख आंव तो दीठउ फत्यउ ।
 आउ आंव तोडी सो खाइ, वंदरूदेउ पहुतउ आइ ॥२०९॥
 कवणु वीरू तू तोडहि आम, मुहिसिहुं आइ भिडहि संग्राम । .
 कोपि मयणु तव तिहिपह गयउ, तिहुसहु जुभु महाहउ कियउ॥२१०॥
 मयण पचारि जिणउ सो देउ, कर जोडइ अर विणवइ सेव ।
 पहुममालु दुइ हाथह लेइ, अर पावडी जुगलु सो देइ ॥२११॥
 तउ लइ मयण कयवरा गए, पयठइ मयण फुण उभे भए ।
 गयउ वीर जउ वराह मभारि, दूयरू गौरू उठिउ विचारि॥२१२॥

(२०८) १. गयउ (क) पहुना (ग) जव गइयउ (ख) २. आण हिव (क)
 भंपता साइ (ख) भंपतह (ग) ३. तूठउ (क, ख) तूहा (ग) ४. मुरवर (क ख)
 ५. चालिउ (क) चाला (ख) ६. कपट्ट (ख) निपाट्ट (ग) ७. प्रायो जाणि (क)
 बीन्हा प्राणि (ग) नोट—मूलपाठ प्राणहिव के स्थान पर प्रापतेवा

(२०९) १. तितलइ (क) लेतइ (ख) लेइ (ग) २. त आणो (क) अणुहइ
 (ख) अणहा (ग) ३. वनिउ (ख) चालियो (ग) ४. वृत्त (ग) ५. अंव
 (क) अदोक (ग) ६. को (क, ख) ७. फणिउ (क) फलिउ (ख) फुलियो (ग)
 ८. वनरदेव (क)

(२१०) १. अंव (क), आव (ख ग) २. समाहि (क) ३. मोत्यो (ग) ४.
 वेह (क) निमु (ग) ५. स्यो (ग) माहि निनि स्यो (क) मालावरभु भयो (ग)

(२११) १. जिण्यो (क) २. दुइ कर जोडि मु विनवइ सोव (ग) ३. वट्ट
 (क ख) ४. पुहप (ख ग) पहुप (क) ५. युगल (क) पगट्ट (ग)

(२१२) १. तव वे (ख ग) २. कयत्य (ग) ३. गयउ (ग) ४. अहउइ (ख)
 पडिउ (ग) ५. सोह (ग) ६. तह (ख) सो (ग) ७. अमा अया (ग) ८. से वे मयण
 गउ (क) ९. जे (ग) १०. दुडरू (ख) दुवर (क) रुवरू (ग) ११. विचारि (क ख)

नोट—२०९ का चौथा चरण (क) प्रति से लिया गया है ।

१ २ ३ ४ ५ ६
 सा गैरू गरूवो मयमंतु, हाथि कुम्बरूस्यो भिरउ तुरंतु ।
 मारि दंतुसल तोडइ सोइ, चडिवि कंधि करि अंकुस देइ ॥२१३॥
 पुणि वावी लइ गए कुम्वार, तइ विसहरू णिवसइ रांकालु ।
 जाइ वीरूतहां उपर चढइ, विसहरनिकली मयणस्यो भिडइ ॥२१४॥
 तहि गहि पूछ फिरावइ सोइ, विलख वदनु तउ फुणवंइ होइ ।
 फुणि तिहि विसहर सेवा करी, काममूंदरी आफी छुरी ॥२१५॥
 मलयागिरि पर जव गयउ, करि विसादु फुणि उभउ भयउ ।
 अमरदेव तहि आयउ धाइ, निजिणि कंदप धरीउ रहाइ ॥२१६॥
 हारयो देवभगति तिस करइ, ककरा जुवेलु आणि सो धरइ ।
 सिखरू मुकदू देइ अविचारू, आपिउ आणि वस्त उनिहारू ॥२१७॥

(२१३) १. सो (क ख ग) २. गयवरू (क ख) ३. अतिहि (क) परभय (ख) गरूवा (ग) ४. हाकि (क ख ग) ५. कुमर सो (क) कुमरतिहुं (ख) कुवरू (ग) ६. फिडइ (क) भिडिउ (ख) उठिउ (ग) ७. मारिय (क) बूरि (ग) ८. फुणि मानो सोइ (ग) ९. तव (क) सो (ग) १०. लेइ (ग)

(२१४) १. वावडो (क) विविभो (ग) २. गयउ (क) गया (ग) ३. कुमार (क, ख) कुवाहू (ग) ४. तवहि (क) तहि (ख ग) ५. नयकारू (ग) तवहि मूर इक करइ भंकार (क) ६. तिह (क) तह (ख) तव (ग) ७. चडयो (ग) ८. तेह सो (क)

(२१५) १. तउ (क, ख) तव (ग) २. तव (क ख ग) ३. आपी (क) अय आपी (ख) आपउ (ग)

(२१६) १. ऊपरि यो (क) ऊपरि जउ (ख) ऊपरि जे (ग) २. गया (ग) ३. विसहू (ख) विसमाहू (ग) ४. तिह (क) फणि (ख) ५. ऊभा भया (ग) भयो (क) ६. कुंवर सपाति करइ सडाइ (क) एणिजि एणिकइयु धरिउ रहइ (ख) जिण्या मुकंदप रहया पाराइ (ग)

(२१७) १. हास्यो देव भगति तिस कर इहि (ख) अमर देउ तवहा कारेइ (ग) २. युगल ते (क) लुगल (ग) ३. धरहि (क) जि दोनउ धाइ (ख) धारि सो देइ (ग) ४. डुइ (क) दिपो (ग) ५. अतिचारू (क) ६. धाप्या (क) धाफि (ख) ७. धारिउ (ख) ८. उरहारू (क ख) अरहारू (ग)

नोट—२१७ मूल प्रति में प्रथम चरण में 'अमरदेव तह धायउ धाइ' पाठ है ।

वरहासेण गुफा ही जहा, कुवरन्हि मयण पठायो तहा ।
 तिहि ठा अमरदेउ हो कोइ, रूप वरह भयो खण सोइ ॥२१८॥
 सूवर रूप आइ सो भिडउ, मारिउ मयणि दंतसलि भिडउ ।
 पुष्प चापु दीनउ सुरदेउ, विजहसंखु आपिउ तहि खेउ ॥२१९॥
 तवहि मयणु वण वयठउ जाइ, दुष्ट जीउ निवसइ तह आइ ।
 वण मा मयण पहुँतउ तहा, वीरु मगोजो बांधिउ जहा ॥२२०॥
 बांधिउ वीर मनोजउ छोडी, फुणि ते वणमा गए वहोडी । -
 जहि विजाहरि एतउ कीयउ, सो वसंतु खण बांधिवि लयउ ॥२२१॥
 फुणि सु मनोजउ मनहविसाइ, कुम्बर मयण के लागइ पाइ ।
 हाथ जोडि सो कहा करेइ, इ दजालु विद्या दुइ देइ ॥२२२॥

(२१८) १. वारहसेन (क) वराहसेन (ख) वीरसेण (ग) २. हहि (क) जब गयउ (ख) यो जहां (ग) ३. पाठयउ (ख) ४. जिहां (क) तिहां (ग) ५. टइ (ग) ६. हुवो (क) हइ (ख.ग) ७. पकउ (क) भयउ (ख) भया (ग) ८. रहि (क) हइ (ख) जनु (क)

(२१९) १. मया (ग) २. मारइ (क) मारि (ख,ग) ३. बंशुसल भइइ (क) बंशुसनु भइउ (ख) हेठि सो बोया (ग) ४. पुहप (ख) पुहवि (ग) ५. चाप (क ख) चापि (ग) ६. हनइ (क) होना (ग) ७. गुरदेह (क) गुरदेवि (ख) ८. विजइ (क) विजय (ख) बाजि (ग) ९. घायो (क) घाफिउ (ख ग) १०. तिलि जहा (क) उनि खेउ (ग)

(२२०) १. उपबलि (ग) २. पपट्टइ (क) बलि (ख) पट्टा (ग) ३. कुट्ट (ख) ४. पुहोम (ग) ५. केराइ (ग) ६. महि (क) माहि (ख) ७. पहनो (क) ८. मणोज (क) मणोजउ (ख)

(२२१) १. जल (क) २. माहि (क) महि (ख) ३. जिलि (क) ४. विषापरि (क) विज्राएरि (ख) ५. सोनिलि कुमरि बेधि दिलि विपउ (क)

(२२२) १. मनोजय (क) २. मनि विहमाइ (क ख) ३. मागउ (क) ४. काहउ करइ (क) से घइ (क)

उवसंत^१ मनि^२ भयउ उछाहु, दीनी^३ कन्या ठयहु विवाहु ।
 वहु भगति^४ वोलं सतिभाइ, फुणि^५ विजाहरू लागइ पाइ ॥२२३॥
 अरजुन वणह^१ वीरु^२ जउ जाइ, तिहि वण^३ जंरहु पहुतउ^४ आइ ।
 तिहिसउ जुभ^५ अपूरव होइ, कुसमवाण सर आपइ सोइ ॥२२४॥
 फुणि सो वीरु^१ विउण खण गयउ, विलतरंग^२ सिरि उभउ भयउ
 विरखु तमाल^३ तणउ हइ जहा, खण^४ मयरद्ध सपतउ तहां ॥२२५॥
 फटिक—सिला वयठी^१ वर नारि, जपइ जाप सो वणह मभारि ।
 तउ विजाहर पुछइ मयणु, वण मा वसइ गारि यह कुम्बरु ॥२२६॥
 तउ वसंत^१ मन कहइ^२ विचारि, रतिनामा यह वूचइ^३ नारि ।
 प्रति सरूप सुहनाली^४ नयण, लेइ विवाहि कुम्बर परदवरु ॥२२७॥
 तव मयण^१ मन भौ उछाहु, दीनी^२ कुवरि आढए विवाहु ।
 फुणि सो मयण सपतउ तहा, हहि सयपच सहोयर जहा ॥२२८॥

(२२३) १. तव वसंत (क ल) २. उछाहु (क ल) ३. दीधी (क) ४. भिणि (क) ५. लागउ (क)

(२२४) १. अरजुण (क) २. वीरजय (क) जणि (क) ४. पहुतो (क) तिहिसो (क) तिहिसिहु (ल) ५. होइ (क) ६. आफइ (ल)

(२२५) १. वलि खण (क) २. विरख लता (क ल) ३. उग (क) ताल (ल) ४. विरख (क) विरखु (ल) ५. तमालह (क) तमाल (ल) ६. हिये (क) ७. पहुतो (क) सपतउ (ल)

(२२६) १. सो (ल) २. इह (ल) सो (क)

(२२७) १. वलि वसत (क) २. मनि (क) ३. करइ (क) ४. बीजी (क) ५. सुविनाली (क) १. मयण (क ल)

(२२८) १. तवहि (क ल) २. भयो (क ल) ३. दीठी (क ल) ४. तणउ (क) आइयो (ल) ५. लइ जइ (क) जहि सइ (ल)

निसुणि वयण हरप्यो परदवणु, चडि गिरवरि जोवइ जिणभवणु ।
 चढी जो देणइ वीर पगारू, विपमु नागु करि मिल्यउ फुकारू ॥१८६॥
 हाकि मयणु विसहरस्यो भीडइ, पकडि पूछ, तहि तलसीउ करइ ।
 देखि वीरू मन चिंभिउ सोइ, जाख रूप होइ ठाढो होइ ॥१८७॥
 दुइ करं जोडि करइ सतिभाउ, पूवहुँ हं तु कण्णखउराउ ।
 राजु छाडि गयउ तप करण, सोलह विद्या आफी धरण ॥१८८॥
 हरि घर ताह होइ अवतरणु, तुहि निरखि लेइ परदवणु ।
 यह थोणी तसु राजा तरणी, लेइ सम्हालि वस्त आपणी ॥१८९॥

(१८६) १. हरपिउ (क,ख) कोपा (ग) २. वे चडि गिरि (क) चडिबि
 सिखर (ख) चडि गिरवरि (ग) ३. वंदे (क) ४. चडियउ (क) चडिपउ जो (ख)
 चडिजे (ग) ५. जोवइ (ख) ६. वरि शृंगारि (क) वीर पगार (ख) वीर पगारि (ग)
 ७. मिल करइ (क) करि मिलिउ (ख) उठिउ (ग) ८. चिकार (क) फुंकार (ख ग)

(१८७) १. सिद्ध (ख) सउ (ग) २. भिडिउ (क ख ग) ३. तिन (क) तिहि
 (ग) ४. शिह कियउ (क) शिह करिउ (ख) शिह-करया (ग) ५. मइ (क) मनि
 (ख, ग) ६. विगनइ होइ (क) जंपइ सोइ (ग) ७. जखि (क) जखल (ख) जख (ग)
 ८. करि (क) हुइ (ख) सो (ग) ९. रुठउ कोइ (क) वइठा होइ (ग)

(१८८) १. बहइ (क, ग) २. पुवइ ह (क) पूवह (ग) ३. हं तउ (क)
 हित्त (ग) ४. कण्णखउ (ख) कनखल (ग) ५. छोडि (क ग) ६. गयो (ख) कहुचल्या
 (ग) ७. चरणि (क ख ग) ८. आपी (क) आपी (ग)

(१८९) १. हरित्यर (क) २. जाइ (क) जाह (ख) ३. अवतारि (क)
 अवतणी (ख) ४. लेहि (क ख) ५. न राखि (क) ६. लिहि परदवणु (क) विद्या
 आपणी (ख) ७. हइ छोड (क) चवणी (ख) ८. संभारि (क) ९. वस्त (क) वस्तु (ग)

१६ विद्याओं के नाम

हिय—आलोक अरु मोहणी, जल—सोखणी रयण—दरसणी ।
 गगन वयण पाताल गामिनी, सुभ—दरिसणी सुधा—कारणी ॥१६३॥
 अग्नि—थंभ विद्या—तारणी, बहु—रूपणि पाणी—बंधणी ।
 गुटिकासिधि पयाइ होइ, सबसिद्धि जाणइ सवु कोइ ॥१६४॥
 धारा—बंधणी बंधउ धार, सोला विद्या लही अपार ।
 रयणह जडित अपूरव जाणि, कणय मुकटु तहि आफउ आणि ।१६५।
 आफि मुकट फुणि पायह पडिउ, विहसि वीरू तहा आगइ चलउ ।
 सो मयरद्धु सपत्तउ तहा, हरिसय पंच सहोयर जहा ॥१६६॥
 कुमरन्हि पासि मयणु जब गयउ, मन मह तिन्हहि अचंभो भयो ।
 उपरा उपरू करहि मुहं चाहि, दूजी गुफा दिखालइ आणि ॥१६७॥

(१६३) १. मोहणी (क) २. मुख कारणी (क) नोट—मूल प्रति से भिन्न प्रथम वरण के हिय के स्थान पर एक संमउ (क) एक मूडा (ख) एक सुरही (ग)

(१६४) १. विद्याकारणी (क) २. चन्द्ररूपिणी (क) ३. पवन-बंधणी (ख)

(१६५) १. जडित (क) राइ (ग) २. तिणि (क) तहि (ख) तिह (ग)
 ३. दीना (क) सो (ग)

(१६६) १. ति (क) २. ताहि (ख) तव (ग) ३. घागति (क) घग्गहा (ग)
 ४. सतिउ (ग) ५. मइरघउ (क) मइराया (ग) ६. पटुतो (क) घायो (ग) ७. हिय पंचसह (क) हहिसपपंच (ख, ग) ८. सहोदर (क ग)

(१६७) १. योजो (क) २ जाइ (क) चाहि (ख) ताहि (ग)

काल गुफा कहिए तसु नामु, कालासुर दैयतु तहि ठाउ ।
 पूरव चरितु न मेठइ कवणु, तिहि सिहु जाइ भिरइ परदवणु ॥१९८॥
 हाकि कुवर धर पाडिउ सोइ, हाथ जोडी फुणि ठाढो होइ ।
 पवरिणु.देखि हियइ अहि डरइ, छत्र चवर ले आगइ धरइ ॥१९९॥
 वसुणंदउ आफइ विहसाइ, हुइ किकर फुणि लागइ पाइ ।
 फुणि सो मयणु अगुहडो चलइ, तीजी गुफा आइ पइसरइ ॥२००॥
 नाग गुफा दोठी वर वीर, अति निहालिउ साहम धीरु ।
 विपमु नागु घणघोर करंत, सो तिहि आइ भिडिउ मयमनु ॥२०१॥
 तव मयण मन करइ उपाउ, गहि विसहर भान्यउ भरिवाउ ।
 देमि अतुल वल सवयो सोइ, हाथ जोडि फुणि उभो होइ ॥२०२॥

(१९८) १. मुहनालि (क) निह नाव (ल) २. काल सरोवर (क) वातु संभु (ग) ३. देखो (क) सीगुह (ग) ४. टालि (क) हाउ (ग) ५. रविन (क) विल (ग) ६. निह टा (क) निहि सडु (ल) निगुहरो (ग) ७. भिरइ (क) भिडिउ (ल) सडुपा (ग)

(१९९) १. हाथपा (ग) २. सो (क) पडा (ग) ३ पाइइ (क) पडपा (ग) ४. दिलि (क) सो (ग) ५. पीरिय (क) पजरिणु (ल) पजरणु (ग) ६. अति डरइ (क) पडपरइ (ग) ७. दनु (ग) दनु (ल)

(२००) १. नागा (ग) २. ते (क) गु (ग) ३. पाणउ चणइ (क) लो पणहा सारइ (ग) ४. आइ (ग) ५. संबरइ (क)

(२०१) १ बेडी (क) अडरीये (ग) २. बोरि (ल) ३. घुन (क) वरगु (ग) वर (ग) ४. विचनउ (क) निहायो (ग) ५. पुरवरन (क)

(२०२) १. तवरो (क ग) २. वरइ (क) वरुणिजा (ग) ३. पड (क) तटि (ल) ४. भायो (क) भावउ (ल ग) ५. दनिवर (ग) ६. गंदिउ (क ल) गंजा ७ मोइ (ग) ८. वरिविनवे मोइ (क) लो रुभा होइ (ग)

मयण कुवर वलिवतउ जाणि, चंद्र सिघासणु आप्पउ आणि ।
 नागसैज वीणा पावडी, विद्या तीनि आणि सो धरी ॥२०३॥
 सेनाकरी गेह-कारणी, नागपासि विद्या-तारणी ।
 इतडी लाभ तिहा तिह भयो, फुणि सो नाण सरोवर गयो ॥२०४॥
 न्हात देखि धाए रखवाल, कवण पुरिपु तू चाहिउ काल ।
 जो सुर राखि सरोवरु रहिउ, तिहि जल न्हाइ कवण तू कखउ ॥२०५॥
 तवइ वीर वोलेइ प्रजलेइ, आवत वज्र भेलि को लेइ ।
 जे विसहर मुह घालै हत्थ, सो मोसहु जुम्णह समत्थ ॥२०६॥
 तव रखवाले मिलइ साण, विपमु वीरु यह नाही मान ।
 उपरा उपरु करइ मुह चाहि, मयरघउ वरु अप्पहि आणि ॥२०७॥

(२०३) १. विय (ग) २. वीघउ (क) आफिउ (ख) ३. नाग पासि (क)
 ४. आई (क) ५. तिनि (क) तिहि (ख ग)

(२०४) १. सनारी (क) सेना कारणी (ख) २. एवइउ (क) चइतु (ख)
 इतना (ग) ३. घी (क) ते (ग) ४. न्हाण (क ख, ग)

(२०५) १. आये (क) आया (ग) २. चंपियो (क) चापिउ (ख) चत्यो (ग)
 ३. कालि (क) अकाल (ग) ४. भरिउ (ख) ५. सो (क) ६. सरि (क) ७. न्हाण
 (क ख) ८. तुह (क ख) ९. वयउ (क) कहिउ (ख)

ग प्रति मे ३-४ चरण नहीं है ।

(२०६) १. प्रजलेइ (क) पगवेइ (ख) इतनें सुणत मयण परजलेइउ (ग)
 २. आवत तुम्ह भाडिन दरि लेहु (क) अवनु वनु भलिय को लेइ (ख) आवतु बालि
 भकोलवि चाल्यो (ग) ३. जो (क) तव (ख) ४. हमसे या (क) ५. नहि
 भूम करण (क) ६. मूनपाठ हाय घोर समय

(२०७) १. रखवाल (क) २. विलियर अवशाणि (क) मिलवहिसपनु (ख)
 घोलण ३. हम (क) इहु (ग ग) ४. जाणइ कवणु (ख) साणि (ग) ५. रुपु (ख)
 ६. कहहि (क, ख) करइ (ग) ७. मयरथा (क) मयरद (ख) मद्राण्य (ग) ८. वर
 (क) वनु (ग) ९. आफहि आह (क) आफहि ताहि (ख ग)

अग्नि कुण्ड गड जब वर वीरु, करइ आण हिव साहस धीरु
 उठउ सरवरु चलियउ जाणि, अग्नि कपड तहि आपिउ आणि ॥२०८॥
 लेतइ वीरु अगडो चलइ, विरख आंव तो दीठउ फलयउ ।
 आउ आंव तोडी सो खाइ, वंदरु देउ पहुतउ आइ ॥२०९॥
 कवरु वीरु तू तोडहि आम, मुहिंसिहुं आइ भिडहि सग्राम ।
 कोपि मयणु तव तिहिपह गयउ, तिहुसहु जुम्हु महाहउ कियउ ॥२१०॥
 मयण पचारि जिणुउ सो देउ, कर जोडइ अर विणवइ सेव ।
 पहममालु दुइ हाथह लेइ, अर पावडी जुगलु सो देइ ॥२११॥
 तउ लइ मयण कयथवण गए, पयठइ मयण फुणि उभे भए ।
 गयउ वीर जउ वणह मभारि, दूरु गौरु उठिउ विचारि ॥२१२॥

(२०८) १. गयउ (क) पहुता (ग) जब गहयउ (ख) २. आण हिव (क)
 भंपता साइ (ख) भंपतह (ग) ३. तूठउ (क, ख) तूहा (ग) ४. सरवर (क, ख)
 ५. चालिउ (क) चाला (ख) ६. कपट (ख) निपाट (ग) ७. आयो जाणि (क)
 दीग्हा आणि (ग) नोट—मूलपाठ प्राणहिव के स्थान पर आपतेवा

(२०९) १. तितलइ (क) तेलइ (ख) लेइ (ग) २. त आगो (क) अगुहडो
 (ख) अगहा (ग) ३. वलिउ (ख) चालियो (ग) ४. वृक्ष (ग) ५. अंव
 (क) अशोक (ग) ६. को (क, ख) ७. फणुउ (क) फलिउ (ख) फुलियो (ग)
 ८. वनरदेव (क)

(२१०) १. अंव (क) आव (ख ग) २. समाहि (क) ३. मोत्यो (ग) ४.
 केह (क) तिसु (ग) ५. स्यो (ग) माहि तिनि कियो (क) मालावरु भयो (ग)

(२११) १. जिण्यो (क) २. दुइ कर जोडि सु विनयइ सोव (ग) ३. वट्ट
 (क ख) ४. पुहप (ख ग) पट्टप (व) ५. युगल (क) पगहु (ग)

(२१२) १. तव से (ख ग) २. कयथ (ग) ३. गयउ (ग) ४. जहठइ (ख)
 पइठि (ग) ५. वीरु (ग) ६. तह (ख) सो (ग) ७. अभा भया (ग) ८. से से मयण
 गउ (क) ९. जे (ग) १०. दुइरु (ख) दुवर (क) रुवरु (ग) ११. विचारि (क ख)

नोट—२०९ का चौथा चरण (क) प्रति से लिया गया है ।

सा^१ गैरू^२ गरूवो^३ मयमंतु^४, हाथि^५ कुम्बरू^६स्यो भिरउ^७ तुरंतु^८ ।
 मारि^९ दंतुसल^{१०} तोडइ^{११} सोइ, चडिवि^{१२} कंधि^{१३} करि^{१४} अंकुस^{१५} देइ ॥२१३॥
 पुणि^{१६} वावी^{१७} लइ^{१८} गए^{१९} कुम्वार^{२०}, तइ^{२१} विसहरू^{२२} णिवसइ^{२३} एंका^{२४}लु ।
 जाइ^{२५} वीरूतहां^{२६} उपर^{२७} चढइ^{२८}, विसहर^{२९} निकली^{३०} मयणस्यो^{३१} भिडइ^{३२} ॥२१४॥
 तहि^{३३} गहि^{३४} पूछ^{३५} फिरावइ^{३६} सोइ, विलख^{३७} वदनु^{३८} तउ^{३९} फुणवइ^{४०} होइ ।
 फुणि^{४१} तिहि^{४२} विसहर^{४३} सेवा^{४४} करी, काममूं^{४५}दरी^{४६} आफी^{४७} छुरी^{४८} ॥२१५॥
 मलयागिरि^{४९} पर^{५०} जव^{५१} गयउ^{५२}, करि^{५३} विसादु^{५४} फुणि^{५५} उभउ^{५६} भयउ^{५७} ।
 अमरदेव^{५८} तहि^{५९} आयउ^{६०} धाइ, निजिणि^{६१} कंद्रप^{६२} धरीउ^{६३} रहाइ ॥२१६॥
 हारयो^{६४} देवभगति^{६५} तिस^{६६} करइ, कंकगु^{६७} जुवलु^{६८} आणि^{६९} सो^{७०} धरइ ।
 सिखरू^{७१} मुकदू^{७२} देइ^{७३} अविचारू^{७४}, आपिउ^{७५} आणि^{७६} वस्त^{७७} उनिहारू^{७८} ॥२१७॥

(२१३) १. सो (क ख ग) २. गयवरू (क ख) ३. अतिहि (क) परभय (ख) गरूवा (ग) ४. हाकि (क ख ग) ५. कुमर सो (क) कुमरसिहुं (ख) कुवरू (ग) ६. फिडइ (क) भिडिउ (ख) उठिउ (ग) ७. मारिय (क) चूरि (ग) ८. फुणि मानी सोइ (ग) ९. तव (क) सो (ग) १०. लेइ (ग)

(२१४) १. धावडी (क) विविभी (ग) २. गयउ (क) गया (ग) ३. कुमार (क,ख) कुवारू (ग) ४. तवहि (क) तहि (ख ग) ५. नयकारू (ग) तवहि सूर इक करइ भंकार (क) ६. तिह (क) तह (ख) तव (ग) ७. घडयो (ग) ८. तेह सो (क)

(२१५) १. तउ (क,ख) तव (ग) २. तव (क ख ग) ३. घापी (क) घव घाफी (ख) घापउ (ग)

(२१६) ऊपरि यो (क) ऊपरि जउ (ख) ऊपरि जे (ग) २. गया (ग) ३. विसइ (ख) विसमादुसु (ग) ४. तिह (क) फणि (ख) ५. ऊभा भया (ग) भयो (क) ६. कुंवर सपाति करइ लडाइ (क) एणिजि एणिकंद्रपु धरिउ रहइ (ख) जिण्या मुकंद्रप रहया पाराइ (ग)

(२१७) १. हारयो देव भगति तिस कर इहि (ख) अमर देउ तवहा कारेइ (ग) २. युगल ते (क) युगल (ग) ३. धरहि (क) जि दीनउ धाइ (ख) आणि सो देइ (ग) ४. दुइ (क) दियो (ग) ५. अतिवारू (क) ६. घाप्या (क) घाकि (ख) ७. घारिउ (ख) ८. उरहारू (क ख) घरुहारू (ग)

नोट—२१७ मूव प्रति मे प्रथम चरण मे 'अमरदेव तह घायउ धाइ' पाठ है ।

१ वरहासेण गुफा ही ३ जहा, कुवरन्हि मयण ३ पठायो तहां ५ ।
 तिहि ४ ठा अमरदेउ ६ हो कोइ, रूप वरह ७ भयो खण ८ सोइ ॥२१८॥
 सूवर रूप आइ सो भिडउ, मारिउ मयण ३ दंतसलि ३ भिडउ ।
 पुप ५ चापु ५ दीनउ ६ सुरदेउ, विजहसखु ५ आपिउ ६ तहि १० खेउ ॥२१९॥
 तवहि मयण १ वण २ वयठउ जाइ, दुष्ट ३ जीउ ५ निवसइ तह आइ ।
 वण ६ मा मयण ५ पहुँतउ तहा, वीरु मणोजो ५ वांधिउ जहा ॥२२०॥
 वाधिउ वीर मनोजउ छोडी, फुण १ ते वण २ मा गए वहोडी ।
 जहि ३ विजाहरि ५ एतउ कीयउ, सो ५ वसतु खण ६ वंधिवि लयउ ॥२२१॥
 फुण १ सु मनोजउ ३ मनहविसाइ, कुम्बर ३ मयण ३ के लागइ पाइ ।
 हाय ५ जोडि सो कहा ५ करेइ, इंदजालु ५ विद्या ५ दुइ देइ ॥२२२॥

(२१८) १. वारहसेन (क) वराहसेन (ख) वीरसेण (ग) २. रहि (क) जय गणउ (ख) जो जहां (ग) ३. पाठयउ (ख) ४. जिहां (क) तिहां (ग) ५. ठइ (ग) ६. हुवो (क) हइ (ख ग) ७. थकउ (क) भयउ (ख) भया (ग) ८. रहि (क) हइ (ख) जनु (क)

(२१९) १. भया (ग) २. मारइ (क) मारि (ख, ग) ३. बंनुसल भइइ (क) बंनुसलु भइउ (ख) हेठि सो बोया (ग) ४. पुहप (ख) पुहवि (ग) ५. चाप (क ख) चापि (ग) ६. हुनइ (क) शोना (ग) ७. सुरदेह (क) सुरदेवि (ख) ८. विजइ (क) विजय (ख) चात्रि (ग) ९. आयो (क) आयिउ (ख ग) १०. तिलि जहां (क) उनि खेउ (ग)

(२२०) १. उपवण (ग) २. पपट्टइ (क) वण (ख) पट्टा (ग) ३. कुट्ट (ख) ४. पुट्टोम (ग) ५. केराइ (ग) ६. महि (क) माहि (ख) ७. पट्टो (क) ८. मणोज (क) मणोजउ (ख)

(२२१) १. जण (क) २. माहि (ख) महि (ख) ३. जिलि (क) ४. विषायरि (क) विज्राहरि (ख) ५. सोनिलि कुमरि बेचि पिलि विपय (क)

(२२२) १. मनोजय (क) २. मनि विहाइ (क ख) ३. लागउ (क) ४. काटउ करइ (क) से परइ (क)

उवसंत मनि भयउ उछाहु, दीनी कन्या ठयहु विवाहु ।
 वहु भगति वोल सतिभाइ, फुणि विजाहरे लागइ पांइ ॥२२३॥
 अरजुन वंगेहे वोरु जउ जाइ, तिहि वण जरहु पहुतउ आइ ।
 तिहिसउ जुभ अपूरव होइ, कुसमवाण सर आपइ सोइ ॥२२४॥
 फुणि सो वोरु विउण खण गयउ, विलतरंगे सिरि उभउ भयउ
 विरखु तमाल तरांउ हइ जहा, खण मेयरदं सपतउ तहां ॥२२५॥
 फटिक-सिला वयंठी वर नारि, जपइ जाप सो वणह मभारि ।
 तउ विजाहर पुछइ मयणु, वण मा वंसइ गारि यह कुम्बेणु ॥२२६॥
 तउ वसंत मन कहइ विचारि, रतिनामा यह वूचइ नारि ।
 अति सरूप सुहनाली नयण, लेइ विवाहि कुम्बर परदवणु ॥२२७॥
 तव मयण मन भो उछाहु, दीनी कुवरि आठए विवाहु ।
 फुणि सो मयण सपतउ तहा, हहि सयपंच सहोयर जहा ॥२२८॥

(२२३) १. तव-वसत (क ख) २. उछाहु (क ख) ३. दीनी (क) ४. भिणि (क) ५. लागउ (क)

(२२४) १. अरजुण (क) २. धीरजव (क) जलि (क) ४. पहुतो (क) तिहिसो (क) तिहिसिहु (ख) ५. होइ (क) ६. आफइ (ख)

(२२५) १. वलि खण (क) २. विरल तता (क ख) ३. उग (क) तलि (ख) ४. विरल (क) विरखु (ख) ५. तमालह (क) तमाल (ख) ६. हिये (क) ७. पहुतो (क) सपतउ (ख)

(२२६) १. सो (ख) २. इह (ख) सो (क)

(२२७) १. वलि वसंत (क) २. मनि (क) ३. करंद (क) ४. वोजी (क) ५. सुविनाली (क) १. मयण (क ख)

(२२८) १. तवहि (क ख) २. भयो (क ख) ३. दीनी (क ख) ४. तराउ (क) घाउपो (ख) ५. लइ जइ (क) जहि सइ (ख)

पभरण^१इ कुवर मुहामुह^२ चाहि, विपमु^३ वीरु यह^४ मानन^५ आहि
 सोलह गुफा पठायो मयण^६, तह^७ तह मिलहि वस्त्र आभरण ॥२२६॥
 मयणह पौरिषु देखि अपारु, तव कुम्बरन्हि छोडिउ अहंकारु
 सबहू मिलि सलहिउ तहि ठाड, पुनवंत कहि लागे पाइ ॥२३०॥
 वस्तु बंध—पुनु वलियउ अहि ससारु ।

पुनु^४ सेम्बहि सुर असुर, पुनु सफलु अरहंत जंपिउ^१ ।
 कत रूपिणि उर अवतरिउ, धूमकेतु^२ ले सिंला चंपिउ^३ ॥
 जमसंवरु^४ कत लं गयउ, कनयमाल घरिनह गयउ विरिद्धि ।
 सोलह लाभ महतु फलु, पुग परापति सिद्धि ॥२३१॥

चौपई

पुन्नहि राज भोगु महि होइ, पुन्नइ नरु उपजड सुरलोड ।
 पुन्नहि अजर अमर मुगधरा, पुन्नहि जाइ जीव गिब्वाराणा ॥२३२॥

(२२६) १. चितइ (क) पभरणहि (ख) २. एहि (क) इह (ख) ३. मन (क)
 माणु न (ख) ४. दिवायो (क) पठायउ (ख) ५. मरण (क ख) ६. तिहि तिह (क)

(२३०) १. छोडिपउ (क) छाडिपउ (ख)

(२३१) १. पुदवउ (क) २. आहि (क ख) ३. संगारि (क ख) ४. पुनि
 (क) ५. कनइ (क) ६. जाणिउ (ख) जंपइ (क) ७. किनु (क) ८. कित धूमकेतु (क)
 ९. कित (क) लड (ख) १०. सिंला तल (क) ११. चंपइ (क) चंपिउ (ख) १२. कह
 (क) किमो पुनइ अविहइ रिधि—यह पाठ 'क' प्रति में ही मिलना है । १३. नोट—
 धूम प्रति का पाठ 'घरि वधि'

(२३२) १. पुनि जग माहि एहउ होइ (क) पुन्न वडउ खु जगन महि होइ (ख)
 २. अजरामर (ख) ३. पर ठाल (क) अमर विमाल (ख) ४. निरवारि (क)

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त विद्याओं के नाम

विद्या सोलह लइ अविचार, चम्बर छत्र सिर मुकट अपार ।
 नागसेज जो रयणीनी जरी, असीणी कपड वीणा पावडी ॥२३३॥
 विजयसंख कौसाद अपार, चंद्र संघासण सेखण हार ।
 सोहइ हाथ काममुदरी, पहुपचाप कर कडिहा छुरी ॥२३४॥
 कुसुमुवाण कर हाथह लेइ, कुंडल जुवल सम्बण पहेरइ ।
 राजकुवरि दुइ परिणइ सौइ, चढि गैयर फुणि ऊभी होइ ॥२३५॥
 कंकण जुगल रयणि अनिवार, अर द्वइ लेइ पुष्प की माल ।
 न्हानी वस्त गणै तह कवण, इतनउ लेनि चलउ परदवण ॥२३६॥
 मयण कुवर घर चलयो तुरंत, मेघकूट खण जाइ पहुत ।
 जमसंवर भेटिउ तिहि ठाउ, बहुत भगति करि लागो पाइ ॥२३७॥
 भेटि राउ फुणि उभो भयो, मयण कुवर रणवासह गयो ।
 कनकमाल खण भेटी जाइ, बहुत भगति करि लागो पाइ ॥२३८॥

(२३३) १. जे सुविचार (क) २. सो (क) जा (ख) ३. रयणहि (ख)
 रयणह (क) ४. जडी (क ख) ५. अगनि (क ख) ६. कपट (ख)

(२३४) १. कौसाद (क) कउसबदु (ख) २. सेरवर (क) ३. संघासण (क)
 ३. मूदडी (क ख) ४. कडि (क)

(२३५) १. युगल (क) जुगलु (ख) २. अवरण (क) सबणह (ख)
 ३. जाइ (क) ४. गइयर (ख) ५. उभउ (क ख)

(२३६) १. दुइ (क ख) २. पहुप (क ख) ३. वस्तु (क) वस्तु (ख)
 ४. गणइ (क) गणइ (ख) ५. इह (क ख) तिहि (ख) ६. एनी (क) इतडउ (ख)
 ७. से (क) लइ (ख) ८. घालिउ (क) दिभलिउ (ख)

(२३७) १. मेघ कुटिल (क) २. सो (ग) खणि (ख) खणि (क) ३. घाइ
 (क) ४. बाल (ग) ५. उइ वइउउ घाइ (ग) ६. तिह भाइ (ख) ७. लागिउ (ख)

(२३८) १. राउ (क) २. पुणि (क) तव (ग) ३. उभउ भयउ (क ख ग)
 ४. फुणिवि मयण (ग) ५. कणवमाल (क ख) ६. भेट तिह (ग) ७. लागउ (क)
 लागो (ख) लःग (ग)

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

देखि सरूप मयण वर वीर, कामवाण तसु हयउ सरीर ।
फुणि सो अंचलु लागी धाइ, करि उतरवह चलयोउ छुडाइ ॥२३६॥

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

फुणि सो मयणु सपतउ तहा, वण उद्यान मुनिस्वरु जहा ।
नमस्कार करि पूछइ सोइ, कहहु वयण जो जुगंतउ होइ ॥२४०॥
कणायमाल माता मुहु तणी, सो मोपेखि कामरस घणी ।
प्रांचल गहिउ छाडि तहि काणि, कारणु कहहु कवण मुहि जाणी ॥२४१॥
तं मुणियर जंपइ तंखीणी, कहहु बात तुह जम्मह तणी ।
सोरठ देस वारमइ ठाउ, तिहि पुरि निमस जादमराउ ॥२४२॥
ताकी घरणि आहि रुकिमिणी, जह कीरती महमंडल घणी ।
तिहि सम तिरौ न पूजइ कोइ, कंदप जणणि तिहारी होइ ॥२४३॥

(२३६) १. मयण मुन्दर (ग) २. न मुहयउ (ख) हणिउ (क) निमु हुमा
(ग) ३. अंचलि (क ग) ४. कहि (ग) ५. उतर (ग) ६. गयउ (क) चल्या (ग)

नोट—तीसरा और चौथा चरण ख प्रति में नहीं हैं

(२४०) १. जे (क) जुगनी (ग) २. जंत धर्म हइ निरचय जहां (ग)

(२४१) १. कंचनमाला (ग) मा (ग) ३ मोहि (क) महु (ख) मुहि (ग)
४. सा (क ग) ५. मोहि (क) महु (ख) हय (ग) ६. देखि (क ग) ७. सरि हणी
(क ग) हणी (ख) ८. अंचल (क ग) ९. छोडि (ग) १०. मुलीवर जाणि (क)

(२४२) १. तउ (क) तव (ग) २. तंघिणु (ख) ३. जनमह (क) जम्मंतर
(ख) जनमह (ग) ४. डारिका (क) वारवै (ग) ५. स्वामो (क) नियमइ (ख ग)

(२४३) १. तिहकी (क) तिहि की (ख) निमु की (ग) २. परिणी (ख)
३. अचछइ (ग) ४. जस (क) ५. तिहमरि (ग) ६. भोनवि (क) तिरिय न (ख)
तिया न (ग) ७. तुहारी (क) तुहारी (ख, ग)

धूमकेतु ही तू हरि लयो, चापि सिला तल सो उठि गयो ।
 जमसवर तोहि पालिउ आणि, सो परदवन आप तू जाणि ॥२४४॥
 करायमाल तुव, अंचल गहिउ, पूव जन्म तो सनमध भयउ ।
 जइ वह तोसिहु पेमरस भीनि, छलु करि लीजहि विद्या तीनि ॥२४५॥
 निसुणि वयण सो वाहुडि जाइ, कनकमाल पह वइठउ जाइ ।
 विद्या तीनि मोहि जउ देहि, जुगतो पेसणु करिहो तोहि ॥२४६॥
 रस की बात कुवर पह सुणी, प्रेम लुवधि अकुलाणी धरणी ।
 जमसंवर की करीय न काणि, तीनिउ विद्या आफी आणि ॥२४७॥
 पूरव दाउ कुम्बर मन रत्यउ, फुणि विद्या लइ वाहुरि चलिउ ।
 हम्बु तुम्हि पूतु जराणी तू मोहि, जगतउ होइ सु पेसणु देहि ॥२४८॥

(२४४) १. तिह धो हडिलियो (क) तउ तू हडिलिउ (ख) तुम्हि हडि ले गया (ग) २. उठियउ (क) उठि गयउ (ख) उठि गया (ग) ३. तू (ख ग) ४. अपूरव (ग) मूल प्रति में तोहि पाठ नहीं है ।

(२४५) १. तुम (क) तव (ख) तुम्ह (ग) २. तोहि (क) कउ (ख) मेहि (ग) ३. संनमध (ग) ४. जो बहु होइ (क) जइ हउ हतो (ख) जे वह तोहि (ग) ५. प्रेम (क) परम (ख) पिरम (ग) ६. छीनले (क)

(२४६) १. सुणउ (ग) २. वहुडिउ (ख) ३. आइ (क ख ग) ४. जे (क) जइ (ख) ५. जुगन (क, ख) जुगनि (ग) ६. पलउ (क) विमनुह (ग) ७. करिहु (क) होइ (ख) हउ करिष्यो (ग) ८. देहि (ख)

(२४७) १. सर (ग) २. प्रेम लुवधि (क) प्रेम लुग्धि (ग) ३. तीनइ (क) तोहो (ग) ४. सउपी (ग)

(२४८) १. परियउ (क) कडिउ (ख) पूरिउ (ग) २. कुमार (ख) ३. दिय (क) ले (ग) ४. तो (ग) ५. वाहुडि (क ख ग) ६. छल्यो (क) भलिउ (ख) ७. हम (क) हउ (ख ग) ८. तोहि (क) तुहि (ख) ९. मात (क) १०. हई (ग) ११. युगत (क) जुगति (ग) १२. पमाउ (क) १३. करिउ बयो सोइ (क)

कनकमाला द्वारा अपना विकृत रूप करना

कणायमाल तव घसवयो हीयउ, मोसिहु कूडकूडीया कीयउ ।

इकु तउ लाज भइ मत टल्यउ, अवरु हाथि लइ जिद्या चलिउ ॥२४६॥

कणायमाल तउ विसमउ धरइ, सिर कूटइ कुकुवारउ करइ ।

उर थणहर मह फारह सोइ, केस छोडी विहलंगन होइ ॥२५०॥

इक रोवइ अरु करह पुकार, कालसवर रा जाणी सार ।

कुमर पांचसै पहुते जाइ, कनकमाल पह वइठे आइ ॥२५१॥

कालसंवर सउ कहउ सभाउ, इहि दिपि पालक कीयउ उपाउ ।

धरम पूत करि थापिउ सोइ, अरु सो मोकहु गयो विगोइ ॥२५२॥

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

निसुणि वयण नरवइ परजलीउ, जार्ण घौउ अधिकु हुतासणु परिउ ।

कुवर पाचसह लिये हकारि, पवण वेगि इहि आवहु मारि ॥२५३॥

(२४६) १. घसकया (ग) घसकिउ (ख) २. हीया (ग) ३. मोहि स (क)

मुहि सिहु (ख) मोस्यो (ग) ४. कूडि जइ (ग) ५. अरु मोहि (क) इकु सठु (ख)

इकुतो (ग) ६. गई (ख) ७. मन टलिउ (क) मनु टलिउ (ख) मनु टलिउ (ग)

८. ते विद्या हायह ते चलिउ (ग)

(२५०) १. तो (ग) २. करइ (क ख) ३. पोटइ (ग) ४. कुकुवर (क) कुकु

भारउ (ख) अरु कुकतउ फिरइ (ग) ५. नख (क) नहु (ख) फरि (ग) ६. फाडइ

(क ख) पोटइ (ग) ७. खोति (ख ग) ८. विहलंगन (क ख) विहलंगति (ग)

(२५१) १. जणइ सार (क) राजा पासि जणवउ सार (ग) २. पंचसह

(क) पंचसय (ख ग)

(२५२) १. स्यो (क) सिउ (ख) तव वइठु आइ (ग) २. दिभु (ग)

३. बालक (क ग) पालागी (ख) ४. किउ एह उपाव (क) कीयउ उपगार (ख) बीया

उपाउ (ग) ५. राखिय (क) थापो (ग) ६. चलिउ (ख) गया (ग)

(२५३) १. सुणे (ग) २. जणु (ख) ३. घत (क) घिरत (ग) ४. वसंवर

(क) हुवासए (ख) वेसंवर (ग) ५. भतिउ (क) पडिउ (ख) टालइ (ग) ६. चडिहु

वेगिइ सु ७. तुम (क)

तव कुवर मन पूरउ दाउ, इहिकहु भयउ विरुद्धउ राउ ।
 मिलि सब कुवर एकठा भए, मयण बुलाइ कुवर वण गए ॥२५४॥
 तवइ अलोकणि विद्या कह्यउ मयण अचंकित काहे भयउ ।
 एह बात हो कही सभाइ, ए सब मारण पठए राय ॥२५५॥
 तव रिसाणी साहस धीर, नागपासि घाल्यो वरवीर ।
 चारि सौ नानाणी आकउ भरइ, बाधि घालि सिला सिर धरइ २५६
 एक कुम्बर राखिउ कमार, राजा जाइ जगाइ सार ।
 तुहि जउ राय भरोसउ आहि, दगु परिगह आणइ पलणाइ ॥२५७॥
 जमसंदर रा वइठउ जहा, भागिउ कुवरु पुकारिउ तहा ।
 सयल कुम्बर वापी मह घालि, उपर दीनी वज्र सिल टाल ॥२५८॥

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरर (ग)
 ३. पूगउ (ग) ४. इसु कौ (ग) मार मयण अब पूजइ दाउ (क) मारहि मयण (ख)
 ५. सहि (ग) ६. बुलावइ (ग) ७. कमल (कख)

(२५५) १. आलोकणि (कग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहे (ग)
 ३. मयण काइते दीलउ कहइ (क) सभसु मयण कुवर मति कहइ (ग) निबितउ
 (ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. सुभ (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) विहसाणउ (ख)
 रीसाणा (ग) ३. सहस सधीर (ग) ४. चारिसइ निनाण्ये (क) चारि निनाणे (ख)
 घउसइ नंग्याण (ग) ५. आगइ घरइ (क) आको भरा (ख) अको भरउ (ग)
 ६. वापि (ग) ७. सुहउ (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिन तिया उबारि (ग) २. राजहि (कखग) ३. जगावहि (ख)
 ४. तुहि सइ (ख) जे सुभु (ग) ५. इलु (कख) बल (ग) ६. परिमण (क) ७. सब
 खेठ (क) आणहि (ख) वेगा (ग) ८. पलाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. वइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पडता (ग) ४. महि (कग)
 पुहि (ख) ५. राल (ग) ६. दीपी (क) ७. शिला अमाल (क) शिला टाल (ख)
 हनाल (ग)

जमसंवर और प्रद्यम्न के मध्य युद्ध

निसुणि^१वयण^१ मन को पिउ^१ राउ, आजु^२ मयण^२ भानो^३ भरिवाउ ।
 रहिवर^४ साजे गंवर^५ गुडे, तुरिय^६ पलाणे पाखर परे ॥२५६॥
 धनुक^७ पाइक अस छुरीकार^८, अतिवल^९ चलत न लागी वार ।
 भावत^{१०} देगि मयण^{११} कह करे, सेनाकरि^{१२} सयन रची घरं ॥२६०॥
 जाइ^{१३} पहुतउ दल अतिवंत^{१४}, तहा^{१५} हाकि भीडइ मयमंन ।
 रावत^{१६} स्यो रावन रण भिरइ, पाइक^{१७} स्यो पाइक आ भिडइ ॥२६१॥
 जमसंवर^{१८} कहु आइ^{१९} हारि, चउगुं^{२०} दलु घालिउ मारि ।
 विजाहरु^{२१} रा विलगउ भयो, रहवरु^{२२} मोटिनयर मह गयउ ॥२६२॥

(२५६) १. कोप्यो (क) कोप्या (ग) २. भानउ (ख) भागउ (ग) ३. भरिवाउ (ख ग) ४. रहिवार (ग) ५. गुडहु (क) गुडहि (ग) ६. तुरी (क ग) ७. पाहि (क ग)

(२६०) १. पाइक (क ख) धानु (ग) २. करहि (ग) ३. अविचल (क) ४. ताइ वार (क) गभि हविचार सुभट से जाहि (ग) ५. मरनु (ग) ६. वया (ख) के (क) ७. निहरायो (ग) ८. करइ (क ख) जाम (ग) ९. मेना रवि तागुउ तखरइ (क) तपना कहू तपनु रवि घरहु (ख) माया रप तपनु रवि ताम (ग)

(२६१) १. पट्टना (क) पट्टने (ख) २. बलवंत (क) विनि धायो इनु कर्हि चननु (ग प्ररि) ३. वेगइ छाड (क) तह तहं राकि भिडे मयमंन (ख) तब रबु हलि भिड्या मयमंनु ४. रहवर गिहु रहवर (ख ग) रहवर मो रहवर (क) ५. इरइ लखन परइमुइ ताम (क) इरहि गुइ मुइ वर जाम (ख) इरहि गेइ मुंइ वर ताम (ग)

(२६२) १. जो (क) २. पाखर (क) ३. वनु (ग) ४. अगिउ (ख) धायो कहि (ग) ५. गउ (क) लख (ग) ६. विनया (ग) ७. मयण कुचर लहु इनु कारिया (ग)

तव^१ कुवर^२ मन पूरउ^३ दाउ; इहिकहु^४ भयउ विरुद्धउ^५ राउ ।
 मिलि^६ सब कुवर एकठा भए, मयण बुलाइ^७ कुवर वण गए ॥२५४॥
 तवइ अलोकणि^१ विद्या कह्यउ^२ मयण अचंकित^३ काहे भयउ ।
 एह बात हो कहौ^४ सभाइ, ए सब मारण पठए^५ राय ॥२५५॥
 तव रिसाणौ^१ साहस धीर, नागपासि घाल्यो वरवीर ।
 चारि^२ सौ नानाणौ आकउ^३ भरइ, बाधि घालि सिला सिर धरइ २५६
 एकु कुम्बर राखिउ^१ कुमार, राजा जाइ जणाइ सार ।
 तुहि^२ जउ राय भरोसउ आहि, दगु परिगह आणइ पलणाइ ॥२५७॥
 जमसंवर रा वइठउ^१ जहा, भागिउ^२ कुवरु पुकारिउ^३ तहा ।
 सयल कुम्बर वापी मह घालि, उपर दीनी वज्र सिल टाल ॥२५८॥

(२५४) १. तउ (क) तिय (ग) २. कुमरे (क) कुमरनि (ख) कुवरउ (ग)
 ३. पूगउ (ग) ४. इसु को (ग) मार मयण अब पूजइ दाउ (क) मारहि मयण (ख)
 ५. महि (ग) ६. बुलावइ (ग) ७. कमल (क ख)

(२५५) १. अलोकणि (क ग) २. कहइ (क) कहिउ (ख) कहै (ग)
 ३. मयण काइते डीलउ कहइ (क) संभलु मयण कुवर मति कहइ (ग) निबितउ
 (ख) ५. सुभाउ (क) सभाउ (ख) ६. सुभ (क) ७. पठयो (क)

(२५६) १. तवहि (क, ग) तउ (ख) २. चमकियो (क) विहसाणउ (ख)
 रोसाणा (ग) ३. सहस सधीर (ग) ४. चारिसइ निनाणो (क) चारि निनाणे (ख)
 चउसइ नग्याण (ग) ५. आगइ घरइ (क) आको भरा (ख) आको भरउ (ग)
 ६. बापि (ग) ७. सुहउ (क) ८. तलि (क)

(२५७) १. तिम लिया उबारि (ग) २. राजाहि (क ख ग) ३. जणावहि (ख)
 ४. तुहि सइ (ख) जे तुम्हु (ग) ५. दलु (क ख) दल (ग) ६. परिण (क) ७. सब
 छेठु (क) आणहि (ख) वेगा (ग) ८. पलाइ (क) ले जाइ (ग)

(२५८) १. वइठाहइ (ग) २. सो जउ (क) ३. पढ़ता (ग) ४. महि (क ग)
 मुहि (ख) ५. राल (ग) ६. दीयो (क) ७. शिवा अडाल (क) शिसा टाल (ख)
 हनाल (ग)

पुण^१िण गिय मंदिर जाइ पहुत, जमसंवर तव^२ कहइ निरुत ।
 कनकमाल हउ आयउ^३ तोहि, तीन्यो विद्या आफइ मोहि ॥२६३॥
 निसुणि वयण अकुलानी वाल, जाणि सुहइ^२ वज्र की ताल ।
 जिहिलगी सामी एतउ^३ भयउ, मो^४ पह छीनी कुवर ले गयउ ॥२६४॥
 वस्तुबंध—एह नरवइ सुणउ^१ जव वयणु ।

विजाहर कारण^२ करइ, तिय चरितु सुणि हियउ कंपिउ ।
 उरुपु^४ रहडे फाडियउ मोहि सरिसु इणि अलिउ^५ जंपिउ ॥
 प्रेम लुवधे^६ कारणे आपी विद्या तीनि ।
 अब मोस्यो परंपंचु^७ करइ, कुमर ले गयो छीनि ॥२६५॥

(२६३) १. पिण (क) फुणि २. तह (क) ३. आपी आलउ (ल)

ग प्रति में निम्न पाठ है—

जम संवर तव विलखा भया, दनु छोड्या घर बटु उहि गया ।

जहति जातह बोलें एहु, तीन्यो विद्या वेगो देहु ॥२६३॥

(२६४) १. नारि (ग) २. तिरि वजी पचताल (क) ३. स्यामी (क) स्वामी
 (ग) ४. एहवा (ग) ५. मुभ (क) मोहि विगोइ छीनी ले गया (ग)

(२६५) १. जा (क) २. बहरा (ग) करण (ल) ३. भिया (क) निया (ग)
 ४. एग रुप मइ समभियउ (क) कंषइ उमुवा घर हरइ (ल) उरुपुरु होइ पुरहस्यो
 (ग) ५. आपु (क) आन (ग) ६. लुवधि (क ल) ७. परंपंचु (क ल) ग प्रति—

बटु भूरइ तह राउ मनि, देव चरितु इहु तेणि ।

प्रेम लुवध बइ कारणिहि सउपी विद्या एणि ॥

चौपई

देख चरित^१ जव^२ बोलइ^३ राउ, अब मो भयउ मरण को ठाउ ।

तिरियहं^४ तणउ^५ जू पतिगउ^६ करइ, सो माणस अणखुटइ मरइ ॥

तिरिय चरितु^७ निसणउ^८ भरिभाउ^९, विलख वदन भउ खगवइराउ । २६६

ध्रुवक छन्द

स्त्री चरित का वर्णन

अलियउ बोलइ अलियउ चलइ, निउ पिउ छोडइ अवर भोगवइ ।

तिरियहि साहस दगौ^१ होइ, तिरिय चरित जिण^२ फुलइ कोइ ॥ २६७ ॥

चौपई

नीची^१ बुधि तिम्बइ^२ मनि रहइ, उतिमु छोडि नीच संगइ ।

पयडी नीच^३ देइ^४ सो पाउ, एसो तिवइ^५ तणउ सहाउ ॥ २६८ ॥

(२६६) १. पुण (क ख) तव (ग) २. सोभइ (क) २. इव मोहि जुगतउ मरण का ठाउ (ग) ४. त्रिय (क) निया (ग) ५. पतिगउ (ल) पतिगह (क) भरोसा (ग) ६. मूरिल (क) नर जाणउ (ग) ७. अनखुंटी (क ख) ८. त्रिय (क) तिरिय (ल) तिया (घ) मूल पाठ तिनिय ९. मुणह (ग) १०. परिभाउ (ग) ११. पयउ (क) तह (ग) १२. तव राउ (क) बोलइ राउ (ग)

(२६७) १. चवइ (क ख) चवहि (ग) २. निय पिय (क) निउ पिउ (ल) पागु (ग) मूल पाठ बेचल पिउ है । ३. छोडि (क ख ग) ४. पोरिय (क) ५. डूणउ (ल) डूवणउ (क) ६. नवि (क) मनु (ग) ७. भुलइ (क) भूलउ (ल ग)

(२६८) १. नीच (ल) २. तियइ (क) ती (ल) नियह (ग) ३. मनि रहे (क) मनु हरइ (ल) मनु घरहि (ग) मूल पाठ मुनि ४. सणहइ (क ख) भोगवहि (ग) ५. नीची (क ख ग) ६. दे सो पाउ (क) देइ तो पाउ (ल) रह तिर पाउ (ग) ७. त्रियह (क) ती मइ (ल) ती चइ (ग)

उजंणि नयरि सो बूचइ ठाउ, पुव्वह हुती विवयह राउ ।
 तिरिय विसास करइ जो घणउ, जिहि जोउ सोप्यो राजा तणउ ॥२६६॥
 दुइजे राउ जसोधर भयउ, अमइ महादे सोखइ लयउ ।
 विस लाइ दइ मारघो राउ, फुणि कुवडउ रम्यो करि भाउ ॥२७०॥
 फुणि तीजे गिसुणह घरि भाउ, आथि नयर पाटण पयठाणु ।
 ह्या सेठि निमसइ तिहि काल, तीनि नारि ताकी सुहिनाल ॥२७१॥
 सोतउ सेठि वणिज उठि गयउ, जोभ लुवधि तिहि काहउ कीयउ ।
 छाडी ह्या सेठी की काणि, धतु एकु सिर थापिउ आणि ॥२७२॥
 अदिणि छोडि नाहु सुपियारु, धतु आणि ता कीयउ भतारु ।
 तिहि साहस कउ अंत न लहुउ, तिहि चरितु हउ केतउ कहउ ॥२७३॥

(२६६) १. उजंणि (ख) २. नयरी (ख) नयर (ग) ३. जो टाउ (क)
 ऊचइ (ख) उत्तम (ग) ४. पुरय हु गयउ सो ठाउ (क) पुव्वहु हुंनु विवर कणुराउ
 (ख) निम पुर भंउउ विक्रमराउ (ग) ५. विशास (क) विस्वास (ग) ६. किया तिह
 घणा (ग) ७. प्रिय (क) आपणउ (क) (तोभरा चरण ल प्रति में नहीं है)

ते हिति जिउ प्राण राजा तणउ (ख) राजइ सउप्पा जीव आपणा (ग)

(२७०) १. राज (क) २. गयउ (क) ३. अमइ महादेवि सो टनिउ (क)
 अमय महादे सो घर गयउ (ख) अदत-मती तिय लागीया (ग) ४. मारिउ (क ख)
 मारा (ग) ५. कुवडा ते (क) ६. रमिउ (क ख) रम्याउइ (ग) ७. घरि (ख ग)

(२७१) १. सेउ (क) तीप (ख) विउनाहरु तव बोलेइ राउ (ग) २. अथि
 (क ग) ३. पटणपुर (ग) ४. टाउ (क ग) ठाउ (ख) ५. घणवइ (क) हाया (ख)
 हुवा (ग) ६. वसइ (क) ७. तिहके (क) तिस की (ग)

(२७२) १. सोवतउ (क) सो तहि (ख ग) २. वणजहि (ग) ३. प्रेम लुवध
 तिहि अइसा कीया (ग) ४. छाडइ (क) छोडो (ग) ५. तेह (क) हाया (ख) तणी
 (ग) ६. सव (ग) ७. वाणि (क) ८. घरि (क ख) तिन राखा आणि (ग)

(२७३) १. परिणउ (क) रणिउ (ख) २. छाडि (ख) ३. नारि (क)
 ४. तिह (क) निन (ख) ५. भतारु (ख) प्रथम-द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है ।
 ६. इह (क) तिसका (ग) ७. को (क) अंतु न कोई लहुइ (ग) ८. प्रिय (क) प्रिया
 (ख) तिया (ग) ९. कितना ले (ग) केता कहोइ (ग)

अभया राणो कीए विनाए, सुहृदंसए लगी गये परान ।

जिहि लगी जुभ महाहो भयो, लइ तप चरणु सुदंसणु गयउ २७४

रावण राम जु वाढी राडि, विग्रहु भयउ सुपनखा लागि ।

सीया हडह लंका परजलइ, सब परियण रावण संघरइ ॥२७५॥

कौरों पांडो भारथ भयउ, तिहि कुरुखेत महाहउ ठयउ ।

अठार खोहणी दल संघारि, द्वइ दल बोलइ दोवइ नारि ॥२७६॥

कालसंवरू तउ कहइ वहोडी, कनकमाल तो नाही खोडी ।

पूरव रचित न मेटण कवणु, ए वीद्या लेहै परदवणु ॥२७७॥

अमुह कम्मु नहु मेटइ कोइ, सुरजनहु तउ सुवरीयउ होइ ।

दोस न कनक तुहि तणउ, इह लहणौ लाभइ आपणउ ॥२७८॥

(२७४) १. विवाण (ख) २. सुदंसण (क) सुभदंसण (ग) ३. तिहि स्वों मास भूम इहु भयो (ग) ४. संजम लेइ (क) लय तप चरणु (ख ग)

(२७५) १. जा (ग) २. वाधी (क) बंधो (ग) ३. विघन सुरपखि कीनी राड (क) विगाहु बलिउ सपनखी लाहि (ख) विग्रह चल्या सुपन भय ताडि (ग) ४. सीता (क) सीय (ख ग) ५. हरण (क) हडणु (ख) हडो (ग) ६. परजलणु (क) परजलइ (ख) परजली (ग) मूल पाठ—परजली लाइ ७. सब परियण (क ख) रचउ परिवर (ग) मूल पाठ स्यो पह्याल ८. संघरण (क) मंघरइ (ख) संघटी (ग)

(२७६) १. कौरव (क) कौरउ (ख) कइरव (ग) २. पांडव (क) पांडउ (ख) पंडव (ग) ३. विग्रह (ग) ४. सयउ (ख) ५. तिनि (क) तिन्ह (ख) तिन्हे (ग) ६. कियो (क) किया (ग) ७. अठारह (क ग) अठारह (ख) ८. बुइ (क ख ग) ९. द्रोपदी (क ग)

(२७७) १. बोला (ग) २. कंचनमाल (ग) ३. तह लागी (क) न सुमय लोडि (ग) ४. कोइ (ख) तोसरा ओर बोया चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

(२७८) १. कम्म (क) २. नवि (क) ३. सज्जन ते सुख बंदी होहि (क) प्रथम एवं द्वितीय ग में तथा द्वितीय एवं तृतीय चरण ख में नहीं है । ३. कनकमाल (क ग) ५. लिखियउ (क) सहणा (ग)

गाथा

दग्ध^१ति गुणा विचलंति वल्लहा^२, सज्जनाहि विहर्ष^३ति ।

विवसाय^४ सायि सिद्धी पुरिसस्त परंमुहादिम्बहा ॥

चौई

छुटउ कमणु काल की वहिण, फुणि ते बहुडी करी सामहण ।

चउरंगु वलु सवु समहाइ, करउ अभेडउ दुइजो जाइ ॥२७६॥

यमसंवर एवं प्रद्युम्न के मध्य पुनः युद्ध

बहुत रोस मन नरवइ भयउ, चाउ चढाइ हाथ करि लयउ ।

लयउ घनपु टंकारिउ जाम, गिरि पवय जागो डोले ताम ॥२८०॥

दोउ वीर आइ रण भिडे, देगइ अमर विवाणहि चढे ।

वरमहि वाण मरे अमराल, जागो घण गाजइ मेघ अकाल ॥२८१॥

गाथा

१. न संति (ल) निगंति (ग) २. विघा (ग) ३. सज्जनाइ (क)

सज्जनाय (ग) सधल सज्जन (ग) ४. विचलंति (ग) ५. सजन पाणु कुपण भया, जे मविहु सज्ज संवति (ग)

(२७६) १. बवल (क ग) २. संभल (क) समहाल (ल) ३. बरइ सुप

सव बाहुइ घाति (क)

ग—जाण संवर मनि भया उवाणु, सोइया बलयमाल का पाणु ।

हल चउरंगु गहु लीया सुपाइ, बरइ भूभू बाहुइ गो जाइ ॥

(२८०) १. सोणु (ग) २. बक (क) बाणु (ग) ३. विहि लीया (ल) से

(ग) ४. पुणु (ग) ५. टंकारा (ग) ७. पवाण भट्ट बंवर ताम (ग)

क—यणु इंवार बरइ ते जाम, सव गिर परवण डावइ ताम

(२८१) १. सोनउ (ग) २. गज्जहि (ग) ग प्रवि में सो बरल निग

का में घाति है—

दोउ वीर सेर मरणाण, हुमे हुमे हरि संवाण

तव परदमण रिसानो जाम, नागपासि मुकलाइ ताम ।
 सो दलु नागपासि दिहु गह्वउ, राउ अकेलउ ठाढउ बह्वउ ॥२८२॥
 भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सवु दल संघरइ ।
 इम मयरद्धउ कहउ सुभाय, तउ नानारिप गयउ तिह ठाइ ॥२८३॥
 नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

भणइ मयणु रहायो मयणु, वापहि पूतहि गाउ कमणु ।
 जिहिप्रतिपालिउ कियउ तु राउ, तिहिकउ किमि भानइभरिभाउ २८४
 नारद बात कहै समुभाइ, दू दल विगाहू धरइ रहाइ ।
 कालसंवर तो हो इन जूत, यह परदवण नरायण पूत ॥२८५॥
 निसुणि वयण मन उपनो भाउ, भरि आयौ सिर उमइ राउ ।
 इतडो परि पछितावो भयउ, चउरग दलु संघरि लयउ ॥२८६॥

(२८२) १. सो (ग) २. छोड़इ तित्तु ठाम (ग) ३. बुइ (क) ४. रहो (क)
 रहिउ (ख ग)

(२८३) क ख प्रतियों में निम्न पाठ है ।

भणइ मयण एसो करइ, जमसंवर सवु दल संघरइ ।

इम मयरद्धउ कहइ सुभाय, तउ नानारिप गयउ तिह ठाइ ॥२८२॥

ग प्रति—

भणइ मयणु हो इसउ कराउ, इव भागउ इसका भडिवाउ ।

नानारिपि घामा तिह ट्ठाइ, बही बात चलि जावइ साइ ॥२७३॥

(२८४) १. तउ रिपि जइ रहायउ मयण (क ख) बोलइ रिपि तू मुण
 परववणु (ग) २. विग्रह (क ख ग) ३. अंतराव (क) तू तहू राउ (ग) ४. तिनकउ
 (क) तिस का (ग) ५. सिवु (क) किउ (ग)

(२८५) १. बुइ (क, ख) बुहु (ग) २. विघ्न (क) विग्रहउ (ग) विगाहु (ख)
 ३. हरइ घराइ (क) घराइ (ग) ४. तोहि (क) तुहि (ख) तुम्ह (ग) ५. निवन (क)
 बुत्तु (ख) ६. तुम्हारउ (ग)

(२८६) १. मयण (क) वचन (ग) २. भावइ (क) भाकउ (ख) पहि
 अंकि (ग) ३. दुमइ (क) चुवइ (ख) चुवो (ग) ४. लडियउ (क) तानि व भाणि
 (ख) इतना (ग) ५. गयउ (क, ख) सह संपारिया (ग)

तव मयण मन छोडो कोह, मोहणी जाइ उतारघो मोह ।
 नागपासि जव घाली छोरी, चउरंग वल उठी वहोरी ॥२८७॥
 उठी सैन मन हरिप्यो राउ, बहुत मयण को कीयो पसाउ ।
 नानारिपि बोलइ तंखिणी, घर अवेसि तिहारी धरणी ॥२८८॥
 वयण हमारे जउ मन धरहु, घर वेगे सामहणी करहु ।
 पवण वेगि तुम द्वारिका जाहु, आज तिहारी आहि विवाहु ।२८९॥
 नारद बात कही तुम भली, मुही केवली कही सो मिली ।
 विहसि वात बोलइ परदवणु, हम कहु वेगि पराइ कम्बणु ।२९०॥
 नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के बल विमान रचना
 नारद खण विमाण रचि फरइ, कंद्रप तोडइ हासी करइ ।
 बहुडि विम्वाण धरइ मुनि जोडि, खण मलयद्वंडु धारइ तोडि ॥ २९१॥
 विलख वदन भो नारद जाम, करइ उपाउ मयणु हसि ताम ।
 मणि माणिक मय उदउ करंतु, रचि विमाण खण धरइ तुरतु ।२९२॥

(२८७) १. तवही (क ख ग) २. तव (क) बन्ध (ग) ३. सुचला (ग)

(२८८) १. उठी (क) उठि (ख ग) २. सैन (क) सयण (ख) मयतु (ग)

३. धारति (क) अवेसेरि (ख, ग) ४. तुम्हारी (क) तुहारी (ख) अयि तुम्ह (ग)
 ५. तली (ग)

(२८९) १. चित्ति (ग) २. घर सामहणी साम्हा चलिउ (क) घर कहु
 वेगि पयाणा करहु (ख) घर को वेगि सालती करहु (ग) ३. घर कह जाहु (ग)

(२९०) १. मुणिवर (क) २. पूछइ (क) ३. परणावइ (क ग) पराणइ (ख)

(२९१) १. रिपि (ग) २. रिपि (क) ३. करइ (क) रिपि धरइ मु जोडि
 (ग) ४. करि (ग) ५. क्षण (ग) ६. मयद्वंडु (क ख) ६. मइराधा (ग) ७. घालइ
 (क ख ग) मूल प्रति में मुनि के स्थान पर 'मन' शब्द है ।

(२९२) १. होइ (क) हुउ (ख) २. मइरघउ (क) मयण खिलि ३.
 मइरघउ (क) ४. बहु (ख) का (ग) ५. वण (ख) खिलि (ग)

विद्यावल^१ तह रच्योउ, विमाणु, जहि उदोत लोपि ससि भाणु ।
 धुजा घंट घाघरि सजूतु, फुणि तिह चढयो नारायण पूत । २६३
 जमसंवरु रामहिउ जाइ, बहुत भगति करि लागइ पाइ ।
 कुमरहि सरिसु खिणतवु करइ, कंचणमाल समदि घर चलइ। २६४।
 कुवरु मयण अरु नारदु पास, चढि विमाण उपए आकास ।
 गिरि पव्वय वह लघे मयण, बहुत ठाइ वंदे जिणभवण । २६५।
 फुणि वण माझ पहुते जाइ, उदिधिमाल दीठी ता ठाइ ।
 बहुत वरान कुवर स्यो मिलि, भानु विवाहण द्वारिका चली । २६६।
 नारद वात मयणस्यो कहौ, यह पहले तुम ही कहु वरी ।
 तुम हडि धूमकेत ले जाइ, तउ अब भानहि दीनी आइ ॥ २६७ ॥
 मुनि जपइ मुहि नाही खोडी, आहि सकति तउ लेहि अजोडि ।
 रिपि कौ वयण कुमरु मण घरइ, आपण भेस भील कहु करइ । २६८।

(२६३) १. तिति (क) तहि (ख) तिहि (ग) २. चलित (ख) ३. उदया (ग) ४. लोपिउ (क) लोपिठ (ग) करहि (ख) ५. वघारि (क) वावती (ख) क-कणय विमाणु सुहिर रसजूत (ग) ६. चलि चण्णो (ग)

(२६४) १. राजा समिभाइ (क) राजा समदि घरि जाइ (ख) प्राया तितु टाइ (ग) २. द्यमावणि करइ (क) खिउ तव करउ (ख) सबहि कुवर सों विनति करइ (ग) ३. माता जाइ घरि (क) चतरण सिरि घरइ (ग)

(२६५) १. घगति (क) २. उपमे (क) उप्पवे (ग) ३. परवत (क ग) पव्वय (ख)

(२६६) १. वण माहि (क ख ग) २. उदिधिमाला रठी तितु ठाइ (ग) ३. वात (क) वगत (ख) वरसेइ (ग) ४. कुमर मन (क) कमर बट्ट (ख ग) ५. भान (क) भानु (ख ग) ६. विवाहण (क ख ग) मूल प्रतिवण के स्यान-पर मण

(२६७) १. श्रुति (ग) २. उच्चरी (ग) ३. तो यह नारि भानु बट्ट टया (ग)

(२६८) १. तुम (क) तुम्हि (ग) २. आरिप (ग) गरि अजोडि (ग) ५. जहोडि (क ख) ५. भिलन का (ख)

ग—नारद वचनहि घइसा भया, आपण भेस भील टया (ग)

प्रद्युम्न द्वारा भील का रूप धारण करना।

घणही कांड विसाले हाथ, उतिरि मिल्यउ तिनि के साथ ।
 पवण वेग सो आगय गयउ, देइ आखर पणि उभउ भयउ ।२६६।
 हउ वटवाल नारायण तणउ, देइ दाण मुहि लागइ घणउ ।
 बढी वस्तु आपु मुहि जोगु, जइसे जाण देइ सबु लोगु ॥३००॥
 महलउ भणइ निसुणि महु वयणु, बढी वस्त तू मागइ कमूणु ।
 अर्थ दवु सोनो तू लेहि, हम कहु जाण अगहुडउ देइ ॥३०१॥
 भीलु रिसाइ देइ तव जाण, आइसी परि किम्व लाभइ जाण ।
 भली वस्त जा तुम पह आइ, मो मुहि आफि अगहुडे जाहि ।३०२।
 तउ महलउ जपइ मुहि चाहि, एक कुम्बरि मोपह इह आहि ।
 हरिनंदरा कहु परणी जौइ, अरे सम्बर किम मांगइ सोइ ।३०३।

(२६६) १. घणही (क) घणही (ख) धनुष (ग) २. सजि करि सर ले हाथि (क) धारा विसाले हाथि (ख) कटारी विसाले हाथ (ग) ३. तिन कइ (क) तिन्ह ही (ख ग) ४. पुणि उठि मिल्या (ग) ५. ले आखत (क) देइ आखत (ख) वेद अदिठु तव ऊभा भया (ग) ६. तव (क) फुणि (ख)

(३००) १. वस्त (क) दाण (ख) वस्तु. (ग) २. जोगि (क) लोगु (ख) ३. जिउ हउ

(३०१) १. महिला (क ग) २. सुणहि (क) ३. मो (क) ४. अरय (क) अरयु (ख ग) ५. वरयु (ख ग) देलि (क) ६. तं (क) ७. लेहु (क) लोहि (ख) ८. आगे (क) अगुहई (ख) वेगि जाण (ग)

(३०२) १. भिल्लु (ख) २. आण (क ख ग) ३. एसी (क) ४. बढी (ग) ५. आहि (क ख) अइहे (ग) ६. लागहु (क) अघउडउ (ख) सोह हम देहु भिलु इम कहै (ग)

(३०३) १. बाहि (ख) २. जो मो पहि (क) इह मो पहि (ख) यह मो पहि (ग) ३. सोइ (ख) ४. सवर (क) समर (ख) नोट—तीसरा और चौथा चरण 'ग' प्रति में नहीं है ।

भणइ वीर यह आफहि मोहि, जइ सइ वाट जाण द्यो तोहि ।
 महलहु कोपि पयंपइ ताहि, अरे भिलु तोहि जुगत न आहि ।३०४।
 निसुणइ महल कहइ विचार, हउ नारायण तणउ कुमार ।
 इहखोल जिन करहु सदेहु, उदधिमाल तुमि मो कहु देहु ॥३०५॥
 महलउ बोलइ रे अचगले, भूठउ बहुत कहइ अतिगले ।
 तीनि खेड जो पुहमि नरेसु, तिहि के पूनहि आइमु वेसु ॥३०६॥
 वाट छोडि तउ ऊवट चले, उहि पह भील कोडी दुइ मिले ।
 भणइ सधार नहि मुहि खोडि, वलु करि कन्या लइय अहोडी ।३०७।
 प्रद्युम्न द्वारा उदधिमाला की बल पूर्वक छीन लेना
 छीनि कुम्बरि तहि लइ पराण, फुणि सो वाहुडि चल्पउ विम्बारा ।
 भीलु देखि सो मनु अहि डरइ, करण कलापु कुवरि सो करइ ।३०८।

(३०४) १. मुहि (क) इह (ल) यहु (ग) २. भिलु (ग) ३. तउपहि मेहि (ग) ४. जेते (क) ५. द्यो (क) डिउ (ल) नानक जाणक देऊ तोहि (ग) ६. भणइ (क) घपइ (ल ग) ७. मुहि जुगती न आहि (क ल)

ग प्रति में—हरि नंदन बहु परणी जोइ, घरे भिलु रिउ मागहि सोइ ।

(३०५) १. सुणि (ग) २. महिले (क) माहनो (ल) महिला (ग) ३. एणि वयणि (क) डूमर वात मत (ग) ४. तुम्हि आयो एहि (क) मुहि मुहि बहु देहु (ल) हम बहु देउ (ग)

(३०६) १. अचगने (क) महिला कोपि मु तव परजती (ग) २. जुट्टि (क) ३. आगने (क ल) भूठा बचन कहवहि हो भियो (ग) ४. पुत्र (क) पूत कि (ल) पुनुन (ग) ५. बचण इह वेति (क) अइगउ भंमु (ल) अइसा वेनु (ग)

(३०७) १. उवरे २. (ग) चणइ (क) चने (ग) चणित मूनप्रति में 'चलोउ' (ग) ३. उडि (ल) तापटि (ग) ४. इर (क ग) ५. कुनर (क) तपःक (ल ग) मून प्रति में 'तपः' ६. हम (ग) ७. बहोडि (क ल) अत्रोडि (ग)

(३०८) १. दो निदे पराणि (क) सोऊ कुनर तिहि सई पराण (ग) २. चने (क) चडिउ (ल ग) ३. भरण (ल) बरल (ग) मन ए क्व कुमर ए बरिउ (ग)

पहलौ मयण कुवर कहु वरो, दुजै भानु विवाहरा चली ।
 नारद निसुणी हमारी बात, अब हौ परी भील के हाथ ॥३०६॥
 अब मोहि पंच परम गुण सरणा, लिउ सन्यास होइ किन मरणा ।
 तउ नारद मन भयो संदेहु, वुरो वयण इनि आखिहु एहु ॥३१०॥
 तउ नारद जंपइ तंखिणी, कंद्रप कला करइ आपणी ।
 लखण वतीस करणमय अंगु, रूप आपणौ भयो अणंगु ॥३११॥
 उदधिमाल सुंदरि समभाइ, फुणि विमाण सो चलिउ सभाइ ।
 चलत विमाण न लागी वार, गये वारम्बइ के पइसार ॥३१२॥
 देखि नयरु बोलइ परेदवणु, दिपइ पदारथ मोती रयणु ।
 धनुक कंचण दीसइ भरी, नारद वसइ कवण उहँ पुरी ॥३१३॥

(३०६) १. कुवरी (क) २. घती (ग) ३. कजइ (क ग) दुइबइ (ल)
 अबह (क) अबहउ (ल) इहो (ग) ५. कइ (ल ग)

(३१०) १. ते चारित किम हो सहि मरण (क) ते माता जसु होवइ मरण
 (ग) सोल सयास सिउ हुइ किन मरण (ग) २. पडिउ (क ल) पइयो (ग) ३. खोरउ
 (क) ४. मोहि (क)

(३११) १. उठि (क) २. वणचन (क) करणमइ (ग)

(३१२) १. तव (ग) धने विमाण वचन मनु साइ (ग) २. गये नगर
 द्वारिका मभार (क) गए वारमइ कियवइ साह (ल) गया वरमइ नयर दुवारि (ग)

(३१३) १. धन करण (क ल ग) २. ए (क) इह (ल) ग प्रति में यह
 पद्य नहीं है ।

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

वस्तुबंध—भणइ नारद निसुरिण परदवण ।

यह तु चइ द्वारिकापुरी, वसइ माभ सायरहं रिणच्चल ।

जमि भूमिय अथि तुव, सुद्ध फटिक मणि जणित उज्जल ॥

कुवा वाडिउ च वणवर बहु धवहर आवास ।

पहुपयाल जिणवर भुवण पउलि कोट चोपास ॥३१४॥

निसुरिण जंपइ मयणु वरवीरु, मुभु वयणु नारद निसुरिण ।

फुडउ कहहि राहु गुभु रखहि, देखि मयणु रिणय चित्तु दइ ॥

जो जहि तणुउ अवासु ॥३१५॥

चौपई

माभ नयरि धवल हरु उत्तंगु, पंच वणं मणि जडिउ सुचगु ।

गरइ धुजा सोहइ वह घणउ, वह अवास सु नारायण तणउ ॥३१६॥

(३१४) १. एह वसइ (क) यह कटिपइ (ख) यह ऊंची (ग) २. सचंगी (क) हनिहचल (ख) हवदुपरि (ग) ३. जम्म (क) ल) जनम (ग) धइ तुमह (क) इह घायि तुव (ख) ग) वरइ राज इहु दति सो हरि (ग) प्रति में यह चरण पल्ले के स्थान पर है । ४. सो वन्न वन्नी (क) जडित (ख) ६. धाही वयणु वर (क) वाडिउ वयणु पवर (ख) धापी धाग वण (ग) ७. भवण (क) ल) ग) ८. बहु पयार (क) ९. घोवति कोर घोपास (क) मभु वयणु नारद निसुरिण भुबलि विजणणइ तामु (ख) कंचन कसतिहि दीपनिहि वसइ भुवण चउयाम (ग)

(३१५) १. पयपइ (ग) २. मोहि (ग) ३. फुडउ मुभुहि मुह्य रसहि (क) बहु साधा जिन मुभु रासहु (ग) ४. कवण गेहि मुह तणउ सपन धरित मोहि सपन धरतिहि (क) कवणु गेहु महु बहु तणउ सभु खरहि महु सरमु धरसर (ख) कवणु गेह इहु विसरत तणी । सपन भंडु हम वेगि धानहु (ग)

(३१६) १. मन्नि (क) ग) मभु (ख) २. जडिय (क) जडिउ (ख) धरे (ग) मुमराठ जडिउ ३. तव तिलउ (क) बहु सरण (ख) ४. एह (क) बहु (ग)

सि^१व धुजा डोलइ^२ चोपास, वह^३ जाणइ वलिभद्र अवास ।

जहि^४ धुज^५ मेढे^६ दीसइ देव, वह^७ मंदिर जाणइ वसुदेव ॥३१७॥

जिहि^१ धुजा विजाहर सहिनाण, वंभण वइठे पढइ पुराण ।

जहि^२ कलियलु वह^३ सूभइ घणउ, वह^४ अवासु सतिभामा तणउ ॥३१८॥

कलकमाल जस उदो करंत, जह^१ वह^२ धुजा दीसइ फहरंत ।

मणिगज^३ मणि^४ सहि चउपास, वह^५ तुहि^६ माता तणउ अवास ॥३१९॥

निसुणि^१ वयण^२ हरपिउ परदवणु, तिहि^३ को चरितु न जाणै कवणु ।

उतरि^४ विमाणति उभउ भयउ, फुणि^५ सोमयणु नयर मां गयउ ॥३२०॥

प्रधुमन को भानुकुमार का आते हुए देखना

चवरंग दल सयन संजुत, भानकुवर^२ द्दीठउ आवंतु ।

तव^३ विद्या पूछइ परदम्बनु, यह^४ कलयलुसिह आवइ कम्बनु ॥३२१॥

(३१७) १. सिष (क) २. लहकइ (क) डोलहि (ख) डोलें (ग) ३. ए घाणइ (क) उ जाणइ (ख, ग) ४. जिहि (क) जहि (ख) जाहि (ग) ५. घणउ (क) धुजा (ख) धुजा (ग) ६. मीडा (क) मीडे (ख) मड (ग) ७. उह (क ख ग) धूल प्रति मे 'सिष'

(३१८) १. सूभइ (क) सुणियें (ग) सूभइ (ख) २. भणउ (क ख ग)

(३१९) १. सुजइ बइ (क) सुनि उदउ (ख) बह उदो (ग) २. विपइ (क) ३. करकंति (क) ४. भरकति मणि दीसइ चउ पासि (क) जाहि बह धुजा दीसहि चउपासि (ख) मणिज मणि दीसहि जिसु पासि (ग) ५. जह (क) तुहि (ख) तुह (ग)

(३२०) १. बोल्पा (ग) २. तिमु का (ग) ३. माहि (क) महि (ख ग)

(३२१) १. सेन (क) सइन (ग) २. भानु कुवर आवइ निदत्तु (ग) ३. कलियलु सु (क) कलियर ह्यउ (ग) ४. कवणु (क ख) कउण (ग)

निसुणि मयणु तुहि कहो विचारु, यह हरि नंदनु भानु कुमार ।
 इहि लगि नयरी बहुत उछाहु, यह जु कुवर जइ तणउ विवाहु ॥३२२॥
 प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेन धारण करना
 तहा मयणु मन करइ उपाउ, अरु इहकउ भानउ भरिवाउ ।
 वूढ वेस विप्र को करइ, चंचल तुरिय मयायउ करइ ॥३२३॥
 चंचल तुरीयउ गहिरी हिंस, चार्यो पाय पखारे दीस ।
 चारि चारि आंगुल ताके कान, राग वाग पहचाणइ सान ॥३२४॥
 इके सोवन वाखर वाखर्यउ, पकरी वाग आंगहुइ चलिउ ।
 भान कुवर देख्यो एकलउ, वाभण वूढउ घोरो भलउ ॥३२५॥
 घोरो देखि भान मन रलउ, पूछइ वात विप्र कहु चलिउ ।
 फुणि तहि वाभणु पूछिउ तहा, यह घोड़ो लइ जैहहि कहा ॥३२६॥

(३२२) १. एहि लगि (क) इह वर (ग) २. एह सु (क) इह सु (ल ग)
 ३. जिह (क) जहि (ल) जिस (ग)

(३२३) १. तवहि (क ग) २. वटु (ग) ३. इव (ल) ४. इमका (ग) इहि कर
 (ल) ५. वूढउ (क ल) वूडा (ग) ६. तुरी (क ग) तुरिउ (ल) ७. मायामई (ग)
 मायामउ (ल) मयणरखि घरई (ग)

(३२४) १. गुरोरी हासु (क) घागइ धारसी (ग) २. पाउ (क) पाय (ल)
 नाव (ग) ३. परवालिय (क) परवाले (ल ग) ४. ए तामु (क ल) ५. धारइ (क)
 गारिसु (ल) ६. जिह के (क) तिह के (ल) जिमने (ग) ७. पिद्याणइ (क) यह
 ारइ (ल) ८. भानु (क ल)

(३२५) १. सासनि सो बन अरु पातरउ (क ग) २. पातर पातरियउ
 (क ल) ३. पखरि (क ल ग) ४. घाघेरउ (क) घागइ (ल ग) ५. घोड़उ (क ल)
 घोषडा (ग)

(३२६) १. घोडा देखन जन मनु खनिउ (ग) २. पूछण (क ल ग) ३. खने
 पान्यो बिहा (ग) ४. जादसि (क)

वाभरणु ठवहुक घोडौ हइ आपणउ, तजिउ समुद वालुका तरणउ ।
 निसुणिउ भान कुम्बर कौ नाउ, तउ तुरंगु आणिउ तिहि ठाइ ॥३२७॥
 भान कुवर मन उपनो भाउ, बहुतु विप्र कहु कियउ पसाउ ।
 निसुणि विप्र हउ अखएहु, जो मागइ सो तोकहु देउ ॥३२८॥
 तवहि विप्रु मागइ सतिभाइ, भानकुवर कै मनु न सुहाइ ।
 विलखउ भानकुवर मन भयउ, मान भंगु इहि मेरउ कियउ ॥३२९॥
 भणइ विप्रु हौ आखउ तोहि, इतनउ जे न सकहि दइ मोहि ।
 मइ तो कहुदीनउ सतभाइ, परिहा जउ देखाहि दौडाइ ॥३३०॥

भानुकुमार का घोड़े पर चढना

निसुणि वयणु कुवर मन रल्यउ, कोपारूहु तुरंगइ चढिउ ।
 विषमु तुरंगु न सकउ सहारि, घोड़े घाल्यो भानु अखारि ॥३३१॥

(३२७) १. वंभरण चिरत कहइ आपणउ (क) वाभरणु गवडु कहइ आपणउ
 (ख) वंभरण नाउ कहइ आपणा (ग) २. तेजी एह (क ग) ते गिउ (ख) ३. रण समबह
 तरणउ (क) समुदह तरणा (ग)

(३२८) १. वठु (ग) २. बहुति (क) बहुतु (ग) ३. निसुण (ख) ४. इसउ
 करेउ (ग) अखो तोहि (क) अखउ तोहि (ख) ५. सो भायो (क) तुभु जोगी (ग)

(३२९) १. मनह (ख) २. सताहि (ग) ३. घवन (क) ४. तव (ग) कौ (क)

(३३०) १. हहु (क) कहउ (ग) २. घायो (ग) ३. मागिउ सके न बइसी
 कोइ (क) इतनउ जे न सकहि दइ मोहि (ख) माग्या देइ न सकइ मोहि (ग)
 ४. बोलिउ सतिभाउ बीना पसाउ (ग) ५. परहुदाउ (क) जह जे इस कहु
 लइ दउडाइ (ग) ६. दउडाइ (ख) मूल प्रति—मागिउ जइ लखइ दे मोहि

(३३१) १. कोप हवि सु (ग) २. तुरंगम (क) लइ घलिउ (ख) ४. नवि
 सहो (क) ५. भानुकुमार घालिउ घहारि (क) घोड़े शीनउ भानु सु राइ (ख)
 घोड़े राइया भानुकुमार (ग)

पडिउ भानु यहु वडउ विजोगु, हासी करइ सभा को लोगु ।

यह नारायणुतनो कुमारु, या समु नाही अवर असवारु ॥३३२॥

भणइ विप्र तुम काहे रले, इहि तरुगो पह बूडे भले ।

इरह ते करि आयउ आस, भानकुवर तइ कियउ निरास ॥३३३॥

हलहर भणइ विप्र जिण डरहु, इन्ह घोडे किन तुम ही चडउ ।

ही बूडउ चाहौ टेकणी, दिखलाउ पवरिप आपणउ ॥३३४॥

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

जगु दस वीम कुवर पाठए, विप्रह तुरी चढावण गए ।

तउ वाभण अति भारउ होइ, निहिके कहे न मटकइ सोइ ॥३३५॥

तुरीय चढावण आयो भाण, उलगाणे को नाही मानु ।

जगु दस वीम कियउ भगिवाउ, चडिबि भान गनि दीनउ पाउ ॥३३६॥

चडइ विप्र भगवारिउ करइ, अंतगिन भो घोरो फिरइ ।

दिठउ सभा अचंभो भयउ, चमतकार करि उअड गयउ ॥३३७॥

(३३२) १. अउ हुगो (क) तव भया (ग) २. ए (क) इहु (ग ग) ३. समान (क) इहि समु (ख) इगु गरि (ग)-

(३३३) १. हुंने (ग) २. हम (क) ने हम (ग) ३. डुर परो (क)

(३३४) १. बरुड (क) २. मन डरहु (ग) ३. रलि को (क ख) इगु घोडइ मुम बेगनु चडिउ (ग) ४. चारुड रिक्लिउ (क) चारुड बेरुउउ (ग) आमउ टेकना (ग) ५. दिखलाउ (ख) ६. वन वीरप (क)

(३३५) १. वीरप (ख) २. तु चढावण भए (क) ३. निटु बड विपड न उरुड सोइ (क) निटु बड बरुड नड चारुड सोइ (ख) विन के बरे न मरुड चडि सोइ (ग)

(३३६) १. उलगाण (क) उलगाणो (ख) उलगाण (ग) २. चढाणे मुरंग दिना रनि पाउ (ग) धु ररनि—उलगाणे चढावण न चडि

(३३७) १. हुड (क ग) २. घाने (क) ३. ऊरनि (क ग)

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना
 फुरिण सो रूप खधाइ होइ, द्वाी घोड़े निपजावइ सोइ ।
 वन उद्यान रावलुहो जहा, घोड़े खांची पहुतउ तहा ॥३३८॥
 वणह मयण पहुतउ जाइ, तउ रखवाले उठे रिसाइ ।
 इह वण चरण न पाव कोइ, काटइ घास विगुचनि होइ ॥३३९॥
 कोपि मयण मन रहउ सहारि, रखवालेसहु कहयउ हकारि ।
 कछुस मोलु आइ तुम्हि लेहु, भूखे तुरी चरण किन देहु ॥३४०॥
 तवइ भइ तिन्हु की मतु हारि, काम मूदरी देइ उतारि ।
 रखवाले वीलइ वइसाइ, दुइ घोड़े ए चरहु अघाइ ॥३४१॥
 फिरि फिरि घोड़ो वण मा चरइ, तर की माटी उपर करइ ।
 तउ रखवाले कूटइ हीयउ, दू घोड़े वणु चौपटु कीयउ ॥३४२॥
 दीनी तिनसु काम मूदरी, बाहुरी हाथ मयण के चढी ।
 सो वर वीर पहुतउ तहा, सतिभामा की बाडी जहा ॥३४३॥

(३३८) १. सुधाइ (क ग) २. रावल (क) रखवालेउ (ख) मुरावल (ग)
 ३. रचि (क) खइचि (ख) लनी (ग)

(३३९) १. वण महि (क ख ग) २. कावउ खास घरावइ जाइ (क) काटइ घासु
 त्रिगुचइ सोइ (ख) तीतरा चौपा चरण—क प्रति—तय रखवाला बोलइ एम घास
 रावलउ काटइ बेम (क) ३. कापइ तासु विधावइ सोइ (ख) काइइ घास
 विगुचइ सोइ (ग)

(३४०) १. कोप (क) जिन (ग) २. वंनहि जत हारि (ख) सुसाइ (ग)
 ४. कछु मोल तुम हम पहि लेहु (क) कछु मोलि तुम्हि घापणउ लेहु (ग) ५. तुम (क)

(३४१) १. तव बीनी (ग) २. वीनहि (क) बोलि (ग) ३. लेहु (ग)
 मूलप्रति—वश्यः

(३४२) १. तप की (क ख ग) २. कूटहि (ख) पीटहि (ग) ३. चउपटु
 (ग) चउपट (ख) धमिनम चरण क प्रति में नहीं है ।

(३४३) १. सुंदरी (क ख) २. बीनी तहि (ग) ३. कुमर के पत्नी (क)

वाडि मयरा पहुतउ जाइ, बहुत विरख दीठे ता ठाइ ।

कोइ न जाणइ तिनकी आदि, बहुत भाति फूनी फुनवादि ॥३४४॥

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

जाइ जुही पांडल कचनार, चबलसिरि वेलु तिहि सार ।

कूजउ महकइ अरु कणवीरु, रा चंपउ केवरउ गहीरु ॥३४५॥

कुंदु टगरु मंदारु सिंदूरु, जहि वंघे महइ सरीरु ।

दम्बणा मरुवा केलि अणंत, निवली महमहइ अनंत ॥३४६॥

आम जंभीर सदाफल घणे, बहुत विरख तह दाडिम्ब तणे ।

केला दास विजडरे चारु, नारिंग करण सीप अपार ॥३४७॥

नीबू पिटखजूरी संख, सिरली लवंग छुहारी दास ।

नारिकेर फोफल बहु फले, वेन कइस घणे आवले ॥३४८॥

(३४४) १. तिह (क) तहि (ल)

(३४५) १. पांडल (क) पाण्डे (ल) २. बाउन लेखी गो मदिबार (क) बावन (ल) ३. चवर (ल) ४. राइ (क) राउ (ल) ५. चंपा (क) ६. केतरी गहीर (क) केवडउ हार (ल)

(३४६) कुंद टगर मंदार गिदुर (क) कुंदु टगर मपुद गिदुर (ल) २. मह मरु (क) मरुइ (ल) ३. मगरीर (ल) ४. बरलउ (क) बरला (ल) ५. महंन (ल) ६. मंगु (क) मेवामी (ल)

(३४७) १. आमल गिले (क) अमिल गले (ल) २. बित्री (क) ३. माली (क) बरला (क) बरला (ल) ३. सीप (क ल) पुनजनि में 'सीप' पाठ है

(३४८) १. घला (क) घनत्र (ल) पुनजनि में बरुव के स्थान पररुव पाठ है

शे२—३४४ से ३४८ तक के पद्य 'अ' प्रथि में नहीं है ।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

वाडी देखी अचंभिउ वीर, तव मन चितइ साहस धीर ।
जइसइ लोग न जाणइ कोइ, वां^१दर दुइ निपजावइ सोइ ॥३४६॥
तउ वं^१दर दीने मुकलाइ, तिन सव वाडी घाली खाइ ।
जो फुलवाडि हुती बहु भाति, वं^२दर घाली सयल निपाति ॥३५०॥
फु^१णि ते वं^२दर पइ^३ठे मोडि, रू^३ख विरख सव घाले तोडि ।
सव फल हली तव संघरी, तउ^४पट करि सव वाडी धरी ॥३५१॥
लंका जइसी कौ हणवंत, तिम वारी कौ वालखयंत ।
भानु कुम्बर हो वैठी जहा, मालि जाइ पुकारयो तथा ॥३५२॥
मालि भणइ दुइ कर जोडि, मो^२ जि^३न सामी लावहु खोडि ।
वं^४दर हूँ^५सै पइ^६ठे आय, तिहि सव वाडी घाली खाइ ॥३५३॥
जवति माली करी पुकार, रथ चढी कुम्बर लए हथियार ।
पवण वेग सो धायउ तथा, वं^२दर वाडी तोरी जहा ॥३५४॥

(३४६) १. जाणइ (क ख ग) २. वानर (क) बंदर (ख ग)

(३५०) १. वानर (क) २. फुलवाडि (ग) मूलप्रति में फुलवादि पाठ है ।

यह शीर्षक 'ख' प्रति में नहीं है ।

(३५१) १. पुणते (ख) २. पठए (क) ३. दखव (ख) ४. सव्य फनाहली (ख) फुलवाडी (ग) ५. चउपर वाडी करि सवि धरी (क ख) चउड चपट तिह वाडी करी (ग) मूलप्रति में 'वेद पाठ है

(३५२) १. जिस करी (क) जेमसी (ग) २. करी (क ख ग) ३. लीघी जु खवंत (क) निय काल क्यति (ख) तउ वाडी चदरि रवाधनि (ग) ४. छइ (क) या (ख)

(३५३) १. विनवइ (क ग) २. मुझ (क) मोहै (ग) ३. मत (क) ४. वनचर (क) ५. वाडी (क) दुइ (ख ग) ६. इहि बइटा भाइ (ग) दुइ तिहि पइठे भाइ (ख) ७. तिन (क) तिन्ह (ख) तिग्ह (ग)

(३५४) १. जव तिहि (क ख ग) २. धाउ (क) पगुता (ग) ३. वानर (क) ४. तोइइ (क) तोडी (ख) तोइहि (ग)

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना करना

तउ मयरधउ काहो करइ, मायामइ मच्छर रचि धरइ ।

तिहि ठा भानु सपतउ जाइ, साजतु मच्छर चलिउ पलाइ ॥३५५॥

भानु भाजि णिय मंदिरि गयउ, पहरकु दिवसु आइ तिह भहउ ।

तंसिणि वहु वरकामिणी मिली, भानइ तेल चढावण चली ॥३५६॥

प्रद्युम्न द्वारा मगल गीत गाती हुई

स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

तेल चढावहि करइ सिगारु, सूहउ गावइ मगलुचारु ।

रय चढि कुवरिति उभीभइ, फुणि मटियाणुउ पूजण गइ ॥३५७॥

तवइ मयण सो काहो करइ, ऊंटु तुरंगु जोति रय चडइ ।

ऊटु तुरंगु मुप्रठे अरडाइ, भानु रानि घोडउ धर जाइ ॥३५८॥

पठिउ भानु उइ विलखीभइ, गावत आउ रोवति गइ ।

ठह तुरंग उठे अरराइ, असगुन भयो न जाण न जाइ ॥३५९॥

(३५५) १. काहउ (क) कहाता (ग) २. मायारूप (ग) ३. तह करइ (क) रचिनि धरइ (ग) ४. भुनसाठ तहां जाउ (ग) भानुहुमव तउ पट्टना घाइ (ग) ५. साजन (क) साजनु (क) ६. माधर (क ग)—७. बनउ (क ल) तिलि एरो सो बली पमाइ (ग)

(३५६) १. त्रिन (क ग) २. घाइ तिह पयो (क) तहां तिनु भया (ग) ३. मयरो (ग)

(३५७) १. तिनु (ल) २. कुवरति (ल) ३. घणगइ (क ल) तव ते (ग) ४. कुवरति (क) ते (ल)—बडयो कुंवर रवि घागे भयो (ग) ५. मटियाली (क) मटियालउ (ल) मटियालउ (ग)

(३५८) १. तट्टि घागो करइ (ग) २. जोडि (ग) ३. बनउ (क ल) धरइ (ग) ४. उठण घरइइ (क ल) तवट्टि उर सो करइ बुजार (ग) ५. घणघण भयो न बलह गुरइ (क) घोडा भाग भावहि मार (ग)

(३५९) १. तव विपला भयो (ग) २. गावत सो भो धर बट्टु मना (ग) ३. ठहवट्ट (ल) मोर—दर वट्ट क रचि वे मरी है ।

प्रधुम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर
सत्यमामा की वावड़ी पर पहुँचना

फुण्डि मयरद्वउ वंभणु भयउ, कर^१ धोवती कमंडलु लयउ ।
लाठी टेकतु चलिउ सभाइ, खण वावडी पहुतउ जाइ ॥३६०॥
उभो भयउ जाइ सो तहा, सतिभामा की चेरी जहा ।
भूखउ वामणु जेम्वरु करहु, पाणु^३ पियउ कमंडलु भरहु ॥३६१॥
फुण्डि चेडी जंपइ तंखणी, यह वापी सतिभामा तरणी ।
इणु^३ ठा पुरिपु न पावइ जाण, तू कत आयउ विप्र अयाण ॥३६२॥
तउ वंभण कोपिउ तिरणकाल, किन्हह^३ के सिर मूडे हि वाल ।
किन्हह^५ नाक कान ते खुटी, फुण्डि वंसणु पइठउ वावडी ॥३६३॥

विद्या बल से वावड़ी का जल सोखना

फुण्डि तहि बुधि उपाइ घणी, सुइरी विद्या जल सोखणी ।
पूरि कमंडलु निकलिउ सोइ, सूकी वावडी रीति होइ ॥३६४॥

कमंडलु के जल को गिरा देना

सूकी देखि अचंभी नारि, गो वाभण चौहटे मभारि ।
धाइ लडी वाहुडी कर गयउ, फुण्डि कमंडलु नदी होइ वहउ ॥३६५॥

(३६०) १. तलि (ग) २. आइ (क ग)

(३६१) १. वावडी (क) चेडी (ख ग) २. जोमण (क) जेमणु (ख) जीवणु (ग) ३. पाणी पिए (क) पाणी देहु (ग)

(३६२) १. ता तरणी (क) २. इहि ठा (ख ग) ३. आवइ (क)

(३६३) १. तिरिण काल (क) तहि बाल (ख) तहिनाल (ग) २. किन्हहकउ (क) किन्हही के (ख) तिन्ह के (ग) ३. बाल (क ख ग) ४. किन्ह (क) सबे (ग) ५. खुडी (क ख ग) इव (क) ६. वइठावउ (ग) मूलप्रति में 'तिताल' पाठ है

(३६४) १. सुमरी (क) मुमरी (ख) तवरी (ग) २. वाइ (ग)

(३६५) १. चउहटे (उ) ते पहुती सतिभामा वारि (ग) २. फूडि (ख)

बूडण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाढी पाठ ।

नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ ॥३६६॥

प्रद्युम्न का मायामयी मेढा घनाकर वसुदेव के महल में जाना

फुणिए तहि मयण मित्र चितयउ, माया रुपी मेढो कियउ ।

पहुतउ वसुदेव तणो खंधार, कठीया जाइ जणाइ सार ॥३६७॥

तउ वशुदिउ वोलइ सतभाउ, वेगउ तहा भीतरि हकराउ ।

कठीया जाइ संदेसउ कहिउ, ले मेढो भीतरि गयउ ॥३६८॥

छोटो मेढो घरो न संक, विहसि राउ तव छाडी टंक ।

तउ मयरदुउ वाहु कहइ, वात एम की कारणु अहइ ॥३६९॥

(३६६) क प्रति में—

कमंडलु भरि खलिउ बाजारि, करयो पडिउ कमंडलु सारि ।

फूटि कमंडलु नदू तिह खली, सोक उत्तर पुदइ देवली ॥३७४॥

पुदइ पणिएरौ षडठे हाट, भणहि वाणिए पाढी हाट ।

नयर सोग सब कौतिग सिउ, इतनो करि तहा धी खलिउ ॥३७५॥

ख प्रति

बूडण लागी पाणी हाट, भणहि वाणिए पाढी पाठ ।

नयर लोगु सबु कउतगि मिलिउ, इतडउ करिसु तहां ते चलिउ ॥३७६॥

सोग महाजन कौतिग मिल्यो, इतना करि वाहुडि खाल्यो (ग)

ग प्रति

बंभण जाइ जणाईमार, गय बंभण घउरुटे ममारि ॥३७८॥

फारि कमंडलु षडो हुइ खली, नयर उनी खोलइ तव खली ।

बूडण लागउ सभु बाजार, सबइ सोग मिलि करहि पुजार ॥३७९॥

(३६७) १. मनु (क) बहुरि (ग) मनु (ख) २. मडिउ (क) मेडउ (ख)

माढी (ग) ३. के द्वारि (ग)

(३६८) १. वसुदेउ (क) वसुदिउ (ख) वसुदेव (ग) २. रिटि टाउ (ग)

३. सारगिह (ख) वेडा मुइह भोतरह कणउ (ख) ४. बसाइ (ग) ५. रिपउ (ख)

खयउ (ग) ६. सं भ गउ बहु (क) से भौडा उहु भोतरि गयो (ख ग)

(३६९) १. टाडिउ (क) टोडिउ (ख) टूटा (ग) २. संत (क) संग (ग)

३. विहसि रायलि छाडी राक (क) विहसि राय पुषु ऊटो टंग (ख) विहसि राय तव

खोती टंग (ग) ४. सपड (क ग) सुमपाठ सई

विहसि अणंगु पयंपइ ताहि, हउ परदेसी वाभण आहि ।
 दुखड टक तुहारी देव, तउ हउ जीवत उवरउ केम्ब ॥३७०॥
 तउ जंपइ वसुदेउ व्होडी, इहिर वयण तुहि नाही खोडी ।
 मन आपणे धरइ जिन संक, मेरी तूटि जाइ किन टंक ॥३७१॥
 तव तिन्हि मेहउ दीनउ छोडि, देखत सभा टांग गउ तोडि ।
 तोडि टांग मैढो वाहुडिउ, वसुदेउ राउ भूमि पडिगयउ ॥३७२॥
 वसुदेउ राउ भूमि गिरि पडिउ, छपन कोटि मन हासउ भयउ ।
 तिहि ठा सिगली सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घर जाइ ॥३७३॥
 प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण
 कर सत्यभामा के महल में जाना
 कनक धोवतो जनेउ धरं, द्वादस टीकौ चन्दन करं ।
 च्यारि वेद आचूक पढंत, पटराणी घर जायो पूत ॥३७४॥
 उभो भयो जाइ सीद्वार, कठिया जाइ जणाइ सार ।
 जेते वाभण भीतर घरणे, सतिभामा वरजे आपणे ॥३७५॥

(३७०) १ देखइ कत तुहारी सेव (क) २. तुह जिनवरउ मन मनउ देव (क) तउ हउ तुम्ह ते उवरउ केव (ग) 'हउ' मूलप्रति में नहीं है ।

(३७१) १. तुम माही खोडि (क) २. मा (ख) न (ग) ३. टूट (क)

(३७२) १. मीडउ (क ख ग) टांग (ख) टंग (ग) २. भूमि गत (क) वासुदेव भूमि गिर पडयो (ग)

(३७३) १. कोडि (क ख ग) २. मिलि हासउ किउ (क) ग प्रति-हो वसुदेव कहा यह किया,..... ।

तातो पारं सभा हसाइ, फुणि सतिभामा कै घरि जाइ

(३७४) ग प्रति में-वरिहि कमंडलु घोती बंधि, द्वादस तिलक जनेउ कंठि ।
 चारिउ वेद अचूक भणाइ, पटराणी घर पहुता जाइ ॥

१. अचुपके (ख) २. पहुत (क ख)

(३७५) १. जाइ सीद्वारि (क ख) सुतासु (ग)

सुण्यो पढंतेउ उपनो भाउ, वह वाभण भीतर हकराउ ।
 राणी तणउ हकारउ भयउ, लाठी टेकतु भीतर गयउ ॥३७६॥
 अक्षत नोरु हाय करि लेइ, राणी जाइ आसीका देइ ।
 तूठी राणी करइ पसाउ, भागि विप्र जा उपर भाउ ॥३७७॥
 सिर कंपत वंभण जव कहइ, बोल तिहारो साचउ अहउ ।
 वयणु एकु ही आखउ सारु, भूखउ वाभण देहु आहारु ॥३७८॥
 राणी तणउ पटायतु कहइ, भूखउ खरउ करटहा अहइ ।
 राणी आणइ अथु भंडारु, एकुउ मागइ एकु आहारु ॥३७९॥
 तुम विप्र कहत हहु भलउ, तुहि बहु वाभणु हउ एकलउ ।
 वेद पुराण कहिउ जो सारु, उतिमु एक आहि आहारु ॥३८०॥
 वैठि विप्र उठ भोजन करहु, उपरा उपर काहे लडहु ।
 एक ति उपरि तल वैसरहि, अवरइ विप्र परसपर लडहि ॥३८१॥

(३७६) १. पडित (ग) २. इह (क) बटु (ख) इहि (ग) ३. बुलाइ (क)

लेइ बुलाइ (ग) इहु संति कराइ (ख)

(३७७) १. अक्षत (ख) अक्षित (ग) २. वहुं आगिय सो देउ (ग) ३. जिह

(क) जह (ख) मिमु (ग)

(३७८) १. वरइ (ग) २. अयउ (क) ३. आपाइ (ग)

(३७९) १. राणी ततउ पटायतु कहइ (ग) २. बिनु आहारु (ग) सोइउ वसाइ

(क) ३. वरहिहा अहइ (क) ४. कहइ (ख ग) ५. आपइ (क ख) आचइ (ग)

६. मु बिउ (क) बबुवा (ख) हजतउ (ग) ७. आपाक (ग)

(३८०) क प्रति में यह शब्द नहीं है । १. सभि (ग) एकला (ग) २. सो

(ग)—'स' प्रति में खोया चरण नहीं है ।

(३८१) १. वेगि (क) वडित (ख) वडगटु (ग) २. वंभर (ग) ३. एक नि

विप्रानि उपरि लडहि (क) ४. जनाइ (ग)

निमुनहु वात परदवन तरणी, मुकलाइ विद्या जूमणी ।
 उपरापरुति वंभण लडइ, सिर कूटहि कुकुवार फरहि ॥३८२॥
 राणी वात कहइ समुभाइ, इतु करटहानु लागी वाइ ।
 दूरउ होइ तहि घालइ रालि, नातरु वाहिर देहि निकालि ॥३८३॥
 तउ मयरघउ बोलइ वयरु, साधु अधाराउ भूखे कम्बरु ।
 खुधा वियापइ सुणइ विचारु, हमि कहु मूठिक देहि अहारु ॥३८४॥
 सतिभामा ता तउ काहौ करइ, कनक थालु तस आगइ धरइ ।
 वइसि विप्र तसु भोजन करहु, उन की वात सयल परिहरहु ॥३८५॥
 बैठउ विप्रु आधासणु मारि, चकला दिनउ आगइ सारि ।
 लेकर दीनउ हाथु पखाल, आणिउ लोणु परोसिउ थाल ॥३८६॥

(३८२) १. मुकलावइ (ख) २. उपर (ग) पहते (ख) उपरि (ग) ३. सिर फूटहि फोलाहल करहि (क) सिर फूटहि कूवारउ करहि (ख) पीटहि सोसु कूक बह करहि (ग)

(३८३) १. इते (ग) २. काइटा (क) कररहि (ग) ३. वाइ (क) पाइ (ग) ४. भलइ दुरउ (ख ग) ५. तउ (क) जउ (ग) ६. रालि (ग) मूलप्रति में 'वार' पाठ है

(३८४) १. साधु (क ख) २. भपउ (ख) ३. खुधा वियापहि (ख) जुटे विष्प (ग) ४. नू वासा (ख) ५. अधारु (ग)

(३८५) १. तब (क ग) २. इती (ग) ३. तब आणि धराइ (ग) ४. तुम (क) तुम्ह (ख ग) ५. उह की (ख ग) इनकी (क) ६. सबे (ग) मूलप्रति में 'तुह की' पाठ है ।

(३८६) १. वइसउ (क) २. विपु (ख) ३. अधारि (क) ४. लोटउ (क) ५. अपिउ (ख) नोट—यह छन्द 'ग' प्रति में नहीं है ।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

चउरासी हांडी ते जाणि, व्यंजन बहुत परोसे आणि । -
 मांडे वडे परोसे तामु, सवु समेलि गउ एकुइ गामु ॥३८७॥
 भातु परोसइ भातुइ खाइ, आपुण राणी वैठि आइ ।
 जेतउ घालइ सवु संघरइ, वडे भाग पातलि उवरइ ॥३८८॥
 वाभण भणइ निमुणि हो वाल, अधिक पेट मोहि उपजी ज्वाल ।
 तिमु तिमु लोगु सयलु परिहरघउ, मो आगे सवु कोडा करहु ॥३८९॥
 जहि जेम्बण न्योते सवु लोगु, तितउ परोसिउ वाभण जोगु ।
 नारायणु कहु लाइ घरे, तेउ सयल विप्र संहरे ॥३९०॥
 तउ राणी मन विलखी होइ, तिहि तो खाइ सयल रसोइ ।
 यह वाभणु अजहु न अवाइ, भूवउ भूवउ परिविलखाइ ॥३९१॥
 भयण वीरु यह वडउ विजोगु, तइ जू नयर सवु न्योत्यो लोगु ।
 सो काहो जेम्बहिगे आइ, इकुड विमु न सकइ अघाइ ॥३९२॥

(३८७) १. विधि (ग) ते तउ (ग) २. भोजन (ग) ४. मंडा (क) मांडे (ख ग) ५. बहुत (ग) ६. समेलि (ख ग) सबनि बीयो एकु गामु (क)

(३८८) १. ते तउ लाय (ख) २. बडइ (ख) ३. ऊवरइ (क) उवराइ (ख) मूलप्रति में 'टाइ'

(३८९) १. निवलो लोग सबहि परिहरउ (ग) २. कोडा (क ग)

(३९०) १. ओमण (क ख) उयोणार (ग) २. निउमउ (क) निउते (ख) निवतिह (ग) ३. निहू कइ उपरपा बडा वियोग (ग)

(३९१) १. इरतउ (क ख) इनतउ (ग) २. सबहि (ख) ३. खाने खाइ नारायण लाइ (क) ४. विसलाइ (क ख ग)

(३९२) १. बाह (ख) विप्र (ग) २. नयर बाह (ग) ३. ओमणो (क) ओबहिगे (ख)

राणी चितह उपणी काणि, काही अवरु परोसो आणि ।
 भूखउ वाभण काहो करइ, घालि आंगुली सो उखलइ ॥३६३॥
 अंसो वांभण कोतिगु करइ, सब मांडहीति उखली भरइ ।
 मान भंगु राणी कहु कीयउ, मयगु विप्र ते खूडउ भयउ ॥३६४॥
 प्रद्युम्न का विकृत रूप बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना
 मूंडी मूडि नलीयरा लयउ, निहुडिउ चलइ कुवडा भयउ ।
 वडे दांत विरूपी देह, फुरिण सुचलिउ माता के गेह ॥३६५॥
 खण खण रूपिणि चढइ अवास, खण खण सो जोवइ चोपास ।
 मौस्यो नारद कछउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३६६॥
 जे मुनि वयण कहे परमाण, ते सबई पूरे सहिनाण ।
 च्यारि आवते दीठे फले, अरु आचल दीठे पीयरे ॥३६७॥
 सूकी वापी भरी सुनीर, अपय जुगल भरि आए खीर ।
 तउ रूपिणी मन विभउ भयउ, एते ब्रह्मचारि तहा गयउ ॥३६८॥

(३६३) १. सब पाछउ घरइ (क) सो करइ (ख) ऐसा केतिग
 वंभण करे (ग)

(३६४) १. सब माहउ उखालि सो भरई (क) सब माणहुउ उखलि सो
 भरइ (ख) सउ मंडा अखलि सो भरऊ (ग)

(३६५) १. कमडलु हाथि (ख) नालियरु (ग) २. हूडउ भयो (क)
 भयउ (ख) होइ (ग) ३. दातारिब (क) दत (ग) ४. विरुली (ख) विरुपिय (ग)
 ५. यहुडि (क) ६. सुचलिउ (ख)

(३६६) १. मुहिस्यो (क) हमसो (ग) ख प्रति में प्रथम चरण नहीं है ।

(३६७) १. वरग (क) वरु (ग) २. आखे (ग) ३. वारि (ख ग) ४. अम्बते
 ५. अचल (ग) ६. दीसहि (क) हुये (ख ग) ७. पीयला (क)

(३६८) १. थाणय (क) पयोहय (ख) २. विसमो (क) विसमा (ग)
 चिभउ (ग) ३. इतडउ तापमु धारेहि गया (ग) ४. कह भयउ (ख)

नमस्कारु तव रूपिणि करइ, धरम विरधि खूडा उंचरइ ।
 करि आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिधासणु वंसण देहु ॥३६६॥
 समाधान पूछइ समुभाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ ।
 सखी वूलाइ जणाइ सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥४००॥
 जीवण करण उठी तंखिणी, सुइरी मयण अग्नि थंभीणी ।
 नाजु न चुरइ चूल्हि धुंधाइ, वह भूखउ भूखउ चिललाइ ॥४०१॥
 हो सतिभाम कै धरि गयउ, कूर न पायो भूखउ भयउ ।
 जो दीयो सो लीयो छीनि, तिनस्यो पूरी लाघण तीन ॥४०२॥
 रूपिणि चितह उपनी काणि, तउ लाइ नि परोसे आणि ।
 मास दिवस को लाहु घरे, खूडे रूप सबइ संघरे ॥४०३॥
 आधु लाइ नारायण गाइ, दिवस पंच ज्यो रहइ आघाइ ।
 तव रूपिणि मन विंभी कहइ, किछु किछु जाणउ यहु अहइ ॥४०४॥

(३६६) ३६८ के पश्चात् एक छन्द ग प्रति में धीर है जो निम्न प्रकार है—

तापस देखि उपना भाउ, तव रूपणी पूछई सतभाउ ।

स्वामो धागमणु किहां धी भया, एता ब्रह्मचरणु कहा ते निया ॥

१. खेडउ (क) छूडउ (ख)

(४०१) १. पाक करण उठीतंखिणी, (क) २. मुमरो विद्या (ग) ३. अग्नि (क) अग्नि (ख) अग्नि बंधणी (ग) ४. नाज न चडइ भूमि धूजाइ (क) नाज न राभहि चूल्हि धुंधाइ (ख) अग्नि बतइ चूल्हइ धूंधाइ (ग) ५. विललाइ (क ग)

(४०२) तत्रहि मयण उठि मा पहि गया (ग) २. रहिउ (क) भयउ (ख)
३. सतिभामा सो (ग)

(४०३) १. चित्त (क) चितहि (ग) २. तगु तडू परसउ (ग) परसे (क)

३. नारायण कहू लाहु घरे (ग) ४. खोडे बंधण सब संघरे (ग) मूपप्रति में 'धीर' पाठ है ।

(४०४) १. विभउ (ख) विनिहि विसमाइ (ग)

तउ राणो मन विसमउ करइ, अइसइ पूतउ रह को घरइ ।
 जइ उपजइ तो कहसा न जाइ, किमु करि नारायण पतियाइ ॥४०५॥
 तउ रूपिणी मनि भयो संदेह, जमसंवर घर वाढिउ एहु ।
 विद्या वलु हइ हीएह घणउ, यह परभाउ अहि विद्या तणउ ॥४०६॥
 फुण्डि जै पूछइ करि नयणु, लयउ वरतु तुम्हि कारणु कवणु ।
 तव रूपिणि पूछइ धरि भाउ, सामी कहहु आपणउ ठाउ ॥४०७॥
 काहा तै तुम्हि भो आगमणु, दीनी दिप्या तुहि गुरु कवणु ।
 जन्मभूमि हो पूछो तोहि, माता पिता पयासो मोहि ॥४०८॥
 तवहि रिसाणो बोलइ सोइ, गुरु वाहिरी दीख किमु होइ ।
 गोतु नाम सो पूछइ ताहि, व्याह विरधि जहि सनवधु आहि ॥४०९॥
 हम परदेस दिसतर फिरहि, भीख मागि नित भोजन करइ ।
 कहा तूसि तू हम कहु देहि, हसइ कहा हमारउ लेहि ॥४१०॥

(४०५) १. उबरिको (ग) २. किउ करि लाभइ इसकी माय (ग)

(४०६) १. हइ तुम यह घणउ (क) हइ इह यह घणउ (ख) इमु पहि हइ घणी (ग) २. अरिय तिमु तणी (ग)

(४०७) मूल प्रति के प्रथम दो चरण ए प्रति में से लिये गये हैं । १. डूजइ (क) २. इकमिणी (ग) ३. लिउ घर इहु (ग)

(४०८) १. बोन्ही बोखा सो गुरु कवणु (ग) २. पयासहु (क) पयासहि (ख) प्रकीसउ (ग)

(४०९) १. देलहि (क) बोख्या (ख) हिष्टि (ग) २ तोहि (क) मोहि (ग) ३ होइ (ग)

(४१०) १. भीख मागि (क) चरो मागि (ख) चारि भंग (ग) मूलप्रति में 'चरो मागित' पाठ है । २. हमो (क) हसहि (ख) हट्टो (ग)

छूडउ दिठु रिसाणउ जाम, मन विलखाणो रूपिणि ताम ।
 वहुरि मनावइ दुइ कर जोडी, हम भूलो जिन लावहु खोडी ॥४११॥
 तवहि मयणु जंपइ तिहि ठाइ, मन मा कहा विसूरइ माइ ।
 साचउ मयणु पयासउ मोहि, जिम्ब पडि उतरु आफउ मोहि ॥४१२॥
 तउ जंपइ मन करहि उछाहु, जिम्ब रूपिणि कउ भयउ विवाहु ।
 जिम्ब परदवणु पूञ्चु हडि लयउ, सयलु कथंतरु पाछिलउ कहिउ ॥४१३॥
 धूमकेत हो सो हडि लियउ, फुणि तह जमसंवरु लौ गयउ ।
 मुहिसिहु नारद कहिउ निरुत, आजु तोहि घर आवइ पूत ॥४१४॥
 अवर वयणु मुनि कहे पम्वाण, ते सर्वई पूरे सहिनाणु ।
 अजहु पूतु न आवइ सोइ, तहि कारण मनु विलखउ होइ ॥४१५॥
 सतिभामा घर बहुत उछाह, भानकुवर को आइ विवाहु ।
 हारी होइ न सोधउ काजु, तिहि कारण सिर मुंडइ आजु ॥४१६॥
 माता पाम कथंतर सुध्यउ, हाथ कूटि फुणि मायो धन्योउ ।
 आजु न रूपिणि मन पछिताइ, हउ जण पूत मिल्यो तुहि आइ ॥४१७॥

(४११) १. सरा रिसाणा बोहया जाम (ग) छूडउ निमुणि रिसाणउ जाम

(ख) २. मत (ग)

(४१३) १. जउ (ग)

(४१४) १. सोवत (क) तिह सो (ख)

(४१५) १. सगला (क)

(४१६) १. होइ (क) मूलप्रति में 'होर' पाठ है

(४१७) १. तो मा (ख) २. तणउ (क)

कंद्रप बुद्धि करी तंखिणी, सुमिरी विद्या बहु रूपिणी ।

निजु माता उभिल करि घरइ, रूपिणि अवर मयाइ करइ ॥४१८॥

सत्यभामा की स्त्रियो का रूपिमणि

के केश उतारने के लिये आना

एतइ बहु वरकामिणी मिली, अरु नाउ गोहिणि करी चली ।

अछइ मयाई रूपिणि जहा, ते वर एारि पहुती तहा ॥४१९॥

पाइ पडइ अरु विनवइ तासु, सतिभामा पठई तुम्ह पासु ।

सामणि जाणहु आए उण लेहु, अलिउल केस उतारण देहु ॥४२०॥

निसुणि वयण सुंदरियो कहइ, बोल तिहारौ साचउ हवइ ।

निसुणहु चरित अणंगह तणउ, नाउ मूडिउ सिर आपणउ ॥४२१॥

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

हाथ आंगुली धरी उतारि, अर मूंडी गोहिण की नारि ।

नाक कान तिनहु के खुरे, फुणि ते सब्ब घर तन बाहुरे ॥४२२॥

गामति निकली नयर मभारि, कम्बण पुरिप ए विटमी नारि ।

यहर अचभउ वडउ विजोउ, हासी करइ नगर को लोगु ॥४२३॥

एते छण ते रावल गई, सतिभामा पह उभो भई ।

विपरित देखि पर्यंपइ सोइ, तुम कवणइ मोकली विगोइ ॥४२४॥

(४१८) १. कइंवि (ग)

(४२०) मूलप्रति में—तुम्हि जिन सामिणि ऊण लेहु पाठ है

(४२२) १. पडे (ग) २. सेवडे (ग)

(४२३) १. गायन (क स) गावतु (ग) २. विडंरी (ल) ३. अउर (क) एहु
(ग) इहुक (ल) ४. वियोग (क) विजोगु (ल) वियोगु (ग)

(४२४) १. कवणे (ल) नाई (ग)

नोट—क प्रति में दूसरा घोर तीसरा चरण नहीं है ।

तव ते जंपइ विलखी भइ, हम ही रुपिणि के घर गई ।
 नाक कान जो देगइ टोइ, नाउ सरिसु उठी सब रोइ ॥४२५॥
 निमुणि चरितु चर आए तथा, रुपिणि रावल वंठी जहा ।
 विटमी नारि सिर मूंडे घरौ, नाक कान हम काटे मुणौ ॥४२६॥
 निमुणि वयण फुणि रुपिणी कहइ, निरचे जाणौ येहो अहइ ।
 काज ताज छोडहि वरवीर, परगट होइ तूं साहस धीर ॥४२७॥
 प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

तव सो पयड भयो परदवणु, तहि सम रुपिन पूजइ कवणु ।
 अतिसरूप बहु लक्षणवंतु. तउ रुपिणि जाणउ यह पूत ॥४२८॥
 वस्तुबंध—जव रुपिणि दिठ परदवणु ।

सिर चुंमइ आऊउ लीयउ, विहसि वयणु पृणि कंठ लायउ ।
 अय मो हियउ सपलु, मुदिन आज जिहि पुत्रु आयउ ॥

(४२५) क प्रति में प्रथम दूगरा घरण नहीं है । १. नाई (क) नाऊ (ख)
 नाई (ग) २. सिउ ऊंउ तवि रोइ (ग)

(४२६) वरवि चरितु परि घाया तही (ग) २. रोवं (ग) ३. निय (ग)

(४२७) १. निहवउ काणउ (ख) मोषउ जाली (ग) नविहू काणउ (क)
 २. हुं इह इहइ (क) इह को इहइ (ख) ये हो इह (ग) मूलप्रति में 'इहइ' पाठ है ।

शीट—दूगरा और तीगरा का ल मूल प्रति और क प्रति में नहीं है । यही 'ग'
 प्रति में से लिया गया है ।

(४२८) १. मया (क) मयणु (ख) वगट (ग) २. नरि (ग) लागु रनि म
 पुनइ कवणु (क) सगु को काणउ गुंइर कवणु (ख) ३. निर (ग)

दस मासइ जइउ धरिउ, सहीए दुख महंत ।
 वाला तुणह न दिठ मइ, यह पछितावउ नित ॥४२६॥

चौपई

माता तरो वयणु निमुणोइ, पंच दिवस कउ वालउ होइ ।
 खण इकु माह विरधिसो कयउ, फुणिसो मयण भयउ वेदहउ ॥४३०॥
 खण लोटइ खण आलि कराइ, खण खण अंचल लागइ धाइ ।
 खण खण जेत्वणु मागइ सोइ, बहुतु मोहुँ उपजावइ सोइ ॥४३१॥
 इतडउ चरितु तहा तिहि कियउ, फुणि आपणउ रूपो भयउ ।
 माता मयणु सुनु मोहि, कवतिगु आज दिखालउ तोहि ॥४३२॥

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

एतउ अबसर कयंतर भयउ, सतिभामा महलउ पठयउ ।
 तुम बलिभद्र भए लागने, आइस काम हकमिणी तरो ॥४३३॥

(४२६) १. वाकउ बीयउ (क) अंकुउ भरिउ (ख) अंकुउ लिउ (ग)
 २. हिय तव कंठि लायो (ग) ३. जीतव्य फच (क) जीविउ सफनु (ख) जीवहु सफनु
 (ग) ४. उरि धरिउ (ख) मइ धरि धरचे (ग) ५. बासकु होतु न बीठु मइ
 इहु पछितावा पूत (ग)

(४३०) नोट—चौपइ स प्रति में नहीं है ।

(४३१) १ भोजन रोइ (ग)

(४३२) १. मुणहि तु (क) २. कवतिग (क) नोट—ग प्रति में चौपा
 चरण नहीं है । मूलप्रति में 'दसो' पाठ है ।

(४३३) १. अमर (क ख ग) २. कचुकि (क) महला (ग) ३. अइसा (क)
 अइसे (ख ग) ४. किये (ख ग) मूलप्रति में—'पठयो' पाठ है

महलउ जाइ पहुतउ तहा, बलिभद्र कुवर वइठे जहा ।
जुगति विगतिहि विनइ घणी, ऐसे काम कीए रूपिणी ॥४३४॥

हलधर के दूत का रूक्मिणी के महल पर जाना

हलहल कौपि दूतु पाठयो, पवण वेगि रूपीणि पहुँ गए ।
उभे भए जाइ सीहद्वार, भीतर जाइ जगाइ सार ॥४३५॥
तवइ मयण बुधिमह घरइ, मूँडउ वेस विप्र को करइ ।
वडउ पेट तिनि आपणउ कीयउ, फुणि आडौ दुवारि पडिठयउ ४३६
तवहि दूत बोलइ तिस ठाइ, उठहि विप्र हम भीतर जाहि ।
तउ सो वाभण कहइ वहोडि, उठि न सकउ आइयहु वहोडो ॥४३७॥
निसुणि वयण ते उठे रिसाइ, गहि गोडउ रालियउ कडाइ ।
जइ इह कीम्वहूँ वाभणु मरइ, तउ फुणि इन्हकहू गोहिच चढइ ॥४३८॥

(४३४) १. सरतउ (क) संगतो (ल) संगतो (ग) २. दोषी (क) स्वापी
बात सुणेहि मुझ तणी (ग)

(४३५) १. बलिभद्र (क) २. वेगि (ग) ३. पाठयो (क) पाठइ (ल) पाठया
(ग) ४. घरि (ग)

(४३६) १. वुडउ (क ल) वुडा (ग) २. मूलप्रति में 'तहा विपरित' पाठ है

(४३७) १. घानि इह (क) हउ न सकी घाये वहोड (ग)

(४३८) १ गहि गोडे राणउ इक नइ (क) गोडे इवहि चलिउ न जाइ
(ग) २. जो इहु कवहो वंभणु महणु । तउ फुणि इमु की हत्या चढइ (ग) ग प्रति में
निम्न पद्य अधिक है—

सो हम कहु देइ न पइसार, मंयि रह्या सो घर का बाइ ।

गहि गोडा जे राणउ तोहि, मरइ मु वंभणु हत्या घाहि ॥४४०॥

प्रदेश न प्राप्त करने के कारण दूत का वापिस लौटना
 अइसो जाणिति वाहुडि गए, हलहर आगइ ठाढे भए ।
 वाभण एकु वाडह पडउ, जाणि सु दिवमु पंचकउ मडउ ॥४३६॥
 तिन पह हम न लइ पयसारु, रुधि पडिउ. सो पवलि दुवारु ।
 गहि गोडउ जउ जालइ ताहि, मरइ सु वंभणु हत्या आहि ॥४४०॥

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

निसुणिय वयण हलहर परजल्यउ, कोपारूठ हो आपण चलिउ ।
 जण दस वीसक गोहरण गए, पवण वेगि रूपिणिय पह गए ॥४४१॥
 उभे भए ति सीहद्वार, दीठउ वाभण परउ दुवार ।
 तउ वलीभद्र पइइ ताहि, उठहि विप्र हमि भीतर जाहि ॥४४२॥
 तव वंभण हलहरस्यो कहइ, सतिभाना घर जेम्बण गयउ ।
 सरस अहार उवरु मइ भरिउ, उठि न सकउ पेट आफरयउ ॥४४३॥

(४३६) १. इसउ वयण (क) अइसउ जाणिति (ख) दीठा वंभणु (ग)
 २. वारणइ (क) वारिहइ (ख) वाहरि हइ (ग)

(४४०) १. तहि (क) तिहि (ख) सो हम कहू देइ न पइसारु (ग) २. रहषा
 घर का वार (ग) ३. रालहि (क) राडहे (ख) रालउ (ग) ४. मरइ सु वंभणु हत्या
 आहि (ग) नोट—यह पद्य ग प्रति में मूलप्रति के ४४० वें पद्य के आगे तथा ४४१ वें
 के पहिले दिया गया है । मूलप्रति में—मरइ किमइ गोहचहि अडराहि पाठ है

(४४१) १. परजलिउ (क) परजलिउ (ख) परजल्यो (ग) २. पुण (ख)
 जाणइ वइसवरि सो टल्यउ (ग) ३. साधिहि (ग) ४. घरि (ग)

(४४२) १. जाइगोह (क ख) निसीहउ (ग) २. वारि (क) सोढा वाभणु
 पडषा सुवारि (ग) ३. कहइ हसि वात (ग)

(४४३) १. एजो घरि रहइ (ग) २. सरस (क ख ग) ३. मूलप्रति में पहार
 पाठ है । ४. उवरु (क) बहुत संघरउ (ख) ५. आफरियउ (क) अफरिउ (ख) आफरं (ग)

तव वलिभद्र कहे हसि वात, एकर हटा न उठइ खात ।
 वाभण खउ लालबी होइ, बहुत खाइ जाणइ सवु कोइ ॥४४४॥
 तवइ रिसाइ विप्रइ कहइ, तू वलिभद्र खरौ निरदयो ।
 अवर करइ वाभण की सेव, पर दुख बोलइ तू केव ॥४४५॥
 तवइ उठिउ वलिभद्र रिसाइ, गहि गोडउ गहि चलयउ कढाइ ।
 कहा विप्र कहु दीजइ कालि, वाहिर करि आवहु निकालि ॥४४६॥
 तव हलहर लइ चलीउ कढाइ, पूछइ मयणु रुक्मिणी माइ ।
 एक वात हो पूछउ तोहि, कवण वीर यह आखहि मोहि ॥४४७॥

रुक्मिणि द्वारा हलधर का परिचय

छपन कोटि मुख मंडल सारु, यह कहिए वलिभद्र कुवारु ।
 सिंघजूक यो जाणइ घणउ, यह पीतियउ आहि तुमि तरणउ ॥४४८॥
 गहि गोडइ वह वाहिर गयो, वाधि पाउ घडउ हइ रहउ ।
 देखि अचंभउ हलहर कहइ, गुपत वीर य कोण अहइ ॥४४९॥

(४४४) १. रिटिया अनूत्तरि खात (क) रटिहानउ हटहि खात (ख)
 रटिकान उट्टही खातु (ग) २. खरउ (ख) खरा (ग)

(४४५) १. सहु दोयंतरु बोलहि देव (ग)

(४४६) १. तिनि लीयो उचाइ (ग) २. गालि (क ख) गाल (ग) ३. महु
 देह (क) मुदीजं निकालि (ग)

(४४७) १. रिसाइ (क)

(४४८) १. पीतरिउ (क) पीतिया (ग)

(४४९) १. वृद्धि पाइ सुउउ होइ भयो (क) वडिउ पाउ घई घहा रहिउ
 (ख) बाधा पाउ धरति महि टुया (ग) २. करइ (ख) ३. कोइ (ग)

प्रद्युम्न का सिंह रूप धारण करना

राडि पाउ भुइ उभउ रहइ, तहि^१ क्षण सिंह रूप बहु^३ भयउ ।
 तहि^४ हलु आवधु लयो सम्हालि, फुणि ते दोउ भीरे पचारि ॥४५०॥
 जूझइ भिरइ अखारउ करइ, दोउ सवल मलाव^१क लरइ ।
 सिध रुपि उठियोउ संभालि, गहि गोडउ घालियउ अखालि ॥४५१॥
 छपनकोटि नारायण जहा, पडियो जाइ ति हलहर तहा ।
 देखि अचंभ्यो सगलो लोगु, भएइ कान्ह यह वडउ विजोगु ॥४५२॥

चतुर्थ सर्ग

रुकमिणि के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा
 अपने वचन का दर्शन

इहर वात तो इहइ रही, बाहुरि कथा रुपिणी पह गइ ।
 पूछिउ तव नंदन आपनी, कापह सीख्यउ वल पोरिप घणौ ॥४५३॥
 मेघकूट जो पाठइ ठाउ, जमसंवर तहा निमसै राउ ।
 निसुणी वयण माइ रुपिणी, तिहि^३ ठा विद्या पाइ घणौ ॥४५४॥

(४५०) १. राडि पाउ भौमि ऊभो सोइ (ग) २. तंखिलि (ग) ३. विक्रमइ तो होइ (ग) ४. उठि बलिभट्ट घालिउ संभारि (क) उहि हलु आवधु लियो संभालि (ख) हलु आवधु लिया संभालि (ग) मूलप्रति में—'तहि जुग्नावधु' पाठ है

(४५१) १. मल्लवहु (क) २. जुभिइइ (क) तडहि (ख) ३. अडालि (क) नोट—ग प्रति में यह छन्द नहीं है । ख प्रति में तीसरा चौथा चरण नहीं है ।

(४५२) १. पडिउ (क ख) पड्या (ग)

(४५३) १. घइसी (ग) हरनहर वात उही इह रही (ख) २. आपइइ कए पउरिपु घणौ (ग)

(४५४) १. पट्टइ (क) पावा (ग) पावइ (ख) २. सुएहु वात माता रुकमिणि (ग) ३. यह (क) वा (ख) इइ (ग)

निसुणि^१ वयण हु आखउ तोहि, नानारिपि ले आयो मोहि ।
 उदधिमाल मइ यह जोडि, फुणि प्रदवन कहै कर^२ जोडी ॥४५५॥
 विहसि माइ तव रुपिणि कहइ, कहा सुभइया नारद अहइ ।
 निसुणि पूत यह आखउ तोहि, उदधिमाल दिखलावहि मोहि ४५६
 प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणि को यादवों की सभा
 में ले जाने की स्वीकृति लेना
 तउ मयरद्वउ कहइ सभाइ, बोल एकु ही मांगो माइ ।
 वाह पकरि तोहि सभा वजारि, लेजइहो जादीनी पचारि ॥४५७॥
 यादवों के बल पौरुष वा रुक्मिणि द्वारा वर्णन
 भणइ माइ सुणि साहस धीर, ए जादी है वलीए वीर ।
 हरि हर कान्हु खरे सपरान, इन्ह आगइ किम पावहु जाण ॥४५८॥
 पंचति पंडव पंचति जणा, अनुल बल कौंतीनन्दना ।
 अर्जुन भीमु निकुल सहदेउ, इनके पवरिप नाही छेव ॥४५९॥
 छान कोटि जादी बलिवांड, जिनके भय कांपइ नवखंड ।
 एसे^३ खत्री वसइ वहुत, किम्व तू जिणइ अकेलो पूत ॥४६०॥

(४५५) १. लई अनोडि (ग) लईय घहोडि (क ख) २. ह्यहोडि (ग)

(४५७) १. दोज (ग)

(४५८) १. भानउ पलो हउ (ग) २. महयलि (क) कहियहि (ख)

(४५९) १. पांचति (ख) अवर (ग) २. पंचउ (ग) ३. जाण (क ख)

४. अवर मुल्ल करव नन्दना (क) मल्ल कुंती रादण (ख) बल कुंतीनन्दन (ग)

(४६०) १. तोनि (ख) अहमंड (क) २. जिसे (ग) ३. नियत (ग)

४. जाइसि एकलउ (क)

वस्तुबंध—ताम कोण्यो भणइ मयरुद्धु
 रण तोडइ भड अतुल बल, लउ मान जादम असेसह ।
 विहडाउ रण पांडवह, जिणऊ रण सव्वह नरेसह ॥
 नारायण हलहर जिणवि, सयलह करउ संघार ।
 पर कुरवि जिणवरु मुहवि, सामिउ नेमि कुमारु ॥४६१॥

चौपई

मयणु चरितु निसुणहु संवु कवणु, नारायणु जुभइ परदवणु ।
 वाप पूत दोउ रण भिरे, देखइ अमर विमाणाह चढे ॥४६२॥

रुक्मिणि की वांह पकड़ कर यादवों की समा में
 ले जाकर उसे छुड़ाने के लिये ललकारना

कोपारुढ मयण जव भयउ, वाह पकरि मांता लीए जाइउ ।
 सभा नारायणु वइठउ जहा, रुपिणि सरिस सपतउ तहा ॥४६३॥
 देखि सभा बोलइ परदवणु, तुम सो बलियो खत्री कवणु ।
 हउ रुपिणि ले चलयो दिखाइ, जाहि बलु होइ सु लेहु छुडाइ ४६४

(४६१) १. मयण रण (क) मयरुद्ध (ख) मूलपाठ ममभरि २. रण तोडइ भड अतुल बल (क ख) पाइ सयरुद्ध रण तोडउ भउ ३. जवह (ख) ४. जिणमु (क) जिणऊ रण सव्वह नरेसह (ख) मूल पाठ जिहभु सवरि सहकरि नरेसह ५. एहुवि जिणवर मुचिहरि (ख) नोट— वस्तुबंध द्वाब ग प्रति में नहीं है।

(४६२) १. सह कोणु (ग) २. दोनों (ग)

(४६३) १. कोपादवि (ग) २. रुपिणि (ग)

(४६४) १. महि (क ल ग) २. कउणु (ग) ३. जेहा (ग) ४. भाइ (क ल)

समा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित

करके युद्ध के लिये ललकारना

तू नारायण मथुराराज, तड कंस भान्यो भरिवाउ ।
 जरासंघ तड वधो पचारि, मोपह रुपिणि आइ उवारि ॥४६५॥
 दसह दिसा निसुणो वमुदेव, जूभत तरणउ तुम जाणउ भेउ ।
 जादो मिलहु तुम छपन कोडि, वलि करि रुपिणि लेहु अजोडि ॥४६६॥
 वलिभद्र तू वलियो वर वीर, रण संग्राम आहि तू धीर ।
 हल सोहहि तोपह हथियारु. मो पह रुपिणि आइ उवारु ॥४६७॥
 तूही अर्जुन खंडव डहरु, तो पवरिय जाणु सवु कवरु ।
 तै वयराड छिडाइ गाइ, अव तू रुपिणि लेइ मिलाइ ॥४६८॥
 भीम गजा सोहहि कर तोहि, पवरिय आज दिखावइ मोहि ।
 खारि पाच तू भोजन खाइ, अव संग्राम भिडइ किन आइ ॥४६९॥
 निसुणि वयण सहघो जोइसी, करि जोइस काही हो वसी ।
 विहसि वातपूछइ परदवरु, तुमहि सरिस जिणइ रण कवरु ॥४७०॥

(४६५) १. हउ (ग) २. कंसह (क) कसाह (ख) ३. बधिय (क) जोतिया (ग) बाधियउ (ख, ४. लोहे (ख) लेइ (ग)

(४६६) १. होदह (ग) २. दिसार (क ख ग) ३. भूम (क) जूभण (ग) ४ वलिण (ग) ५. बहोडि (क ख)

(४६७) १. वलिभउ तह गुहमा गंभीर (ग) २. साहस धीर (ग) ३. धीर (ख) ४. हलु सोहितो (ग) ५. बलकरि (ग) ६. आज (ग)

(४६८) १. खडव वण दहणु (क) खंडा वण दहतु (ग) घणुक घरणु (ख) २. छुडाइ (क) किन अणाइ (ग)

(४६९) १. गदा (क) २. अवहि आइ जुज्झहि रण माहि (ग)

(४७०) १. करि जोइसकइ सउ होइसी (क ख) गिणज्योइसु कइ साहउ इसी (ग) २. बलदलि माहे रणि जोतइ कवरु (ग) नोट—चौथा चरण ख प्रति में नहीं है ।

निकुल कुवर तउ पवरिपुसार, तोपह कोत आहि हथियार ।
 अब हइ भयो मरण को ठाउ, मोपह रुपिणि आणि छिडाइ ॥४७१॥
 तुहि नारायण हनहर भए, छल करि फुणि कुंडलपुर गये ।
 तवहि वात जाणी तुम्ही तणी, चीरी हरी आणी रुकिमिणी ॥४७२॥
 मयरवउ जपइ तिस ठाइ, अब किन आइ भिरहु संग्राम ।
 वोल एकुह वोलो भलो, तुम सब खत्री हउ एकीलो ॥४७३॥

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध
 के प्रस्ताव को स्वीकार करना

वस्तु—निसुणि कोप्यो तहा महमहरण ।
 जाणै वैशुंदर धृत डल्यउ, जाणिक सिंह वन मा गाजिउ ।
 रां सायर थल हलिउ, सयन सवनि जादवन्हि सजिउ ॥
 भीउ गजा लइ तहि चलिउ, अर्जुन लिउ कोवंड ।
 नकुल कोपि फर कोत लउ, तउ हल्लिउ वरम्हंडु ॥४७४॥
 चौपई

साजहु साजहु भयउ कहलाउ, भयउ सनद्धउ जादमराउ ।

हैवर साजहु गैवर गुरहु, साजहुइ सुहउ आजु रण भिडहु ॥४७५॥

(४७१) १. सोट्ट इत्तु तोहि कुंता हथियार (ग) नोट—ल प्रति में चौपा
 घरण नहीं है

(४७२) १. दति पणि (क) २. जाड (क)

(४७४) १. राउ (ग) २. पिउ (ग) ३. जणु (ल) जाणु (ग) ४. गहलि
 (ल) ५. गुर सायर तवउ घलो (क) रां सायर महि उछतिपउ (ल) जाणउ सेवतु
 मेह उछतिउ ६. सयन जाम (क) सयन जवहि (ल) पुंडु सेतु नीतानु विजउ
 (ग) ७. हनहरि हनु घावडतिउ (ल) ८. पाउउ (क) हात्या (ग) मूलप्रति में—
 घरहिउ पाठ है ।

(४७५) १. घावट (ल)

आयमु भयउ मुहर रण चलड, ठा टा के विसखाती करड ।

केउ कर साजइ करवालु, केउ माजि लेहु हयियार ॥४७६॥

युद्ध की तैयारी का वर्णन

केउ माते गैवर गुडहि, केउ सुहर माजि रण चढइ ।

केउ तुरीन पाखर घालि, केउ आवध लेइ मभानि ॥४७७॥

केउ टाटण जूभग लेइ, केउ माथे टोपा देइ ।

केउ पहरइ आगिमनाह, एसे होइ चाले नर नाह ॥४७८॥

कोउ कोंनु नेइ करे माजि, कोउ अमिवर नीकलइ माजि ।

कोउ मेल मम्हाइ फगै, कोउ करिहा माजै छुरी ॥४७९॥

केउ भगइ वात समुभाइ, इन मुहडनि हड लागी वाइ ।

जिहि है रुपिणि हरि पराग, गो नर नही तिहारै मान ॥४८०॥

एक टाइ मय यत्री मिनहु, घटाटोप होइ जूभरण चनहु ।

योस्त्री सुधि जिन करहु उपाउ, अथ यो भयउ मरण कउ चाउ ॥४८१॥

(४७६) १. निगाणैह (ग) २. टाटर टोपजि गिरि परि घाषा (क) टाटे होइ उमारवनी करारु (ग) ३. वेइ कमरि बभरि (ग) कोइ (ग)

(४७७) १. जाल रवि (ग) रथ (ग) २. संवारी (ग) ३. घातुष (ग)

(४७८) १. जोगल (ग) २. टोपी (ग) ३. घंग (क ग) ४. रण माहि (क ग ग)

(४७९) १. ररा (ग) २. मोकनर (क) मोकनरि (ग) लेहि ररा ३. लरी (क) लरी (ग) ४. हाविहि (ग)

(४८०) मोर—प्रथम द्वितीय करण ग प्रनि से लरी है ।

(४८१) १. घातु रलि (ग) २. जूभग (ग) लरी मूर (ग) मून वाउ लकी ३. उरिष (क) कपु (ग) ४. इष रिपो (क) इह इड (ग) ५. बउ टाउ (क) बउ टाउ (क) का टाउ (ग)

चाउरंगु बलु मिलिउ तुरंतु, हय गय रह जंपाण संजुतु ।
 सिगिरि छात दीसहि अपाण, अंतरीख हुइ चले विमाण ॥४८२॥
 असी सयन चली अपमाण, वाजण लागे दरड निसाण ।
 घोडा खुररड उछली खेह, जाणी ताजे भादम्ब के मेह ॥४८३॥
 सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना
 वाइ दिसा करंकड कागु, वाट काटिगो कालौ नागु ।
 महुवरि दाहिणी अरु पडिहारु, दक्षण दिस फेकरड सियालु ॥४८४॥
 वण मा दीसइ जीव असंखि, धुजा पडइ तिन वंसर पंखि ।
 सारथि भणइ कहै सतिभाउ, वूरै सगुन न दीजै पाउ ॥४८५॥
 तउ केसव बोलइ तिस ठाइ, सुगमु सुगणइ विवाहण जाइ ।
 सा सारथी समुभावं कोइ, जो विहि लिख्यो सु मेटइ कोइ ॥४८६॥
 चालै सुहड न मानहि मवनु, देखि सयनु अकुलाणे मयणु ।
 माता रुपिणि घालि विमाण, पाछइ आपण रचइ भुपाण ॥४८७॥

(४८२) १. बलु (क ग) २. संपत्तु (ग) ३. पाइक मिले बहूत (ग) ४. सिगिरि छात्र (क ख) सिगण छात्र नहीं परवाणु (ग) ५. वाजइ गाअइ गुहिर निसाण (क) ६. चडा (ग)

(४८३) १. गहिर (ख) गुहिर (ग) २. घोरा खुरड (क) घोडा लइ (ख) घोडा रज खुर (ग) ३. मूल पाठ छोडा ४. गरजइ (क) गाजे (ख ग)

(४८४) १. अरु पडिहार (क ख ग) महिला सोही अरु प्रतिहार कूवइ वसिण दिसा सियालु (ग) मूलपाठ अंतु परिहार

(४८५) १. इन सकुणिहि किउ दीजै पाउ (ग)

(४८६) १. सतिभाउ (ग) नोट—दूसरा तीसरा चरण ग प्रति में नहीं है ।

(४८७) १. रचइ पराण (क) रचइ विमाण (ख) मूलप्रति में 'चइ' पाठ है ग-तवहि मयणु वाहडि वृधि भाणि, माता रुपिणि चडो विमाणि ।

चडि करि रथि बोलइ महमहण, चालठु सुहड न मानठु सबणु ॥

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

तवइ मयण मन^१ मा वधिकरी, सुभिरि विद्या समरी करी ।

जइसउ तह वलु पर देखीयउ, इसउ^३ सयन आपणउ कौयउ ॥४८८॥

युद्ध वर्णन

दाउ दल सयउ^१ मह भए, सुहडनु साजि धनुष कर लए ।

इनउ^३ साजि लए करवाल, जाणिक जीभ^४ पसारी काल ॥४८९॥

मयगल सिउ मंगल रण भिरड, हैवर स्यो हैवर आ भिरड ।

रावत पाडक भिरे पचारि, पडइ उठै^३ जिमवर की सारि ॥४९०॥

केउ हाकड केउ लरड, केउ मार मार प्रभणइ ।

केउ भीरहि स्मरि रण आजि, केउ कायर निकलइ भाजि ॥४९१॥

केउ वीर भिडइ दूवाह, केउ हाक देड रण माह ।

केउ करइ धनप टंकारु, केउ असिवर करड संघारु ॥४९२॥

(४८८) १. बाहडि (ग) २. धरो (ख) ३. सेना करी (क) सयन कारणी (ल) विरधी करी (ग) ४. तसउ (क) तइ सउ (ख) जे ता निनि परदल देखिया, ते ता सेनु आपणा कौया (ग)

(४८९) १. साम्हे उभे (क) सनमुख जब (ख) वीर बराबर भये (ग) २. धणहर (क) ३. किनही (क) किनहू (ख) केइ (ग) ४. जीभ (क ख ग)

(४९०) १. आ भिरहि (क) २. घालुडइ (क) फिरनडे (ग) ३. सहहि प्रतिमार (ग)

(४९१) ग—केइ हाथि कहिके पहणह, केइ मारते कहि इम भणहि ।
केइ भिरहि संवरि रणि गाजि, केइ कायर नासहि भाजि ॥

१. मृतपाठ रणजि

(४९२) १. घूब का ट्टाउ (ग) २. पहार (क ख) के असवार घालहि घाउ (ग)

देखि स्मरि बोलइ हरिराउ, अर्जुन भीष्मु तिहारी ठाउ ।
 सहिद्यो निकुल पयंपहि तोहि, पवरिपु आजु दिखावहि मोहि ॥४६३॥
 फुगि पचारि बोलइ हरिराउ, दसौ दिसा निसुणी वसुदेउ ।
 वलिभद्र कुवर ठाउ तुमि तणउ, दिखलावहु पवरिश आपणउ ॥४६४॥
 कोप्यो भीमसेणि तुरी चढीइ, हाकि गजा ले रणमहि भिडंइ ।
 गैयर सरीसो करइ प्रहार, भाजहु खत्री नही उवार ॥४६५॥
 कोपारुढ पथ तव भयउ, चाउ चढाइ हाथ करि लीयउ ।
 चउरंग वलु भिडउ पचारि, को रण पंथ न सकइ सहारि ॥४६६॥
 सहद्यो हाथ लेइ करिवालु, निकुल कौत ले करइ प्रहार ।
 हलहर जुभ न पूजइ कोइ, हल आवध लइ पहरइ सोइ ॥४६७॥
 जादव भिरइ सुहर वर वीर, रण सग्राम ति साहस धीर ।
 दसर दिसा होइ वसुदेव भिडे, बहुतइ मुहर जूभि रण पडे ॥४६८॥
 प्रद्युम्न द्वारा विद्या बल से सेना को धराशायी करना
 तव मयरद्ध कोप मन धरइ, माया मइ जूधु बहु करइ ।
 मोहे सुहड़ सयल रण पडे, देखइ सुहड़ विमाराणा चढे ॥४६९॥

(४६३) १. सेवु (ग)

(४६५) १. भीम तवहि तुल घडघा (ग) २. हाथि (क ग) मूलप्रति में 'सए सो भीडह' पाठ है ३. जूभ भीम देइ बहुती मार (ग)

(४६६) १. कोविष्ट पत्य (ग) २. पत्यु (ख) ३. पद्यह (ख) पत्य (ग)
 ४. सहइ रणि मार (ग)

(४६७) १. का (ग) मूलप्रति में 'गल' पाठ है ।

(४६८) १. सग्रामहि (ग) २. आहि रणधीर (क) ३. जे रण संगमि आहि
 रणधीर (ख) ४. मायामयो जुभ रण पडे (ख)

(४६९) १. मइमत्तो तव जूभ कराइ (ग) २. मोहणि विद्या दोई समदायि
 (ग) ३. भमर (क ख ग)

ठा^१ ठा रहिवर हयवर पडे, तूटे छत्रजि रयणनि जरे ।

ठा^३ठा मैगल पडे अनंत, जे सग्राम आहि मयमंत ॥५००॥

सेना जूझि परी रण जाम, विलख वदन भो केसव ताम ।

हाहाकारु करै महमहगु, वनियो वीरु आहि यह कवगु ॥५०१॥

रण क्षेत्र में पडी हुई सेना की दशा

वस्तुवध—पडे जादा व देखि वर वीर ।

अरु जे पंडौ अतुलवल, जिन्हहि हाक सुर साथ कंपइ ।

जिन चलंत महि थर हरइ, सबलधार नहु कोवि जित्तइ ॥

ते सब क्षत्री इहि जिणे, यह अवरिउ महंतु ।

काल रूप यह अवतरिउ, जादम्बु कुलह खरंतु ॥५०२॥

चोपद

फिरि फिरि संना देखइ राउ, खत्री परे न सूझइ ठाउ ।

मोती रयण माल जे जरे, दीसइ छत्र तूरी रण पडे ॥५०३॥

हय गय रहिवर पडे अनंत, ठाइ ठाइ मयगल मयमंतु ।

ठाठा रहिरु वहहि असराल, ठाइ ठाइ किलकइ वेताल ॥५०४॥

(५००) १. ठाइ ठाइ हिवइ आयु पडइ (ग) २. सिर (ग) ३. पाइक (ग)

४. सुर (ग)

(५०१) १. कारु(क ग) मूलपाठ कालु २. रणमहि वीरु अपि परदवणु (ग)

(५०२) १. धनुजे (ख) २. अरजुन (ग) २. जिन्ह हाक ते सुरगुह डोलइ (ग) ३ जिन्ह हाक इव मेदिनी धसइ (ग) ४. समर (ख) चलइ मेरु जिन्ह हाकु भोले (ग) ५. रण (ग) ६. इहु सुरा मयमंतु (ग) ७. सब संघरइ (ख)

(५०३) १. रल (ग) २. तूरि (ख) तुही घर (ग) नोट—५०३ से ६१३ तक के छन्द 'क' प्रति में नहीं है ।

(५०४) १. मयगल (ग) २. वहुत (ग) ३. रहिरपडे (ग) ४. किलकिलहि (ख)

गीधीणी स्याउ करइ पुकार, जनु जमराय जणावहि सार ।

वेगि चलहु सापडी रसोइ, असई आइ जिम तिपत होइ ॥५०५॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

तउ महमहनु कोपि रथ चढइ, जनु गिरिवर पव्वउ खर हडइ ।

हालइ महियलु सलकिउ सेस, जम सग्राम चलिउ हरि केसु ॥५०६॥

युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शकुन होना

जब रण पेलिउ रथु आपनउ, तव फरकिउ लोयणु दाहिणउ ।

अरु दाहिणइ अंगु तसु करइ, सारथि निसुणिकहा सुभु करइ ॥५०७॥

सारथि एवं श्रीकृष्ण में वार्तालाप

रण संग्रामु सयनु सवु जिणी, अरु इहि आइ हडी रुक्मिणी ।

तउ न उपजइ कोप सरीर, कारण कहा कहइ रणधीर ॥५०८॥

तंखण सारथि लागो कहण, कवण अचंभउ यह महमहण ।

भाजहि सुहड हाक तुह तणी, अरु तो हाथ चढइ रुक्मिणी ॥५०९॥

(५०५) १. बाघिणि (ख) गीदउ (ग) २. स्याल (ग) ३. ते (ग) ४. संपइइ (ख) ५. स्याहु आय जित तिःते होइ (ख) पंती पमुयन रहइन कोइ (ग)

(५०६) १. कोपि तुडि (ख) कोपि रणि (ग) २. खडहडइ (ख) पवंत घर हरघो (ग) ३. सकिउ (ख) बोलं (ग) ४. चढिउ (ख) घत सुरणि जावमह नरेसु (ग)

(५०७) बीटी समय पडी घर ताम कोपारुइ वितनु भउ ताम ।
तलणि हायसइ करषाउ, धारियण बल भानउ भडिवाउ ॥
यह छन्द मूलप्रति में नहीं है ।

(५०९) १. सुहड (ग) ३. सोमरा चरण 'ल' प्रति में नहीं है मूलप्रति में ।
बुवर'वाठ है ।

तउ जंपइ केसव वर वीर, निमुणी वयण तू खत्री धीर ।
तइ महु सयन सयलु संघरघउ, अर भामिनी रुपिणि ले चलयउ ॥५१०॥

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

पुनवंतु तुहु खत्री कोइ, तुहु उपरि मुह कोपु न होइ ।
जीवदानु मै दीनउ तोहि, वाहुड रुपिणि आपहि मोहि ॥५११॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्णजी की वीरता का उपहास करना

तव हसि जंपइ पत्री मयणु, अमी वात कहै रणु कवणु ।
तोहि देखत मै रुपिणि हडी, तां देवत सब सयना परी ॥५१२॥

जिहि तू रण मा जिगिउ विगोइ, तिहि स्यो अवहि साथि कयो होइ ।
नाज न उठइ तुमइ हरिदेउ, बहुडि भामिनी मांगइ केम्ब ॥५१३॥

मै तू सूणिउ जूभ आगलउ, अव मो दीठउ पीरप भलउ ।
कद्यु न होइ तिहारे कहे, सयन पडी तुम हारिउ हिए ॥५१४॥

तउ मयरद हसि करि कलउ, तउ मवु कुटम घरणि पडि सखउ ।
तेरउ मनुइ परंविउ आजु, तुहि फुणि नाही रुपिणि काजु ॥५१५॥

(५१०) १. ताम (ग) २. सह मयनु सयेनु संघरिउ (ख) मोहि (ग)

३. तिया (ग)

(५११) १. इनु (ग) २. जाहि (ग)

(५१२) १. बोलइ (ग) २. राठी (ग)

(५१३) १. मारपा इनु सयाद विगोइ (ग) २. मारधि (ग) सानि (ख) जिन

बोइ (ख)

(५१४) १. तेता (ग ख) तीमरा घरण ख प्रति में रहों है । मूलप्रति में भेलउ पाठ है ।

(५१५) १. बिहति फुणि (ख) तवहि वहमि (ग) २. जेता हरइ मनि संसारइ (ग)

छोडि आस तइ परिगह तणी, अरु तइ छोडी सो रुक्मिणी ।
जउ तेरे मन कछु न आहि, पभणइ मयणु जीउ लै जाहि ॥५१६॥
प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का

क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

मण पछितावउ जादमुराउ, मइयासहु वोत्यउ सतिभाउ ।
इहि मोस्यो वोत्यो अगलाइ, अरु मारउ जिन जाइ पलाइ ॥
उपनउ कोप भइ चित काणि, धनुष चढाइयउ सारंगपाणि ॥५१७॥
अर्द्ध चंद्र तहि वाधिउ वाण, अरु याकउ देखियउ पराणु ।
साधिउ धनियउ दीठउ जाम, कोपारूढ मयण भो ताम ॥५१८॥
कुसुमवाण तव वोलिउ वयणु, धनहर छीनि गयउ महमहणु ।
हरि को चाउ तूटिगो जाम, दूजइ धनप संचारिउ ताम ॥५१९॥
फुरिण कंद्रपु सरु दीनउ छोडी, वहइ धनकु गयो गुण तोडि ।
कोपारूढ कोप तव भयउ, तीजउ चाउ हाथ करि लयउ ॥५२०॥

(५१६) तजी (ग) २. जीयडा (ग)

(५१७) १. मनि (ल, ग) २. मइ इहसिउ (ग) मइ सुख (ग) ३. आगलउ (ल) ४. इव (ल) जिन (ग)

(५१८) १. तिनि सध्या वाणु (ग) २. इव इह (ल) इव देखउ इमु तणा निवानु (ग) ३. धणहर (ल, ग) ४. कोपिरुप (ग)

(५१९) मेलिउ (ल ग) २. चाउ (ल) मयणु (ग) ३. छिन्नउ तव (ग)
४. तव हरि चाउ तूटिगो ताम (ग) ५. घटाया (ग) नोट—दूसरा और तीसरा चरण
ए प्रति में नहीं है ।

(५२०) १ तव (ग) २. मुहई (ल) ऊभी धनुष गया सो तोडि (ग) ३.
विष्ट (ल) विष्ट (ग) ४. कटारा (ग)

मैलइ वाण मयण तुजि चडिउ, सोउ वाण तूटि घर परघउ । ५२१ ॥
विस्नु सभालइ धनहर तीनि, खिण मयरद्वउ घालइ छीनि ॥५२१॥

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना ।

हसि हसि बात कहै प्रदवणु, तो^१ सम नाही खत्री कम्बणु ।
कापह सीख्यउ पोरिप ठाउणु, मोसिहु कहइ तोहि गुर कवणु ॥५२२॥
धनुष वाण छीने तुम तणे, तेउ राखि न सके आपणे ।
तो पवरिपु मै दीठउ आजु, इहि पराण तइ भूजिउ राजु ॥५२३॥
फुणि मयरद्वउ जंपइ ताहि, जरासंध क्यो मारिउ कांमु ।
विलख वदन तव केसव भयउ, दूजउ रथ मयायउ ठयउ ॥५२४॥

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न

प्रकार के बाणों से युद्ध करना

तहि आरूढो जादौराउ, कोपारूढु लयउ करि चाउ ।
अग्नि वाणु घायउ प्रजुलतु, चउदस भल बहु तेज करंतु ॥५२५॥

(५२१) १. सोइ घणुप टूटि भुइ पडिउ (ग)

(५२२) १. तउ हसि बात कहइ परदवणु (ख) २. अउरुन (ग) ३. रहति
भाइ पूछइ महमहणु (ग)

(५२३) १. देखे तुहि तणे (ख)

(५२४) १. किम जोतिउ (ख) तइ जोत्या (ग) २. मूल प्रति में 'अयं' पाठ है।

(५२५) १. अग्नि वाणु मैलइ महणु (ख) अग्निवाण 'घाई परजलंत (ग)
२. तिहि की भाच न जाई सहणु (ख)

मयरद्वे^१ दल चले पलाइ, अमिगिंभ^२ लरइ सहएण न जाइ।
 डाभहि^३ हय गय रहिवर घणे, उहटे^४ सयन पजूनहा तणे ॥५२६॥
 कोपाखु भयो तव मयणु, ता रणहाक सहारइ कवणु ।
 पुहपमाल कर घनहर लीयंउ, साधिउ मेघवाण पर ठयउ ॥५२७॥
 मेघनादु घनघोर करंत, जल थल महियल नीर भरंत ।
 पाणी आगि बुभाइ जाम्ब, जादम सयन चली वहि ताम ॥५२८॥
 रहिवर छत्रजि दीसइ भले, नीर प्रवाह सयल वहि चले ।
 हय गय तुरय^३ वहइ असेस, खत्री राणे वहे असेस ॥५२९॥
 तव जंपइ महमहण पचारि, कीयह सुक्रमं को चालि ।
 नारायण मन परचो सदेहु, हुंतो यह वरिसउ मेहु ॥५३०॥
 तव मनह अचंभो भयो, मारुत वाण हाथ करि लयो ।
 जवइ वाण घाइयो भहराइ, मेघमाली घानी विहडाइ ॥५३१॥

(५२६) १. रउछभल (ल) रूपवंत (ग) २. अग्निवाण रण सहएण न जाइ
 (ग) अग्नि भल लल सहएण जाइ (ल) ३. दाभहि (ल) ४. हउरे (ल)

नोट—५२६ का तीसरा चौथा चरण तीनों प्रतियों में नहीं है ।

(५२८) १. मेघवाण (ल ग)

(५२९) १. घणे (ग) २. हुये तंखिणो (ग) ३. रन संवहितउ चले (ग)
 ४. खत्री वहे जे रण आगले (न)

(५३०) १. हरिराउ संभाति (ग) २. की यह सुषम भउम की भारि (ल)
 कउ इहु सुकु कय मंगलवालु (ग) ३. बडा (ग) ३. कहा हु तउ इह वरिसउ मेहु (ल)
 इहु सु कहा ते भामा मेहु

(५३१) १. मारचो (ग) २. जवहि पवन टूटा तिहि टाइ (ग) ३. मेघमाला
 पाले बहुडाइ (ग)

मायामय सन खर हडइ, उरइ छत्र महिमंडल परहि ।
 चउरंग दलु खलिउ पडाइ, हय गय रह को सकइ सहारि ॥५३२॥
 तवइ पजून कोपु मन कियउ, परवत वारण हाथ करि लयउ ।
 मेलीउ वारण धनेसु कर लयउ, रुधि पवणु आडहु हुइ रखउ ॥५३३॥
 कोप्यो द्वारिका तंगो नरेसु, मयणहि पवरिसु देखि असेसु ।
 वज्र प्रहार करइ खण सोइ, पव्वउ फूटि खंड सौ होइ ॥५३४॥
 देवतु धारणु मयण लउ हाथ, नारायण पठउ जम पाथि ।
 तव केसव मन विसमइ होइ, याको चरितु न जाणइ कोइ ॥५३५॥
 अयंसउ जुभु महाहउ होइ, एकइ एकु न जीतइ कोइ ।
 दोउ सुहड खरे वलिवंत, जिन्हि पहार फाटहि वरम्हंड ॥५३६॥
 श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना
 तवइ कोपि जादी मनि कहइ, मेरी हाक कवण रण सहइ ।
 मोस्यो सेत रहै को ठाइ, इहि कुल देवी आहि सहाइ ॥५३७॥

(५३२) १. माया रवि पवन संपरइ (ग) २. छत्र (ग) ३. पसाइ (ग)
 ४. गयवर के सरुउ रहाइ (ग)

(५३३) १. मलि (ग) २. हत (ग) ३. धाणइ (ग)

(५३४) १. फुलि (ग) २. परंत (ग) ३. हुइ (ग)

(५३५) १. देव विभाग (ग)

(५३६) १. मरो महि (ग) २. बोर (ग) बसिवटं (ग) ३. जिगह धानांवा
 मोरहि ब्रह्मंड (ग)

(५३७) मोट—श्रीपा बरल ग मनि में मरो है ।

मइ रण जीतिउ कंभु पचारि जरासंध रण घालि मारि ।
 मै सुर अमुर साथ रण बह्यउ, यह गरहु जु खेत अरि रह्यउ ॥५३८॥
 श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना
 तव तिहि धनहर घालिउ रालि, चन्द्रहंस कर लीयो सभालि ।
 वीजु सपिसु चमकइ करवा लु, जाणौ सु जीभ पसारै काल ॥५३९॥
 जबति खरग हाथ करि लयउ, चंद्र रयणु चाम्बइ कर गहिउ ।
 रथ ते उतरि चले भर जाम, तोनि भुवंत अकुलाने ताम ॥५४०॥
 इंदु चंदु फण वै खल भल्यउ, जाणौ गिरि पर्वतउ टलटल्यउ ।
 मन मा कहइ सुरंगिनि नारि, अवयहु इहइ कइसी मारि ॥५४१॥
 किसन कोपि रण धायउ जाम, रूपिणि मन अवलोइ ताम ।
 दउ पचारै मेरो मरणु, जुभइ कान्हु परइ परदवणु ॥५४२॥
 नारद निसुणि कहु सतिभाउ, अब या भयो मीच को ठाउ ।
 जब जिउ सुहड न भीरइ पचारि, वेगो नारद जाइ निवारि ॥५४३॥

(५३८) १. इह गरुवा जे रण महि रह्यउ (ग)

(५३९) १. तिहि (ग) २. घणहर (ग)

(५४०) १. जब हरिहाथ खडग करि लेइ (ग) तबहि खडगु हाथि करितिये
(ख) २. वामइ (ख ग) ३. भुई (ग) भइ (ख)

(५४१) १. आसण पर हरे (ग) २. भले (ख) ३. अंरमंठ पावन गिरि पर्व
दलई (ग) ४. सुलपिणि (ग)

(५४२) १. विष्णु कोपि रण धरया जबहि (ग) २. इह पवाइइ (ख ग)
३ पउ इवकुं वृभई परदवणु (ग)

(५४३) १. लयु (ग)

रणभूमि में नारद का आगमन

रूपिणि वयण मन सो धरइ, हो तो विमाणह रीप्य उतरइ ।

रण मयरद्ध नारायण जहा, नारदु जाइ सपत्तउ तहा ॥५४४॥

विस्नु मयण रथ दीठउ पाउ, चाहै करण कुवर कहु घाउ ।

नानारिपि पण पहंतो जाइ, वाह पकरि सो धरचो रहाइ ॥५४५॥

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

तव हसि नारद लागे कहण, मोहि वचन निसुणह महमहणु ।

कहउ तोसिउ कहहु बहुतु, यह प्रदवण तिहारो पूतु ॥५४६॥

छठी निसिहिसो हरि लयउ. कालसेवर घर वृद्धिहि भयउ ।

इहि जीत्यो स्यंघरथ पचारि, पुंनवंत यह देव मुरारि ॥५४७॥

सोला लाभ भए इहि जोगु, कणयमाल सिउ भयउ विजोगु ।

कालसंवर जीत्यो तिहि ठाइ, पंद्रह वरिस मिली तुह आइ ॥५४८॥

यह सु मयणु गरवो वरवीर, रण सग्राम जु साहस धीर ।

याह पौरिपको वणइ घणउ, यह सो पूत रूकिमिणीं तणउ ॥५४९॥

(५४४) १. रूपिणि वयणहि तव बाहुइहि, इहं वेगा रथ ते उतरहि (ग)

(५४५) १. नराइणि रथि दीना पाउ (ग) २. लोडइ (ग)

तीसरा घोर चोवा चरण ग प्रति में नहीं है

(५४६) १. क्या क्या हो तुम्हसउ २. तुम्हारा

(५४७) १. तिघरवरउ (ग) २. पुण्यवंत (ग)

(५४८) १. बारह (ग) मूलप्रति में—'सो साल' पाठ है

(५४९) १. रहि (ख) इतु (ग) २. वणइ (ख) वणउ (ग) मूल प्रति में

पणइ पाठ है.।

एतहि मयण पास मुनि जाइ, तिहिंस्यो वात कहइ समुभाइ ।

यह तो आहि पिता तुम तणउ, जिहि पवरिप दीठउ तइ घणउ ॥५५०॥

प्रद्युम्न का श्री कृष्ण के पांच पढ़ना

तउ परदवणु चलिउ तिहि ठाइ, जाइ पडिउ केसव के पाइ ।

तव नारायण हसिउ हीयउ, भयण उठाइ उछंगह लयउ ॥५५१॥

धनु रूपिणी जेनि उर धरीउ, धनि सुरयणि जिणि अवरिउ ।

धनिमु ठाउ विराधी गवउ, जिहि धनु आजु जु मेलउ भयउ ॥५५२॥

धनुप वाणु तिहि घाले रालि, बाहुडि कुवर लैयउ अघठालि ।

जिहि घर आइसो नंदनु होइ, तिहिंस्यो वरस लहइ सत्रु कोइ ॥५५३॥

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

तव नानारिपि बोलइ एम, चलहु नयरी मन भावहु खेव ।

कुवर मयण घर करहु पएसु, नयरी उछहु करहु असेसु ॥५५४॥

नारायण मन विसमउ भयउ, परिगहु सयलु जुभिरण गयउ ।

जादम कुटम पडे संग्राम, किम्ब मुहि होइ सोभ पुरि ताम ॥५५५॥

नानारिपि बोलइ वयण, क्षत्री तू मोहिणी सकेलइ मयण ।

क्षत्री सुहड उठइ वरवीर, रण संग्राम मति साहस धीर ॥५५६॥

(५५०) १. नारद मयण पास उठि जाइ, (ग) २. इहु सो पिता तु अघि
बुम्ह तणा (ग) ३. तिसु पुरिप कया वलउ घणा (ग)

(५५१) १. तव नारायण उठइ उछंगि, मयण सावि भया बडु रंग (ग)

(५५२) १. धनि (ख) २. जिनि उदरि घस्यो (ग) ३. धनु मुठाउ जिहि
विरघिहि गयउ (ख ग)

(५५३) १. अके उचाइ (ख) अकवालि (ग) २. अइसउ (ख) ३. तिहि
परमंस लहइ सत्रु कोइ (ख) तिहि घरि सलह करइ सत्रु कोइ (ग)

(५५६) बुह (ख) तू सो (ग) २. संग्रामजि (क ख) संग्रामहि (ग)

मोहिनी विद्या को उठा लेने से
सेना का उठ खड़ा होना

तब मयणधइ छाडयो मोहु, मोहिएण जाइ उतारयो मोहु ।
सैन उठी बहु सादु समुद्रु, जाणौ उपनउ उथल्यउ समुद्रु ॥५५७॥
पांडो उठे सुहड वरवीर, हलहुलु दस दिसा धर धीर ।
छपन कोटि जादव बलिवंड, छत्री सयल उठे परचंड ॥५५८॥
हय गय रहवर अरु जंपाणु, उठे जिमहि सल पडे विमाण ।
सिगिरि छत्र जे पुहमि अपार, उठि सयन कवि कहिउ सधार ॥५५९॥
प्रद्युम्न के आगमन पर आनन्दोत्सव का प्रारम्भ

धवल छन्द

मयण कुवरू जब दीठउ आनंदिउ हरि राउ ।
लइ उछंगि सिर चुमियउ, भयउ निसाणह घाउ ॥
भयउ निसाणा घाउ, राय जादम मन भायउ ।
सफलु जन्म भउ आजु, जेमि कंद्रपु घर आयउ ॥

सहुंकारु भणंत देव, जणु परियण तुठउ ।

मन आनंदिउ राउ, मयण जउ कंद्रप वयठउ ॥५६०॥

(५५७) १. मयणधउ छोडइ फोहु (ख) २. भएउ सट्टु समदु (ख) सेन्या उठि सङ्गे अरु ब्रुडु (ग) ३. जणु गु उद्यतिउ पलम समुद्र (ख) जाण्पा रतु बोधत्या समुद्रु (ग) मूलप्रति में 'समुद्र' पाठ है ।

(५५८) १. पंडव (ख ग)

(५५९) १. जंपण (ख) भंपाण (ग) २. उठे मयणल धवलकि बयाण (ग) ३. विमाण (ख)

(५६०) धवलु (मूल प्रति) दोहा (ख) धवल वंधों के (ग) १. धग्नाया (ग)

भेरि तूर बहु वाजहि, कलयरु भयो अनंदु ।

रूपिणि सरिस मिलावळ, अरुहि मिलिउ तहि पूतु ॥

अवर मिलिउ तहि पूतु, सयल परियण कुलमंडणु ।

अतुर मल्ल वर वीर, सुयण रायणाणंदणु ॥

चले नयर सामुहे, सयल जनु जलहर गाजे ।

कलयलु भयउ वहुतु, ततूर भेरि ताहि वाजे ॥५६१॥

मोती चउक पुराइयउ, ठयउ सिघासणु आणि ।

मयरद्वउ वयसारियउ, पुनवंत घर जाणि ॥

पुनवंत घर जाणि, तहरि कंद्रप वइसारिउ ।

मोती माणिः भरिउ थाल आरति उतारिउ ॥

पाट तिलकु सिर कियउ, सयल परियण जण भायउ ।

ठयो सिघासणु आणित, मोती चउक पुरायउ ॥५६२॥

घर घर तोरण उभे मोती वंदनमाल ।

घर घर गुडी उछली घर घर मंगलचार ॥

घर घर मंगलचार नयर जन सयल वधावउ ।

पुन कलस लड चली नारि नइ कंद्रप घर आयउ ॥

कामिणी गीत करंति, अगर चंदन बहु सोभे ।

मोती वंदनमाल, घर घर तोरण उभे ॥५६३॥

(५६१) अवरु (ख) २. जण (ख),

(५६२) १. घर तोरण उभे नारि

(५६३) १. घलोडि (ख) मूलप्रति में-‘मडी’ पाठ है । (ख)

चीपई

सयना सयल उठी धर जाम, छपनकोडि धर चाले ताम ।
 द्वारिका नयरी करइस सोभ, पुगिण सव् चलिउ अछोहु...॥५६४॥

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

गरुड छन्द

कंद्रपु पठयउ नयर मभारि, मयण किरणि रवि लोपियउ ।
 चडि अवास वररंगिणि नारि, तिन कउ मनु अवि लेखियउ ॥
 धन रूपिणि मन धरिउ रहाइ, नारायण धर अवतरिउ ।
 सुर नर अवर जय जय कार, जिहि आए कलयर भयउ ।
 घर घर तोरण उभे वार, छपन कोडि उछव भयउ ॥५६५॥

(५६४) १. अछोडि (ख ग) प्रति में पाठ है—

रहु सवु करइ सुगई, सुहला जीतपु आज ।
 कहइ इव सकमिणि माइ, परिगहु सवु भाइ वइहु ।
 भानंघा हरिराउ, मइछु जब मयण दीहु ॥५६६॥
 भोरि तूरि बहु वजहि, कोलाहल बहुत्त ।
 रूपिणि सरिसु मिलावडा, भाइ मिल्याति सुपुत्त ।
 भामुकट सिरि मोतोमाता, धरि धरि मंगलचार ।
 जिनसि अइवंरु छत्त, जाणु वरसहि धण गज्जहि ।
 ऊठ्यो जय जय कार भेरि तूरा बहु वज्जहि ॥५७०॥
 धरि धरि तोरण छडे, धरि धरि वेद उचारइ ।
 धरि धरि गुडी उछली, धरि धरि भानंघ अवार ।
 धरि नयरि धरि धरिहि बधाया, करहि भारतउ याति ।
 भाहु बंभण सहि आपा, हसि हसि पूछइ बात ।
 बहुत परमत तिनि मूलं, सिपासछु ताणीया ।
 घरु धरि तोरण ऊभे ॥५७१॥
 शो मोती मालिक भरि पालु, अवरु निमु तिलकु कराया ।
 सुर तेतीस रहनु बहु, सिहासण वइसाया ॥५७२॥

चीपई

संग्य सवे ऊठी धर जाम, छपन कोडि चले धरि ताम ।

कंद्रपु पइहु नयर मभारि, बाजे सइद अवार ॥५७३॥

(५६५) १. नारि नचवहि (ख) मूलप्रति में चडि पाठ नहीं है २. अभिनेषिउ (ख)

गूजर तेसो भीजी भए, वेलावल संभरि के भले ।
 जिझाहुति कनवजी भले, पुहमि राइ सब निमते गले ॥१३७॥
 संख सबुद मंद लह निहाउ, ठाठा भयउ निसाणा घाउ ।
 भेरि तूर वाजइ असुराल, महुबरि वीण अलावणि ताल ॥१३८॥
 विप्रति वेद चारि उचरइ, घर घर कामिणी मंगलु वरइ ।
 बहु कलियह नयारि उछलिउ, जव मयारडु विवाहण चनिउ ॥१३९॥
 रयणनिजडे छत्र सिर घरइ, कनक दंढ चावर सिर बलइ ।
 दनय मुकट सिर उदर करंत, जाणौ पावय रवि वारा वरंत ॥
 तव बोलइ लकिनयो रिसाइ, सतिनामा आणिह केउ ।
 तीनि नदल जठवरजइ मोहि, तउ सिर केस उतारउ रंदि ।
 केउ उतासिपाय तल नलइ, फुलि परदवरा विवाहणु वरइ ।
 एउइ निजि जयन अनु सुवु, दुहु नारि करयउ सिन उवु ।

(१३३) १. वे लोटां वे नने (ख) कनकोस मोठ वे नने (ग)
 देस कनकोसि निने (घ)

(१३१) १. बागड वेद छि जवाहि (ख) २. जं (ग)

(१३०) १. रन्लहे (ख) २. बरिउ (ग) ३. हिन
 बलो (घ) ४. हरो (घ) ५. शालउ नर रवि सिल गरो (ग)
 बरिउ हरो (घ) ६. घर घरंवर वरौ नने हरी. ७.

(१२९) १. फलई बाल (घ) २. फलैसु मय (ग)

(१२४) १. निने बर हट वनु बर लो (ग) २. हिन
 ३. करयउ सिन उवु (ख) होइ जिनु पुगो लो (ग)

सयल कुटम मनि भयउ उछाहु, कुम्बर मयण कउ भयउ विवाहु । .

दइ भावरि हथलेव कीयउ, पाणिगहणु इम्ब कुवरहि लयउ ॥५८५॥

भयउ विवाहु गयउ घर लोगु, करइ राजु वहु विलसह भोगु ।

देखित सतिभामा गहवरइ, सवतिसालु वहु परिहमु करइ ॥५८६॥

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर

पाटण के राजा के पास दूत भेजना

तउ सतिभामा मंनु आठयउ, दिजु वेग खेयउ पाठयउ ।

रयण सचउ पाटण तिहि ठाइ, रयणचलु तहि निमसइ राउ ॥५८७॥

विज्जु वेग तहि विनवइ सेव, सतिभामा हो पठयो देव ।

रविकीरति सिहु करम सनेहु, धीय सुइ परिभानही देहु ॥५८८॥

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

सयल राय विद्याधर मिलहु, बहुत कलयल सिहु द्वारिका चलहु ।

बहुत नयर मह करइ उछाह, भानकुवर जिम होइ विवाहु ॥५८९॥

(५८५) १. भामरि (ख) भवरि (ग) २. पाणिग्रहण जव कुवरह भया (ग)

(५८६) भयो विवाहु लोग घरि जाइ (ग) २. करहि राज विलसहि वहु भाय (ग) ३. देखन (ग) ४. परजली (ग) ५. कि (ख ग) ६. दुखि परहति भरी (ग)

(५८७) १. मंनु (ख) २. भरठयउ (ख) भरठयो (ग) ३. विज्जु वेगु खयह पाठयउ (ख) विज्जु वेगो जोइण पाठयो (ग) ४. रमण संभु पाटणपुर ठाउ (ख) ५. निवसइ (ख) लगा वंक तिहहि ते आउ (ग) मूलपाठ-विमथइ

(५८८) चाल्यो इतु पवन मनुलाइ. वेगि पहुता लिय महि जाइ ।

यह पाठ प्रथम द्वितीय चरण के स्थान में है तथा मूल प्रति का प्रथम द्वितीय चरण ग प्रति में तृतीय चतुर्थ चरण है ।

(५८९) १. विद्याधर मुग्धि मिलहु सुणेठु, धीय सुयंवर भानकउ देहु

माण्ड वोल कुटमु बहु मिलिउ, खगवइराउ भसाहण चलिउ ।
 द्वारिका नयरी पहुते जाइ, जिहि ठा मंडपु घरयो छवाइ ॥५६०॥
 तोरण रोपे घर घर वार, कनक कलस थापे सीहद्वार ।
 सयल कुटं व मिलि कीयो उपाउ, भानकुवर को भयउ विवाहु ॥५६१॥
 पथंतरि ते राजु कराहि, विविहि पयाल भोग विलसाइ ।
 राज भोग सब मिलइ मयणु, तहि सम पुहमि न दीसइ कवणु ॥५६२॥

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में जेमंधर मुनि को केवल ज्ञान की उत्पत्ति

एतइ अवरु कथंतर भयउ, पूव विदेह जाइ संभयउ ।
 पूंडरीकणी रायरु हइ जहा, जेमंधर मुनि निमसइ जहा ॥५६३॥
 नेम धर्म संजमु जु पहाणु, तहि कहु उपणउ केवलज्ञान ।
 आइत स्वर्ग पसइ जो देव, आयो करण मुनिसर सेव ॥५६४॥
 अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना
 नमस्कार कीयउ तंखीणी, पूजी वात भवंतर तरणी ।
 पूव सहोवरु मुणि गुणवंतु, सो स्वामी कहिठार उपंत ॥५६५॥

(५६०) १. सुपरिषरु मिल्यो (ग) २. सुसाहण (ख) विवाहण (ग) ३. तोरण घरे रचाइ (ग) तृतीय एव चतुर्थ चरण (ख) प्रति में नहीं है ।

(५६१) १. कामिणि गावहि मंगलचारु (ग) २. उद्याउ (ग) ३. दृष्या (ग)

(५६२) ख प्रति में यह चौपाई नहीं है । ग प्रति में निम्न चौपाई है ।

इसे अलंकार राजु कराहि, हउसनाक राखहि मनमाहि ।

राजु भोगु सहि विलसाहि आणु, नाहो कोइ तिन्ह सनमानु ॥६०७॥

(५६३) १. पूव देसि जाइ सो गया (ग) २. जेमंधर (ग)

(५६४) १. तदि क्रिया समान (ग) २. उपजहि (ख) ३. अच्युत स्वर्ग वसइ सो देव (ग) मूलमनि में 'पसइ' पार है ।

(५६५) १. नेमसिरी की जोति जाण (ग) २. मोहि (ग) मुणहि (ख) ३. सो सामी कहि ठाउ उपणु (ख) सो सम्यकवर आहि पहुंत (ग)

संसयहर फुगिं कइइ सभाउ, भरहखेत सो पंचमु ठाउ ॥
 सोरठ-देस वारमइ नयरु, तहि समीपु हइ न दीसइ अवरु ॥५६६॥
 तह स्वामी महमहरण नरेसु, धम्मं नेम्म सो करइ असेमु ।

वहु गुणवंत भज्ज तसु तणी, तासु नाउ कहीए रूपिणी ॥५६७॥
 तहि घर उपणउ खत्री मयणु, पुंनवंत जाणइ सव कम्बणु ।
 तासु के रूप न पूजइ कोइ, करइ राज धरणि मा मोइ ॥५६८॥

देव का नारायण की समा में पहुँचना

निसुणि वयण सुर वइ गो तहा, सभा नारायण वइठो तहा ।
 सुरमणि रयणजडिउ जो हारु, सोविमुत आविउ अविचारु ॥५६९॥

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

फुणि रवि सुर वइ लागउ कहण, निसुणि वयण नरवइ महमहरण ।
 जिहि तू देइ अनूपम हारु, हउ कूखि लेउ अवतारु ॥६००॥

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को द्वार

देने का निश्चय करना

तउ मन विभउ जादउराउ, मनु मा चित करइ मन भाउ ।
 चंद्रकाति मणि दिपइ अपारु, सतिभामा हियह आपहु हारु ॥६०१॥

(५६६) १. सोसाडरु (ग) २. वृवइ राउ (ख) भूवइ तिहि ठाई (ग)
 मूलपाठ-भूवैठाउ ३. द्वारमाइ (ख) ४. मूलपाठ देसु ५. पूजइ (ग)

(५६७) १. तउ महमहण राउ नरेसु (ग) २. नारि (ग)

(५६८) १. विलतहि महि सोइ (ग)

(५६९) १. देइ नारायणु कहै विचार (ग) प्रथम तथा द्वितीय धरण के स्थान में निम्न पाठ है-परदवणु दीट्टा वडट्टा पासि, पूरव नेह चितु भरया उल्हासि (ग)

(६००) १. जिमु तिय के वइ मलि घालिहि हारु (ग)

(६०१) १. विसमा (ग) २. परि भाउ (ग)

प्रद्युम्न द्वारा रूक्मिणि को सूचित करना

तवइ मयण मन चमक्यउ भयउ, पवण वेगि रूपिणि पह गयउ ।
 माता वयण सूझइ तू मोहि, एक अनूपम आफहु तोहि ॥६०२॥
 पूव सहोवरु जो मोहितणउ, सो सनेह बहु करतउ कनउ ।
 अब मो देउ भया सुरसारु, रयणजडित तिण आप्यो हार ॥६०३॥
 अब वह अहारसु पहरै सोइ, तहि घर पूत आइसो होइ ।
 माता फुडउ पयामहि मोहि, कहहु तहा का अफामु तोहि ॥६०४॥
 तव रूपिणि बोलै मुह चाहि, तू मो एकु सहस वरि आहि ।
 बहुत पूत मो नाही काज, तू ही एकु मही भूजै राज ॥६०५॥

जामवंती के गले में हार पहिनाना

फुणि वाहुडी बोलै रूपिणी, जंववती जु वहिण महु तणी ।
 निसुणि पूत तोहि कही विचारु, इनी कउ जाइ दिवावइ हारु ॥६०६॥

(६०२) १. तांह (ग) २. अचरिज (ग)

(६०३) १. करहि हम धणहु (ग) बहु करतो घणउ (ख) २. इव सो देव भया मुनिसारु (ग) ३. आपउ (ग)

(६०४) १. एहु हारु जो पहरहि कोइ (ग) २. तिहि बइ (ग) ३. कहुन बोलउ मोहि कहाहि, तहारु हउ बयावाडे तोहि (ग)

(६०५) १. वडि (ग) २. मोहि जाणे काज (ग) ३. मोहि (ग) ४. भूपति राजु (ख)

(६०६) १. तुम्ह (ग) २. उतकउ (ग)

जामवती का श्रीकृष्ण के पास जाना

आवहि भयणु मन कहइ विचारु, जंभवती कहु लेहि हकारि ।
 काममूंदरी पहरइ सोइ, बोल रूप सतिभामा होइ ॥६०७॥
 हाइ घोइ पहरे आभरण, कण कंकण सोहइ ते रमण ।
 तेहिठा वडठे कान्हु मुरारि, तथा गइ जामवती नारि ॥६०८॥
 तउ मनविहसिउ तव मन चाहि, तथा जाणइ सतिभामा आहि ।
 बाहुडि कन्हु न कीयउ विचारु, तिहि वछयलि घालिउ हारु ॥६०९॥
 घालि हारु आलिगनु कियउ, तिहि उपदेस आहि संभयउ ।
 कुरिण शिय रूपु दिखालि जाम, मन भिभिउ नारायण ताम ॥६१०॥
 वस्तुबंध—
 ताम जंपइ एम महमहरण ।
 मन भिभिउ विसमउ करइ, जड यउ चरित सतिभामा जाणइ ।
 वैरुप करि मोहरणइ जा संवइ आणइ.....॥
 जो विहिणा सइ चितयऊ, सो को भेटणहारु ।
 पुनवंत जंपइ तुव, करइ राज अनिवार ॥६११॥

(६०७) १. तुम्हि (ग) २. बोल रूप (ल) बोले रूप (ग)

(६०८) १. ते रमण (ल) ते रयण (ग) मूलपाठ ताण्योरण २. अहिठा (ल ग)

(६०९) १. विगतइ केतध २. इहु (ग) ३. ताहु गलइ हनि घाल्यो हार (ग)

(६१०) १. करइ (ग) २. टा भाइ देउ संचरइ (ग) उरि देइ (ल)

ग— काम मूंदरी घटी उतारि; देखइ राउ जम्भवती नारी ॥

(तीसरे चोपे चरण के स्थान पर है)

(६११) ग प्रति में निम्न पाठ है—

ताम जंपइ जंपइ एम महमहरणु मन विभिउ विसमउ भयो ।

एहु रूप कहि मोहनी, मणिए कुवरि माइयो विनालि ।

चरितु सतभामा जाणो एह बाग बटु की बवणु हरिराजा विनि चितयइ ।

जो विहिए जिमु चितयउ सो विउ मोहो जाइ ।

आहि जंभवती विनतनु करहि राज घटु भाइ ॥

जव जंवइ पूत अवतरिउ, संवकुम्वारु नाउ तसु धरचउ ।
वहु गुणवंत रूप कउ निलउ, ससिहर कान्ति जोति आगलउ ॥६१२॥

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

एतह पढम सग्गि जो देउ, सुर नर करइ तास की-सेव ।
सो तह हूँ तउ आउ खउ चयउ, सतभामा घर नंदण भयउ ॥६१३॥

लक्षणवंतु सयल गुणवंत, अति सरूप सो सीलम्बंत ।
नाम कुवर मुभानु तहा चयउ, सतिभामा घर रांदण भयउ ॥६१४॥

दोनु कुंवर खरे सुपियार, एकहि दिवस लियउ अवतार ।
दोउ विरधि गए ससिभाइ, दोइ पढे गुणौ इक ठाइ ॥६१५॥

शंभुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

एके दिवस तिनि जूवा ठयो, कोडि सुवंद दाउ तिन ठयउ ।
संव कुवर जीणुउ तहि ठाइ, हारि सुभानुकुवरु धरि जाइ ॥६१६॥

दूत क्रीडा का प्रारम्भ

तव सतिभामा परिहसु करइ, मन मा भंत्र चित्ति सो करइ ।
करह खेल कुकडहि वहोडी, जा हारे सा देइ दुइ कोडि ॥६१७॥

(६१२) १. जंघती ए पूत अवतरणो (ग) २. किमु मिले (ग) ३. मूलन
तिमु वडि मुलइ (ग)

(६१३) १. इहु पटमनि सदेह सो घेर, एहुता वरुं तंगोइ देव (ग)

(६१४) १. अतिस (ग) २ तसु भया (ग) ३ दुइज धंडु मिउ विरधो गया (ग)

(६१५) १. हयियार (ग)

(६१६) १. हावयो सपनु दाउ निहि विधो (ग)

(६१७) १ गहि (ख) महि (ग) २. मूलननि मे वि पाउ हं । ३. विसापरइ
(ग) ४. कुकडवहोडि (ग) ५. वाहुडि दाउ धरघा तिनि केरि ।

तउ कुकडा देइ मुकलाइ, उपराऊपरु भिरे ते आइ ।

कुवर भान तरणउ गो मोडी, संवकुवर जिरो द्वं कोडि ॥६१८॥

वहुत खेल सो पाछइ कीयउ, तवइ मंत ता ओरइ कियउ ।

दूत हकारि पठायो तहा, बहुरि विजाहर निमसइ तहा ॥६१९॥

गयो दूत नही लाइ वार, विजाहरनी जणाइ सार ।

भणइ दूतु मनि चित्या लेहु, पुत्री एकु भानहि देहु ॥६२०॥

सुभानुकुमार का विवाह

विजाहर मन भयउ उछाहु, दीनि कुवरि भयो तह व्याहु ।

द्वारि न नयरी कलयलु भयो, व्याह मुभानकुवर को भयउ ॥६२१॥

कुवर सुभान विवाहै जाम, तव रूपीणि मन चितइ जाम ।

दूत बुलाइ मंत्र परठयो, रूपुकुवर पास पाठयो ॥६२२॥

(६१८) १. सभा नारायण मुग्धु चाहया मोटि (ग) २. जीता बोइ कोडि (ग)

(६१९) १. संवकुवर जोनि पनु लीया (ल ग)

२. कुवर सुभानुहि आये हारि, तउ बिलखी सतभामा नारि (ल ग)

(६२०) १. विजाहर राइ (ग) २. भणो विपु जिन अनवितु लेहु (ग)

३. देहि (ल ग) मूलप्रति में 'भणइ दूत मन अनुविन लेख पुत्री एकु भानइ लेहि, पाठ है ।

(६२१) १. विजाहर (क) विजाह (ल) २. तिम (क) दीनी (ल ग)

३. उतिगु लोगु सयल आइउ (ग)

(६२२) १. तउ रपणि मनि उठयो पाउ, एउ अणला एपाहु जरिमाउ (ग)

२. तव कियो (क) सठयो (ल) ३. पामहि पाठयउ (क) पासि पाठयो (ल)
कुंइतपुरिहि दूतु पाठयो, जाइ एपचंडु धोनयउ (ग)

रुक्मिणि के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

सो कुंडलपुर गयो तुरंत, रूपचंदस्यो कह्यो निरुत्त ।
स्वामी वात सुणो मो तणी, हउ तुम पह पठयो रूपिणी ॥६२३॥

संवकुम्वार कुवर परदवणु, तिहि पवरिसु जाणइ सबु कवणु ।
जइसे तुम स्यो वाढइ नेहु, दुहु कुमार् कहु वेटी देहु ॥६२४॥

रूपचन्दु वोलइ तिस ठाइ, रूपिणि कहु तू लेइ-मनाइ ।
जादी वंस पूत जो होइ, तिसको वाहुरि धीयको देइ ॥६२५॥

कहइ वात जणवउ समुभाइ, इत्वही कहहि रुकुमिणी जाइ ।
साभाडि तइ जु पवाडउ कियउ, वात कहत नहु दूखित हियउ ॥६२६॥

जिणि परिगहु घालियउ अवाटाइ, सेसपाल तू गई मराइ ।
अजहु वयण कहइ तू एहु, मयणकुवर कहु वेटी देहु ॥६२७॥

(६२३) निरुत्त (क) - नोट - प्रथम और द्वितीय चरण ग प्रति में नहीं है । मूलपाठ तुरंत ।

(६२४) १. उर (क) २. बाणइ (क) ३. देहु: (क) दहु (ग)
कुवरनो (ग) ।

(६२५) १. राइ (क) २. वउ तउ वेटी तेहु (क) स्पउं तू कहइ बुलाइ
३. मूल प्रति में—पूजो सोई पाठ है । ४. तिस कहु धीयन देई कोइ (ग)

(६२६) १. जनसिउ (क) जणणिउ (ख) इहि (ग) २. तू निगुहस्पउ
जाइ (ग) ३. सांभलि (क ख) संभलि करियहुं म्हारा किया (ग)
४. जाटइ (ग)

(६२७) तू गई मराइ (ख) मसपाठ—तू चत्यो मरवाइ २. महि (ग)
३. वहु (ग) मूल

निमुणि वयण खण चाल्यो दूत, द्वारिका नयरि आइ पहत ।

तुम को वचन कहै समभाइ, सो जण कहिउ सरस्वती जाइ ॥६२८॥

नारायण स्यो आयस कहउ, हम तुम माह कमण सुख रहिउ ।

केते अवगुण तुम्हारे लेउ, तुम कहु छोडि डौम कहु देउ ॥६२९॥

निमुणि वात विलखानी वयण, आसू पातु कीए द्वै नयण ।

मानभंग इहि मेरउ कीयउ, वुरो कियउ मुह दूख्यो हीयउ ॥६३०॥

विलख वदनि दीठि रुपिणी, पूछि वात जननी आपणी ।

कवण बोल तू विसमउ धरइ, सो मो वयण वेगि उचरइ ॥६३१॥

मइ छइ पूत मंत्र आठयो, कुंडलपुर जण पाठयो ।

दुष्ट वचन ते कहे बहुत, साले खरे पूए मो पूत ॥६३२॥

(६२८) १. तिहकउ (क) उहकउ (ल) मोख्यउ (ग) २. आइ कहा
रुमिणि के आइ (क) सो ति कहिउ रुमिणी तिहु आइ (ल) सो तिहू कहे
रुमिणि आइ (ग)

(६२९) १. एसो (क) अइसउ (ल) आइसा चयउ (ग) २. हम तुम्ह
आइ सुवइ सा भयउ (ग) ३. कितेक (ग) किते (ल) ४. धारे (ग)
५. डूम (क ल ग)

(६३०) १. सो विलखी वयण (ग) २. करहि दुहु (क) करइ बुइ (ल ग)
३. यहु (क) इति (ल, ग) ४. वुरा धोलु मोरयउ धोलीया (ग)

(६३२) १. इतिउ पूत मंत्र आठयो (क) मइयिउ पूत वयणु आययउ (ल)
मइया पुत्र मंतु इहु ठुयउ (ग) २. छउ जण पाठयो (क, ल) दूत पाठयो (ग)
३. साले खरउ हीयइ मोहि पूतु (क) साले खरे मुहि हीय बहुत्त (ल)
सालहि हिये खरे ते पूत (ग)

मइ जाण्योउ मुहि भायउ अहइ, एसी वात निचू भउ कहइ ।

विपयवासिणि मानइ होइ, एसी वात कहइ न कोइ ॥६३३॥

निसुणि वयण परदवनु रिसाइ, हीणु वयण तह बोलइ माइ ।

रूपचंदु रण जिणहु पचारि, पाण रूप छलि परणउ नारि ॥६३४॥

प्रद्युम्न का कुंडलपुर को प्रस्थान

कंद्रप बुद्धि करी तंखीणी, सुमिरी विद्या बहुरुपिणी ।

संबु कुवर परदमनु भयउ, पवण वेगु कुंडलपुर गयउ ॥६३५॥

दोनों का डोम का वेप धारण कर लेना

दीठउ नयर दुवारे गयउ, डोम रूप दोउ जण भयउ ।

मयण अलावणि करण पठए, सामकुमार मंजीरा लए ॥६३६॥

फिरे वीर चोहठे मभारि, उभे भये जाइ सोहवारि ।

बहु परिवार सिउ दीठउ राउ, तउ कंद्रपु करह ब्रह्माउ ॥६३७॥

(६३३) १. नीच (क) नीच स्पों (ग) २. विष्णु तिघासणि (क)

विष्णुसवासिणि (ल) किम वचन सुणि बोलइ सोइ (ग)

(६३४) १. पवनवेग (ग)

(६३५) १. संबु कुवर परदमणु भयो (क) संब कुवारि कुवर हुए भए (ग)

मूत्र प्रति में 'स्वामो' पाठ है ।

(६३६) १. द्वारि आइए (ग) २. करि पाठए (क, ल) करहि ठुयो (ग)

३. संबु कुवारि (ग)

(६३७) सोह दुवारि (ग) सोह दुवारि (ल क) २. परिवण सिउ

(ल) परिगहस्यउ (ग)

गीत कवित जे आदम तरण, ते कंद्रप गाए सब सुणें ।
 अवर गीत सब चीतइ धरणी, जादम राय की सलहण करइ ॥६३८॥
 जादम तरणउ नाउ जब लयउ, रूपचन्द मन विसमउ भयउ ।
 बहुत गीत की जाणहु सार, कहा हुते आए वंकार ॥६३९॥

रूपचन्द को अपना परिचय बतलाना

द्वारिका नयरी कहिए ठाउ, भुंजइ नरायणु जादमुराउ ।
 पाटमहादे जहा रुक्मिणी, राय सहोवरि जो तुह तरणी ॥६४०॥
 तुहि सलहण बइ करइ बहूत, तिणि राणी पठए दूत ।
 तुमिह उतरु तिहि कहउ जाइ, तिहि सहेट हमि आए राइ ॥६४१॥
 वाले बोलति करहु पम्वाणु, सतु वाचीय परि होइ पवाण ।
 भाख पालि मन घरहु सनेहु, दोउ पुत्री हमि कहु देहु ॥६४२॥

(६३८) १. आपणा (क) २. पाछहि (क) सो चिति नकि (ग) ३. जादम राइ सालाहति करइ (ग)

१. मूलप्रतिमें—आग सणे पाठ है तथा चतुर्थं चरण नहीं है ?

(६३९) १. भणउ (ख) मुणउ (ग) २. मन विसलउ (क) मनि विसमउ (ख ग) मूलप्रति में 'नवि भयउ' पाठ है ३. गाए बहूवार (क) कीया तह सार (ग) ४. कहा ते आए ए वंकार (ग)

(६४०) १. तह (ग) वसहि (ख) भुंजइ ताह नारायण राउ (ग)
 मूलप्रति में—'बुचइ' पाठ है ।

(६४१) १. गुणवत (क) तोहि सरहण करहि बहूत (ग) २. पठए थे दून (क) पठये हम दूत (ख) तिनि नाराइणि या पठुमा दूत (ग)

(६४२) १. प्रमाण (क) परवाणु (ख) परदमणु (ग) २. प्रमाण (क) पर-वाणु (ख) सत्य बयण ते होहि परवाणु (ग) ३. भागिवंत (क) भाजि जामिनि (ग) ४. कन्या (ग)

रूपचन्द का उन दोनों को पकड़ने का आदेश देना -
वस्तुबंध—

निमुणि. कोपिउ खरउ तहिराउ ।

जाणी वैसुंदर घीउ ढलीउ, धुणि सीसु सरवंगु कंपिउ ।

पाणभ^३ बोलत गयउ, एहु बोलते कवगु जंपिउ ॥

लै^४ बाहिर ए निगहहु, सूली रोपहु जाइ ।

जइ जादी वहहि सवल, तोहि छुरावहु आइ ॥६४३॥

चोपई

गीम्व गहे तक करहि पुकार, डोम डोम हुइ रहे अपार ।

हाथ अलावणि सिगा लए, हाट चोहटे सब परिरहे ॥६४४॥

तंखण कुवर भइ पुकार, रूपचंद रा जाणी सार ।

हय गय रह सेती पलणाइ, छण इक माह पहंतउ आइ ॥६४५॥

रूपचंद रा पहतो आइ, सामकुम्बारु परदमणु जहा ।

एक तावरु मय एकहि नाथ, सागालाए अलावणी हाथ ॥६४६॥

(६४३) १. तवहि मजिराउ (ग) २. अति रोस बीए (ग) ३. प्राण जीव (क) पाण जीव (ल) पुणि घोन्यो भ्रम गयो (ग) ४. सेई बाहिरि निगपउ (क) वहि सेहो पट्ट निगहहु (ग) ५. बाह पशडि पन महि घरिउ जंमे पाइ पलाइ (क)

(६४४) १. जीव (क) गायन गाहे करहि पुकार (ल) गीत कवित निनि बाट वारि (ग) २. घर गति जाइ (ग) ३. भरि गए (क ल) भये वृद्धि चोहटे किराइ (ग)

(६४५) १. पुरवि (क) पुरवारि (ल) पुत्र पुत्रे हंवारि (ग) २. राय अलाई मार (क) बहु रोगी सार (ग) ३. रूप पाइक (ग)

(६४६) आइ पहतउ निहा (क) २. संघ कुमर परदमण (क) संघ कुचक परदोष्ट (ग) ३. एक तव नामरि (ग) ४. मय अलावण बोलत हाथि (ग)

देखि डोम मन विभउ राउं, नीघण जाति करउ किम घाउ ।

घणक सधाणि वाण जव हंगे, तहि पह अवर मिले चउगुरे ॥६४७॥

प्रद्युम्न और रूपचन्द के मध्य युद्ध

कोपारुढ मयण तव भयउ, चाउ चडाइ हाथ करि लयउ ।

अग्निवाणु दीणउ मुकराइ, जुभत पत्री चले पंलाइ ॥६४८॥

भागी सयन गयउ भरिवाउ, वाधिउ मामू गले दई पाँउ ।

लइ कन्या सबु दलु पलणाइ, द्वारिका नयरि पहुते आइ ॥६४९॥

रूप रावलइ पहुतो तहा, राउ नरायण वइठो तहा ।

रूपचंदु हरि दीठउ नयण, हमई लाभु कियउ नारायणु ॥६५०॥

रूपचन्द को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

तव हसि मदसूदनु इम कहइ, इह भाणैजु तिहारउ अहइ ।

इहि विद्यावलु पवरिपु घणउ, जिणि जीतिउ पिता आपणउ ॥६५१॥

(६४७) १. विलखो (क) चितइ (ग) विभिउ (ख) २. निरघण (ख ग)

३. किउ (क) को (ग) ४. घणुप घण ले हाथि हिलाइ (ग) ५. ऊपरि
अधिक चउगुरे गिलाइ (ग)

(६४८) १. मुकराइ (क ख ग)

(६४९) १. रूप () मामा (ग)

(६५०) १. रूपचद (क ग) २. इह के बहुतु किया महमहणु (ग)

(६५१) १. यह भाणजा तुहारा अहइ (ग) २. इह सुप्रत, एकमिलि
तरा (ग) नोट—यह छन्द (क) प्रति में नहीं है।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचन्द को छोड़ देना

तव हसि माधव कीयउ पसाउ, वाधिउ छोडिउ मनधरि भाउ ।

मयरद्वे हसि आकउ भरिउ, फुण्णि रुपिणि पह घर ले चलयउ ॥६५२॥

रूपचन्द और रुक्मिणी का मिलन

भेटी जाइ वहिणि आपणी, वहु तक मोहु धरघो रुक्मिणी ।

वहु आदर सीभइ ज्योनार, अमृत भोजन भए अहार ॥६५३॥

भायउ वहिणि भाणिजे भले, भयउ पेमु जइ एकत मिले ।

निसुणि वयण तव भयउ उछाहु, दीनी कन्या भयउ विवाहु ॥६५४॥

प्रद्युम्न एवं शंबुकुमार का विवाह

हरे वंस तव मंडप ठये, बहुत भांति करि तोरण रए ।

छपनकोटि जादम मन रले, दोउ कुवर विवाहण चले ॥६५५॥

(६५२) १. करि अनिचाउ (ग) २. रूपचन्द राउ (ग) ३. मंराधा हसि अंकी भरइ (ग) ४. कइ (ग)

(६५३) १. बहता मोहु करं रुक्मिणी (ग) बहुत सनेहु धरिउ रुक्मिणी (ख) २. कीजहि जीमणवार (क) सानइ जवनार (ख) रचो जउणार (ग)

(६५४) १. भाई वहिण भाणेजे भले (क) मिले (ख) आए वहण भएइ तुम्ह भले (ग) २. भलो तरी जो खोमहमिले (ग) ३. दुयो (ग)

(६५५) १. का (ग ख) २. रोपिया (ग) ३. विवाहण (क ख ग) मूलपाठ 'विमाणा' ग प्रति में निम्न पाठ अधिक है—

रूपचन्द तिव बोतइ धारिण, दोइ कन्या देवउ आणि (ग)

संख भेरि बहु पडह अनंत, महुवरि वेण तूर वाजंत ।
 दे भावरि हथलेवउ भयउ, पाणिगहनु चौहुजण कियउ ॥६५६॥
 घर घर नयरी भयउ उछाहु, दुहु कुवरकउ भयउ विवाहु ।
 सूरिजन जण ते मन मा रलइ, एकइ सतिभामा परजलइ ॥६५७॥
 रूपचन्द को आइस भयउ, समदिनारायण सो घर गयउ ।
 कुंडलपुर सो राज कराइ, वाहुरि कथा द्वारिका जाइ ॥
 एयंतरि मनु धम्मह रलो, जिणु वंदुण कैलासहिचलिउ ॥६५८॥

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा जिन चैत्यालयों की वन्दना करना

वस्तुबंध—

ताम चितइ कुवर परदवणु ।

भउ संसार समुदु परिजयनु, धम्म दिहु चित दिजइ ।

कैलासहि सिर जिणवर भुवण, सुद्ध भाइ पूज्जइ किज्जइ ॥

अतीत अनागत वरत जे दीठे जाइ जिणिणद ।

जे निपाए जिणवर भुवण, घनु घनु भरहं नरिद ॥६५९॥

(६५६) १. मपुरी सोल ताल वाजंत (क) २. बोया (ग) ३. पाणपहण
 करि बुइ परणोया (ग)

(६५७) १. का हुवा (ग) २. करि कउतिग घागं दुइ खले (ग)

(६५८) इत पद्य में ६ चरण हैं । १. इयंतरि (क) एयंतरि (ख) येयंतरि
 (ग) २. सो मन महि रले (ग)

(६५९) १. दुत्तर तरद (क) समुदरि (ग) समुदपरि (ख) २. अनघमं
 (क ख ग) ३. सितर (ख) कविसागह सो गितरि (ग) ४. वरति बंदे (क)
 ५. जोलि कराए जिल भवण ते सब बंदे घानंद (ख) ग प्रनि में घम्मिअ २ पति
 निम्न प्रकार है—

घनिउ ताहु जहु कम दिजइ किरि किरि देताइ जिल भुवण ।

बंदइ भावन भाइ जे जिन, घान्वा महि रट्टि लट्ट मरोहतरवाइ ॥

फिरि चेताले वंदे मयण, तिन्हि ज्योति दिपइ जिम्ब रयण ।
 अट्टविधि पूजउ न्हवणु कराइ, वाहुडि मयण द्वारिका जाइ ॥६६०॥
 इयंतरि अवरु कथंतरु भयउ, कौरो पांडव भारहु भयउ ।
 तिहि कुरखेत महाहउ भयउ, तिहिनेमिस्वर संजमु लयउ ॥६६१॥
 वाहुरि मयण द्वारिका जाइ, भोग विलास चरित विलसाइ ।
 छहरस परि सीभइ ज्योनार, अमृत भोजन करै आहार ॥६६२॥
 तथा सतखणा धोल हर अवास, निय निय सरसे भोग विलास ।
 अगर चंदन बहु परिमल वास, सरस कुसम रस सदा सुवास ॥६६३॥

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

एसी रीति कालुगत गयउ, फुणिर नेमि जिन केवल भयउ ।
 समवसरण तव आइ सुणिद, वणवासी अवर सुररिदु ॥६६४॥
 छपनकोटि जादम मन रले, नारायण स्यो हलहल चले ।
 समउसरण परमेसरु जहा, हलहल कान्ह पहुते तथा ॥६६५॥

(६६०) १. वदण करइ (ख) वंदे जाणु (ग) २. तिन्ह की जोति देखइ
 जिएभाणु (ग) ३. पूजा (क ख ग)

(६६१) १. तिन्ह (क) तिन्हि (ख ग) २. किया (ग)

(६६२) १. छह रति विलसइ भोग कराइ (ग) २. सरस (ग)

(६६३) १. घवल (क ख ग) २. निय निय सरसहि (ख) नीरस परिस (ग)
 ३. केसर (ग) लहै (ग) ४. सरस कुसमरस सदा सुवास (क) मूलपाठ-तंबोल कुसम
 सर दोस

(६६४) १. अइसी (क ख) इसी (ग) २. भुवणवासी आयो धरिण्डु (ग)

(३६५) १. सभी जादम मिले (ग)

देवि पयाहिण करिउ वहुत, फुणि माधव आरंभिउ युति ।
 जय कंदर्पं खयंकर देव, तइ सुर असुर कराए सेव ॥६६६॥
 जइ कम्मट्टु दुट्टु खिउकरण, जय महु जनम जनम जिनुसरणु ।
 तुम पसाइ हउ दूतरु तिरउ, भव संसारि न वाहुडि परउ ॥६६७॥
 करि स्तुति मन महि भाइ, फुणि नर कोठि बइठउ जाइ ।
 तउ जिणवाणी मुह नीसरइ, सुर नर सयल जीउ मनि घरइ ॥६६८॥
 धर्माधर्म सुणिउ दुठ वयण, आगम तणउ सूणिउ परदवणु ।
 गणहर कहु पूछइ पण सिधि, छपनकोटि जादम की रिधि ॥६६९॥
 नारायण मरण कहि पामु, सो मो कहु आपहु निरंजामु ।
 द्वारिका नयरी निश्चल होइ, सो आगमु कहि आफहु मोहि ॥६७०॥

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

पूछि वात तउ हलहल रहइ, मन को सासउ गणहर कहइ ।
 वारह वरिस द्वारिका रहहु, फुणि ते छपनकोटि संघरहु ॥६७१॥
 द्वीपायन ते उठ इव जागि, द्वारिका नयरी लागइ आगि ।
 मदे ते छपनकोटि संघरइ, नारायण हलहल उवरइ ॥६७२॥

(६६६) १. देव बहोजे बया बहूत (ग) २. आरंभिउ युति (क) आरंभिउ
 घोउ (ल) फुणि केतउ आइरबउ युत (ग) ३. मूलपाठ आरंभिउ युत ४. करहि
 निगु सेव (ग)

(६६८) १. बरिबइ युति (क) बरिब युति (ल) बरिबि युति (ग)
 २. मनिमहि (क ल ग) दूमरा घोर तोगरा चरण ग मनि में नहीं है ।

(६७०) यह पद क प्रति में नहीं है ।

(६७२) १. बलिभः (ल) २. छपनकोटि मनुष संघरहि (ग)

मुनि आगमु सो भेटइ कम्बणु, जरदकुमार हाय हरि मरणु ।
भान सुभानु अरु सामिकमारु, आठ महादे संजमु भारु ॥६७३॥
सुणि वात जउ गणहर पासु, निहचे द्वारिका होइ विणसु ।
दीपायनु तपचरणह गयउ, जरदकुमारु वनवासा लयउ ॥६७४॥
प्रद्युम्न द्वारा जिन दीघा लेना

दसदिसा खहु जादम भए, करि संजमु जिणवरं पह गए ।
दीप्या लेइ कुमर परदवणु, चिंतावत्यु भयउ नारायणु ॥६७५॥
प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण
• श्रीकृष्ण का दुखित होना

विलख वदनु भयो नारायणु, हा मुहि पूत पूत प्रदवनु ।
कवण बुद्धि उपनी तो आजु, लेहि द्वारिका भुंजइ राजु ॥६७६॥
राजधुरंधर जेठउ पूत, तोहि विधावल आहि बहुत ।
तोहि पवरिपु जाणइ सुरभवण, जिणतपुलेइ पूतपरदवणु ॥६७७॥
कालसंवर जाणइ तो हियउ, हउ रण महतइ विलखो कीयउ ।
तइ रूपिणि हरी मुहुतणी, फुणि तइ सुहड पचारे घणे ॥६७८॥

(६७३) १. जरा (ग) २. होइ (ग) ३. सम्बु (क ल ग)

(६७४) १. जरासिधु (क) जराकुमार वनवासी भया (ग)

(६७५) १. चितवन्त (क) चिंतावन्त (ग) २. थयउ (क) ३. महमहण
(क) महमहण (ग)

(६७६) १. वोसइ तिस कवण (क) वोसइ नारायणु (ल) वोसइ
महमहण (ग)

(६७७) १. मत (क)

नारायण के दयण सुणेइ, तं पडि ऊनेरु कंड्रपु देइ ।
 का कउ राजुभोग घरवारु, सुपिनंतरु जइसउ संसारु ॥६७६॥
 का कउ घन पौरिपु वलु घणउ, का कउ वापु कुटंव कहि तरणउ ।
 घडिक मा जाइ विहडाइ, आव क्षिपति को सकइ रहाइ ॥६८०॥

रुक्मिणि का विलाप करना

नारायण वारि विलखाइ, फुणि रुपिणि सपत्ती आइ ।
 करण कलाप करइ विललाइ, केमु पूत मन धरमु रहाइ ॥६८१॥
 एकु पूत तू मोको भयउ, धूमकेत तवही हरी लयउ ।
 कनकमाल घर विरधि करंत, वाले सुखह न देखिउ पूत ॥६८२॥
 फुणि मोहि घर आयो आनंदु, कुल उद्योत जिम पून्यो चंडु ।
 राज भोगत ए किए असेस, अथ ए भूमिरु रहोगे केस ॥६८३॥

(६७६) १. तंलिणि (ग) २. कंड्रप उतर देइ (ग) ३. किमुका राज देस घरवारु (ग)

(६८०) १. घडो एक घाले (ग) २. उपनि लपनि के रहइ धराइ (ग)
 ग प्रति में प्रथम द्वितीय चरण नहीं है ।

(६८१) १. वाहुडि (क ल) २. वलत भगनि कउ तितु बुभाइ (ग)

(६८२) १. स्तनपान मेरो नवि करिउ, नवि उद्योगि कबहि मह घरिउ (क)

(६८३) १. उदयो जागुं (ग) २. सहिगे (ल ग)

क प्रति में निम्न प्रकार है—

रुपणि मइ तय कउ मन कियउ, इव किस देलि सहरउ हियउ ।

राजा एक बीता असेस, अथ ए भूमिर सह केस ॥६८८॥

क प्रति में निम्न छंद अधिक है—

पुणि इव रुपणि सागो कहण, जिन तव लेहि पून परदमण ।

इसो कहि मइ तू उर घरिउ, अथ किस देलि सहरउ हियउ ॥

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

माता तणउ वयण, निसुरौइ, तव प्रतिउतरु कंद्रपु देइ ।
 लावण रुव सरीरहु सारु, जम रुटे सो होइ है छांरुं ॥६८४॥
 श्रवगी माइन कंदलु करइ, माया मोहु माणु परिहरइ ।
 जिन सरीर दुख धरहु बहुत, को मो माइ कवण तुहि पूतु ॥६८५॥
 रहटमाल जिउ यह जीउ फिरइ, स्वर्ग पताल पुहुमि अंतरइ ।
 पूव्व जनम को सनमधु आहि, दुज्जरा सज्जरा लेइ सो चाहि ॥६८६॥
 हम तुम सन्मधु पुव्वह जम्मु, सोहउ आणि घंटाउ कम्म ।
 इम्ब करि मनुसमभावइ ताहि, रुपिणि माइवेहुडि घर जाहि ॥६८७॥

प्रद्युम्न का जिन दीवा लेकर तपस्या करना

इम समुभाइ रुपिणि माइ, फुरिणि णिमि पास वइठउ जाइ ।
 देसु कोसु परिहरे असेस, पंचमुवीर उमाले केस ॥६८८॥
 तेरह विउ चारितु चरेइ, दंह लक्षण विहु धरमुं करेइ ।
 सहइ परीसह वाइस अंग, वाहिर भीतर छांयउ अंग ॥६८९॥

(६८४) १. तउ पडि (ख ग) तउ परि (क)

(६८५) १. दुख (क ख ग) मूल पाठ दुण्ड

(६८६) १. रहडमाल (ख) अरहटमाल (ग)

(६८७) १. पूरव जनमि (ग)

(६८८) १. जिण (क ख) मुनि (ग) २. वास (ग) ३. पंच मुठि उपाडे
 केस (क) पंच मुठि सिर उपडि केस (ख) पंचमरुडमउ साये केस (ग)

(६८९) १. विरडि चारै व्रतु चार (ग) २. वैसु संगु (ग)

प्रद्युम्न को केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

घाइ कम्मु को किउ विणासु, उपणउ केवलु पण निरजासु ।

दीठउ लोयण लोयपमाणु, भायउ चित्तव उच्छउ भाणु ॥६६०॥

तंखण आयउ चंद सुरिंदु विजाहर हलहर धरणिंदु ।

नारायण वहु सजण लोणु, सुरयणु अद्धरायणु वहु भोगु ॥६६१॥

थुणइ सुरेस्वर वाणी पवर, जय जय मोहतिमिरहरसूर ।

जय कंद्रप हउ मति नासु, जाइ तोडिवि घालिउ भवपासु ॥६६२॥

इय थुतिवि सुर वइ फुणि भणइ, धणवइ एकु चित्त भउ सुणइ ।

मुंड केवली रिद्ध विचित्त, रचहि खणंतरि वण्ण विचित्त ॥६६३॥

(६६०) १. जो चित्तवं सोचउ धा घासु (ग)

(६६१) १. विद्यापर धाया धरि घातणु (ग) २. नर सुर को तह हव संजोग (क) ३. इमण (ग)

(६६२) १. सुणइ नारि सर (क) सुणइ सुवाणी प्रवणे धपार (ग)
२. करहु मह तिमिर (क) जइ जइ मोहणिरा हर हार (ग) ३. कउ कियो विणास (क) काम भनि नासु (ग) ४. जइ सुजाण तोडा भव पास (क) जउ मो विद्या सीया पासु (ग)

(६६३) १. एम भणिवि सुर सामी भणइ, धणवइ एकु चित्त सुणइ (क)
इव सुणि सुरवइ सो फुणि भणइ, ध्यावइ नवइ सुइक्कित्तिसुणइ (ग)

२. पवित्तु (ग) ३. पाणरति (ग)

यद्दु चरितु पुंन भंडारु, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमणु तुही फलदेइ, संपति पुत्रु अवरु जसु होइ ॥७००॥
हउ बुधिहीणु न जाणौ केम्बु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पंडित जणह नमू कर जोडि, हीण अधिक जण लावहु खोडि ॥७०१॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

शुभं भवतु । मांगम्यं ददातु । श्री वीतरागायनमः । संवत्
१६०५ वर्षे, आसोज वदि ३ मंगलवारे श्री मूलसंघे लिखापितं
आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दांशा
योग्यदत्तं । श्रेयोस्तु ॥



ग्रंथकारका परिचय

मइसामीकउ कीयउ वखाण, तुम पजुन पायउ निरवाण ।
 अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपाति ॥६६४॥
 सुधणु जणणी गुणवइ उर धरिउ, सामहराज धरह अवतरिउ ।
 एरछ नगर वसते जानि, सुणिउ चरित मइ रचिउ पुराणु ॥६६५॥
 साव्यलोय वसहि पुर माहि, दह लक्षण ते धम्म कराइ ।
 दस रिस मानइ दुतिया भेउ, भावहि चितहं जिणेसरु देउ ॥६६६॥

(६६४) १. प्रसाद (ग) २. अगरोवइ (ग) अगरोवइ (ल) निम्न छन्द
 अधिक है—

बिहरइ गाम नगर चहु देस, भविष जीव संवोहि असेस ।
 पुणि तिनि आठ कम्म पण कियो, पुण पजुण नियवाणह गयो ॥
 हुउ मतिहीण विबुद्धि अयाणु, मइस्वामीकउ कियउ वखाणु ।
 उछाह मन में कियउ चरित्तु, पढमइ उछाह वे सो वित्तु ॥७००॥
 पंडिय जण नमउ कर जोडि, हम मतिहीणु म लावहु लोडि ।
 अगरवाल की मेरी जाति, अगरोवे मेरी उतपति ॥७०१॥
 पुव्य चरितु मइ सुणे पुराण, उपनेउ भाउ मइ कियो वखाण ।
 जइ पुहमि इक चित कियो, साई समाइवि लियउ ॥७०२॥
 उउपइ बंध मइ कियउ विचित्तु, भविष लोक पढहु दे चित्त ।
 हं मतिहीणु न जाणउ केउ, अखर-मात न जाणउ भेउ ॥७०३॥

(६६५) १. सुधनु (ग) २. गधु उरि घरघो (ग) ३. साहु मइराज (क)
 सामहराइ करिया अवतरघो (ग) ४. एलचि (क) एयरछ (ल) येरस (ग) ५. हम
 करिउ वखाण (क) में कीया वखाणु (ग)

(६६६) १. सबल लोग (ल) सब ही लोक (ग) २. नावहल ते राज
 कराइ (ग) ३. दरिसण मानहि दुतिया भेउ (क) दंसण नाणुहि दूजउ भेउ (ल)
 देशन माहि नहो तिन्ह भेउ (ग) ४. जयउ विचित्त (क) ध्यावहि चित्त (ल)
 पावहि इक मनि जिनवद वेव (ग)

एह चरितु जो वांचइ कोइ, सो नर स्वप्न देवता होइ ।
 हलुवइ धम्म खंपइ सो देव; मुकति वरंगणि मांगइ एम्ब ॥६६७॥
 जो फुणि सुणइ मनह धरिभाउ, अमुभ कर्म ते दूरि हि जाइ ।
 जोर वखाणइ माणुमु कवणु, तहि कहू तूसइ देव परदवणु ॥६६८॥
 अरु लिखि जो लिखियावइ सायु, सो मुर होइ महागुणरायु ।

जोर पढावइ गुण किउ निलउ, सो नर पावइ कंचण भलउ ॥६६९॥

(६६७) १. हलुव-कपुं गुणि होइ सो दोउ (ख) २. पावइ (एउं) (ख)
 क प्रति में तथा ग प्रति में यह छन्द नहीं है ।

(६६९) क प्रति में उक्त छन्द के स्थान पर निम्न छन्द है—

पढहि गुणहि जे वित्तह धरइ, लिहहि लिहावइ जे मुक्ति करइ ।
 सुणइ सुणावइ भव्हह तोय, तिह कउ पुत्र परापति होइ ॥७०॥
 ख प्रति—

जु फुणि सुणइ मनह धरि जाउ, जो वखाणइ माणुमु कमणु ।
 तिस कहू तूसइ तइ देउ परदवणु, ॥७१॥
 अरु लिखि जोर लिखावइ सुद्ध, सो मुर होइ महागुणरिद्ध ।
 जोर पढावइ गुण कउ निलउ, सो नर पावइ संजमु भलउ ॥७२॥
 एह चरितुह पुत्र भडाह, जो नर पढइ ह नर महं साह ।
 तहि परदवणु तूरं सि फनु देइ, संपनि पुत्र भवइ जमु होइ ॥७३॥
 हउ बुधि होछ न जाणउ भेउ, अलर मातह सुणउ नभेउ ।
 पंडित जणहं नवउ कर जोइ, हीण अघिक जिन लावहु सोइ ॥७४॥
 इति प्रथम वरिचं समाप्तं । श्लोक संख्या १२००/शुभमस्तु

ग प्रति—

हउ होण बुद्धि न जाणउ केव, अलित मंतु मु मुनिवर भेउ ।
 पंडित जन विनउउ कर जोइ, अघिकउ होतु जिन लावहु सोइ ॥७५॥
 मइ स्वामी का बीया यत्राय, पंडित जन मनि होइ मुजाण ।
 केवत उपजइ गुण संपुंनु, सुणहु धावगउ उपजइ पुनु ॥७६॥
 ॥ इति परदवणु अउपई समाप्त ॥

यह चरितु पुंन भंडारु, जो वरु पढइ सु नर महसारु ।
तहि परदमणु तुही फलदेइ, संपति पुत्रु अवरु जसु होइ ॥७००॥
हउ वुधिहीणु न जाणो केम्बु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पंडित जणह नमू कर जोडि, हीण अधिक जण लावहु खोडि ॥७०१॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

शुभं भवतु । मांगम्यं ददातु । श्री वीतरागायने नमः । संवत्
१६०५ वर्षे आसोज वदि ३ मंगलवारे श्री मूलसंघे लिखापितं
आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दाश
योग्यदत्त । श्रेयोस्तु ॥



यद्दु चरितु पुंन भंडारु, जो वरु पढइ सु नरु महसाह ।
तहि परदमणु तुही फलदेइ, संपति पुत्रु अवरु जसु होइ ॥७००॥
हउ बुधिहीणु न जाणौ केम्बु, अक्षर मातह गुणउ न भेउ ।
पंडित जणह नमू कर जोडि, हीण अधिक जण लावहु खोडि ॥७०१॥

॥ इति परदमण चरित समाप्तः ॥

शुभं भवतु । मांगम्यं ददातु । श्री वीतरागायनमः । संवत्
१६०५ वर्षे आसोज वदि ३ मंगलवारे श्री मूलसंधे लिखापितं
आचार्य श्रीललितकीर्ति सा० चांदा सरवण सा० नाथू सा० दाशा
योग्यदत्तं । श्रेयोस्तु ॥



हिन्दी-त्रय

प्रथम सर्ग

स्तुति खण्ड

(१) शारदा के बिना कविता करने की बुद्धि नहीं हो सकती, उसके बिना कोई स्वर और अक्षर को भी नहीं जान सकता। सधारु कवि कहता है कि जो सरस्वती को प्रणाम करता है उसी की बुद्धि निर्मल होती है।

(२) सब कोई 'शारदा शारदा' करते हैं किन्तु उसका कोई पार नहीं पाता। जिनेन्द्र के मुख से जो वाणी निकली है उसे ही शारदा जानकर में प्रणाम करता हूँ।

(३) सरोवर में आठ पंखुडि वाले कमल पर जिसका निवास स्थान है, जिसका विकास काश्मीर से हुआ है; हंस जिसकी सवारी है और लेखनी जिसके हाथ में है उस सरस्वती देवी को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(४) जो श्वेत वस्त्र धारण करने वाली है तथा पद्मासिनी है और वीणावादिनी है ऐसी महाबुद्धिमती सरस्वती मुझे आगम ज्ञान दे। मैं उस द्वितीय सरस्वती को पुनः प्रणाम करता हूँ।

(५) हाथ में दण्ड रखने वाली पद्मावती देवी, ज्वालामुखी और चक्रेश्वरी देवी तथा अम्बावती और रोहिणी देवी इन जिन शासन देवियों को कवि सधारु प्रणाम करता है।

(६) जो जिनशासन के विघ्नों का हरण करने वाला है, जो हाथ में लकड़ी लिये खड़ा रहता है और जो मंसारी जनों के पापों को दूर करता है ऐसे क्षेत्रपाल को पुनः पुनः सादर नमस्कार करता हूँ।

(७) चौबीसों तीर्थकर दुःखों को हरने वाले हैं और चौबीसों ही जरा मरण से मुक्त हैं। ऐसे चौबीस जिनेश्वरों को भाव महित नमस्कार करता हूँ तथा जिनके प्रसाद से ही कविता करता हूँ।

(१६) समुद्र के मध्य में द्वारिका नगरी है मानों कुबेर ने ही उसे बनाकर रखी हो। जिसका धारह योजन का विस्तार है और जिसके दरवाजों पर स्वर्ण-मल्ला विखाई पड़ते हैं।

(१७) चौथारों के विविध प्रकार के स्फटिक मणि के छज्जे चन्द्रमा की कान्ति के समान दिखाई देते हैं। यहां के कियाइ मानों मरकत मणियों से जड़े हुये है तथा मोतियों की घंदनधार सुरोभित हो रही है।

(१८) जहां एक सौ उद्यान एवं स्वच्छ निवास स्थान है जिसके चारों ओर मठ, मन्दिर और देयालय हैं। जहां चौरासी बाजार (चौपड़) हैं जो अनेक प्रकार से सुन्दर दिखाई देते हैं।

(१९) जिसके चारों दिशा में मूय गहरा समुद्र हैं जिसका जल चारों ओर भकोला मारता है। जहां करोड़पति व्यापारी निवास करते हैं ऐसी यह द्वारिका नगरी है।

(२०) धर्म और नियम के मार्ग को जानने वाली जिसमें १८ प्रकार की जातियां रहती हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य तीनों वर्णों के लोग रहते हैं, जहां शूद्र भी रहते हैं, तथा जहां छत्तीसों कुल के लोग मुन्य पूर्वक निवास करते हैं उस नगरी का स्वामी (राजा) यादवराज है।

(२१) जिसके दल, बल और साधनों की कोई गणना नहीं है। जब यह गर्जना करता है तो पृथ्वी कांपने लगती है। यह तीन स्वर्ग का चक्रवर्ती राजा शत्रुघ्नो के दल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है।

(२२) और उनका बलभद्र सगा भाई है। उनके समान पुरुषार्थी विरले ही दीख पड़ते हैं। ऐसे छप्पन करोड़ यादवों के साथ जो किसी से रोके नहीं जा सकते थे ये एक परिवार की तरह राज्य करते थे।

(२३) एक दिन धीहृष्य पुरी नगमा के साथ बैठे हुये थे। चतुरंगिणी सेना के कारण जहां नानी स्थान नहीं गूळ रहा था। अगर आदि मुगन्धित पदार्थों की गंध जहां चारों ओर फैल रही थी। सोने के दण्ड वाले चामर (चपर) शिर पर दुल रहे थे।

(२४) जहां पांच प्रकार के (गितार, तान, मंथ, नगाड़ा तथा गुहरी) बाजे गूब बज रहे थे। अनेक प्रकार की सुंदर पावन पहने हुये भाव भरती हुई नृत्य करने वाली तान, विनोद एवं वन्मा का अनुसरण करती हुई पांच धर रही थी।

(८) ऋषभ, अजित और संभवनाथ ये प्रथम तीन तीर्थंकर हुए। चौथे अभिनन्दन कहलाये। सुमतिनाथ प्रद्युम्न और सुपार्वनाथ तथा आठवें चन्द्रप्रभ उत्पन्न हुए।

(९) नवें सुविधिनाथ और दशवें शीतलनाथ हुए। ग्यारहवें श्रेयांसनाथ की जय होवे। यासुपूज्य विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ और सोलहवें शान्तिनाथ हुए।

(१०) सतरहवें कुण्डुनाथ, अठारहवें अरहनाथ, उगनीसवें मल्लिनाथ, बीसवें मुनिमुग्रतनाथ, इक्कीसवें नमिनाथ, बाईसवें नेमिनाथ, तेईसवें पार्श्वनाथ और चौबीसवें महावीर ये मुझे आशीर्वाद दें।

(११) सरस कथा से बहुत रस उपजता है। अतः प्रद्युम्न का चरित्र मुनो। संवत् १४०० और उस पर ग्यारह अधिक होने पर भाद्रव मास की पचमी, स्वाति नक्षत्र तथा शनिवार के दिन यह रचना की गयी।

(१२) जो गुरुओं की खान हैं, जिनका शरीर श्याम वर्ण का है, जो शिवादेवी के पुत्र हैं, जो चौतीस अतिशय सहित हैं, जो कामदेव के तीक्ष्ण वाणों का मान मर्दन करने वाले हैं, जो हरिवंश के चिन्तामणि हैं, जो तीन लोक के स्वामी हैं, जो भय को नाश करने वाले हैं, जो पांचवें ज्ञान केवलज्ञान के प्रकाश से सिद्धान्त का निरूपण करने वाले हैं, ऐसे पवित्र नेमीश्वर भगवान को भली प्रकार नमस्कार करता हूँ।

(१३) पहिले पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार कर फिर जिनेन्द्रदेव के चरणों की शरण जाकर तथा निर्ग्रन्थ गुरु को भाव पूर्वक नमस्कार कर उनके प्रसाद से कविता करता हूँ।

द्वारिका नगरी का वर्णन

(१४) चारों ओर लवणसमुद्र से घिरा हुआ सुदर्शन पर्वत वाला जम्बूद्वीप है। इसके दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र है जिसके मध्य में सोरठ सौराष्ट्र देश बसा हुआ है।

(१५) उस देश में जो गांव बसे हुये हैं वे नगरों के सदृश लगते हैं। जो नगर हैं वे देव विमानों के समान सुन्दर हैं। उन नगरों में प्रत्येक मंदिर घबल तथा ऊँचे हैं जिन पर सुन्दर स्वर्ण-कलश भल्लकते हैं।

(१६) समुद्र के मध्य में द्वारिका नगरी है मानों कुबेर ने ही उसे बनाकर रखी हो। जिसका द्वारह योजन का विस्तार है और जिसके दरवाजों पर स्वर्ण-कलश दिखाई पड़ते हैं।

(१७) चौवारों के विविध प्रकार के स्फटिक मणि के छज्जे चन्द्रमा की कान्ति के समान दिखाई देते हैं। यहां के कियाइ मानों मरकत मणियों से जड़े हुये है तथा मोतियों की घंड़नधार सुशोभित हो रही है।

(१८) जहां एक सौ उद्यान एवं स्वच्छ निवास स्थान है जिसके चारों ओर मठ, मन्दिर और देवालय हैं। जहां चौरासी बाजार (चौपट) हैं जो अनेक प्रकार से सुन्दर दिखाई देते हैं।

(१९) जिसके चारों दिशा में मृष गहरा समुद्र है जिसका जल चारों ओर भ्रमोला मारता है। जहां फरोड़पति व्यापारी निवास करते हैं ऐसी यह द्वारिका नगरी है।

(२०) धर्म और नियम के मार्ग को जानने वाली जिममें १८ प्रकार की जातियां रहती हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य तीनों वर्णों के लोग रहते हैं, जहां शूद्र भी रहते हैं, तथा जहां छत्तीसों कुल के लोग सुसूय पूर्वक नियाम करते हैं उस नगरी का स्वामी (राजा) यादवराज है।

(२१) जिसके दल, बल और माधनों की कोई गणना नहीं है। जब यह गर्जना करता है तो पृथ्वी कांपने लगती है। यह तीन स्वर्ग का धर्मपती राजा शत्रुघ्नो के दल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला है।

(२२) और उनका बलभद्र मगा भाई है। उनके समान पुरुषार्थी गिरने ही हीन पड़ते हैं। ऐसे छप्पन करोड़ यादवों के माप जो किसी से रोके नहीं जा सकते थे वे एक परिवार की तरह राज्य करते थे।

(२३) एक दिन भीष्टपुत्र पूरी गमा के साथ बैठे हुये थे। अनुगिणी सेना के कारण जहां स्थानी स्थान नहीं गूंक रहा था। अगर आदि मुगन्धिन पक्षियों की गंध जहां चारों ओर फैल रही थी। मोने के इच्छ जाने आनर (पक्षर) शिर पर दल रहे थे।

(२४) जहां पांच प्रहर के (मितार, तान, भ्रम, नगाहा तथा गुरही) बाजे गूब बज रहे थे। अनेक प्रकार की सुंदर पायब पहने हुये माप भरती हुई नृत्य करने वाली तान, विनोद एवं बमा का अनुमरण करती हुई पांच घर रही थी।

नारद ऋषि का आगमन

(२५) इतने में हाथ में कमंडलु लिये हुए मुँडे हुये सिर पर चोटी धारण करने वाले, विमान पर चढ़े हुये असन्न मन राजर्षि नारद वहाँ जा पहुँचे।

(२६) श्रीकृष्ण ने उनको नमस्कार करके बैठने के लिये स्वर्ण सिंहासन दिया। एकान्त पाकर नारायण ने उनसे पूछा कि आपका आगमन कहाँसे हुआ।

(२७) हम आकाश में उड़ते हुये मर्त्यलोक के जिन मन्दिरों की घन्दना करने गये थे। द्वारिका कीलने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि यादवराय से ही भेंट करते चलें।

(२८) तब नारायण ने विनय के साथ कहा कि अच्छा हुआ कि आप यहाँ पधारे। हे नारद ऋषि ! आपने हमारे उपर कृपा की। आज यह स्थान पवित्र हो गया।

(२९) वचनों को सुनकर नारद ऋषि मन ही मन हंसने लगे तथा उनसे सत्यभामा की कुशलवार्ता पूछी। नारद जी आशीर्वाद देकर खड़े हो गये और फिर रणवास में चले गये।

(३०) जहाँ सत्यभामा शृंगार कर रही थी तथा आँखों में काजल लगा रही थी। चन्द्रमा के समान ललाट पर जब यह तिलक लगा रही थी उसी समय नारद ऋषि वहाँ पहुँचे।

(३१) हाथ में कमण्डलु लिये हुये ऋषि रूप और कला को देखते फिरते थे। वे सत्यभामा के पीछे जाकर खड़े हो गये और सत्यभामा का दर्पण में रूप देखा।

(३२) सत्यभामा ने जब ऋषि का विकृत रूप देखा तो मन में बहुत विस्मित हुई। उस मंद-बुद्धि ने कुतर्क किया कि वहाँ पर कोई मार डालने वाला पिशाच आ गया है।

नारद का क्रोधित होकर प्रस्थान

(३३) बड़ी देर तक ऋषि खड़े रहे। सत्यभामा ने न तो दोनों हाथ जोड़े और न उनसे बैठने के लिये ही कहा। तब नारद ऋषि को क्रोध उत्पन्न हो गया और वे उमे सहन नहीं कर सके। तब नारदजी फटकारते हुये वापिस चले गये।

(३४) बिना ही यात्रा के जो नाचने लंगडा है यदि उसको यात्रा मिल जाये तो फिर कहना ही क्या ? एक तो शृगाल और फिर उमे बिच्छू खा जाय ? एक तो नारद और फिर यह क्रोधित होकर चलदे ।

(३५) नारद ऋषि क्रोधित होकर उसी क्षण चल पड़े तथा पर्यंत के शिखर पर जाकर बैठ गये । यहाँ बैठे हुये मन में सोचने लगे कि मत्स्यमामा का किम प्रकार से मान भंग हो ?

(३६) जब नारद मुनि ये विचार करने लगे तो उनकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही थी । मैं मत्स्यमामा का श्रभिमान कैसे गण्डित करूं ? या तो किसी से इसको भयभीत कराऊं अथवा इसको शिला के नीचे दाय कर छोड़ दूं लेकिन इससे तो श्रीकृष्ण को दुःख होगा । अन्त में यह विचार किया कि जो इसमें भी सुन्दर स्त्री हो उसका श्रीकृष्ण के साथ विवाह करा दिया जावे ।

(३७) तब ये गांव गांव में फिरे और घूम घूम कर देश के सब नगर देख बाने । एक सौ दम जो विगाधरो की नगरिया थी उनको नारदजी ने क्षण भर में ही देख बाला ।

नारद का कुण्डलपुरी में आगमन

(३८) देशों में घूमते हुये मन में सोचने लगे कि अभी तक कोई स्त्रयनी कुमारी दिखाई नहीं दी । फिर नारद ऋषि यहाँ आए जहाँ विगाधर की नगरी कुण्डलपुरी थी ।

(३९) उस नगरी का राजा भीष्मराज था जो धर्म और नीति को गृह जानता था । जिसके अनेक लक्षणों से युक्त स्वयंभू पुत्र एवं पुत्री थी ।

(४०) दृष्टि कैलाधर मुनि कहने लगे कि इस कुमारी के यदि कोई योग्य वर हो और विधाना की कृपा से संयोग मिल जाये तो इसका नारायण में मन्थन हो सकता है अर्थात् इसके लिये नारायण ही योग्य है ।

(४१) इस प्रकार मन में विचार करते हुए नारद ऋषि आरीवाँद देकर स्वयंभू में गए । उन्हीं क्षण उनको सुरसुंदरी और कुमारी कनिमली दिखाई पड़ी ।

नारद से रुक्मिणी का साक्षात्कार

(४२) यह अत्यन्त रूपयन्त्री तथा अनेक लक्षणों से युक्त थी। चन्द्रमा के समान सुगंध वाली यह ऐसी लगती थी मानों चन्द्रमा ही उदय हो रहा हो। हंस के समान चाल वाली यह दूसरों के मन को लुभाने वाली थी। उसके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं थी।

(४३) जब नारद को आता हुआ देखा तो सुरसुन्दरी ने उन्हें नमस्कार किया। रुक्मिणी को देखकर वे बोले कि नारायण की पट्टरानी बनो।

(४४) भीष्म की बहिन सुरसुन्दरी ने कहा कि रुक्मिणी शिशुपाल को दे दी गयी है, इस सुन्दर नगरी में बहुत उत्सव हो रहे हैं, लग्न रख दी गयी है और विवाह निश्चित हो चुका है।

(४५) सुरसुन्दरी ने सत्यभाव से कहा कि अद्य आपके लिये ऐसा कहने का कोई अवसर नहीं है। जो शत्रु-राजाओं के मान को भंग करने के लिये काल के समान है ऐसा शिशुपाल सब कुटुम्बियों के साथ आ पहुँचा है।

(४६) उसके बचनों को सुनकर नारद ऋषि कहने लगे कि तीन खण्ड का जो चक्रवर्ति है तथा छप्पन करोड़ यादवों का जो स्वामी है ऐसे को छोड़कर दूसरे के साथ विवाह करोगी ?

(४७) पूर्व लिखे हुए को कोई नहीं भेट सकता जिसके साथ लिखा होगा उसी के साथ विवाह होगा। अपनी बात को छोड़ दो, नारायण ही रुक्मिणी को ब्याहेगा।

(४८) तब सुरसुन्दरी मन में प्रसन्न हुई कि मुनि ने जो बात कही थी वही मिल रही है। नारदजी ! सुनो और सत्यभाव से कहो। यह युक्ति वताओ जिससे विवाह हो जाय।

(४९) नारद ऋषि ने कहा कि तुम ऐसा करना कि पूजा के निमित्त मंदिर में चले जाना। नन्दनवन को संकेत-स्थल बनाना, वहीं पर मैं तुमसे (श्रीकृष्ण) को लाकर भेंट कराऊंगा।

(५०) तब देवांगना सहस्र रुक्मिणी ने कहा कि कृष्णमुरारी को कौन पहिचानेगा तब सुविज्ञ नारद ऋषि ने कहा कि मैं तम्हें चिन्ह बतलाता हूँ।

(५१) जो शंख चक्र और गदा धारण करता है तथा धलिभद्र जिसका भाई है। अपने घाण से जो सात ताल वृक्ष को घीघता है, नारद ने कहा वही नारायण है।

(५२) (नारदजी ने) सुन्दर रत्नों से जड़ी हुई वज्र की अंगूठी दी और कहा कि जो उसे अपने कोमल हाथों से चकनाचूर कर दे वही गुणों से परिपूर्ण नारायण है।

नारद का श्रीकृष्ण के पास पुनः आगमन

(५३) इस प्रकार घान निश्चित कके रुक्मिणी का चित्रपट लिखवा कर उसे अपने साथ लेकर और विमान में चढ़ कर नारद ऋषि वहाँ आए जहाँ नारायण सभा में बैठे हुये थे।

(५४) महाराज बार बार चित्र पट दिखाने लगे वससे (श्रीकृष्ण) का मन व्याकुल हो गया। उनका शरीर कामवाण से घायल हो गया और वे बहुत विह्वल हो गये।

(५५) क्या यह कोई अप्सरा है अथवा वनदेवी है। अथवा कोई मोहिनी तिलोत्तमा है। क्या यह सुन्दर रूप वाली विशाधरी है। इस स्त्री का यह रूप किसके समान है।

(५६) नारद ऋषि ने सत्यभाव से कहा कि कुण्डलपुर नामक एक नगर है। उसके राजा भीष्म से मैं तत्काल मिला और उसी की यह कन्या रुक्मिणी है।

(५७) उसको मैंने आपके लिये मांग लिया है। जाकर के विवाह करलो देर मत करो। कामदेव का मंदिर सकेत-स्थल है उसी स्थान पर लाकर भेंट कराऊंगा।

श्रीकृष्ण और हलधर का कुण्डलपुर के लिये प्रस्थान

(५८) तब श्रीकृष्ण बहुत संतुष्ट हुये। मन में हँस कर आनन्द मनाने लगे। रथ को सजवा कर एवं मारुथी को चित्राकर अपने साथी (भाई) हलधर को बुला लिया।

(५६) तब सारथी ने क्षण भर में रथ को सजाया तथा वायु के वेग के समान कुरुक्षेत्रपुर पहुँच गया। जहाँ 'वन में मन्दिर था वहीं पर कृष्ण एवं हलधर पहुँचे।

(६०) आपस में सलाह की। जरा भी देर नहीं लगायी। दूत के द्वारा समाचार भेज दिये। उस ने जाकर सब बात कह दी कि नन्दनवन में श्रीकृष्ण आ गए हैं।

(६१) वचनों को सुनकर रुक्मिणी हँसी। मोती एवं माणिक्य आदि से थाल भरा, बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर पूजा के निमित्त मन्दिर में चली गई।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का प्रथम मिलन

(६२) रुक्मिणी ने वहाँ जाकर श्रीकृष्ण से भेंट की और सत्यभाव से कहा कि हे यदुराज मेरे वचनों की ओर ध्यान देकर सात ताल घृत्नों को वाणों से बीधिये।

(६३) तब श्रीकृष्ण ने वज्र मूँदड़ी को लेकर हाथ से मसल डाला। मूँदड़ी फूट कर चून हो गई मानों गरहट के नीचे चाँवलों के कण पिस गये हो।

(६४) तब नारायण ने धनुष लिया और हलधर ने आकर अंगूठा दबाया। दबाने से सातों सूखे हो गये और वाणों ने सातों ही ताल घृत्नों को बीध दिया।

(६५) तब रुक्मिणी के मन में स्नेह उत्पन्न हो गया और उसने मन में जान लिया कि यही नारायण हैं। उन्होंने रथ पर रुक्मिणी को चढ़ाकर पुकारा और सब बात भीष्म राज को ज्ञात करा दी।

वनपाल द्वारा रुक्मिणी-हरण की सूचना

(६६) तब वनपाल ने आकर कहा कि पीछे कोई गर्व मत करना कि रुक्मिणी को चुराकर ले गये। जिममें शक्ति हो वह आकर छुडाले।

(६७) रुक्मिणी को रथ पर चढ़ा लिया तथा उमने (श्रीकृष्ण) पांचजन्य शंख को बजाया। शंख के शब्द को सुनकर सारा देवलोक शंकित हो गया तथा महिमंडल धर धर काँपने लगा। महिलाओं ने जाकर यह पुकार की कि हे पृथ्वीपति सुनिये—देव मन्दिर में खड़ी हुई रुक्मिणी को श्रीकृष्ण हर ले गये।

(६८) तब भीष्मराव मन में क्रुपित हुए तथा स्थान स्थान पर नगाड़ा वजने लगा। घोड़ों पर काठी कसो, हाथियों को खाना करो तथा काल रूप होकर सब चढ़ाई करो।

(६९) जब राजा शिशुपाल को पता चला कि रुक्मिणी चोरी चली गयी है तब बड़े गुस्से में आकर उस ने कहा कि शीघ्र ही सब घोड़ों पर जीन कसी जावे।

(७०) रथों को सजाओ, हाथियों को तैयार करो। सभी सुभट तैयार होकर आज राण में भिड़ पड़ो। सब सामंत अपने हाथों में तलवार ले लें तथा धनुषधारी धनुष की टंकार करे।

(७१) शिशुपाल एवं भीष्मराव दोनों के दल की सेना के कारण स्थान (मार्ग) नहीं दीखता था। घोड़ों के खुरों से इतनी धूल उड़ली कि मानों भादों के मेघ मँडरा रहे हों।

(७२) दुलते हुये राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होंते थे मानों सैनिक हाथ में आग लेकर प्रविष्ट हो रहे हो। अथवा दुलते हुए राज-चिन्ह चंवर ऐसे मालूम होते थे मानों अग्नि में कमल खिल रहे हों। चारों प्रकार का सेना इकट्ठी होकर वायु-वेग के समान राणभूमि में आ पहुँची।

(७३) अपरिमित दल आता हुआ दिखाई दिया। धूल उड़ी जिससे सूर्य चन्द्रमा छिप गये। आश्चर्य के साथ डर कर रुक्मिणी कहने लगी कि हे महामहिम्न ! राण में कैसे जीतोगे ?

(७४) हे रुक्मिणी ? धैर्य रखो, कायर मत बनो। तुमको मैं आज अपना पुरुषार्थ दिखालाऊंगा। शिशुपाल को युद्ध में आज समाप्त कर दूंगा और भीष्मराव को बांध करके ले आऊंगा।

(७५) वान कहते हुये ही सेना आ पहुँची। शिशुपाल क्रोधित होकर बोला, हे सरदार लोगो, अपने हाथों में तलवार ले लो। आज मुठभेड होगी, कहीं ग्वाला भाग न जावे।

(७६) शिशुपाल और श्रीकृष्ण की इस प्रकार भेंट हुई जैसे अग्नि में घी पड़ा हो। हाथ में धनुषवाण संभाल लिया। अब संग्राम में पता पड़ेगा। अपने मन में पहिले के वचनों को याद करो। तुमने चोरी से रुक्मिणी को हर लिया वही तुमने उपाय किया। अब तुम मिल गये हो; कहां जाओगे ? अब मार कर ही रहूंगा।

(७५) जब दुष्ट ने दुष्टतापूर्ण वचन कहे तो श्रीकृष्ण की क्रोध आ गया और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने के लिये हाथ में धनुष उठाया ।

श्रीकृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

(७८) इकाल आठ लक्षकार कर परस्पर दोनों वीर भिड़ गये और खूब बाण बरसने लगे मानों वर्षा हो रही हो । तब बलिभद्र ने हल नामक आयुध लिया और रथ को चूर्ण कर हाथों पर प्रहार किया ।

(७९) शिशुपाल ने हाथ में धनुष लिया और एक साथ पचास बाण छोड़े । तब नारायण ने सौ बाणों से उनका संहार किया तो शिशुपाल ने दो सौ बाणों से प्रहार किया ।

(८०) नारायण ने चार सौ बाणों से उस पर प्रहार किया तो उसने आठ सौ बाणों से उस पर वार किया । फिर नारायण ने सोलह सौ बाण धनुष पर रख कर चलाये तो उसने बत्तीस सौ बाणों से धावा किया जिसके कारण कोई स्थान नहीं सूझ रहा था ।

(८१) इस प्रकार दोनों शक्तिशाली वीर खड़े हुये एक दूसरे पर दूने दूने बाणों से आक्रमण करते रहे । युद्ध बढ़ता ही गया बढ़ नहीं हुआ तथा बाणों से पृथ्वी आच्छादित हो गयी ।

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

(८२) तब नारायण ने सोचा कि धनुष बाण का अवसर नहीं है । तब हाथ में चक्र लेकर उसे घुमाया जिससे क्षण भर में ही शिशुपाल का सिर कट गया ।

(८३) शिशुपाल को मरा हुआ जानकर भीष्म राज उदाम हो गया । रण में भयकर मार सही नहीं जा सकी इसलिये चतुरंगिणी सेना वहाँ से भागने लगी ।

(८४) तब रुक्मिणी ने सत्यभाव से कहा कि रूपचन्द और भीष्मराज की रक्षा करो । मन में घैर छोड़कर इनसे संधि करो तथा कुण्डलपुर नगर को वापिस चलो ।

(८५) तब नारायण ने कृपा करके वधे हुए भीष्मराज को छोड़ दिया । रूपचन्द ने गले मिले और फिर अपने नगर को प्रस्थान किया ।

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का वन में विवाह

(८६) जब मुडकर हलधर और कृष्ण चले तो वन में एक मंडप को देखा । जहां अशोक वृक्ष की छाया थी वहां वे तीनों पहुँचे ।

(८७) तब उनके मन में बड़ी खुशी हुई । आज लग्न है इसलिये विवाह कर लें । ध्रमर की ध्वनि ही मानों मंगलाचार हो रहा है तथा तोते मानों वेद पाठ कर रहे हैं ।

(८८) बांतों का मंडप बनाया तथा भोंवर देकर हथलेवा किया । पाणिग्रहण करके रुक्मिणी को परण लिया और उसके परचाग कृष्णमुरारी अपने घर खाना हो गये ।

श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ द्वारिका आगमन

(८९) जब नारायण वापिस पहुँचे तब छप्पन कोटि यादवों ने मिलकर उत्सव किया । घर घर में गुडियों को उड़ाला गया तथा तोरण एवं बंदनवार बांधी गयी ।

(९०) रुक्मिणी एवं श्रीकृष्ण हंसते हुये नगर मे प्रविष्ट हुए । स्थान स्थान पर बहुत से लोग खड़े थे और वे दोनों अपने महल में जा पहुँचे ।

(९१) भोग विलास करते हुये कई दिन बीत गए । सत्यभामा की चिंता छोड़ दी । सौत के दुख के कारण वह अत्यन्त डाह से भरी हुई अपने नित्य प्रति के सुख को भी दुख रूप समझती थी ।

सत्यभामा के दूत का निवेदन

(९२) सत्यभामा ने एक दूत को उस महल में भेजा जहां बलिभद्रकुमार बैठे हुये थे । शीश झुकाकर उमने निवेदन किया कि हे देव ! मुझे सत्यभामा ने भेजा है ।

(९३) दूत ने महल में हाथ जोड़कर कहा कि सत्यभामा ने कहा कि विचार कर कहो कि मुझसे कौनसा अपराध हुआ है जो कि कृष्णमुरारी मेरी बात भी नहीं पूछते ।

(७९) जब दुष्ट ने दुष्टतापूर्ण वचन कहे तो श्रीकृष्ण को क्रोध आ गया और श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने के लिये हाथ में धनुष उठाया ।

श्रीकृष्ण और शिशुपाल के मध्य युद्ध

(८०) हकाल और लज्जकार कर परस्पर दोनों वीर भिड़ गये और खूब बाण बरसने लगे मानों वर्षा हो रही हो । तब बलिभद्र ने हल नामक आयुध लिया और रथ को चूर्ण कर हाथी पर प्रहार किया ।

(८१) शिशुपाल ने हाथ में धनुष लिया और एक साथ पचास बाण छोड़े । तब नारायण ने सौ बाणों से उनका संहार किया तो शिशुपाल ने दो सौ बाणों से प्रहार किया ।

(८२) नारायण ने चार सौ बाणों से उस पर प्रहार किया तो उसने आठ सौ बाणों से उस पर वार किया । फिर नारायण ने सोलह सौ बाण धनुष पर रख कर चलाये तो उसने बत्तीस सौ बाणों से धावा किया जिसके कारण कोई स्थान नहीं सूझ रहा था ।

(८३) इस प्रकार दोनों शक्तिशाली वीर खड़े हुये एक दूसरे पर दूने दूने बाणों से आक्रमण करते रहे । युद्ध बढ़ता ही गया बढ़ नहीं हुआ तथा बाणों से पृथ्वी आच्छादित हो गयी ।

श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध

(८४) तब नारायण ने सोचा कि धनुष बाण का अवसर नहीं है । तब हाथ में चक्र लेकर उसे घुमाया जिससे क्षण भर में ही शिशुपाल का सिर कट गया ।

(८५) शिशुपाल को मरा हुआ जानकर भीष्म राज उदास हो गया । रण में भयकर मार सही नहीं जा सकी इसलिये चतुरंगिणी सेना वहाँ से भागने लगी ।

(८६) तब रुक्मिणी ने सत्यभाव से कहा कि रूपचन्द्र और भीष्मराव की रक्षा करो । मन में वैर छोड़कर इनसे सधि करो तथा कुण्डलपुर नगर को वापिस चलो ।

(८७) तब नारायण ने कृपा करके बधे हुए भीष्मराव को छोड़ दिया । रूपचन्द्र से गले मिले और फिर अपने नगर को प्रस्थान किया ।

(१०३) श्वेत यस्त्र, उज्वल आभूषण तथा हाथों में कड़ों से सुशोभित रुक्मिणी को देवी का रूप बनाकर आले (ताक) में बैठा दिया। वह चुपचाप वहां बैठ गई और जाप करने लगी। श्रीकृष्ण वहां से चले गये।

सत्यभामा और रुक्मिणी का मिलन

(१०४) फिर सत्यभामा को जाकर भेजा और कहा मैं रुक्मिणी को वहीं बुलवा लूंगा। तुम बावड़ी के पास जाकर खड़ी रहो जिससे तुम्हें रुक्मिणी से भेंट करा दूंगा।

(१०५) सत्यभामा बहुत सी सखी सहेलियों को साथ लेकर घाटिका में गयी जहां बावड़ी थी। तब अपनी आंखों से उसे देखकर सोचा कि क्या यह कोई वनदेवी बैठी है।

(१०६) दूध और चन्द्रमा के समान श्वेत कोई जल से ही निकलकर आई हो ऐसी उस देवी के उसने पैर छूए और बोली—हे स्वामिनी ! मुझ पर कृपा करो, जिससे मुझे श्रीकृष्ण मानने लगे।

(१०७) फिर वह देवी को मनाने लगी जिससे कि रुक्मिणी पति प्रेम से वंचित हो जावे। इस तरह अनेक प्रकार से वह अपनी बात प्रकट करने लगी, उसी समय हरि उसके सम्मुख आकर हंसने लगे।

(१०८) सत्यभामा तुम्हें क्या बात लग गई है ? (तुम पागल हो गई हो क्या) बार बार क्यों पैर लग रही हो। इतनी अधिक भक्ति क्यों कर रही हो ? यह आले में (ताक) में रुक्मिणी ही तो बैठी है।

(१०९) सत्यभामा उसी समय कहने लगी मैंने इसके पैर छू लिये तो क्या हुआ। तुम बहुत कुचाल करते रहते हो, यह रुक्मिणी मेरी बहिन ही तो है।

(११०) तुम तो रात दिन ऐसे ही कुचाल किया करते हो ठीक ही है ग्यालथंश का स्वभाव कैसे जा सकता है। फिर सत्यभामा ने रुक्मिणी से कहा—चलो बहिन घर चलें।

(१११) यान (रथ) में बैठ कर वे महल में चली गईं। मय सुस्र भोगने लगे और विलास करने लगे। जब राजकाज करते कुछ दिन निश्चल गये तब दोनों रात्रियां गर्भवती हुईं।

(६४) वचनों को सुनकर हलधर वहां गये जहां नारायण बैठे हुये थे। हंस करके उन्होंने अत्यन्त विनय पूर्वक कहा कि तुमको मत्यभामा की सँभाल भी करनी चाहिये।

(६५) तब नारायण ने ऐसा किया कि रुक्मिणी का झूठा उगाल गाँठ में धांधा कर वहाँ पहुँचे जहाँ सत्यभामा का मन्दिर (महल) था।

(६६) सत्यभामा ने नेत्रों से श्रीकृष्ण को देखा और रुदन करती हुई बोली तथा अत्यन्त ईर्ष्या से भरे हुए वचन कहे कि हे कि हे स्वामी ! मुझे किस अपराध के कारण आपने छोड़ दिया है।

(६७) तब हंसकर कृष्णमुरारी बोले तथा मधुर शब्दों से उसे समझाया। फिर श्रीकृष्ण कपट निद्रा में सो गये और गाँठ को भुलाकर साट के नीचे लटका दी।

(६८) जब गठरी को भूलते हुए देखा तो सत्यभामा उठी और उसे खोला। गठरी से बहुत ही सुगंधित महक उठ रही थी। तब सुगंधित वस्तु का देखकर उसने अपने शरीर पर लगाली।

(६९) जब श्रीकृष्ण ने उसे अंग पर मलते देखा तो वे जगे और हंसकर कहने लगे यह तो रुक्मिणी का उगाल है। तुम अपने सब झूठों को गया समझो।

सत्यभामा का रुक्मिणी से मिलाने का प्रस्ताव

(१००) सत्यभामा मत्यभाव से बोली कि मुझ से रुक्मिणी को लाकर मिलाओ। तब हंसकर श्रीकृष्णमुरारी ने कहा कि वन में उमसे तुम्हारी भेंट कराऊंगा।

(१०१) नारायण उठकर महल में गये और रुक्मिणी के पास बैठ गये। और कहने लगे कि वन में बहुत सी फुलवाडियाँ हैं। चलो आज वहाँ जीमख करें।

(१०२) नारायण ने रुक्मिणी का जैसा रूप बना लिया और पालर पर चढ़कर बगीची में गये। जहाँ बागड़ी के पास अशोक वृक्ष था वहाँ रुक्मिणी को उतार दिया।

धूमकेतु द्वारा प्रद्युम्न का हरण

(१२२) छठी रात्रि का जागरण करते समय धूमकेतु वहीं आ पहुँचा। जब क्षण भर में उसका विमान ठहर गया तब धूमकेतु मन में सोचने लगा।

(१२३) विमान से उतर करके प्रद्युम्न को देखा। यह कहने लगा कि यह कौन क्षत्रिय है। उसी समय अपना पूर्व जन्म का वैर याद करके उसने कहा कि इसी ने मेरी स्त्री को हरा था।

(१२४) प्रद्युम्न रूप से उसने प्रद्युम्न को इस तरह उठा लिया जिससे नगर में किसी को पता ही न लगा। विमान में रखकर वह वहीं चला गया जहाँ वन में शिला रखी थी।

(१२५) धूमकेतु ने तब कई विचार किये कि क्या करूं। क्या इसे समुद्र में डालकर शीघ्र ही मार डालूं? इतने में ही उसने एक ५२ हाथ लम्बी शिला देखी और सोचा कि इसे इसके नीचे रख दूं जिससे ये दुःख पाकर मर जावे।

(१२६) पहिले किये हुए को कोई नहीं मेट सकता। प्रद्युम्न अपने कर्मों को भोग रहा है। उसको शिला के नीचे दबाकर वह घर चला गया। तब रुक्मिणी जहाँ सो रही थी वहाँ जगी।

(१२७) छठी रात्रि को प्रद्युम्न हर लिया गया। तब रुक्मिणी को तीव्र वेदना हुई। अरे पहिरेदार तुम शीघ्र जागो और इस तरह खूब जोर से पुकारो कि नारायण एवं हलधर सुन लें। सत्यभामा को बड़ी खुरशी हुई और उमने खूब शोर मचाया। जिसका पुत्र रात्रि को हर लिया गया था वह रुक्मिणी विलाप करने लगी।

(१२८) नगर में सूचना हो गई। यदुराज सोते हुए जाग उठे। दृष्टन कोटि यादव पुकारते हुए देखने चले तो भी उसका (प्रद्युम्न) कहीं पता नहीं चला।

त्रिद्याधर यमसंवर का भ्रमण के लिए प्रस्थान

(१२९) मेवकूट नामक एक स्थान था जहाँ यमसंवर राजा निवास करता था। जिसके पास बारह सौ त्रिद्यायें थी। तथा जिसकी कचनमाला स्त्री थी।

(१३०) उसका मन वन क्रीडा को हुआ तथा विमान पर चढ़कर अपनी स्त्री सहित गया। वे उस वन के मध्य पहुँचे जहाँ वीर प्रद्युम्न शिला के नीचे दबा हुआ था।

(१३१) वन के मध्य में रखी हुई पूरी बावन हाथ ऊंची (लंबी) शिला को देखी। वह क्षण में ऊंची तथा क्षण में नीची हो रही थी। वह विमान से उतर कर देखने लगा।

यमसंवर को प्रद्युम्न की प्राप्ति

(१३२) राजा ने विद्या के बल से शिला को उठाया। और अच्छी तरह देखा। जिसके शरीर पर बंतीस लक्षण थे तथा जो सुन्दर था ऐसे कामदेव को यमसंवर ने देखा।

(१३३) कुमार को उठाकर गोद में लिया तथा लौट कर राजा विमान में गया। कचनमाला को पट्टरानी पद देकर उसे सौंप दिया।

(१३४) अत्यन्त रूपवान और अनेकों लक्षण वाले कुमार को कचनमाला ने ले लिया। उसके समान रूप वाला अन्य कोई दिखाई नहीं देता था। वह राजा का धर्मपुत्र हो गया।

(१३५) वे विमान में चढ़कर वायु-वेग के समान शीघ्र ही (नगर में) पहुँच गये। नगर में सभी उत्सव मनाने लगे कि कचनमाला के प्रद्युम्न हुआ है।

(१३६) अत्यन्त रूपवान, गुणवान एवं लक्षणवान प्रद्युम्न सभी को प्रिय था। वह द्वितीया के चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा और इस तरह १५ वर्ष का हो गया।

प्रद्युम्न द्वारा विद्याध्ययन

(१३७) फिर वह पढ़ने के लिये उपाध्याय के पास गया तथा उसने लिखपढ़कर सब ज्ञान प्राप्त कर लिया। लक्षण इन्द्र एवं नर्क शास्त्र बहुत पढ़े तथा राजा भरत के नाट्यशास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया।

(१३८) धनुष एवं बाण-विद्या तथा सिंह के साथ युद्ध करना भी जान लिया। लड़ना, भिडना, निकलना तथा प्रवेश करने का सब ज्ञान प्रद्युम्न-कुमार को हो गया।

(१३६) प्रद्युम्न ऐसा वीर बन गया जिसके समान और कोई जानकार नहीं था। इस प्रकार वह यमसंवर के घर बंद रहा है। अब यह कथा द्वारिका जा रही है। (अब द्वारिका का वर्णन पढ़िये)

द्वितीय सर्ग

पुत्र वियोग में रुक्मिणी की दशा

(१४०) इधर द्वारिका में रुक्मिणी करुण विलाप कर रही थी। पुत्र संताप से उसका हृदय व्याकुल हो रहा था। वह प्रतिदिन रूप होती गयी एवं उदासीन रहने लगी। विवाता ने उसे ऐसी दुखी क्यों बनायी।

(१४१) कभी वह संतप्त होती थी तो कभी वह जोर से रोती थी। उसके नयनों में आंसू चहते हुये कभी थकते न थे। पूर्ण जन्म में मैंने कौनसा पाप किया था। अब मैं किसे देखकर अपने हृदय को सन्हाऊँ ?

(१४२) क्या मैंने किसी पुरुष को स्त्री से अलग किया था ? अथवा किसी वन में मैंने आग लगायी थी ? क्या मैंने किसी का नमक, तेल और घी चुरा लिया था ? यह पुत्र संताप मुझे किस कारण सं मिला है ?

(१४३) इस प्रकार जब वह रुक्मिणी संताप कर रही थी उस समय नारायण एव बलिभद्र वहां आकर बैठे और कहने लगे-हे सुन्दरि ! मन में दुखी न हो। हम बिना जाने क्या कर सकते हैं ?

(१४४) स्वर्ग और पाताल में से कोई भी यदि हमें प्रद्युम्न का पता बतादे तो वह हमसे मनचाही वस्तु प्राप्त कर सकता है। सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसे (ले जाने वाले को) मार डालेंगे तथा उसे श्मशान में से गीघ उठावेंगे।

(१४५) जब वे इस तरह उसको समझाते रहे तो वह अपने मन के खेद को मूल गयी। इस प्रकार दुखित होतं हुए कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये तब नारद ऋषि द्वारिका में आये।

रुक्मिणी के पास नारद का आगमन

(१४३) जिसका सिर मुँड़ा हुआ है तथा चोटी उड़ रही है, हाथ में कमंडलु लिये राजर्षि नारद वहां आये जहां दुःखित होकर रुक्मिणी बैठी हुई थी ।

(१४७) जब नारद को आंखों से देखा तो व्याकुल रुक्मिणी उनसे कहने लगी—हे स्वामी ! मेरे प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ था पता नहीं उसे कौन हर ले गया ?

(१४८) हाथ जोड़कर रुक्मिणी बोली कि हे स्वामी तुम्हारे प्रसाद से तो मेरे ऐमा (पुत्र) हुआ था । किन्तु पेट का दाह देकर पुत्र चला गया उसकी तलाश कीजिये ।

(१४९) नारद ने तब हसकर कहा कि प्रद्युम्न की सुधि लेने के लिये मैं अभी चला । स्वर्ग, पाताल, पृथ्वी अथवा आकाश में जहां भी होगा वहां जाकर उसे ले आऊंगा ऐसा नारदजी ने कहा ।

नारद का विदेह क्षेत्र के लिये प्रस्थान

(१५०) नारद ने रामभाकर कहा कि शीघ्र ही पूर्व विदेह जाऊंगा जहां सीमंथर स्वामी प्रधान हैं और जिनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है ।

(१५१) नारद ऋषि सीमंथर स्वामी के समवशासक में गये । वहां चक्रवर्ति को बहुत आश्चर्य हुआ । नारद से वृत्तान्त सुनकर चक्रवर्ति ने जिनेन्द्र भगवान से पूछा कि ऐसे मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं ।

सीमंथर जिनेन्द्र द्वारा प्रद्युम्न का वृत्तान्त बतलाना

(१५२) तब जिनेन्द्र ने कहा कि जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सोरठ (सौराष्ट्र) देश है । वहां जैन धर्म पूर्ण रूप से चल रहा है ।

(१५३) जहां सागर के मध्य में द्वारिका नगरी है वह ऐसी लगती है मानों इन्द्रलोक से आकर गिर पड़ी हो । जहां नारायणराय (श्रीकृष्ण) निवास करते हैं ऐसे मनुष्य वहां पैदा होते हैं ।

(१५४) उनकी रुक्मिणी रानी है जो धर्म की बात को खूब जानती है। उसके प्रद्युम्न पुत्र हुआ जिसको धूमकेतु हर कर ले गया।

(१५५) जहाँ एक वाहन हाथ लम्बी शिला थी उसके नीचे वीर प्रद्युम्न को दवा दिया। पूर्व जन्म का जो तीव्र घैर था, धूमकेतु ने उसे निकाल लिया।

(१५६) मेघकूट एक पर्वतीय प्रदेश है वहाँ विद्याधरों का राजा रहता है। बालसंवर राजा वहाँ आया और कुमार को देख कर उठा ले गया।

(१५७) वहाँ पर प्रद्युम्न अपनी उन्नति कर रहा है। इसकी किसी को खबर नहीं है। वह बारह वर्ष वहाँ रहेगा, फिर वह कुमार द्वारिका आ जावेगा।

(१५८) वचनों को सुनकर नारद मन में बड़े प्रसन्न हुये और नमस्कार कर वापिस चले गये। विमान पर चढ़कर मुनि वहाँ आये जहाँ मेटकूट पर्वत पर कामदेव प्रद्युम्नकुमार था।

(१५९) कुमार को देखकर ऋषि मन में प्रसन्न हुये तथा फिर शीघ्र ही द्वारिका चले गये। वहाँ जाकर रुक्मिणी से मिले और उसको पुत्र की सूचना दी।

(१६०) हे रुक्मिणी। हृदय में संतोष मत करो। वह प्रद्युम्न बारह वर्ष बाद आकर मिलेगा। मुझे ऐसा वचन केवली ने कहा है इसलिए प्रद्युम्न निश्चय से आकर मिलेगा।

प्रद्युम्न के आने के समय के लक्षण

(१६१) सूखे हुये आम के पेड़ तथा संवार फिर से हरे भरे हो जायेंगे। स्वर्ण-कृत्तरा जल से पूर्ण सुशोभित होने लगेंगे। कृष्ण एव वायड़ी जो पूर्ण रूप से सूख गये हैं वे स्वच्छ जल से भरे दिखाई देंगे।

(१६२) सब दूध वाले वृक्षों में फूल आ जायेंगे। जब तुम्हारे आंचल पीले पड़ जायेंगे तथा दोनों स्तनों से दूध भरने लगेगा तब वह साहसी और धीर धीर प्रद्युम्न आवेगा।

(१६३) इस प्रकार जब प्रद्युम्न के आने के लक्षण बता कर नारद मुनि वहाँ से चले गये तब रुक्मिणी के मन को सन्तोष हुआ। वह पक्ष, मास, दिन और वर्ष गिनने लगी अथ कथा का क्रम प्रद्युम्न की ओर जाता है।

तृतीय सर्ग

यमसंवर द्वारा सिंहरथ को मारने का प्रस्ताव

(१६४) वहाँ एक सिंहरथ नामका राजा रहता था उससे यमसंवर का बड़ा विरोध चलता था। यमसंवर ने उपाय सोचा कि इमको किस प्रकार समाप्त किया जावे।

(१६५) उसने पांच सौ कुमारों को बुलाया और उनसे कहा कि सिंहरथ को ललकार कर युद्ध में जोतो। जो सिंहरथ से युद्ध करने का भेद जानता है वह शीघ्र आकर युद्ध का बीज ले ले।

(१६६) कोई भी कुमार पाम नहीं आया। तब हसकर प्रद्युम्न ने बीड़ा लिया। उसने कहा कि हे स्वामी मुझ पर कृपा कीजिये। मैं रण में सिंहरथ को जीतूंगा।

(१६७) तब राजा ने सत्यभाव से कहा कि हे कुमार तुम बच्चे हो अभी तुम्हारा अवसर नहीं है। तुम अभी युद्ध के भेदों को नहीं जानते जिससे कि मैं तुमको आज्ञा दूँ।

(१६८) (प्रद्युम्न ने कहा)—वाल सूर्य आकाश में होता है लेकिन उससे कौन युद्ध कर सकता है। सर्प का बच्चा भी यदि डस ले तो उसके विष को दूर करने के लिये भी कोई मणिमंत्र नहीं है।

(१६९) निहनी चालनिह को पैदा करती है वही हाथियों के मुँह को काल के समान है। यदि यूथ को छोड़कर अर्थात् अकेलासिंह भी घन को चला जावे तो उसे कौन ललकार सकता है।

(१७०) अग्नि यदि थोड़ी भी हो तो उसका पता किमी को भी नहीं लगता। किन्तु जब वह रौद्र रूप धारण करके जलती है तो पृथ्वी को भी जलाकर भस्म कर डालती है।

(१७१) ऐसे ही यद्यपि मैं बालक हूँ किन्तु राजा का पुत्र हूँ। मुझे युद्ध करने की शीघ्र आज्ञा दीजिए। मैं रात्रुओं के दल का बटकर नाश करूंगा। यदि युद्ध से भाग जाऊँ तो आरको नजाऊंगा।

(१५२) प्रद्युम्न के वचनों को सुनकर राजा सन्तुष्ट हुआ तथा मदनकुमार पर क्रुपा की। जब यममन्वर ने उसे बीड़ा दिया तो हाथ फैलाकर प्रद्युम्न ने उसे ले लिया।

प्रद्युम्न का युद्ध भूमि के लिए प्रस्थान

(१७३) आज्ञा मिली और प्रद्युम्न चतुरगिनी सेना को मजा कर खाना हो गया। बहुत से नगारे, भेरी और तुरही बजने लगे। कोलाहल मच गया एवं उद्वलकूट होने लगी तथा ऐसा लगने लगा कि मानों मेघ ही असमय में खूब गर्जना कर रहा हो। रथ सजा लिये गये। हाथी और घोड़ों पर हौदे तथा काठियां रख दी गयीं। जब तैयार होकर प्रद्युम्न चला तो आकाश में सूर्य भी नहीं दिख रहा था।

(१७४) अब प्रद्युम्न के चरित्र को ध्यान पूर्वक सुनिये कि जिस प्रकार उसने राजा सिंहरथ को जीता।

(१७५) कुमार प्रद्युम्न ने जब प्रयाण किया तो सारे जगत ने जान लिया। आकाश में रेत उड़लने लगी। मजे हुये रथों के साथ जो वाजे बज रहे थे वे ऐसे लग रहे थे कि मानों भादों के मेघ ही गर्ज रहे हो। उसके प्रबल शत्रुओं के समूह को नष्ट करने वाले अनगिनत योद्धा चले। वे मय वीर एकत्र होकर समराङ्गण में जा पहुँचे।

(१७६) कुमार प्रद्युम्न को आता हुआ देखकर मिहरथ कहने लगा यह बालक कौन है? इस बालक को रण में किमने भेज दिया है? मुझे इसके माथ युद्ध करने में लग्जा आती है।

(१७७) बार बार में मुड़ कर राजा ने कहा कि यह इम बालक पर किस प्रकार प्रहार करे। उसको देखकर उसके हृदय में ममता उत्पन्न हुई और कहा कि हे कुमार! तुम थापिम घर चले जाओ।

प्रद्युम्न एवं सिंहरथ में युद्ध

(१७८) राजा के वचन सुनकर प्रद्युम्न प्रोथित हुआ और कहने लगा मुझ को हीन वचन कहने वाले तुम कौन हो? बालक कहने से कोई लाभ नहीं है अब मैं अन्धी तरह से तुम्हारा नारा करूंगा।

(१७६) तब राजा ने तलवार निकाली । मेघ के समान निरन्तर वाणों की वर्षा होने लगी । सुभट आपस में हाथ में तलवार लेकर भिड़ गये । रथ नष्ट हो गये और हाथी लड़ने लगे ।

(१८०) हाथियों से हाथी भिड़ गये तथा घोड़ों से घोड़े जा भिड़े । इस प्रकार उनको युद्ध करते हुये पांच दिन व्यतीत हो गये । वह युद्ध क्षेत्र शमशान बन गया और वहां गृद्ध उड़ने लगे ।

(१८१) जब सेना युद्ध करती हुई थक गयी तब दोनों वीर रण में भिड़ गये । दोनों ही वीर सावधान होकर खड़े हो गये । दोनों ही सिंह के समान जम कर लड़ने लगे ।

(१८२) वे दोनों ही वीर मलयुद्ध करने लगे तथा दोनों वीरों ने उस स्थान को अखाड़ा बना दिया । अन्त में सिंह रथ बिल्कुल हार गया और प्रद्युम्न ने उसके गले में पैर डालकर बांध लिया ।

(१८३) जब प्रद्युम्नकुमार ने विजय प्राप्त की तो उस समय देवता गण ऊपर से देख रहे थे । सिंह रथ को बांध कर जब कुमार रवाना हुआ तो (यमसंवर ने) गुणवान कामदेव को तुरन्त ही बुलवाया जिससे सज्जन लोग आनन्दित हुये । राजा भी देखकर आनन्दित हुआ और कहने लगा कि तुमने इस अवसर पर बड़ी कृपा की है । मेरे जो पांच सौ पुत्र हैं उनके ऊपर तुम राजा हो ।

(१८४) ऐसे कामदेव के चरित्र को जिसे सोलह लाभ प्राप्त हुये हैं सब कोई सुनो । विद्याधर ने कृपा कर बंधे हुये सिंह रथ राजा को छोड़ दिया और उससे पट (दुपट्टा) देकर गले मिला तथा सिंह रथ भी भेंद देकर घर चला गया ।

(१८५) कुमारों के मन में दुःख हुआ कि हमारे जीते हुये ही यह हमारा राजा हो गया । राजा को इतना मान नहीं देना चाहिये कि दत्तक पुत्र को हम पर प्रधान बना दे ।

(१८६) तब कुमारों ने मिलकर सोचा कि अब इमको समाप्त करना चाहिये । अब इसको सोलह गुफाओं को दिखाना चाहिये जिनमे हमारा राज्य निष्कण्टक हो जाये ।

कुमारों द्वारा प्रद्युम्न को १६ गुफाओं को दिखाना

(१८७) इस युक्ति को कोई प्रयत्न न करे । प्रद्युम्नकुमार को बुलाकर सब कुमारों ने मिलकर मलाह की और गलेने के पहाने से बन-

(१८८) कुमारों ने प्रद्युम्न से कहा कि हे प्रद्युम्न सुनो विजयागिरि के ऊपर जिन मन्दिर हैं जो मनुष्य उनकी पूजा करता है उसको पुण्य की प्राप्ति होती है ।

(१८९) प्रद्युम्न यह वचन सुनकर प्रसन्न हुआ और पहाड़ पर चढ़कर जिनमन्दिर को देखने लगा । परकोटे पर चढ़कर वीर प्रद्युम्न ने देखा तो एक भयंकर नाग फुकारते हुये मिला ।

(१९०) ललकार कर प्रद्युम्न नाग से भिड गया तथा पूंछ पकड़ कर उसका सिर उलटा कर दिया । उस पराक्रमी प्रद्युम्न को देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया तथा यज्ञ का रूप धारण कर खड़ा हो गया ।

(१९१) वह दोनों हाथ जोड़कर कर सत्य भाव से कहने लगा कि तुम पहिले कनकराज थे । जब तुम (कनकराज) राज्य त्याग कर तप करने चले तो मुझे अपनी सोलह विद्याएं दे गये थे ।

(१९२) (और कहा कि) कृष्ण के चर उसका अवतार होगा । तुम प्रद्युम्न को देख लेना । उस राजा की यह धरोहर है । इसलिये अपनी विद्याये सम्भाल लो ।

१६ विद्याओं के नाम

(१९३-१९६) १. हृदयावलोकनी २. मोहिनी ३. जलशोषिणी ४. रत्न-दर्शिणी ५. आकाशगामिनी ६. वायुगामिनी ७. पातालगामिनी ८. शुभदर्शिनी ९. सुधाकारिणी १०. अग्निस्थंभिणी ११. विद्यानारणी १२. घटूरुषिणी १३. जलप्रधिणी १४. गुटका १५. सिद्धिप्रकाशिका (जिसे सब कोई जानते हैं) १६. धार बांधने वाली धारा बांधिणी ये सोलह विद्यायें प्राप्त की तथा उसने अपूर्व रत्न जटित मनोहर मुकुट लाकर दिया । मुकुट सौंभ कर फिर प्रद्युम्न के चरणों में गिर गया तथा प्रद्युम्न हंसकर वहां से आगे बढ़ा । वह प्रद्युम्न वहां पहुँचा जहां पांच सौ भाई हम रहे थे ।

(१९७) उन कुमारों के पास जब प्रद्युम्न गया तो मन में उनको आश्चर्य हुआ । वे ऊपर से प्रेम प्रकट करने लगे तथा उसे लज्जा पर दूसरी गुफा दिखाई ।

(१९८) उस गुफा का नाम बाल गुफा था । बालामुर दैत्य वहां रहता था । पृथ जन्म की बात को बाल नेट मक्ता है प्रद्युम्न उससे भी जाकर भिड़ गया ।

(१६६) कुमार ने उसे ललकार कर जमीन पर गिरा दिया फिर वह हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। प्रद्युम्न के पराक्रम को देखकर वह मन में बहुत डर गया तथा छत्र चँवर लेकर उसके आगे रख दिये।

(२००) हंसकर प्रद्युम्न को सौंपते हुये किंकर वन कर उसके पैरों में गिर गया। फिर वह प्रद्युम्न आगे चला और तीसरी गुफा के पास आया।

(२०१) उस वीर ने नाग गुफा को देखा। उस साहसी तथा धैर्यशाली ने उस गुफा का निरीक्षण किया। एक भयंकर सर्प घनघोर गर्जना करता हुआ आकर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२०२) प्रद्युम्न ने मन में उपाय सोचा और वह सर्प को पकड़ कर खूब मारने लगा तब उसका अतुल बल देखकर वह शंकित हो गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

(२०३) प्रद्युम्न को बलवान जानकर चन्द्रसिंहासन लाकर सौंप दिया। नागशय्या, धौणा और पावड़ी ये तीन विद्याएं उसके सामने रख दी।

(२०४) सेना का निर्माण करने वाली, गेहकारिणी, नागपाश तथा विद्यातारिणी इन विद्याओं का उसे वहां से लाभ हुआ। फिर वहां से वह स्नान करने के लिए सरोवर पर चला गया।

(२०५) उसे स्नान करते हुये देखकर वहां के रक्षक दौड़े और कहा कि तुम कौन पुरुष हो जो मरना चाहते हो? जिस सरोवर की रक्षा करने के लिए देवता रहते हैं उस सरोवर में नहाने वाले तुम कौन हो?

(२०६) वह वीर क्रोधित होकर बोला कि आते हुये वज्र को कौन भेला सकता है? वही मुझ से युद्ध करने में समर्थ हो सकता है जी सर्प के मुख में हाथ डाल सकता है।

(२०७) अन्त में रक्षक कहने लगे कि यह भयंकर योद्धा है मानेगा नहीं। वे चुपचाप उसके मुख की ओर देखकर उसको भगर से चिन्हित एक ध्वजा दी।

(२०८) इसके पश्चात् जब वह वीर हृदय में साहस धारण कर अग्नि-कुण्ड में गया तो वहां का रहने वाला देव संतुष्ट होकर उसके पास आया और अग्नि का जिन पर प्रभाव न पड़े ऐसे कपड़े दिये।

(२०६) इनको लेकर वह वीर आगे चला और फलों वाला एक आम का वृक्ष देखा। उसके लगे हुये आम को तोड़कर खाने लगा तो वहां रहने वाला देव बदर का रूप धारण कर वहां आ पहुँचा।

(२१०) आम तोड़ने वाला तू कौन वीर है ? मेरे से आकर पहिले युद्ध करो। तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर उसके पास गया और उससे जूझकर बड़ा भारी युद्ध किया।

(२११) प्रद्युम्न ने उसे पछाड़ कर जीत लिया तो वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा और दोनों हाथों में पुष्पमाला लेकर पावड़ी की जोड़ी उसे दी।

(२१२) तब वे कामदेव को कपित्थ वन में ले गये और उसको वहां भेज कर वे खड़े रह गये। जब वह वीर वन के बीच में गया तो एक उदण्ड हाथी चिंघाड़ कर आया।

(२१३) वह हाथी विशालकाय एवं मद्गोन्मत्त था। शीघ्र ही हाथी कुमर से भिड़ गया। प्रद्युम्न ने उसको पछाड़ कर दांत और सूँड तोड़ दिये और स्वयं कंधे पर चढ़ कर उसके अंकुश लगाने लगा।

(२१४) इसके पश्चान् प्रद्युम्न को वे पावड़ी में ले गये जहां काल के समान सर्प रहता था। वह वीर उसकी धंसी पर जा कर चढ़ गया जिससे वह सर्प उममें से निकल कर प्रद्युम्न से भिड़ गया।

(२१५) यह उल्ल सर्प की पूंछ पकड़ कर फिराने लगा जिससे वह सर्प व्याकुल हो गया। उस विपथर (व्यंतर) ने प्रद्युम्न की सेवा की और काम मूँदड़ी एवं धुरी दी।

(२१६) मलयगिरि पर्वत पर जब वह गया तो आरचय से वहां सड़ा हो गया। अमरदेव वहां दौड़कर आया और अपने देह में संघात (घार) करने लगा।

(२१७) वह देव हार गया और उमकी सेवा करने लगा। उमने कंठ्य की जोड़ी लाकर सामने रख दी तथा सिरफा मुकुट और गले का हार दिया।

(२१८) वरहासेन नामक जहा गुफा थी वहां इन कुमारों ने प्रद्युम्न को भेजा। वहां कोई वृन्तर देव था जिमने क्षण भर में वराह का रूप धारण कर लिया।

(२१६) यह बराह रूप धारी देव प्रद्युम्न से भिड़ गया। प्रद्युम्न भी उसकेदांती से भिड़ गया तथा घात करने लगा। देव ने फूलों का धनुष एवं विजयशंख लाकर प्रद्युम्न को उस स्थान पर दिया।

(२२०) तब मदनकुमार उस वन में जाकर बैठ गया जहां दुष्ट जीव निवास करते थे। वन के मध्य में पहुँच कर उसने देखा कि एक वीर मनोज (विद्याधर) बधा हुआ था।

(२२१) बधे हुये वीर मनोज को उसने छोड़ दिया तथा मुड़ कर वह वन के मध्य में गया। जिस विद्याधर को प्रद्युम्न ने बांध लिया।

(२२२) फिर वह मनोज विद्याधर मन में प्रसन्न होकर मदनकुमार के पैरों पर पड़ गया। उसने हाथ जोड़ कर प्रद्युम्न से प्रार्थना की तथा इन्द्रजाल नाम की दो विद्यायें दी।

(२२३) तब वसंतराज के मन में बड़ा उत्सह हुआ। उसने अपनी कन्या विवाह में उसे दे दी। उस विद्याधर ने बहुत भक्ति की एवं उसके पैरों में गिर गया।

(२२४) जब वह वीर अर्जुन-वन में गया तब वहां एक यक्ष आ पहुँचा। उससे उसका अपूर्व युद्ध हुआ और फिर उसने कुसुम-वाण नामक बाण दिया।

(२२५) फिर वह विपुल नामक वन में गया तथा वृक्षलता के समान वह वहां खड़ा हो गया। जहां तमाल के वृक्ष थे प्रद्युम्न क्षण भर में वहां चला गया।

(२२६) उस वन के मध्य में स्फटिक शिला पर बैठी हुई एक स्त्री जाप जप रही थी। तब विद्याधर से प्रद्युम्न ने पूछा कि यह वन में रहने वाली स्त्री कौन है।

(२२७) वसंत विद्याधर ने मन में सोचकर कहा कि यह रति नाम की स्त्री है। यह अत्यन्त रूपवान एवं कमल के समान सुन्दर नेत्र वाली है, हे कुमार! आप इसके साथ विवाह कर लीजिए।

(२२८) तब प्रद्युम्न को बड़ी खुशी हुई तथा कुमार का उससे विवाह हो गया। फिर वह प्रद्युम्न बधा गया जहां उसके पांच सौ भाई खड़े थे।

(२२६) वे कुमार आपस में एक दूसरे का मुंह देख कर कहने लगे कि यह मानना पड़ता है कि यह असाधारण वीर है। हमने प्रद्युम्न को सोलह गुफाओं में भेजा किन्तु वहां भी उसे वस्त्राभरण मिले।

(२३०) प्रद्युम्न का अपार बल देख कर कुमारों ने अहवार छोड़ दिया। सब ने मिलकर उस स्थान पर सलाह की कि पुण्यवान के सब पांवों पड़ते हैं।

(२३१) भगवान् अरिहन्तदेव ने कहा है कि इम संसार में पुण्य बड़ा बलवान है। पुण्य से ही सुर असुर सेवा करते हैं। पुण्य ही सफल होता है। कहां तो उसने रुक्मिणी के उर में अवतार लिया; कहां धूमकेतु राक्षस ने उसे सिला के नीचे दबा दिया और कहां यमसंवर उसे ले गया और कनकमाला के घर बड़ा और महान् पुण्य के फल से सोलह विद्याओं का लाभ हुआ तथा सिद्धि की प्राप्ति हुई।

(२३२) पुण्य से ही पृथ्वी में राज्य-सम्पदा मिलती है। पुण्य से ही मनुष्य देव लोक में उत्पन्न होता है। पुण्य से ही अजर अमर पद मिलता है। पुण्य से ही जीव निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

प्रद्युम्न द्वारा प्राप्त सोलह विद्याओं के नाम

(२३३ से २३६) सोलह विद्याओं को उसने अपना किसी विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त कर लिया। चमर, द्यत्र, मुकुट, रत्नों से जड़ित नागशय्या, वीणा, पावड़ी, अग्निवस्त्र, विजयशंख, कौस्तुभमणि, चन्द्रसिंहासन, शेखर हार, हाथ में सुशोभित होने वाली काम मुद्रिका, पुण्य धनुष, हाथ के वंकरण, छुरी, कुसुमवाण, कानों में पहिने के लिये युगल कुण्डल, दो राजकुमारियों से विवाह, सामने आये हुये हाथी को चढ़ कर यश में करना, रत्नों के युगल वंकरण, फूलों की दो मालायें, इनके अतिरिक्त अन्य छोटी वस्तुओं को कौन गिने। इन सब को लेकर प्रद्युम्न चला।

(२३७) प्रद्युम्न शीघ्र ही अपने घर को चल दिया और क्षण भर में मेघकूट पर जा पहुँचा। वहां जाकर यमसंवर से भेंट की और विशेष भक्तिपूर्वक उसके चरणों में पड़ गया।

(२३८) राजा से भेंट करके फिर खड़ा हो गया और रणवास में भेंट करने चल दिया। कनकमाला से शीघ्र ही जाकर भेंट की और बहुत भक्तिपूर्वक उसके चरण स्पर्श किये।

कनकमाला का प्रद्युम्न पर आसक्त होना

(२३६) उस श्रेष्ठ धीर प्रद्युम्न के अत्यधिक मनोहर रूप को देखकर कामवाण ने उसके (कनकमाला के) शरीर को छेद दिया। फिर उसने दौड़कर उसे अपनी छाती से लगाया किन्तु वह छुड़ाकर चला गया।

प्रद्युम्न का मुनि के पास जाकर कारण पूछना

(२४०) प्रद्युम्न फिर वहां पहुँचा जहां उद्यान में मुनीश्वर बैठे हुये थे। उनको नमस्कार कर पूछा कि जो उचित हो सो कहिये।

(२४१) कनकमाला मेरी माता है लेकिन वह मुझे देखकर काम रस में डूब गयी। उसने अपनी मर्यादा को तोड़कर मुझे अंचल में पकड़ लिया। इसका क्या कारण है यह मैं जानना चाहता हूँ।

(२४२) तब मुनिराज ने उसी समय कहा कि मैं वही बात कहूँगा जो तुम्हारे जन्म से सम्बन्धित है। सोरठ देश में द्वारिका नगरी है वहां यदुराज निवास करते हैं।

(२४३) उनकी स्त्री रुविमणी है जिसकी प्रशंसा महीमंडल में व्याप्त है। उसके समान और कोई स्त्री नहीं है। हे मदन, वही तुम्हारी माता है।

(२४४) धूमकेतु ने तुम्हें वहां से हर लिया और शिला के नीचे दबाकर वह चला गया। यमसंवर ने तुम्हें वहां से लाकर पाला। तुम वही प्रद्युम्न हो यह अपने आपको जान लो।

(२४५) कनकमाला ने जो तुम्हें अंचल में पकड़ना चाहा था वह तो पूर्ण जन्म का सम्बन्ध है। यदि वह तुम्हारे प्रेसरस में डूबी हुई है तो छलकर उससे तीन विधायें प्राप्त करलो।

(२४६) मुनि के वचनों को सुनकर वह वहां से लौट गया तथा कनकमाला के पास जाकर बैठ गया और कहने लगा कि यदि तुम मुझे तीनों विधायें दे दो तो मैं तुम्हें प्रसन्न करने का उपाय कर सकता हूँ।

(२४७) धुमार से प्रेमरस की बात सुनकर वह प्रेम लुब्ध होकर व्याकुल हो गयी। उसने यमसंवर का कोई विचार नहीं किया और तीनों विधायें उसको दे दी।

(२४८) कुमार का मन दाँव पूरा पड़ जाने के कारण बड़ा खुश हुआ। फिर वह विद्याओं को लेकर वापिस चल दिया। (उसने कहा) मैं तुम्हारा लड़का हूँ तथा तुम मेरी माता हो। अब कोई युक्ति बतलाओ जिससे मैं तुम्हें प्रसन्न कर सकूँ।

(२४९) तब कनकमाला का हृदय बैठ गया और उसने सोचा कि मुझ से इसने कपट किया है। एक तो मेरी लज्जा चली गयी दूसरे कुमार विद्याओं को अपने हाथ लेकर चलता बना।

(२५०) कनकमाला मन में दुःखी हुई। वह सिर की कूटने एवं कुचेष्टा करने लगी। अपने ही नखों से स्तन एवं हृदय को कुचेष्ट लिया तथा केश बिखेर कर बेसुध हो गयी।

(२५१) वह रोने और पुकारने लगी तथा उसने यमसंवर को सारी बात बतलाई। तभी पाँच सौ कुमार वहाँ आये और कनकमाला के पास बैठ गये।

(२५२) कालसंवर से उसने कहा कि देखो इस दत्तक पुत्र ने क्या कार्य किया है? जिसको धर्मपुत्र करके रखा था वही मुझे बिगाड़ कर चला गया।

कालसंवर द्वारा प्रद्युम्न को मारने के लिये कुमारों को भेजना

(२५३) बचनों को सुनकर राजा उसी प्रकार प्रव्वलित हो गया मानों अग्नि में घी ही डाल दिया हो। पाँच सौ कुमारों को बुलाकर कहा कि शीघ्र जाकर प्रद्युम्न को मार डालो।

(२५४) तब कुमारों की मन की डरझा पूरी हुई। इससे राजा भी विरुद्ध हो गया। सब कुमार मिलकर इकट्ठे हो गये और वे मदन को बुलाकर वन में गए।

(२५५) तब आलोकिनी विद्या ने कहा कि हे प्रद्युम्न ! तुम असावधान क्यों हो रहे हो। यह बात मैं तुमसे सत्य कहती हूँ कि इन सबको राजा ने तुम्हें मारने भेजा है।

(२५६) तब साइसी और धीर धीर कुमार क्रुद्ध हो गया और सब कुमारों के नागपाश डाल दी। ४६६ कुमारों को आगे रख कर शिला से बांध करके लटका दिया।

(२७५) राम रावण में जो लड़ाई बढ़ी थी वह सूपनखा को लेकर ही बढ़ी। सीता को हरण करने के कारण ही लंका नष्ट हुई तथा रावण का संपूर्ण परिवार नष्ट हुआ।

(२७६) कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ और कुरुक्षेत्र में महायुद्ध टहरा। उसमें अठारह अक्षीहिणी सेना नष्ट हो गयी। उसका कारण दोनों दल द्रौपदी को बतलाते थे।

(२७७) फिर कालसंवर ने उससे कहा कि कनकमाला यह तेरा अपराध नहीं है। पुरुष कृत कर्मों को कोई नहीं भेट सकता। यही कारण है कि इन विद्याओं को प्रथम ले गया।

(२७८) अशुभ कर्म को कोई नहीं भेट सकता। सज्जन भी दैरी हो जाते हैं। हे कनकमाला ! तुम्हारा दोष नहीं है। अपने भाग्य में यही लिखा था।

गाथा

पुरुष के उल्टे दिन आने पर गुण जल जाते हैं, प्रेमी चलायमान हो जाते हैं तथा सज्जन विच्छुड जाते हैं। व्यवसाय में सिद्धि नहीं होती है।

(२७९) कालसंवर के प्रयाद में कौन बच सकता है ? फिर यह राजा वापिस मुडा और उसने अपनी चतुरंगिणी सेना को एकत्रित किया तथा दुबारा जाकर फिर लड़ने लगा।

यमसंवर एवं प्रथुमन के मध्य पुनः युद्ध

(२८०) राजा ने मन में बहुत क्रोध किया तथा धनुष चढाकर हाथ में लिया। जब उसने धनुष को टंकार की तो ऐमा लगा कि मानों पर्यत हिलने लग गये हों।

(२८१) जब दोनों धीर रण में आकर भिटे तो विमानों में चढ़े हुये देवता गण भी देखने लगे। निरन्तर बाण बरसने लगे तथा ऐमा लगने लगा कि असमय में वादल गृध गजे रदे हों।

(२८२) तब प्रथुमन घड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने नागपारा को फेंका। पूरा दल नागपारा द्वारा दृढ़ता से बांध लिया गया और राजा अवेला मड़ा रह गया।

(२८३) ऐसा करके प्रद्युम्न कहने लगा कि मैंने कालसवर की सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। जब प्रद्युम्न इस प्रकार कह रहा था तो नारद ऋषि वहां आ पहुँचे।

नारद का आगमन एवं युद्ध की समाप्ति

(२८४) प्रद्युम्न से उन्होंने कहा कि बस रहने दो। पिता और पुत्र में कैसी लड़ाई? जिस राजा ने तुम्हारी प्रतिपालना की थी उससे तुम किस प्रकार लड़ रहे हो?

(२८५) नारद ने सारी बात समझा करके कही तथा दोनों दलों की लड़ाई शान्त कर दी। कालसवर तुम्हारे लिये यह उचित नहीं है क्योंकि यह प्रद्युम्न तो श्रीकृष्ण का पुत्र है।

(२८६) नारद के वचन सुनकर मन में विचार उत्पन्न हुआ। राजा का दिल भर आया तथा उसका सिर चूम लिया। राजा को बहुत पश्चतावा हुआ कि अपनी चतुरंगिनी सेना का संहार हो गया।

(२८७) तब प्रद्युम्न ने क्रोध छोड़ दिया। मोहिनी विद्या को हटा कर मव की मूर्च्छा को उतार दिया। नागपाश को जब वापिस छुड़ा लिया तो चतुरंगिनी सेना फिर से उठ खड़ी हुई।

(२८८) सेना के उठ खड़े होने से राजा प्रसन्न हुआ तथा प्रद्युम्न के प्रति बहुत कृतज्ञता प्रकट करने लगा। नारद ऋषि ने उन्ही समय कहा कि तुम्हारी धर प्रतीक्षा हो रही है।

(२८९) यदि हमारे वचनों को मन में धारण करो तो शीघ्र ही धर की ओर मुँह करलो। वायु के वेग के समान तुम द्वारिका चलो। आज तुम्हारा विवाह है।

(२९०) प्रद्युम्न ने नारद से कहा कि तुमने सच्ची बात कही है। मुझे जो केवली भगवान ने कही थी सो मिल गयी है। तब हसकर के प्रद्युम्न बोला कि हमको कौन परणावेगा?

नारद एवं प्रद्युम्न द्वारा विद्या के श्ल विमान रचना

(२९१) नारद ने चण भर में विमान रच दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे हसी में तोड़ डाला। मुनि ने विमान को फिर जोड़ दिया किन्तु प्रद्युम्न ने उसे फिर तोड़ दिया।

(२७५) राम रावण में जो लड़ाई बड़ी थी वह सुपनखा को लेकर ही बड़ी। सीता को हरण करने के कारण ही लंका नष्ट हुई तथा रावण का संपूर्ण परिवार नष्ट हुआ।

(२७६) कौरव और पांडवों में महाभारत हुआ और कुरुक्षेत्र में महायुद्ध टहरा। उसमें अठारह अर्द्धाहिणी सेना नष्ट हो गयी। उसका कारण दोनों दल द्रौपदी को बतलाते थे।

(२७७) फिर कालसंवर ने उससे कहा कि कनकमाला यह तेरा अपराध नहीं है। पूर्व कृत कर्मों को कोई नहीं भेट सकता। यही कारण है कि इन विद्याओं को प्रथम ले गया।

(२७८) अशुभ कर्म को कोई नहीं भेट सकता। सज्जन भी दैरी हो जाते हैं। हे कनकमाला ! तुम्हारा दोष नहीं है। अपने भाग्य में यही लिखा था।

गाथा

पुरुष के उल्टे दिन आने पर गुण जल जाते हैं, प्रेमी खलायमान हो जाते हैं तथा सज्जन विश्रुद्ध जाते हैं। व्यवसाय में सिद्धि नहीं होती है।

(२७९) कालसंवर के प्रवाह में कौन बच सकता है ? फिर वह राजा वापिस मुड़ा और उसने अपनी चतुरंगिणी सेना को एकत्रित किया तथा दुबारा जाकर फिर लड़ने लगा।

यमसंवर एवं प्रथम के मध्य पुनः युद्ध

(२८०) राजा ने मन में बहुत क्रोध किया तथा धनुष चढाकर हाथ में लिया। जब उसने धनुष को टंकार की तो ऐसा लगा कि मानों पर्वत हिलने लग गये हों।

(२८१) जब दोनों धीर रण में आकर भिड़ें तो विमानों में चढ़े हुये देवता गण भी देखने लगे। निरन्तर बाण बरसने लगे तथा ऐसा लगने लगा कि अस्मय में बादल खूब गर्ज रहे हों।

(२८२) तब प्रथम बड़ा क्रोधित हुआ तथा उसने नागपारा को फेंका। पूरा दल नागपारा द्वारा दृढ़ता से बांध लिया गया और राजा अकेला खड़ा रह गया।

(३१२) जिसकी ध्वजा पर विद्याधर का चिन्ह है जहां ब्राह्मण बैठे गये पढ रहे हैं तथा जहां बहुत कोलाहल हो रहा है वह सत्यभामा है ।

(३१३) जिस महल पर सोने की मालायें चमक रही हैं जिस पर फहरा रही हैं, जिसके चारों ओर भरकत मणियां चमक रही हैं वह राजा का महल है ।

बनों को सुनकर प्रथमन जिसके कि चरित्र को कौन जानता था । विमान से उतर करके वह खड़ा हो गया और

(३१३) तब महिला ने कहा कि जो हमारे पास है उसे दे दो और भोजन ! तुम और क्या मांग रहे हो ?

नकुमार को आते हुये देखना

(३१४) उम भील कीर ने कहा कि मैं सुसज्जित उसने भानुकुमार को आते आगे तुमको मार्ग दूँ । महिलाओं ने कहा कि यह पृथ्वा कि यह कोलाहल के साथ कहना तुम्हें प्रचित नहीं है ।

(३१५) महिलाओं के वाक्यों को सुनकर प्रथमन ने विचार करके कहती हूँ । यह कि मैं नारायण का पुत्र हूँ इन वाक्यों से तुम को पता चलेगा कि यह पृथ्वा है जिसका विवाह है । इसी माला को मुझे दे दो ।

(३१६) महिला ने कहा कि हे नकुमार तुम कह रहे हो कि मैं पृथ्वा ब्राह्मण हूँ । जो तीन गंड पृथ्वी का राजा है क्या उसके पुत्र को पता चलेगा कि मैं इसकी अच्छी जान तथा मायामयी

(३१७) तब वे भीये मार्ग को छोड़कर उठे गये माला के लिये । प्रथमन ने कोडी (४०) भील मिल गये । मयाक का वंश प्रथमन है । प्रथमन ने कहा कि यदि मैं कन्या को बल पृथ्वी द्यौज लूँ तो मेरा नाम प्रथमन

प्रथमन द्वारा उदधिमाला को बन्धन करने से प्रथमन ने उमने कुमारी को द्यौज लिया और मुझ करके प्रथमन का प्रेमकर वह कुमारी मन से बहुत ही कोर प्रथमन

ना रहा था । चार अंगुल बसकी देखा कि

प्रथमन के माय मयाई हुई फिर भानुकुमार के नाम से प्रथमन को पता चलेगा कि मैं प्रथमन हूँ । हे नकुमार मेरी जान सुनो प्रथमन

(३१०) उद्धिमाला ने कहा अथ मुझे पञ्च परमेष्ठियों की शरण है । यदि मृत्यु न होगी तो मैं मन्याम ले लूंगी । तब नारद के मन में सदेह हुआ कि इमने बहुत बुरी बात कही है ।

(३११) नारद ने उमी ममय कहा कि यह कामदेव अपनी कलाएँ दिखा रहा है । तब प्रद्युम्न ने बत्तीन लक्षण वाले एवं स्वर्ण के समान प्रतिभा वाले शरीर को धारण कर लिया और जिससे उसका शरीर कामदेव के समान हो गया ।

(३१२) उस सुन्दरी उद्धिमाला को समझा कर वे विमान से शीघ्र चलने लगे । विमान के चलने में देर नहीं लगी और वे द्वारिका के बाहर पहुँच गये ।

(३१३) नगर को देखकर प्रद्युम्न बोले कि जो मोतियों और रत्नों से चमक रही है, धन धान्य एवं स्वर्ण से भरी हुई है । हे नारद ! यह कौनसी नगरी है ?

नारद द्वारा द्वारिका नगरी का वर्णन

(३१४) नारद ने कहा कि हे प्रद्युम्न मुनो यह द्वारिकापुरी है जो सागर के मध्य में दृढ़ता से बसी हुई है यह तुम्हारी जन्मभूमि है । शुद्ध स्फटिक मणियों से जड़ी हुयी उज्वल है । कूवे, बावड़ी तथा सुन्दर भवन, बहुत प्रकार के जिनेन्द्र भगवान के मन्दिर, चारों ओर परकोट एवं दरवाजे से वेष्टित यह द्वारिका नगरी है ।

(३१५) यह सुनकर वीर प्रद्युम्न ने कहा कि हे नारद मेरे वचन मुनो । मुझे स्पष्ट कहो तथा शुद्ध भी मत द्विपाथो । हे प्रद्युम्न ध्यान पूर्वक देखो जो जिसका महल है (यह मैं तुमको बताना हूँ ।)

(३१६) नगर मध्य जो श्वेत वर्ण वाला एवं पाँचों धरों की मणियों से जड़ा हुआ तथा सुन्दर महल है जिस पर गरुड़ की ध्वजा अत्यन्त सुशीभित है यह नारायण का महल है ।

(३१७) जिसके चारों ओर सिंह ध्वजा हिल रही है उसे बलभद्र का महल जानो । जिसकी ध्वजा में मेंटे का चिन्ह है यह वसुदेव का महल है ।

(३१८) जिसकी ध्वजा पर विद्याधर का चिन्ह है जहाँ ब्राह्मण घैटे हुये पुराण पढ रहे हैं तथा जहाँ बहुत कोलाहल हो रहा है वह सत्यभामा का महल है ।

(३१९) जिस महल पर सोने की मालायें चमक रही हैं जिस पर बहुत सी ध्वजायें फहरा रही हैं, जिसके चारों ओर मरकत मणियाँ चमक रही हैं वह तुम्हारी माता का महल है ।

(३२०) इन वचनों को सुनकर प्रद्युम्न जिसके कि चरित्र को कौन नहीं जानता बड़ा हर्षित हुआ। विमान से उतर करके वह खड़ा हो गया और नगर में चल दिया ।

प्रद्युम्न का भानुकुमार को आते हुये देखना

(३२१) चतुरंगिणी सेना से सुसज्जित उसने भानुकुमार को आते हुए देखा। तब प्रद्युम्न ने विद्या से पूछा कि यह कोलाहल के साथ कौन आ रहा है ?

(३२२) हे प्रद्युम्न ! सुनो मैं तुम्हें विचार करके कहती हूँ। यह नारायण का पुत्र भानुकुमार है। यह वही कुमार है जिसका विवाह है। इसी कारण नगर में बहुत उत्सव हो रहा है ।

प्रद्युम्न का मायामयी घोड़ा बनाकर वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण करना

(३२३) वहाँ प्रद्युम्न ने मन में ठपाय सोचा कि मैं इसको अच्छी तरह पराजित करूँगा। उसने एक वृद्धे विप्र का भेष बना लिया तथा मायामयी चंचल घोड़ा भी बना लिया ।

(३२४) वह घोड़ा धड़ा चंचल था तथा तौर से दिनदिना रहा था। जिसके चारों पांव उज्ज्वल एवं धुले हुये दिखते थे। जिसके चार चार अंगुल के कान थे। जो लगाम के इशारे को पहिचानता था ।

(३२५) जिस पर स्वर्ण की काठी रखी हुई थी। वह ब्राह्मण ढमकी लगाम पकड़ करके आगे चल रहा था। अकेले भानुकुमार ने ढमकी देखा कि ब्राह्मण वृद्ध है किन्तु घोड़ा सुन्दर है ।

(३२६) घोड़े को देखाकर भानुकुमार के मनमें यह आया कि चल कर ब्राह्मण से पूछना चाहिये। फिर उसने ब्राह्मण से पूछा कि यह घोड़ा लेकर वहाँ जाओगे ?

(३२७) ब्राह्मण ने कहा कि घोड़ा अपना है। समंद जाति का ताजी बलस घोड़ा है। भानुकुमार का नाम सुन कर मैं घोड़े को उनके यहाँ लाया हूँ।

(३२८) भानुकुमार के मन में विचार हुआ और उसने ब्राह्मण की बहुत प्रसन्न करना चाहा। हे विप्र सुनो ! मैं कहता हूँ कि तुम जो भी इसका मोल मांगोगे वही मैं तुमको दे दूंगा।

(३२९) तब विप्र ने सत्यभाव से जो कुछ मांगा वह भानुकुमार के मन को अन्धा नहीं लगा। भानुकुमार बहुत दुखी हुआ कि इम विप्र ने मेरा मान भंग किया है।

(३३०) विप्र ने भानुकुमार को कहा कि मैंने तो मांग लिया है यदि तुम उतना नहीं दे सकते हो तो न देखो। मैंने तो तुमसे सत्य कह दिया। यदि इसे हंसी समझते हो तो इसे दौड़ा करके देख लो।

भानुकुमार का घोड़े पर चढ़ना

(३३१) ब्राह्मण के वचन सुन कर कुमार (भानु) मन में प्रसन्न हुआ और घोड़े पर चढ़ गया। लेकिन वह उस घोड़े को सम्हाल नहीं सका और उस घोड़े ने भानुकुमार को गिरा दिया।

(३३२) भानुकुमार गिर गया यह बड़ी विचित्र बात हुई इमसे मभा में उपस्थित लोगों ने उसकी हंसी की। वे कहने लगे यह नारायण का पुत्र है और इसके बराबर कोई दूसरा सवार नहीं है।

(३३३) विप्र ने कहा कि तुम क्यों चढ़े ? इन तरुण से तो इम धृद्ध ही अच्छे हैं। मैं बहुत दूर से आशा करके आया था किंतु हे भानुकुमार ! तुमने मुझे निराश कर दिया।

(३३४) हलधर ने विप्र से कहा बरो मत। तुम ही इस घोड़े पर क्यों नहीं चढ़ते हो ? हे ब्राह्मण यदि तुम इसका ठहराव (बेचना) चाहते हो तो अपना कुद्ध पुरुपार्थ दिखलाओ।

प्रद्युम्न का घोड़े पर सवार होना

(३३५) कुमार ने दस बीस लोगों को ब्राह्मण को घोड़े पर चढ़ाने के लिये भेजा तब ब्राह्मण बहुत भारी हो गया और उनके सरकाने से भी नहीं सरका।

(३३६) तब ब्राह्मण को घोड़े पर चढ़ाने के लिये भानुकुमार आया । लेकिन वह लटक गया और उसे चढ़ा नहीं सका । जब दस बीस ने जोर लगाया तो वह भानुकुमार के गले पर पाँव रख कर चढ़ गया ।

(३३७) जब ब्राह्मण घोड़े पर सवार हुआ तो वह घोड़ा आकाश में घूमने लगा । सभा के लोगों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि यह तो उसका चमत्कार ही है कि वह ऊपर उड़ गया ।

प्रद्युम्न का मायामयी दो घोड़े लेकर उद्यान पहुँचना

(३३८) फिर उसने अपना रूप बदल लिया और दो घोड़े पैदा कर लिये । राजा का जहाँ उद्यान था वहाँ वह घोड़ों को लेकर पहुँच गया ।

(३३९) जब प्रद्युम्न उस उद्यान में पहुँचा तो वहाँ के रक्षक क्रोधित होकर उठे और कहा कि इस उद्यान में कोई नहीं चरा सकता । यदि घास का डोंगो तो फिरकिरी होगी ।

(३४०) प्रद्युम्न ने अपने क्रोधित मन को बड़ी कठिनता से सम्हाला और रखवालों से ललकार करके कहा, भूखे घोड़ों को क्यों नहीं चरने देते हो । घास का कुछ मुझ से मोल ले लेना ।

(३४१) तब उनकी बुद्धि फिर गई और उनको प्रद्युम्न ने काम मूँदड़ी उतार कर दे दी । रखवाले हँसकर के बोले कि दोनों घोड़े अच्छी तरह चर लें ।

(३४२) घोड़े फिर फिर के उद्यान में चरने लगे और नीचे की मिट्टी को खोद कर ऊपर करने लगे । तब रख वाले छाती छूटने लगे कि इन दोनों घोड़ों ने तो उद्यान को चौपट कर दिया ।

(३४३) उन्होंने वह काम मूँदड़ी प्रद्युम्न को लौटा दी जिसको उसने अपने हाथ में पहनली । तब वह वीर वहाँ पहुँचा जहाँ सत्यभामा की यात्री थी ।

(३४४) प्रद्युम्न वाड़ी में पहुँचा तो उस स्थान पर बहुत से वृक्ष दिखायी दिये । वे कवच के लगे हुए थे यह कोई नहीं जानता था । फुलवारी विविध प्रकार से खिली हुई थी ।

उद्यान में लगे हुये विभिन्न वृक्ष एवं पुष्पों का वर्णन

(३४५) जिसमें चमेली, जुही, पाटल, कचनार, मोलश्री की बेल थी। कणवीर का कुंज महक रहा था। केवड़ा और चंपा खूब खिले हुये थे।

(३४६) जहां कुंद, अगर, मंदार सिन्दूर एवं सरीप आदि के पुष्प महक रहे थे। मरुवा एवं केलि के सैकड़ों पौधे थे तथा उस बगीचे में कितने ही नीबुओं के वृक्ष सुगंध फैला रहे थे।

(३४७) आम जंभीर एवं मदाफल के बहुत से पेड़ थे। तथा जहां बहुत से दाडिम के वृक्ष थे। केला, दाख, विजौरा, नारंगी, करणा एवं खीप के कितने ही वृक्ष लगे हुए थे।

(३४८) पिंडखजूर, लोंग, छुहारा, दाख, नारियल एवं पीपल आदि के असंख्य वृक्ष थे। यह वन वैध एवं आवलों के वृक्षों से युक्त था।

प्रद्युम्न का दो मायामयी बन्दर रचना

(३४९) इस प्रकार की बाड़ी देख कर उस धीर को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने धैर्य और माइस पूर्वक विचार कर के दो बंदरों को उत्पन्न किया जिनको कोई भी न जान सका।

(३५०) फिर उसने दोनों बंदरों को छोड़ दिया जिन्होंने सारी बाड़ी को खा डाला। जो फूलबाड़ी अनेक प्रकार से फूली हुई थी उसे उन बंदरों ने नष्ट कर डाला।

(३५१) फिर उन बंदरों को मुड़ा कर दूसरी ओर भेजा जिन्होंने वहां के सब वृक्ष तोड़ डाले। फूलबाड़ी का सहार करके सारी बाटिका को चौपट कर दिया।

(३५२) जिस प्रकार हनुमान ने लका की दशा की थी वैसे ही उन दोनों बंदरों ने बाड़ी की हालत कर दी। तब माली ने जहां भानुकुमार बैठा हुआ था वहां जाकर पुकार की।

(३५३) माली ने हाथ जोड़कर कहा कि हे स्वामी मुझे दोष मत देना। दो बन्दर वहां आकर बैठे हैं जिन्होंने सारी बाड़ी को खा डाला है।

(३५४) ज्यों ही माली ने पुकार की, भानुकुमार हथियार लेकर रथ पर चढ़ गया तथा पवन के समान वहां दौड़ करके आया जहां वन्दरों ने बाड़ी को चौपट कर दिया था।

प्रद्युम्न द्वारा मायामयी मच्छर की रचना

(३५५) तब प्रद्युम्न ने एक मायामयी मच्छर की रचना की। जहां भानुकुमार था उस स्थान पर उसे भेज दिया। मच्छर के काटने से भानुकुमार वहां से भाग गया।

(३५६) भानुकुमार भाग करके अपने मन्दिर में चला गया। उस समय दिन का एक पहर बीत गया था। प्रद्युम्न को बहुत सी स्त्रियां मिली जो भानुकुमार के तेल चढ़ाने जा रही थीं।

प्रद्युम्न द्वारा मंगल गीत गाती हुई स्त्रियों के मध्य विघ्न पैदा करना

(३५७) तेल चढ़ा करके उन्होंने शृंगार किया और वे भले मंगल गीत गाने लगीं। कुमार रथ पर चढ़ा तथा स्त्रियां खड़ी हो गईं और फिर कुम्हार के यहां (चाक) पूजने गईं।

(३५८) तब प्रद्युम्न ने एक कौतुक किया और रथ में एक घोड़ा और एक ऊंट जोत कर चल दिया। ऊंट और घोड़ा अरड़ा करके उठे और भानुकुमार को गिरा कर घर की ओर भाग गये।

(३५९) भानुकुमार के गिरने पर वे स्त्रियां रोने लगीं तथा जो गाती हुई आयी थीं वे रोती हुई चली गयीं। जब ऊंट और घोड़ा अरड़ा कर उठे उससे बड़ा अपशकुन हुआ जिसको कहा नहीं जा सकता।

प्रद्युम्न का वृद्ध ब्राह्मण का भेष बनाकर सत्यभामा की दावड़ी पर पहुँचना

(३६०) फिर प्रद्युम्न ने ब्राह्मण का रूप धारण कर लिया और धोती पहिन कर कमंडलु हाथ में ले लिया। स्वाभाविक रूप से लकड़ी टेकता हुआ चलने लगा और कुछ देर पश्चान् दावड़ी पर जा पहुँचा।

(३६१) वहां जाकर वह खड़ा हो गया जहां सत्यभामा की दासी खड़ी थी। वह कहने लगा कि भूते ब्राह्मण को जिमाओ तथा जल पीने के लिये कमंडलु को भर दो।

(३६२) उसी क्षण दामी ने कहा कि यह सत्यभामा की वावड़ी है यहां कोई पुरुष नहीं आ सकता है। हे मूर्ख ब्राह्मण तुम यहां कैसे आ गये ?

(३६३) तब ब्राह्मण उन्ही समय क्रोधित हो गया। उसने किसी का सिर मूंड लिया, किसी का नाक और किसी के कान काट लिये। फिर उसने वावड़ी में प्रवेश किया।

विद्या बल से वावड़ी का जल सोखना

(३६४) उसने अपनी बुद्धि से कोई उपाय सोचा और जल सोपिणी विद्या को स्मरण किया। वह ब्राह्मण कर्मंडलु को भर कर बाहर निकल आया जिससे वावड़ी सूख कर रीती हो गई।

कर्मंडलु से जल को गिरा देना

(३६५) वावड़ी को सूखी देख कर स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह ब्राह्मण बाजार के चौराहे पर चला गया। दासी ने दौड़ करके उसका हाथ पकड़ लिया जिससे कर्मंडलु फूट गया और उसका जल नदी के समान बहने लगा।

(३६६) पानी से बाजार डूब गया और व्यापारी लोग पानी र चिल्लाने लगे। नगर के लोगों के लिए एक कौतुक करके वह वहां से चल दिया।

प्रद्युम्न का मायामयी मेंढा बनाकर वसुदेव के महल में जाना

(३६७) फिर उस प्रद्युम्न ने मन में सोचा और उसने एक मायामयी मेंढा बना लिया। उसे वह वसुदेव के महल पर लेकर पहुँचा। तब काठीया (पहरेदार) ने जाकर सूचना दी।

(३६८) वसुदेव ने प्रसन्नता से उससे कहा कि उसे शीघ्र ही भीतर बुलाओ। काठीया ने जाकर सन्देश कहा और वह मेंढा लेकर भीतर चला गया।

(३६९) उसने मेंढे को बिना शका के खड़ा कर दिया। राजा ने हंस कर अपनी टांग आगे कर दी। तब प्रद्युम्न ने कहा कि इस प्रकार टांग फैलाने का क्या कारण है ?

(३५०) प्रद्युम्न ने हंम कर कहा कि मैं परदेशी ब्राह्मण हूँ। हे देव। यदि तुम्हारी टाँग में पीड़ा हो जावेगी तो मैं कैसे जीवित बचूंगा।

(३५१) फिर वसुदेव ने हंसकर उससे यह बात कही कि तुम्हारा दोष नहीं है तुम अपने मन में शंका मत करो। मेरी टाँग कैसे टूट जावेगी!

(३५२) तब उसने मंटे को छोड़ दिया। सभा के देखते देखते उसने वसुदेव की टाँग तोड़ दी। टाँग तोड़ कर मैदा चापिस आ गया और वसुदेव राजा भूमि पर गिर पड़े।

(३५३) जब वसुदेव भूमि पर गिर पड़े तो छप्पन कोटि यादव हँसने लगे। फिर वह उस पूरी सभा को हसा करके सत्यभामा के घर की ओर चल दिया।

प्रद्युम्न का ब्राह्मण का भेष धारण कर सत्यभामा के महल में जाना

(३५४) पीली घोवती तथा जनेठ पहिन कर चन्दन के बारह तिलक लगाये। चारों वेदों का जोर से पाठ पढ़ता हुआ वह ब्राह्मण पटरानी के घर पर जा पहुँचा।

(३५५) वह सिंह द्वार पर जाकर खड़ा हो गया तो द्वारपाल ने अन्दर जा कर सूचना दी। सत्यभामा ने अपने अन्य ब्राह्मणों को (वेद पाठ आदि क्रियाओं से) रोक दिया।

(३५६) सत्यभामा ने जब उसको पढ़ता हुआ सुना तो उसके हृदय में भाव उत्पन्न हुआ और उसको अन्दर बुला लिया। जब रानी का बुलावा आया तो वह लवड़ी टेकता हुआ भीतर चला गया।

(३५७) हाथ में अक्षत एवं जल लेकर रानी को उसने आर्शीवाद् दिया। रानी प्रसन्न होकर कहने लगी कि हे विप्र! कृपा करो और जिस वस्तु पर तुम्हारा भाव हो वही मांग लो।

(३५८) फिर सिर हिलाने हुये ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारी बौली सच्ची हो। मैं तुमसे एक ही सार बात कहता हूँ कि भूखे ब्राह्मण को भोजन दो।

(३५९) रानी ने पटायत से कहा कि यह भूखा खड़ा चिल्ला रहा है। इसे अपनी रसोईघर में ले जाओ और जो भी मांगे वही खिलादो।

(३८०) उसने वहां एकत्रित अन्य ब्राह्मणों से कहा कि तुम बहुत से हो और मैं अकेला हूँ। वेद और पुराण में जिसको अच्छा बतलाया गया है उस एक उत्तम आहार को तुम बतलाओ।

(३८१) वहां ब्राह्मणों को लड़ते हुये देख कर सत्यभामा ने कहा कि अरे तुम व्यर्थ ही क्यों लड़ रहे हो। एक तो तुम एक दूसरे के ऊपर बैठे हो और फिर आरस में लड़ने हो ?

(३८२) अथ प्रद्युम्न की बात सुनो। उसने अपनी जुम्हरी विद्या को भेजा जिससे ब्राह्मण आपस में लड़ने लगे तथा एक दूसरे का सिर फोड़ने लगे।

(३८३) रानी ने बात समझा करके कहा कि इन लड़ने वालों को चायु लग गई है जो दूर हो जावे उसे भोजन डाल दो नहीं तो उसे बाहर निकाल दो।

(३८४) तब प्रद्युम्न ने कहा कि भूखे साधुओं की भूख शान्त कर दो। सुनो हमें भूख लग रही है हमको एक मुट्ठी आहार दे दो।

(३८५) सत्यभामा ने तब क्या किया कि एक स्वर्ण थाल उसके आगे रख दिया। हे ब्राह्मण ! बैठ कर भोजन करो तथा उनकी सब बातों की ओर ध्यान मत दो।

(३८६) वह ब्राह्मण अर्द्धासन मार कर बैठ गया और अपने आगे उसने चौका लगाया। हाथ धोने के लिये लौटा दिया। थाल परोस दिया तथा नमक रख दिया।

प्रद्युम्न का सभी भोजन का खा जाना

(३८७) चौरासी प्रकार के बनाये हुये बहुत से व्यञ्जन उसने परोसे। बड़े बड़े थाल के थाल परोस दिये और वह एक ही ग्राम में सबको खा गया।

(३८८) चावल परोसे तो चावल खा गया। स्वयं रानी भी वहां आकर बैठ गयी। जितना सामान परोसा था वह सब खा गया। बड़ी कठिनता से वह पत्तल घची।

(३८९) उस ब्राह्मण ने कहा कि हे रानी सुनो। मेरे पेट में अधिक ज्वाला उत्पन्न हुई है। उन लोगों को परोसना छोड़ कर मेरे आगे लाकर सामान डाल दो।

(३६०) जितने लोग जीमन के लिये आमंत्रित थे उन सबका भोजन उस ब्राह्मण को परोस दिया गया। नारायण के लिये जो लड्डू अलग रखे हुये थे वे भी उसने खा लिये।

(३६१) तब रानी मन में बड़ी चिन्ता करने लगी कि इसने तो सभी रसोई खा डाली है। यह ब्राह्मण तो श्रव भी तृप्त नहीं हुआ है और भूखा भवा कह कर चिल्ला रहा है।

(३६२) उस वीर ने कहा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि तूने नगर के सब लोगों को निमंत्रित किया है। वे आकर क्या जीमेंगे। तू एक ब्राह्मण को भी तृप्त नहीं कर सकी।

(३६३) रानी के चित्त में विचार पैदा हुआ कि श्रव इसको कहां से क्या लाकर परोसूंगी श्रव भूये ब्राह्मण ने क्या किया कि अपने मुंह में अंगुली डाल कर उल्टी कर दी।

(३६४) उस ब्राह्मण ने क्या कौतुक किया कि सब खाली बर्तनों को उल्टी से भर दिया। इस प्रकार वह रानी का मान भंग करके यहां से सड़ा हो गया।

प्रद्युम्न का विकृत रूप धारण बनाकर रुक्मिणी के घर पहुँचना

(३६५) मूँड मुँडा कर तथा कमंडलु हाथ में लेकर भुक्त हुआ वह दुबड़ा बन गया। यह वहाँ से लौटा। उसके बड़े बड़े दांत थे तथा बुरूप देह थी। यह अपनी माता के महल की ओर चला।

(३६६) रुक्मिणी क्षण क्षण में अपने महल पर चढ़नी थी और क्षण क्षण में वह चारों ओर देख रही थी कि मुझ से नारद ने यह पाग कही थी कि आज तेरे घर पुत्र आवेगा।

(३६७) मुनि ने जिन जिन बातों को कही थी वे सब चिन्ह पूरे हो रहे हैं। मनोहर आम्र के वृक्ष पत्ते हुये देंगे तथा उमग्र आंचल पीना दिगाई देने लगा।

(३६८) मूनी पावही नीर मे भर गयी। दोनों स्तनों में दूध भर आया तब रुक्मिणी के मन में आश्चर्य हुआ इतने ही में एक मासपारी वहाँ पहुँचा।

(३६६) तब रुक्मिणी ने नमस्कार किया तथा उस खोड़े ने धर्म वृद्धि हो ऐसा कहा। विनय पूर्वक उसने उस ब्रह्मचारी का आदर किया तथा स्वर्ण सिंहासन बैठने के लिये दिया।

(४००) रुक्मिणी ने तो समझा करके क्षेमकुशल पूछा किन्तु वह भूखा भूखा चिल्लाता रहा। रुक्मिणी ने अपनी नखी को बुलाकर सध बात बता दी तथा इसका जीमन कराओ और कुछ भी देर मत लगाओ ऐसा कहा।

(४०१) तत्काल वह जीमन कराने के लिये उठी तो प्रद्युम्न ने अग्नि स्तंभिनी विद्या को याद किया। उभ कारण न तो भोजन ही पक सका और चूल्हा धुआँ धार हो गया तथा वह भून्वा भून्वा चिल्लाता रहा।

(४०२) मैं सत्यभामा के घर गया था लेकिन वहाँ भी खाना नहीं मिला तथा उल्टा भूखा रह गया। जो दिया वह भी छीन लिया। इस प्रकार मेरे तीन लंघन हो गये हैं।

(४०३) रुक्मिणी ने चित्त में मोचा और उसको लड्डू लाकर परोस दिये। एक मास तक खाने के लिये जो लड्डू रखे हुये थे वे भय कुपड़े रूप धारी प्रद्युम्न ने खा लिये।

(४०४) जिस आधे लड्डू को खा लेने पर नारायण पांच दिन तक वृप्त रहते थे। तब रुक्मिणी ने मन में विचारा कि कुछ कुछ समझ में आता है कि यही वह है अर्थात् मेरा पुत्र है।

(४०५) तब रानी के मन में आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार का पुत्र किस घर में रह सकता है। ऐसा पुत्र उत्पन्न हो सकता है यह कहा नहीं जा सकता। नारायण को कैसे विश्वास कराया जाय।

(४०६) तब रुक्मिणी के मन में सदेह पैदा हुआ कि यह कालसंधर के घर बड़ा हुआ है वहाँ उसने कितनी ही विद्याएँ सीख ली है यह उसी विद्या बल का प्रभाव है।

(४०७) यह विचार कर रुक्मिणी ने उससे पूछा कि हे महाराज आरका स्थान कौनसा है। आपका आगमन कहाँ से हुआ है तथा किस गुरु ने आपको दीक्षा दी है।

(४०८) आपकी कौनसी जन्मभूमि है तथा माता पिता के सम्बन्ध में मुझे प्रकाश बालिये । फिर उसने विनय के साथ पूछा कि आपने यह व्रत किस कारण ले रखा है ?

(४०९) तब यह क्रोधित होकर बोला कि बाह्य गुरु के देखने से क्या होगा । गोत्र नाम तो उससे पूछा जाता है जिसका विवाह मंगल होने वाला होता है ।

(४१०) हम परदेशी हैं देश देशान्तर में फिरते रहते हैं । भिक्षा मांग करके भोजन करते हैं । तू प्रसन्न होकर हमको क्या दे देगी और रुठ जाने पर हमारा क्या ले लेगी ।

(४११) जब वह खोडा क्रोधित हुआ तो उससे रुक्मिणी मन में उदास हो गयी । वह हाथ जोड़कर उसे मनाने लगी । मेरी भूल हो गयी थी आप दौप मत दीजिये ।

(४१२) तब प्रद्युम्न ने उस समय कहा कि हे माता मुझे मन से क्यों भूल गयी हो । मुझे सच्चा प्रद्युम्न समझो तथा मैं पूछूँ जिसका जवाब दो ।

(४१३) तब मन में प्रसन्न होकर उसने (रुक्मिणी) जिस प्रकार अपना विवाह हुआ था तथा जिस प्रकार प्रद्युम्न हर लिया गया था सारा पीछे का कथान्तर कहा ।

(४१४) उसे धूमकेतु हर ले गया था फिर उसे यमसंवर घर ले गया । मुझे यह सब बात नारद ने कही थी तथा कहा था कि आज तुम्हारा पुत्र घर आवेगा ।

(४१५) श्रीर जो मुनि ने वचन कहे थे उसके अनुसार सब चिह्न पूरे हो रहे हैं । लेकिन अब भी पुत्र नहीं आवे तो मेरा मन दुःखित हो जावेगा ।

(४१६) सत्यभामा के घर पर बहुत उत्सव हो रहा है क्योंकि आज भानुकुमार का विवाह है । मैं आज होड़ में हर गयी हूँ तथा कार्य की मिद्धि नहीं हुई है । इसी कारण मेरा मस्तक आज मूँडा जावेगा ।

(४१७) प्रद्युम्न माता के पास पूरी कथा सुनकर हाथ से पकड़ कर अपना माया धुना । मन में पड़तावा मत करो तथा मुझे ही तुम अपना पुत्र मिला हुआ जान लो ।

(४१८) उसी समय प्रद्युम्न ने विचार किया और बहु रूपिणी विद्या को स्मरण किया। अपनी माता को उसने थोमल कर दिया और दूसरी मायामयी रुक्मिणी बना दी।

सत्यभामा की स्त्रियों का रुक्मिणी के केश उतारने के लिये आना

(४१९) इतने में सत्यभामा की ओर से बहुत सी स्त्रियां मिल कर तथा नाई को साथ लेकर चली और जहां मायामयी रुक्मिणी थी वहां वे आ पहुँची।

(४२०) पाँच पडकर उससे निवेदन किया कि उन्हें सत्यभामा ने उसके पास भेजी हैं। हे स्वामिनी तुझ अपने मन में हीनतामत लाओ तथा भंवरों के समान अपने काले केशों को उतारने दो।

(४२१) वचनों को सुनकर सुंदरी ने कहा कि तुम्हारा बोल सच्चा हो गया है। अथ कामदेव (प्रद्युम्न) का चरित्र सुनो कि नाई ने अपना ही सिर मूँड लिया।

प्रद्युम्न द्वारा उनके अंग काट लेना

(४२२) उस नाई ने अपने हाथ की अगुली को काट लिया और साथ ही स्त्रियों को भी मूँड लिया। उनके नाक कान खोड़े कर दिये फिर वे सब वापिस अपने घर की ओर चल दीं।

(४२३) वे स्त्रियां गाती हुई नगर के बीच में से निकलीं। किस पुरुष ने इन स्त्रियों को विकृत रूप कर दिया है? सबको यह बड़ा विचित्र अर्चभा हुआ और नगर के लोग हँसी करने लगे।

(४२४) उसी क्षण वे रणवास में गयीं और सत्यभामा के पास जाकर खड़ी हो गयीं। उनका विपरीत रूप देखकर वह बोली कि किसने तुम्हारा विकृत रूप कर दिया है?

(४२५) तब वे दुःखि होकर कहने लगी कि हम रुक्मिणी के घर गयी थीं। जब उन्होंने टटोल कर अपने नाक कान देखे तो वे नाई की तरह रोने लगीं।

(४२६) इस घटना को सुनकर खबर देने वाले गुप्तचर वहां आये जहां रणवास में रुक्मिणी बैठी हुई थी तथा कहने लगे कि बहुत सी स्त्रियों के सिर मूँडकर और नाक कान काट कर विकृत रूप बना दिया है, ऐसा हमने सुना है।

(४२७) इस बात को सुनकर रुक्मिणी ने कहा कि निश्चय रूप से यही प्रद्युम्न है। हे वीरों में श्रेष्ठ एवं साहस तथा धैर्य को रखने वाले सब कार्य छोड़कर प्रकट हो जाओ।

प्रद्युम्न का अपने असली रूप में होना

(४२८) तब प्रद्युम्न प्रकट हो गया जिसके समान रूप वाला दूसरा कोई नहीं था। वह अत्यन्त सुंदर एवं लक्षण युक्त था। तब रुक्मिणी ने समझा कि यह उसका पुत्र है।

(४२९) जब रुक्मिणी ने प्रद्युम्न को देखा तो उसका सिर चूम लिया और गोद में ले प्रसन्न मुख होकर उसे कठ से लगा लिया तथा कहा कि आज मेरा जीवन सफल है। आज का दिन धन्य है कि पुत्र आ गया। जिसे १० मास तक हृदय में धारण कर बड़ा दुःख सहन किया था, मुझे यह पल्लवाना सदैव रहेगा कि मैं उसका वचन नहीं देख सकी।

(४३०) माता के वचन सुनकर वह पाच दिन का बच्चा हो गया। फिर वह क्षण भर में बढ़ कर एक महीने का हो गया तथा फिर वह प्रद्युम्न वारह महीने का हो गया।

(४३१) कभी यह लौटने लगा, कभी झूठ करने लगा और कभी दौड़कर आंचल से लगने लगा। वह कभी खाने को मांगता था और इस प्रकार उसने बहुत भेष उत्पन्न किये।

(४३२) यहां इतना चरित करने के पश्चात् फिर वह अपने रूप में आ गया। उसने कहा कि हे माता तुम्हें मैं एक कौतुक दिख लाऊंगा।

सत्यभामा का हलधर के पास दूती को भेजना

(४३३) अब दूसरी ओर कथा आ रही है। सत्यभामा ने स्त्रियों को बलराम के पास भेजा और कहलाया कि हे बलराम रुक्मिणी के ऐसे कार्य के लिये आप साक्षी बने थे।

(४३४) स्त्रियां जाकर वहां पहुँची जहां बलराम कुमार बैठे हुये थे। बड़ी ही युक्ति के साथ विनय पूर्वक कहा कि रुक्मिणी ने ऐसे काम किये हैं।

हलधर के दूत का रुक्मिणी के महल पर जाना

(४३५) बलराम ने क्रोधित होकर दूत को भेजा और वह तत्काल पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के पास पहुँचा। सिंह-द्वार पर जाकर खड़ा हो गया और रुक्मिणी को इसकी सूचना भेज दी।

(४३६) तब मदन (प्रद्युम्न) ने फिर विचार किया और मूँडे हुये ब्राह्मण का भेष धारण किया। उसने स्थूल पेट एवं विकृत रूप धारण कर लिया तथा वह आड़े होकर द्वार पर गिर गया।

(४३७) तब दूत ने उससे कहा कि हे ब्राह्मण उठो जिससे हम भीतर जा सके। फिर उत्तर में ब्राह्मण ने कहा कि वह उठ नहीं सकता। लौट करके फिर आना।

(४३८) उसके बचनों को सुनकर वे क्रोधित होकर उठे और उसका पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया। तब उसने कहा कि ऐसा करने से यदि ब्राह्मण मर गया तो उनको गोहत्या का पाप लगेगा।

प्रवेश न प्राप्त कर सकने के कारण दूत का वापिस लौटना

(४३९) इस प्रकार जानकर वह वापिस चला गया तथा बलभद्र के पास खड़ा हो गया। द्वार पर एक ब्राह्मण पड़ा हुआ है वह ऐसा लगता है मानों पांच दिन से मरा पड़ा हो।

(४४०) हम उन तक प्रवेश प्राप्त नहीं कर सके क्योंकि वह पील (द्वार) को रोक कर पड़ा हुआ है यदि उसके पैर पकड़ कर एक ओर डाल दिया जावे और वह मर जायेगा तो ब्राह्मण हत्या का पाप लगेगा।

स्वयं हलधर का रुक्मिणी के पास जाना

(४४१) शान सुनकर बलभद्र क्रोध से प्रवर्धित होकर चले। तथा उनके साथ दम धीम आशमी गए और वे पवन-वेग की तरह रुक्मिणी के घर पहुँच गए।

(४४०) वे मिह द्वार पर जाकर खड़े हो गये और ब्राह्मण को द्वार पर पड़ा हुआ देखा तब बलभद्र ने उसे निवेदन किया कि हे ब्राह्मण उठो भीतर जावेंगे ।

(४४१) तब ब्राह्मण ने बलभद्र (बलराम) से कहा कि वह सत्यभामा के घर जीमने गया था । उमने उदर को मरस आहार से इतना भर लिया है कि पेट अफर गया है और वह उठ भी नहीं सकता ।

(४४४) तब बलभद्र (बलराम) हंस कर कहने लगे कि तुम एक ही स्थान पर बैठ कर खाते रहे । ब्राह्मण खाने में बड़े लालची होते हैं तथा बहुत खाते हैं यह सब कोई जानते हैं ।

(४४५) तब वह ब्राह्मण क्रोधित होकर बोला कि बलराम तुम बड़े निर्दयी है । दूसरे तो ब्राह्मण की सेवा करते हैं लेकिन तुम दुःख की बात कैसे बोलते हो ?

(४४६) तब बलभद्र क्रोधित होकर उठे और उमके पैर पकड़ कर निकालने के लिये चले । ब्राह्मण ने कहा कि मुझे गाली क्यों देते हो ? आओ मुझे बाहर निकाल दो ।

(४४७) तब हलधर उसे निकालने लगे तो प्रद्युम्न ने अरुणी माता रुक्मिणी से कहा । एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ यह कौन वीर है, मुझे कहो ।

रुक्मिणी द्वारा हलधर का परिचय

(४४८) यह छप्पनकोटि यादवों के मुख मंडल की शोभा है और इन्हें बलभद्रकुमार कहते हैं । यह मिह से युद्ध करना मूर्ख जानते हैं । यह तुम्हारे पितृव्य (बड़े पिता) है यह मैं तुम से कहती हूँ ।

(४४९) पैर पकड़ कर वह (बलराम) बाहर खींच ले गया किंतु वह (प्रद्युम्न) पैर बद्धावर धड़ नहिन वही पड़ा रहा । यह आरचय देसहर बलभद्र ने कहा कि यह गुप्त वीर कौन है ?

प्रद्युम्न का मिह रूप धारण करना

(४५०) पांच टेक कर वह भूमि पर स्वड़ा हो गया और उसी क्षण उमने मिह का रूप धारण कर लिया । तब हलधर ने अपने आयुध की मग्दाला । फिर वे दोनों वीर ललकार कर भिड़ गये ।

(४५१) युद्ध करने लगे, भिड़ने लगे, अखाड़े वाजी करने लगे दोनों वीर मल्ल युद्ध करने लगे । सिंह रूप धारी प्रद्युम्न संभल कर उठा और बलभद्र के पैर पकड़ कर अखाड़े में डाल दिया ।

(४५२) जहां छप्पन कोटि यादवों के स्वामी नारायण थे वहां जाकर हलधर गिरे । सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये और कृष्ण भी कहने लगे कि यह बड़ी विचित्र बात है ।

चतुर्थ सर्ग

रुक्मिणी के पूछने पर प्रद्युम्न द्वारा अपने वचन का वर्णन

(४५३) इतनी बात तो यहां ही रहे । अब यह कथा रुक्मिणी के पास के प्रारम्भ होती है । वह अपने पुत्र से पूछने लगी कि इतना बल पौरुष कहां से सीखा ?

(४५४) मेघकूट नामक जो पर्यतीय स्थान है वहां यममंवर नामका राजा निवास करता है । हे माता रुक्मिणी ! सुनों मैंने वही से अनेक विद्यायें सीखी हैं ।

(४५५) मैं आपसे कहता हूँ कि मेरे वचन सुनो । नारद ऋषि मुझे यहां लाये हैं । फिर प्रद्युम्न हाथ जोड़ कर बोला कि मैं उदधि माला को ले आया हूँ ।

(४५६) तब माता रुक्मिणी ने हंसकर कहा कि भैया, नारद कहां है । हे पुत्र सुनो मैं तुमसे कहती हूँ कि उदधिमाला कहां है उसे मुझे दिखाओ ।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को यादवों की समा में ले जाने की स्वीकृति लेना

(४५७) तब प्रद्युम्न ने रुक्मिणी से कहा कि हे माता मैं तुमसे एक वचन मांगता हूँ । मैं तुम्हें तुम्हारी बाँह पकड़ कर के सभा में बैठे हुये यादवों को ललकार करके ले जाऊंगा ।

यादवों के बल पौरुष का रुक्मिणी द्वारा वर्णन

(४५८) माता ने उस सादसी की बात सुनकर कहा कि ये यादव लोग बड़े बलवान हैं बलराम और कृष्ण जहां है उनके सामने से तुम कैसे जाने पाओगे ।

(४५६) पांचों पाण्डव जो पच यति हैं तुम जानते ही हो ये कुन्ती के पुत्र हैं तथा अतुल बल के धारक हैं। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव इनके पौरुष का कोई पार नहीं है।

(४६०) छुपने कीटि यादव बड़े बल शाली हैं उनके भय से नव खंड कांपता है। ऐसे कितने ही क्षत्रिय जहां निवास करते हैं तुम अकेल उन्हें कैसे जीत सकोगे ?

(४६१) तब प्रद्युम्न क्रुद्ध होकर बोला कि मैं अरोप यादवों के बल के अभिमान को चूर कर दूंगा, और पाण्डवों को जिनके सभी नरेश साथी हैं युद्ध में हरा दूंगा। नारायण और बलभद्र सभी को रण में समाप्त कर दूंगा केवल नेमिकुमार को छोड़कर जो कि जिनेन्द्र भगवान ही हैं।

(४६२) मदनकुमार का चरित्र सब कोई सुनो। प्रद्युम्न नारायण से युद्ध कर रहा है। पिता और पुत्र दोनों ही रण में युद्ध करेंगे यह देखने के लिये देवता भी आकाश में विमान पर चढ कर आ गये।

रुक्मिणी की वाँह पकड़ कर यादवों की सभा में ले जाकर उसे
छुड़ाने के लिए ललकारना

(४६३) तब प्रद्युम्न क्रोधित होकर तथा माता की वाँह पकड़ कर ले गया। जिस सभा में नारायण बैठे थे वहां मायामयी रुक्मिणी के साथ पहुँच गया।

(४६४) सभा को देखकर प्रद्युम्न बोला कि तुम में कौन बलवान क्षत्रिय है उसको दिखाकर रुक्मिणी को ले जा रहा हूँ। यदि उममें बल है तो आकर छुड़ा ले।

सभा में स्थित प्रत्येक वीर को सम्बोधित करके
युद्ध के लिए ललकार

(४६५) हे नारायण ! तुम मथुरा के राजा कंस को मारने वाले कहे जाते हो। जरासंध को तुमने पढ़ाड़ कर मार दिया था। अब मुझ से रुक्मिणी को आकर पचा लो।

(४६६) दशों दिशाओं को संबोधित करके वह कहने लगा, कि हे वसुदेव ! तुम रण के भेद को खूब जानते हो । तुम छप्पन कोटि यादव मिल कर के भी यदि शक्ति है तो रुक्मिणी को आ कर छुडा लो ।

(४६७) हे बलभद्र ! तुम बड़े बलवान एवं श्रेष्ठ वीर हो । रण सप्राम में बड़े धीर-कहे जाते हो । हल जैसे तुम्हारे पास हथियार हैं । मुझ से रुक्मिणी आकर छुडालो ।

(४६८) हे अर्जुन ! तुम खांडव वन को जलाने वाले हो, तुम्हारे पौरुष को सब कोई जानते हैं । तुमने विराट राज से गाय छुडायी थी । अब तुम रुक्मिणी को भी आकर छुडा लो ।

(४६९) हे भीम ! तुम्हारे हाथ में गदा शोभित है । अपना पुरुषार्थ मुझे आज दिखलाओ । तुम पांच सेर भोजन करते हो । युद्ध में आकर अब क्यों नहीं भिड़ते हो ।

(४७०) हे ज्योतिषी सहदेव ! मेरे वचन सुनो । तुम्हारे ज्योतिष के अनुसार क्या होगा यह बतलाओ । फिर हंसकर प्रद्युम्न ने पूछा कि तुम्हारे समान कौन रण जान सकता है ?

(४७१) हे नकुल ! तुम्हारा पुरुषार्थ भी अतुल है । तुम्हारे पास कुन्त (भाला) नामक हथियार है । अब तुम्हारे मरने का अवसर आ गया है । मुझ से रुक्मिणी आकर छुडाओ ।

(४७२) तुम नारायण और बलभद्र होकर भी छल से कुंडलपुर गये थे । वही समय तुम्हारी बात का पता लग गया था कि तुम रुक्मिणी को चोरी से हर कर लाये थे ।

(४७३) प्रद्युम्न उस अवसर पर बोला कि अब रण में आकर क्यों नहीं भिड़ते हो । मैं तुम से एक अच्छी बात कहता हूँ । एक ओर तुम सव क्षत्रिय वीर हो और एक ओर मैं अकेला हूँ ।

प्रद्युम्न की ललकार सुनकर श्रीकृष्ण का युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार करना

(४७४) तब श्रीकृष्ण सुनकर बड़े क्रोधित हुये जैसे अग्नि में घी डाल दिया हो । मानों सिंह ने मन में गर्जना की हो अथवा सागर और पृथ्वी हिलने लगे हों । तब सब यादव अपनी सेना सजाने लगे । भीम ने गदा ली, अर्जुन ने अपने कोदंड धनुष को उठा लिया और नकुल ने दाय में भाला ले लिया जिससे तमाम ब्रह्माण्ड कंपित हो गया ।

(४७५) तैयार हो ! तैयार हो ! इस प्रकार का चारों ओर कहला दिया । यदुराज श्रीकृष्ण तैयार हो गये । घोड़ों को सजाओ, मस्त हाथियों को तैयार करो तथा सुभट सुसज्जित हो जाओ ! आज रण में भिडना होगा । ऐसा आदेश दिया ।

(४७६) आज्ञा मिलते ही सुभट रण को चल दिये । ठः ठः चारों ओर वे शब्द करने लगे, किसी ने हाथ में तलवार तथा किसी ने हथियार सजाये ।

युद्ध की तैयारी का वर्णन

(४७७) कितनों ही मदोन्मत्त हाथी चिंघाड़ रहे थे । कितने ही सुभट तैयार हो कर रण करने चढ़ गये । कितनों ने घोड़ों पर जीन रख दी और कितनों ने अपने हथियार संभाल लिये ।

(४७८) कितने ही ने युद्ध करने के लिये 'टाटण' ले लिये । कितनों ही ने अपने सिरों पर टोप पहिन लिये । कितनों ही ने शरीर में कवच धारण कर लिया और इस प्रकार वे सब राजा सजधज के चले ।

(४७९) किसी ने हाथ में भाला सजा लिया और कोई सान पर चढ़ी हुई तलवार लेकर निकला । किसी ने अपने हाथों में सेल ले लिया और किसी ने कमर में छुरी बांध ली ।

(४८०) कुछ लोग वान समझा कर कहने लगे कि क्या इन सुभटों को वायु लग गयी है । जिसने रुक्मिणी को हरा है वह मनुष्य तुम्हारे स्तर का नहीं है ।

(४८१) एक ही स्थान पर सब सत्रिय मिल गये और घटाटोप (मेघ जैसे) होकर युद्ध के लिए चले । तुच्छ बुद्धि से उपाय मत करो अथ यह मरने का दाय आ गया है ।

(४८२) शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना वहाँ मिल गयी । वहाँ घोड़े, हाथी, रथ और पैदल सेना थी । अप्रमाण द्रव्य एवं मुकुट दिखने लगे तथा आचारा में धिमान चलने लगे ।

(४८३) इस प्रकार ऐमी अमंथ्यात सेना चली और चारों ओर मूढ़ नगाड़े बजने लगे । घोड़ों के नुरों से जो धूल उड़ती उसमें ऐमा लगता था मानों तत्काल के भादों के मेघ ही हों ।

सेना के प्रस्थान के समय अपशकुन होना

(४८४) सेना के बायीं दिशा की ओर कौवा कांब कांब करने लगा तथा काले सर्प ने रास्ता काट दिया । दाहिनी ओर तथा दक्षिण दिशा की ओर शृगाल बोलने लगे ।

(४८५) वन में असख्य जीव दिखाई दिये । ध्वजायें फकड़ने लगी एव उन पर आकर पक्षी बैठने लगे । सारथी ने कहा कि शकुन बुरे हैं इसलिये आगे नहीं चलना चाहिये ।

(४८६) तब उस अवसर पर केशव बोले कि हम कोई विवाह करने थोड़े ही जा रहे हैं जो शकुनों को देखें । वे सारथी को समझाने लगे कि जो कुछ विधाता ने लिखा है उसे कौन मेट सकता है ।

(४८७) नारायण शकुनों की परवाह किये बिना ही चले । जब प्रद्युम्न ने सेना को देखा तो मन में कुछ चिंता हुई । माता रुक्मिणी को विमान में बैठा दिया और फिर मायामयी सेना खड़ी कर दी ।

विद्या बल से प्रद्युम्न द्वारा उतनी ही सेना तैयार करना

(४८८) तब प्रद्युम्न ने मन में चिन्तन किया और युद्ध करने वाली विद्या का स्मरण किया । जितनी सेना सामने थी उतनी ही अपनी सेना तैयार कर दी ।

युद्ध वर्णन

(४८९) दोनों दल युद्ध के लिए तैयार हो गये । सुभटों ने धनुषों को सजाकर अपने हाथों में ले लिया । कितने ही योद्धाओं ने तलवारों को अपने हाथ में ले लिया । वे ऐसे लगने लगे मानों काल ने जीभ निकाल रखी हो ।

(४९०) हाथी वालों से हाथी चाले यौद्धा भिड़ गये तथा घुड़सवार सेना युद्ध करने लगी । पैदल सेना से पैदल सेना लड़ने लगी । तलवार के चार के साथ २ वे भी पड़ने एव उठने लगे ।

(४९१) कोई ललकार रहा है कोई लड़ रहा है । कोई मारो मारो इस प्रकार चिल्ला रहा है । कोई वीर युद्ध स्थल में लड़ रहा है और कितने ही कायर सैनिक भाग रहे हैं ।

(४६२) कोई वीर दोनों भुजाओं से भिड़ गये। कोई ललकार करके लड़ रहा था। कोई धनुष की टंकार कर रहा था। कोई तलवार के वार से शत्रुओं का संहार कर रहा था।

(४६३) युद्ध देखकर नारायण बोले, हे अर्जुन और भीम ! आज तुम्हारा अवसर है। हे नकुल और सहदेव ! मैं तुमसे कहना हूँ कि आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६४) तब श्रीकृष्ण दशोंदिशाओं तथा वसुदेव को सुनाकर ललकार कर कहने लगे। हे बलिभद्र ! तुम्हारा अवसर है, आज अपना पौरुष दिखलाओ।

(४६५) भीमसेन क्रोधित होकर घोड़े पर चढ़ा तथा हाथ में गदा लेकर रण में भिड़ गया। वे हाथी के समान प्रहार करने लगे जिससे उनके सामने क्षत्रिय गगने लगे और कोई बचा नहीं।

(४६६) तब अर्जुन क्रोधित हुआ और धनुष चढ़ाकर हाथ में लिया। वह चतुरंगिनी सेना के साथ ललकार कर भिड़ गया। कोई भी अर्जुन को रण से नहीं हटा सका।

(४६७) सहदेव ने हाथ में तलवार ली और नकुल भाला लेकर प्रहार करने लगा। हलधर से कौन लड़ सकता था। वे अपने इलायुध को लेकर प्रहार करने लगे।

(४६८) सभी यादव एव यौद्धा रणभूणि में साहस के साथ भिड़ गये। वसुदेव चारों ओर लड़ने लगे जिससे बहुत से सुभट लड़कर रण में गिर पड़े।

प्रद्युम्न द्वारा विद्या-बल से सेना को धराशायी करना

(४६९) तब प्रद्युम्न ने मन में बड़ा क्रोध किया और मायामयी युद्ध करने लगा। सारे सुभट रण में विद्या से मूर्छित होकर गिर पड़े जिसे विमानों में चढ़े हुये देवों ने देखा।

(४७०) स्थान स्थान पर रथ और घुड़सवार गिर पड़े। रत्नों से परिवेष्टित छत्र टूट गये। स्थान स्थान पर अगणित हाथी पड़े हुये थे जो लड़ाई में मदोन्मत्त होकर आये थे।

(४७१) जब सभी सेना युद्ध करती हुई पड़ गयी, तब श्रीकृष्ण खिन्न चित्त हो गये। वे हाहाकार करने लगे तथा सोचने लगे कि यह कौन बलवान वीर है।

रण क्षेत्र में पड़ी हुई सेना की दशा

(५०२) देखते देखते सभी यादव वीर गण गिर पड़े तथा साथ २ सभी सेनायें गिर पड़ी। जिनसे देवता लोग कांपते थे तथा जिनके चलने से पृथ्वी थर २ कांपती थी। जिन वीरों को आज तक कोई नहीं जीत सका था वे सभी क्षत्रिय आज द्वारे हुये पड़े थे यह बड़े आश्चर्य की बात है। यह यादव कुल को नाश करने के लिये मानों काल रूप होकर ही अवतरित हुआ है।

(५०३) श्रीकृष्ण चारों ओर फिर फिर करके सेना को देखने लगे। चारों ओर क्षत्रियों के पड़े रहने के कारण कोई स्थान नहीं दिखायी देता था। केवल मोती और रत्नों की माला से जड़े हुये ध्वज रण में पड़े हुये दिखालाई दिये।

(५०४) अगणित हाथी, घोड़े और रथ पड़े हुये थे। मदोन्मत्त हाथी स्थान स्थान पर पड़े हुये थे। जगह जगह पर निरन्तर खून की धारा बह रही थी और वेताल स्थान २ पर किलकारी मार रहे थे।

(५०५) शृद्धिणी और सियार पुकार रहे थे मानों यमराज ही उनको यह कह रहा था कि शीघ्र चलो रसोई पड़ी हुई है, आकर ऐसा जीमली जिससे पूर्ण तृप्त हो जाओ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर युद्ध करना

(५०६) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर रथ पर चढ़े तो ऐसा लगा मानो सुमेरु पर्वत कांपने लगा हो। जब वे संग्राम के लिये चले तो सकल महीतल कांपने लगा एवं शैपनाग भी हिल गया।

युद्ध भूमि में रथ बढ़ाने पर शुभ शंकुन होना

(५०७) जब अग्नि रथ को उनसे युद्ध में आगे बढ़ाया तब उनका दाहिना नेत्र तथा दाहिना अंग फडकने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सारथी से कहा कि हे सारथी सुनो अब शुभ क्या करेगा ?

(५०८) क्योंकि रण में सभी सेना जीत ली गयी है और रुक्मिणी को भी हरण कर लिया गया है। तो भी क्रोध नहीं आ रहा है तो इसका क्या कारण है इस प्रकार रण में धैर्य रखने वाले श्रीकृष्ण ने कहा।

(५०६) उस समय वह सारथी बोला यह आश्चर्य है कि यह कौन है ? तुम्हारी ललकार से यदि यह सुभट भाग जाये तो तुम्हारे हाथ रुक्मिणी आ सकती है ।

(५१०) उससे वीर शिरोमणि केशव बोले हे ऋत्रिय ! मेरे वचन सुनो । तुमने सभी मदोन्मत्त सेना का संहार कर दिया और अब ! मेरी स्त्री रुक्मिणी को भी ले जा रहे हो ।

श्रीकृष्ण द्वारा प्रद्युम्न को अभयदान देने का प्रस्ताव

(५११) तुम कोई पुण्यवान ऋत्रिय हो । तुम्हारे ऊपर मेरा क्रोध उत्पन्न नहीं हो रहा है । मैं तुम्हें जीवन दान देता हूँ लेकिन मुझे रुक्मिणी वापिस कर दो ।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का उपहास करना

(५१२) तब प्रद्युम्न हंस कर बोला कि रण में ऐसी बात कौन कहता है तुम्हारे देखते देखते मैंने रुक्मिणी को हरण किया और तुम्हारे देखते देखते ही सारी सेना गिर गयी ।

(५१३) जिस के द्वारा तुम रण में जीत लिये गये हो अब क्यों उसको अपना साथी बना रहे हो ? हे श्रीकृष्ण तुम्हें लज्जा भी नहीं आ रही है कि अब कैसे रुक्मिणी मां. रहे हो ।

(५१४) मैंने तो सुना था कि युद्ध में आगे रहने वाले हो लेकिन अब मैंने तुम्हारा सब पुनर्पार्थ देख लिया है । तुम्हारे कहने से कुछ नहीं हो सकता । तुम्हारी सारी सेना पड़ी हुई है और तुमने हृदय से हार मान ली है ।

(५१५) फिर प्रद्युम्न ने हंस कर कहा कि तुम पृथ्वी पर पड़े हुए अपने कुटुम्ब को देख कर भी महन कर रहे हो । मैंने तुम्हारी आज मनुष्यता (पुरुषार्थ) जांचली है तुमको रुक्मिणी से कोई काम नहीं है अर्थात् तुम रुक्मिणी के योग्य नहीं हो ।

(५१६) तुमने परिग्रह की आशा छोड़ दी है तो रुक्मिणी को भी छोड़ दो । प्रद्युम्न कहता है कि अपना जीव बचाकर चले जाओ ।

प्रद्युम्न के उत्तर के कारण श्रीकृष्ण का क्रोधित होना एवं धनुष बाण चलाना

(५१७) यदुराज मन में पढ़ताने लगे कि मैंने तो इससे सत्यभाव से कहा था लेकिन यह मुझ से बढ़ कर बातें कर रहा है अब इसे मारता हूँ यह कहीं भाग न जावे क्रोध उत्पन्न हुआ और चित्त में सावधान हुये तथा सारंग पाणि ने धनुष को चढ़ा लिया ।

(५१८) वे सोचने लगे कि अर्द्ध चन्द्राकार नामक बाण से मैं इसे मारूंगा और अब इसका पराक्रम देखूंगा । जब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को धनुष चढ़ाते हुये देखा तो उसे भी क्रोध आ गया ।

(५१९) प्रद्युम्न ने तब उससे कहा कि हे कृष्ण तुम्हारा धनुष तो छिन गया है । जब श्रीकृष्ण का धनुष टूट गया तो उन्होंने दूसरा धनुष चढ़ाया ।

(५२०) फिर प्रद्युम्न ने बाण छोड़ा जिससे श्रीकृष्ण के धनुष की प्रत्यंचा टूट गयी । तब श्रीकृष्ण ने क्रोधित होकर तीसरे धनुष को अपने हाथ में लिया ।

(५२१) श्रीकृष्ण जब जब प्रद्युम्न पर धार करने के लिए बाण चढ़ाते तब तब बाण टूट कर गिर जाता । विष्णु ने जब तीसरा धनुष साधा लेकिन क्षण भर में ही प्रद्युम्न ने उसे भी तोड़ डाला ।

प्रद्युम्न द्वारा श्रीकृष्ण की वीरता का पुनः उपहास करना

(५२२) प्रद्युम्न ने हंस हस करके श्रीकृष्ण से बान कही कि आपके समान कोई वीर क्षत्रिय नहीं है ? आपने यह पराक्रम किससे सीखा ? आपका गुरु कौन था यह मुझे भी बताइये ।

(५२३) तुम्हारे धनुष बाण छीन लिये गये तथा तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सके । तुम्हारा पौरुष मैंने आज देख लिया है क्या इसी पराक्रम से राज्य सुख भोग रहे थे ?

(५२४) फिर प्रद्युम्न उनसे कहने लगा कि तुमने जरासिंह तथा कंस को कैसे मारा ? यह सुनकर श्रीकृष्ण बहुत खिन्न हो गये तथा दूसरा मायामयी रथ मंगाकर उस पर बैठ गये ।

श्रीकृष्ण का क्रोधित होकर विभिन्न प्रकार के बाणों से युद्ध करना

(५२५) रथ पर चढ़कर यदुराज ने क्रोधित होकर अपने हाथ में धनुष ले लिया। प्रबलित अग्निबाण को फेंका जिससे चारों दिशाओं में तेज ज्वाला पैदा हो गई।

(५२६) प्रद्युम्न की सेना भागने लगी। वह अग्नि बाण से निकलने वाली ज्वाला को सहन नहीं कर सकी। घोड़े हाथी रथ आदि जलने लगे और इस प्रकार उसकी सेना के पैर उखड़ गये।

(५२७) प्रद्युम्न को क्रोध आया उसकी रण की ललकार को कौन सह सकता है। उसने पुष्प माला नामक धनुष हाथ में ले लिया और उम पर मेघबाण को चढ़ाया।

(५२८) घन घोर बादल गर्जने लगे और पृथ्वी को जल से भरने लगे जब जल ने अग्नि को बुझा दिया तब इस जल से श्रीकृष्ण को सेना बहने लगी।

(५२९) जो क्षत्रिय श्रेष्ठ रथ पर सवार थे वे जल के प्रवाह में बहने लगे। सारे हाथी घोड़े रथ बगैरह बह गये तथा बहुत से क्षत्रिय राजा भी बह गये।

(५३०) तब प्रद्युम्न ने श्रीकृष्ण को कहा कि यह अच्छी चाल चली गयी है? नारायण के मन में संदेह पैदा हुआ कि यह मेह कैसे बरस गया?

(५३१) यह जानकर श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ और मारुत (वायु) बाण हाथ में लिया। जब बाण तेजी से निकल कर गया तो मेघों का समूह समाप्त होने लगा।

(५३२) मायामयी सेना भी कांप गयी और छत्र टूट टूट कर जमीन पर गिरने लगे। चतुरगिणी सेना भागने लगी तथा हाथी, घोड़े एवं रथों को कोई संभाल नहीं सके।

(५३३) तब प्रद्युम्न मन में क्रोधित हुआ तथा पर्वत बाण को हाथ में लिया। बाण को धनुष पर चढ़ाया जिससे पर्वत ने आड़े आकर हवा को रोक दिया।

(५३४) प्रद्युम्न का पौरुष देखकर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुये । वे उसी क्षण वज्र प्रहार करने लगे जिससे पर्वत के टुकड़े २ होकर गिर गये ।

(५३५) प्रद्युम्न ने दैत्य बाण हाथ में लिया और नारायण को यमलोक भेजने का विचार किया । तब श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी तक वे इसका चरित्र नहीं जान सके ।

(५३६) इस प्रकार बड़ा भारी युद्ध होता रहा जिसमें कोई किसी को नहीं जीत सका । दोनों ही बड़े बलवान योद्धा हैं जिनके प्रहार से ब्रह्मांड भी फटने लगा ।

श्रीकृष्ण द्वारा मन में प्रद्युम्न की वीरता के बारे में सोचना

(५३७) तब क्रोधित होकर श्रीकृष्ण मन में कहने लगे कि मेरी ललकार को रण में कौन सह सकता है ? मेरे सामने कौन रण क्षेत्र में खड़ा रह सका है ? संभव है कुलदेवी इसकी सहायता कर रही है ।

(५३८) मैंने युद्ध में कंस को पड़ाड़ा और जरासिंधु को रण में ही पकड़ कर मार डाला । मैंने सुरु असुरों के साथ युद्ध किया है । जिस शत्रु ने गर्व किया वही मेरे सम्मुख खेत रहा ।

श्रीकृष्ण का रथ से उतर कर हाथ में तलवार लेना

(५३९) तब उसने धनुष को छोड़कर हाथ में चन्द्रहंस ले लिया । वह खड्ग विजली के समान चमक रहा था मानों यमराज ही अपनी जीभ को फैला रहा हो ।

(५४०) जब हाथ में खड्ग लिया तो ऐसा लगने लगा मानों श्रीकृष्ण ने चमकते हुए चन्द्र रत्न को ही हाथ में पकड़ा हो । जब वे रथ से उतर कर चलने लगे तो तीनों लोक भयभीत हो गये ।

(५४१) इन्द्र, चन्द्रमा तथा शेषनाग में खलवली मच गयी तथा ऐसा लगने लगा मानों सुमेरु पर्वत ही काँप रहा हो । देवाँगनायें मन में कड़ने लगी कि देखें अथ इसे कैसे मारता है ?

(५४२) जब श्रीकृष्ण क्रोधित होकर दौड़े तो रुक्मिणी ने मन में सोचा कि दोनों की हार से मेरा मरण है । श्रीकृष्ण के युद्ध करने से प्रद्युम्न गिर जायगा ।

(१४३) रुक्मिणी ने कहा नारद ! सुनो मैं सत्यभाव से कहती हूँ कि अब तो मृत्यु का अवसर आ गया है। जब तक दोनों सुभट ललकार करके न भिड़ जावे हे नारद ! शीघ्र ही जाकर रण को रोक दो।

रण भूमि में नारद का आगमन

(१४४) रुक्मिणी के वचनों को मन में धारण करके वह ऋषि विमान से उतरा। नारद वहीं पर जाकर पहुँचा जहाँ प्रद्युम्न और श्रीकृष्ण के बीच लड़ाई हो रही थी।

(१४५) विष्णु और प्रद्युम्न का रथ खड़ा दिखाई दिया। प्रद्युम्न बार करना ही चाहता था कि नारद शीघ्र ही वहाँ पहुँचे और बाँह पकड़ कर कुमार को रोक दिया।

नारद द्वारा प्रद्युम्न का परिचय देना

(१४६) तब हँसकर नारद कहने लगे हे कृष्ण ! मेरे वचन सुनिये। यह प्रद्युम्न तुम्हारा ही पुत्र है। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है।

(१४७) छठी रात्रि को यह चुरा लिया गया था तथा यह कालसंवर के घर बढा है। इसने सिंहरथ को जीता है। हे कृष्ण ! यह बड़ा पुण्यवान् है।

(१४८) इसको सोलह लाभों का संयोग हुआ है तथा कनकमाला से इसका विगाड़ हो गया है। इसने कालसंवर को भी उसी स्थान पर जीत लिया तथा पन्द्रह वर्ष सगाव्य होने के पश्चात् तुमसे मिला है।

(१४९) यह प्रद्युम्न बड़ा भारी वीर है तथा रण संग्राम में धैर्यवान् एवं साहसी है। इसके पौरुष का कौन अधिक वर्णन कर सकता है? ऐसा यह रुक्मिणी का पुत्र है।

(१५०) इसी प्रकार प्रद्युम्न के पास जाकर मुनि ने समझा कर बात कही। यह तुम्हारे पिता हैं जिनने तुम्हारा खूब पौरुष आज देख लिया है।

प्रद्युम्न का श्रीकृष्ण के पाँव पड़ना

(१५१) तब प्रद्युम्न उसी स्थान पर गया और श्रीकृष्ण के पैरों पर गिर गया। तब नारायण ने हृदय में खूब प्रमत्त होकर, प्रद्युम्न को उठाकर अपनी गोद में ले लिया।

(५५२) उस रुक्मिणी को धन्य है जिसने इसे धारण किया तथा उस सुरांगना (विद्याधरी) को भी धन्य है जिसके चहां यह अवतरित हुआ तथा उस स्थान पर इसने वृद्धि प्राप्त की। आज के दिन को भी धन्य है जब मिलाप हुआ है।

(५५३) धनुष और बाण को उन्होंने उसी स्थान पर डाल दिये तथा घूमकर कुमार को गोदी में उठा लिया। जिसके घर पर ऐसा सुपुत्र हो उसकी सब कोई प्रशंसा करता है।

नारद द्वारा नगर प्रवेश का प्रस्ताव

(५५४) तब नारद ने इस प्रकार कहा कि मन को भाने वाले ऐसे नगर की ओर चलना चाहिये। प्रद्युम्न के नगर प्रवेश के अवसर पर नगरी में खूब उत्सव करो।

(५५५) श्रीकृष्ण के मन में तो विपाद हो रहा था कि सभी सेना युद्ध में पड़ी हुई है। सभी यादव एवं कुटुम्बी रण में पड़े हुये हैं। तब क्या नगर प्रवेश मुझे शोभा देगा ?

(५५६) नारद ने तब प्रद्युम्न से कहा कि तुम अपनी मांहिनी को वापिस उठा लो जिससे युद्ध में अति कुशल सभी योद्धा एवं सुभट उठ खड़े हों।

मोहिनी विद्या को उठा लेने से सेना का उठ खड़ा होना

(५५७) तब प्रद्युम्न ने मोहिनी विद्या को छोड़ा जिसने जाकर सब अचेतना दूर कर दी। सभी सेना उठ खड़ी हुई तथा ऐसा आभास होने लगा मानों समुद्र ही उमड़ रहा हो।

(५५८) वीर एवं श्रेष्ठ पाण्डव, दशों दिशाओं को वश में करने वाला हलधर, कोटि यादव एवं सभी प्रचंड क्षत्रिय गण उठ खड़े हुए।

(५५९) हाथी, घोड़े, रथवाले तथा पदाति आदि सभी उठ गये मानों विमान चल पड़े हों ? इस प्रकार पृथ्वी पर जो सारे क्षत्रिय गण थे वे सभी खड़े हो गये। सधारु कवि कहता है कि ऐसा लगता था मानों सभी सो कर उठे हों।

प्रद्युम्न के आगमन पर आनंदोत्सव का प्रारम्भ

(५६०) प्रद्युम्नकुमार को जब देखा तो श्रीकृष्ण पुलकित हो बटे । सीने से लगाकर उसके मस्तक को चूम लिया जिस पर चोट के निशान हो रहे थे । प्रद्युम्न के शरीर पर जो निशान हो गये थे वे भी मन को अच्छे लगने लगे । उनका जन्म आज सफल हुआ है जबकि प्रद्युम्न घर आया है । सभी कहने लगे कि आज परिजनों का देव मानों प्रसन्न हुआ है । श्रीकृष्ण मन में प्रफुल्लित हो रहे हैं जब से प्रद्युम्न उनके नयनों में समा रहा है ।

(५६१) भेरी और तुरही खूब बज रही है तथा आनन्द के शब्द हो रहे हैं । जैसी रुक्मिणी है वैसा ही आज उसको पुत्र मिला है । सकल परिजन एवं कुल का आभूषण स्वरूप पुत्र उसको मिला है । बड़ा योद्धा एवं वीर है । सज्जनों के नेत्रों को आनन्द दायक है । सकल जन समूह नगर के सम्मुख चलने लगे जिससे बहुत शोर हुआ तथा तुरही एवं भेरी बजने लगी जिससे ऐसा मालूम होने लगा कि मानों बादल गर्ज रहे हैं ।

(५६२) मोतियों का चौक पूरा गया तथा सिंहासन लाकर रखा गया जिस पर प्रद्युम्न को बैठाया गया । इस घर को आज पुन्यवाला समझो । उस घर को भाग्यशाली समझो जहां प्रद्युम्न बैठा हुआ है । मोती और माणिक से भरे हुये थालों से आरती उतारी गई । युवराज बनाने के लिये तिलक किया गया जो सभी परिजनों को अच्छा लगा । जहां मोतियों का चौक पूरा हुआ था तथा लाया हुआ सिंहासन रखा हुआ था ।

(५६३) घर घर तोरण एवं मोतियों की वदनवार बंधी हुई थी । घर घर पर गुड़ियां उधाली जा रही थी तथा मंगलाचार हो रहे थे । नवयुवतियां पुन्य (मंगल) कलश लेकर प्रद्युम्न के घर आयी । अगर एवं चंदन से सुशोभित कामिनियां गीत गा रही थी । घर घर मोतियों के वदनवार एवं तोरण थे ।

(५६४) सकल सेना घर जाने के लिये उठी तथा द्युपनकोटि यादव घर चले । जिस द्वारिका को सजाया गया था उसमें शोभ हीन होकर चले ।

प्रद्युम्न का नगर प्रवेश

(५६५) प्रद्युम्न नगर मध्य पहुँचा तो सूर्य की किरणें भी द्विप गयीं । गृहों की छतों पर चढ़ कर सुन्दर स्त्रियों ने प्रद्युम्न को देखने की इच्छा की ।

रुक्मिणी को धन्य है जिसने ऐसा पुत्र धारण किया तथा जो नारायण के घर पर अवतरित हुआ। जिसके आगमन पर देव एवं मनुष्य जय जय का कर रहे थे तथा मनोहर शब्द हो रहे थे। घर घर पर तोरण द्वार बँचे तथा छप्पनकोटि यादवों ने खूब उत्सव किया।

(५६६) नगर में इतने अधिक उत्सव किये गये कि सारे जगत ने जान लिया। शंख बजने लगे तथा घरों में नृत्य होने एवं पंच शब्द बजने लगे।

(५६७) जब प्रद्युम्न घर के लोगों के पास गया तो नगर के प्रत्येक घर में वधावा गाये जाने लगे। गुड़ियां उड़ाली गयीं तथा कामिनियों ने घर घर मंगलाचार गीत गाये।

(५६८) ब्राह्मणों ने चतुर्वेदों का उच्चारण किया तथा श्रेष्ठ कामिनियों ने मंगलाचार किये। पुन्य (मंगल) कलशों को सजाकर सुन्दर नारियां अगवानी को चलीं।

(५६९) नगर में बहुत उत्सव किया गया जब से प्रद्युम्न नगर में दिखाई दिया। सिंहासन पर बैठा कर सभी पुरजनों ने उसके तिलक किया।

(५७०) दूध, दही एवं अक्षत माथे पर लगाया गया। मोती माणिक के थाल भर कर आरती बतारी गई तथा आशीर्वाद देकर सुन्दर स्त्रियों वहाँ से चलीं।

यमसंवर का मेघकूट से द्वारिका आगमन

(५७१) इतने में ही मेघकूट से विद्याधरों का राजा यमसंवर पुत्रों एवं कनकमाला सहित द्वारिका नगरी में आ पहुँचा।

(५७२) वह विद्याधर पवन के वेग की तरह आया जिसकी सेना से (उड़ती हुई धूल के कारण) कोई स्थान नहीं दिखाई दिया। वह अपने साथ रति नाम की पुत्री को लेकर द्वारिका पुरी में आया।

यमसंवर एवं श्रीकृष्ण का प्रथम मिलन

(५७३) यमसंवर से श्रीकृष्ण ने भेंट की तब वे भक्ति पूर्वक सत्यभाव से बोले कि तुमने बालक प्रद्युम्न का पालन किया इसलिये तुम्हारे समान अन्य कौन स्वजन है ?

(१७४) तब रुक्मिणी उभी समय कनकमाला के पैर लगकर बोली कि तुम्हारे घर से मैं कैसे ऊच्छर्य होऊंगी क्योंकि तुमने मुझे पुत्र की भिन्ना दी है ।

प्रद्युम्न का विवाह लग्न निश्चित होना

(१७५) उनके आगमन पर बहुत से उत्सव किये गये तथा प्रद्युम्न-कुमार का विवाह निश्चित हो गया । ज्योतिषी को बुलाकर लग्न निश्चित किया तब मन में श्रीकृष्ण बड़े सन्तुष्ट हुये ।

(१७६) हरे बांसों का एक विशाल मंडप रचा गया तथा कितने ही प्रकार के तोरण द्वार खड़े किये गये । लम्बे चौड़े वस्त्र तनाये गये तथा स्वर्ण कलश सिंह द्वारों पर रखे गये ।

विवाह में आने वाले विभिन्न देशों के राजाओं के नाम

(१७७) सारे सामान की तैयारी करके श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को निमन्त्रित किया । जितने भी मांडलीक राजा थे सभी द्वारिका नगरी में आये ।

(१७८) अंगदेश, वग (बंगाल), कलिंग देश के तथा द्वीप समुद्र के जितने राजा थे वे सभी विवाह में शामिल हुये । लाड देश के चोल प्रदेश के, कान्यकुब्ज प्रदेश के, गाजणवड़ (गजनी ?) मालवा और काश्मीर देश के राजा महाराजा आये ।

(१७९) गुर्जर देश के नरेश अत्यधिक सुशोभित हुये तथा सांभर के वेलावल अच्छे थे । विपाडती कान्यकुब्ज के अच्छे थे । पृथ्वी के अन्य सभी राजा नमस्कार करते हुये देखे गये ।

(१८०) शलों के मधुर शब्द होने लगे तथा स्थान स्थान पर नगाड़े बजने लगे । भेरी और तुरही निरन्तर बजने लगी तथा माधुरी वीणा एवं ताल के शब्द होने लगे ।

(१८१) विद्वान् ब्राह्मण चारों वेदों का उच्चारण करने लगे तथा कामिनियां घर २ मंगलाचार गीत गाने लगी । नगरोत्सव के कारण बल कल शब्द होने लगे जब प्रद्युम्न विवाह करने के लिये चले ।

(५८२) रत्नों से जड़ा हुआ छत्र मिर पर रखा गया तथा स्वर्णदंड वाला चँवर शिर पर दुरने लगा। मोने का मुकुट शिर पर ऐसा चमक रहा था मानो बाल-सूर्य ही किरणें फँक रहा हो ?

(५८३) तब रुक्मिणी ने ईर्ष्या भाव से कहा कि सत्यभामा के केश लाओ। तीनों लोक भी यदि मुझे मना करे तो भी मैं उमके केश उतरवाऊँगी।

(५८४) केश उतार कर उन्हें पाँव से मलूँगी तब प्रद्युम्न विवाह करने जावेगा। लेकिन इतने में ही सब परिवार के लोगों ने मिल करके दोनों में मेल करा दिया।

(५८५) सभी कुटुम्बी जनों के मन में उत्साह हुआ कि प्रद्युम्नकुमार का विवाह हो रहा है। भाँवर देकर हथलोवा किया और इस प्रकार कुमार का पाणिग्रहण हुआ।

(५८६) विवाह होने के पश्चात् लोग घर चले गये तथा राज्य करने लगे और अनेक प्रकार के सुख भोगने लगे। सत्यभामा को व्याकुल देख करके सभी सौतेँ उसका परिहास करती थीं।

सत्यभामा द्वारा विवाह का प्रस्ताव लेकर पाटण के
राजा के पास दूत भेजना

(५८७) तब सत्यभामा ने सलाह करके ब्राह्मण को शीघ्रता से सन्देश लेकर भेजा। उस स्थान पर जहाँ रत्नसंचय नामक नगर था तथा रत्नचूल नामक राजा रहता था।

(५८८) ब्राह्मण ने शीघ्रता से वहाँ जा कर विनय पूर्वक कहा कि सत्यभामा ने मुझे यहाँ भेजा है। रविकीर्त्ति से उन्हें अत्यधिक स्नेह है इसलिये उमी लड़की को भानुकुमार को दे दें।

भानुकुमार के विवाह का वर्णन

(५८९) सभी राजा और विद्याधर मिल करके कल कल शब्द करते हुये द्वारिका को चले। नगर में बहुत उत्सव किये गये जैसे ही भानुकुमार का विवाह होने लगा।

(५६०) (लड़की वाले का) सारा परिवार मिलकर तथा विद्याधर व राजा लोग सब विवाह करने को चले। वे सब द्वारिका नगरी पहुँचे जहाँ मंडप बना हुआ था।

(५६१) घर घर पर तोरण लगाये गये तथा सिंह द्वार पर स्वर्ण-कलश स्थापित किये गये। सब कुटुम्ब ने मिलकर उत्सव किया और भानुकुमार का इस प्रकार विवाह हो गया।

(५६२) इसके बाद वे राज्य करने लगे तथा विविध प्रकार के भोग विलास करने लगे। प्रद्युम्न को सब राज्य के भोग प्राप्त होने लगे। उनके समान पृथ्वी पर दूसरा अन्य कोई राजा नहीं दिखता था।

पंचम सर्ग

विदेह क्षेत्र में ज्ञेमंधर मुनि की केवलज्ञान की उत्पत्ति

(५६३) अब दूसरी कथा चलती है। पूर्व विदेह में शत्रुकुमार (अच्युत स्वर्ग का देव) गया जहाँ पुंडरीक नगरी थी तथा जहाँ ज्ञेमंधर मुनि निवास करते थे।

(५६४) जो नियम, धर्म और संयम में प्रधान थे उनको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। अच्युत स्वर्ग में जो देव रहता था वह मुनीश्वर की पूजा करने के लिये आया।

अच्युत स्वर्ग के देव द्वारा अपने भवान्तर की बात पूछना

(५६५) उसने नमस्कार किया तथा अपने पूर्व भव की बात पूछी। हे गुणवान् मुनि ! पूर्व जन्म का जो मेरा सहोदर था वह किम स्थान पर पैदा हुआ ?

(५६६) संशय हरने वाले उन (केवलज्ञानी) ने मभा में कहा कि पृथ्वी पर पांचवाँ भरत क्षेत्र उत्तम स्थान है। उसमें सोरठ देश में द्वारिकावती नगरी है। भरत क्षेत्र में इसके समान दूसरी नगरी नहीं दिखती है।

(५६७) उस नगरी का स्वामी महिम्न श्रीकृष्ण है जो सपूर्ण नियम धर्म को पालन करने वाला है। उसकी भार्या यज्ञी गुणवती है और उसका नाम रुक्मिणी है।

(५६८) उसके घर पर क्षत्रिय मदन (प्रद्युम्न) पैदा हुआ। उस पुण्यवान् को सभी कोई जानते हैं। सुन्दरता में उससे बढ़ कर कोई नहीं है और वह पृथ्वी पर राज्य करता है।

देव का नारायण की सभा में पहुँचना

(५६९) केवली के वचन सुनकर देव वहाँ गया जहाँ सभा में नारायण बैठे थे। देवता ने मणि रत्न जटित जो हार था उसे नारायण को देकर कहा।

देव द्वारा अपने जन्म लेने की बात बतलाना

(६००) फिर वह रविदेव कहने लगा कि हे महामहर्षण ! (महामहिम्न) मेरे वचन सुनिये। जिसको तुम अनुपम हार भेंट देओगे उसी की कुत्त से मैं अवतार लूंगा।

श्रीकृष्ण द्वारा सत्यभामा को हार देने का निश्चय करना

(६०१) तब यादवराय मन में आश्चर्य करने लगे तथा मन को भाने वाली मन में चिन्तना करने लगे। चन्द्रकान्त मणियों से चमकने वाला यह हार सत्यभामा को दूंगा।

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणी को सूचित करना

(६०२) तब प्रद्युम्न के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ और वह पवन वेग की तरह रुक्मिणी के पास गया। माता से कहने लगा कि पेरी बात सुनिये मैं तुम्हें एक अनुपम बात बताता हूँ।

(६०३) जो मेरा पूर्व भय में सहोदर था वह मुझसे बहुत स्नेह करता था। अब वह स्वर्ग में देव हो गया है और वह रत्नजटित हार लाया है।

(६०४) अब उस हार को जो पहिरेगा उसके घर पर वह आर्य पुत्र होगा। हे माता अब तू स्पष्ट कह कि यह हार तुम्हें प्राप्त करा दूँ ?

(६०५) तब रुक्मिणी ने उससे कहा कि मेरे तो तुम अकेले ही मह्य मंनान के बराबर हो। यद्यपि से पुत्रों में मुझे कोई काम नहीं है। तुम अकेले ही पृथ्वी का राज्य करो।

जामवंती के गले में हार पहिनाना

(६०६) फिर विचार करके रुक्मिणी बोली कि मेरी बहिन जामवंती है। हे पुत्र ! तुम्हें विचार कर कहती हूँ कि उसे जाकर हार दिला दो।

जामवंती का श्रीकृष्ण के पास जाना

(६०७) तब ही प्रद्युम्न ने विचार कर कहा कि जामवंती को यहां बुला लाओ। जो काममुंदही पहिन लेगी वही सत्यभामा बन जावेगी।

(६०८) स्नान करके उसने कपड़े और गहने पहिने। उसके शरीर पर स्वर्ण कंकण सुशोभित हो रहा था। जामवंती वहां गयी जहां श्रीकृष्णजो बंठे थे।

(६०९) तब सत्यभामा आ गयी, यह जानकर केशव मन में प्रसन्न हुये। तब कृष्ण ने मन में कोई विचार नहीं किया और उसके वक्षस्थल पर हार डाल दिया।

(६१०) हार को पहिना कर उससे आलिंगन किया और उससे कहा कि तुम्हारे शंभुकुमार उत्पन्न होगा। जब उसने अपना वास्तविक रूप दिखलाया तो नारायण मन में चकित हुए।

(६११) तब महमहर्षण ने इस प्रकार कहा कि मेरा मन विरिमत और अर्चामित कर दिया। यदि यह चरित सत्यभामा ने जान लियातो विकृत रूप करके मोह लेगी। वास्तव में जो विधाता को स्वीकार है उसे कौन मेट सकता है। श्रीकृष्ण कहने लगे कि पुण्यवान ही निष्कटक राज्य करता है।

(६१२) जब जामवंती के पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम शंभुकुमार रखा गया। वह अनेक गुणों वाला था तथा चन्द्रमा की कांति को भी लज्जित करने वाला था।

सत्यभामा के पुत्र उत्पत्ति

(६१३) जिसकी सेवा सूर और नर करते थे ऐसा प्रथम स्वर्ग का देव आयु पूर्ण होने से चय कर सत्यभामा के घर पर उ पन्न हुआ।

(६१४) जो वहां से चयकर अनेक लक्ष्णों वाला गुणों से पूर्ण अत्यधिक सुन्दर एवं शीलवान सत्यभामा के घर पुत्र हुआ उसका नाम सुभानु रखा गया।

(६१५) दोनों कुमार जिन्होंने एक ही दिन अवतार लिया था चन्द्रमा के समान वृद्धि को प्राप्त होते हुये एक ही स्थान पर पढ़ने लगे ।

शंभुकुमार और सुभानुकुमार का साथ साथ क्रीडा करना

(६१६) एक दिन दोनों ने जुआ खेला तथा करोड़ सुवंद (मोहर) का दांव लगाया । उस दांव में शंभुकुमार जीता तथा सुभानु हार करके घर चला गया ।

द्यूत क्रीडा का प्रारम्भ

(६१७) तब सत्यभामा हँसकर मन में विचार करने लगी । उसने कहा कि इस मुर्गे से फिर खेल खेलो अर्थात् लड़ाओ और जो हार जावे वही दो करोड़ मोहर देवे ।

(६१८) तब उसने मुर्गा छोड़ दिया और मुर्गे आपस में भिड़ गये । इस खेल में सुभानु का मुर्गा हार गया तब शंभुकुमार ने दो करोड़ मोहर जीत ली ।

(६१९) इसके पश्चात् उसने बहुत से खेल किये । (सत्यभामा) दूसरों से भी काफी मंत्रणा करने के पश्चात् दूत को बुलाकर वहां भेजा जहां विद्याधर रहता था ।

(६२०) दूत ने वहां जाने में जरा भी देर नहीं लगायी और जाकर विद्याधर को सारी बात बता दी । वहां दूत ने कहा कि जो इच्छा हो वही ले लो और अपनी पुत्री केवल सुभानुकुमार को ही देओ ।

सुभानुकुमार का विवाह

(६२१) विद्याधर के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और अपनी कन्या को विवाह के लिये दे दिया । जब सुभानु का विवाह हुआ तो द्वारिका नगरी में सुन्दर शब्द होने लगे ।

(६२२) जब सुभानु का विवाह हो गया तब रुक्मिणी के मन में विचार हुआ और मंत्रणा करके उसने दूत को बुलाया और शंभुकुमार के पास भेजा ।

रुक्मिणी के दूत का कुंडलपुर नगर को प्रस्थान

(६२३) यह दूत शीघ्र कुंडलपुर गया और रूपचन्द्र से कहा कि हे स्वामी ! मेरी बात सुनिये मुझे आपके पास रुक्मिणी ने भेजा है ।

(६२४) शंभुकुमार तथा प्रद्युम्नकुमार के पौरुष को सब कोई जानते हैं । दोनों कुमारों को आप कन्याएं दे दीजिये जिससे आपस में स्नेह बढ़े ।

(६२५) तब उस अवसर पर रूपचन्द्र ने कहा कि तुम रुक्मिणी को जाकर समझा दो कि जो यादव वंश में उत्पन्न होगा उसको कौन अपनी लड़की देगा ?

(६२६) उसने (रूपचंद्र) पुनः समझा कर बात कह दी कि तुम रुक्मिणी से जाकर इस प्रकार कहना कि सबल कर बात बोला करो, ऐसी बात बोलने से तुम्हारा हृदय क्यों नहीं दुःखित हुआ ।

(६२७) तूने हमारा सारा परिवार नष्ट करा दिया तथा तू शिशुपाल को मरा कर चली गई । आज फिर तू यह वचन कहती है कि मदनकुमार को बेटी दे दो ।

(६२८) उसके वचनों को सुनकर दूत वहां से तत्काल चला और द्वारिका नगरी पहुँच गया । उससे जो कुछ बात कही थी वह उसने जाकर रुक्मिणी से कह दी ।

(६२९) नारायण से ऐसा कहना कि हम तुम्हारे मध्य कैसे सुखी रह सकते हैं ? तुम्हारे कितने अवगुणों को कहें । तुमको छोड़ कर हम हम को देना पसन्द करते हैं ।

(६३०) यह वचन सुनकर वह व्यथित हो गयी और दोनों आंखों से आंसू धरसने लगे । इस तरह उसने मेरा मान भंग किया है और उसने मेरा हृदय दुःखी कर बहुत बुरा किया है ।

(६३१) रुक्मिणी को व्यथित बदन देखकर प्रद्युम्न ने अपनी माता से कहा कि तू किसकी घोली से दुःखी है यह मुझे शीघ्र कइ दे ।

(६३२) हे पुत्र ! मैंने मंत्रणा करके दूत को कुंडलपुर भेजा था । वहां दूत से उसने जो दुष्ट वचन कहे हैं, हे पुत्र ! उन्हीं से मेरा हृदय विध गया ।

(६४६) सेना भाग गयी तथा मामा के गने में पांव रख कर उसे बांध लिया। सब दल के भागने पर कन्या को अपने साथ ले लिया और द्वारिका नगरी आ पहुँचे।

(६५०) रूपचंद को लेकर महलों में पहुँचे जहाँ श्रीकृष्ण बैठे हुये थे। श्रीकृष्ण को रूपचंद ने आँखों से देखा और कहा हमें नारायण का (दर्शन) लाभ कराया गया है ?

रूपचंद को पकड़ कर श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित करना

(६५१) तब मधुसूदन ने हस कर कहा कि यह तुम्हारा भानजा है। इसमें बहुत पौरुष एवं विद्याबल है। इसने अपने पिता को भी रण में जीता है।

श्रीकृष्ण द्वारा रूपचंद को छोड़ देना

(६५२) तब प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने कृपा की और बधे हुये रूपचंद को छोड़ दिया। प्रद्युम्न ने हंसकर उसे गोद में उठा लिया। फिर उसे रुक्मिणी के महलों में ले गया।

रूपचंद और रुक्मिणी का मिलन

(६५३) वहाँ जाकर उसने अपनी बहिन से भेंट की। रुक्मिणी ने बहुत प्रेम जताया। बहुत आदर के साथ जीमनवार दी गयी जिसमें अमृत का भोजन खिलाया।

(६५४) भाई, बहिन एवं भानजा अच्छी तरह से एक स्थान पर मिले। रुक्मिणी की बात सुन कर रूपचंद को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने कन्या को विवाह के लिये दे दी।

प्रद्युम्न एवं शंभुकुमार का विवाह

(६५५) तब हरे बाँम का गंडप तैयार किया गया तथा बहुत प्रकार के तोरण द्वार लड़े किये गये। छापन षोडि यादव प्रसन्न होकर दोनों कुमारों के साथ विवाह करन चले।

(६५६) बहुत भाँति के शंख एवं भेरी बजी। मधुर वीणा एवं तूर बजा। भाँवर ढाल कर हृथलेशा लिया गया तथा चारों का पाणिमहण संस्कार पूरा किया गया।

(६५७) नगरी में घर घर उत्सव किया गया और इस प्रकार दोनों कुमारों का विवाह हो गया। जो भ्रज्जन लोग थे वे तो गृध्र प्रमत्त थे किन्तु अफेसी सत्यभामा ऐसी थी जिमका मन जल रहा था।

(६५८) रूपचन्द को जाने की आज्ञा हुई और यह समझी नाटयण के यहाँ से घर गया। यह कुंडलपुर में राज्य करने लगा। अब कथा का क्रम द्वाटिका जाता है। उनका (प्रद्युम्न) मन उस पढ़ी धर्म में लगा तथा त्रिन पीत्यालय की बंदना करने के लिये पैलारा पर्यंत पर चले गये।

छठा सर्ग

प्रद्युम्न द्वारा त्रिन पीत्यालयों की बंदना करना

(६५९) तब प्रद्युम्नकुमार ने विनयन किया कि संसार मनुष्य से मैरना बड़ा कठिन है। मन में धर्म को दृढ़ करना चाहिये तथा पैलारा पर्यंत पर जो त्रिन मन्दिर हैं उनकी शुद्ध भाव से पूजा करनी चाहिये। भूत भविष्यत तथा वर्तमान तीर्थंकरों के पीत्यालयों को देना और बड़ा कि त्रिनने त्रिनेन्द्र भगवान के ये पीत्यालय बनाये हैं वे भूत नरेश धन्य हैं।

(६६०) फिर प्रद्युम्न ने पीत्यालयों की बंदना की त्रिनकी उद्योगि रत्नों के समान समकनी थी। अष्ट विधि पूजा एवं अभिषेक करके प्रद्युम्न द्वाटिका वापिस चले गये।

(६६१) इसके परपान् दूमरी कथा का अन्वय प्रारम्भ होगा है। वीरय और पाल्दवों में कुम्भेश्र में महाभारत युद्ध हुआ। तब भगवान नेमिनाथ ने संघन धारण किया।

(६६२) फिर प्रद्युम्न द्वाटिका जाकर विविध भोग विनायों की योगने भोगे। पटरस व्यञ्जन से सुक. ब्राह्म के समान भोजन करने भोगे।

(६६३) वहाँ गया मन्त्रिय के सुन्दर श्रेय महल में इनमें के त्रिय नदे भोग किया करते थे। वे महल अगर तथा चरने की सुन्दरि में सुक. थे तथा सुन्दर वृक्षों के रस से सुकागिण थे।

नेमिनाथ को केवल ज्ञान होना

(६६४) इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हुआ और फिर नेमिनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। तब उनके समवशरण में सुरेंद्र, मुनीन्द्र, एवं भवनवामी देव आदि आये।

(६६५) छप्पन कोटि यादव प्रमत्त होकर, नारायण एवं हलधर के साथ चले जहां नेमिनाथ स्वामी समवशरण में विराजमान थे। वहीं श्रीकृष्ण तथा हलधर जा पहुँचे।

(६६६) देवताओं ने बहुत स्तुति की। फिर श्रीकृष्ण ने (निम्न प्रकार) स्तुति प्रारम्भ की। हे काम को जीतने वाले तुम्हारी जय हो! तुम्हारी सुर असुर सेवा करते हैं (हे देव तुम्हारी जय हो।)

(६६७) दुष्ट कर्मों को क्षय करने वाले हे देव! तुम्हारी जय हो! मेरे जन्म जन्म के शरण, हे जिनेन्द्र! तुम्हारी जय हो। तुम्हारे प्रसाद से मैं इस संसार समुद्र से तिर जाऊं तथा फिर वापिस न आऊं।

(६६८) इस प्रकार स्तुति करके, प्रसन्न मन हो मनुष्यों के कोठे में जाकर बैठ गये। तब जिनेन्द्र के मुख से बाणी निकली जिसे देवों, मनुष्यों एवं सब जीवों ने धारण किया।

(६६९) धर्म और अधर्म के गहन सिद्धान्त को सुना तथा प्रद्युम्न ने भी आगम की बात सुनी। उसके पश्चात् गणधर देव से छप्पन कोटि यादवों की ऋद्धि के बारे में पूछा।

(६७०) हे स्वामिन् मुझे बताइये कि नारायण की मृत्यु किस प्रकार से होगी? द्वारिका नगरी कब तक निश्चल रहेगी? हे देव! यह मुझे आगम के अनुसार बतलाइये।

गणधर द्वारा द्वारिका नगरी का भविष्य बतलाना

(६७१) इस प्रकार बात पूछ कर बलराम चुप हो गये। मन में विचार कर गणधर कहने लगे कि बारह वर्ष तक द्वारिका और रहेगी। इसके बाद छप्पन कोटि यादव समाप्त हो जावेंगे।

(६७२) द्वीपायन ऋषि से ज्वाला निकल कर द्वारिका नगरी में आग लग जावेगी। मंदिरा से छप्पन कोटि यादव नष्ट हो जावेंगे। केवल श्रीकृष्ण और बलराम बचेगे।

(६७३) मुनि के आगमन एवं श्रीकृष्ण की जरदकुमार के हाथ से मृत्यु को कौन रोक सकता है ? भानु, सुभानु, शंभुकुमार, प्रद्युम्नकुमार एवं आठ पट्टरानियां संयम धारण करेंगी ।

(६७४) गणधर के पास बात सुनकर तथा द्वारिका का निश्चित विनाश जानकर द्वीपायन ऋषि तप करने के लिये चले गये तथा जरदकुमार भी वन में चला गया ।

प्रद्युम्न द्वारा जिन दीक्षा लेना

(६७५) दशों दिशाओं में बहुत से यादव इकट्ठे हो गये और संयम व्रत लेने के लिये भगवान् नेमिनाथ के पास गये । प्रद्युम्नकुमार ने जिन दीक्षा ली तो नारायण चिंतित हुये ।

प्रद्युम्न द्वारा वैराग्य लेने के कारण श्रीकृष्ण का दुःखित होना

(६७६) श्रीकृष्ण शोकाकुल होकर कहने लगे हे मेरे पुत्र ! हे मेरे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम्हारे में अज्ञ कौनसी बुद्धि उत्पन्न हुई है ? तुम द्वारिका लेओ और राज्य का सुख भोगो ।

(६७७) तुम राज्य कार्य में धुरंधर हो, जेष्ठ पुत्र हो, तुम्हें बहुत विद्याबल प्राप्त है । तुम्हारे पौरुष को देख भी जानते हैं । हे पुत्र प्रद्युम्न ! तुम अभी तप मत धारण करो ।

(६७८) कालसंघर तुम्हारा साक्षम जानता है । तुमने मुझे रण में बहुत व्यथित किया । तुमने मेरी रक्मिणी को हरा धा तथा बहुत से सुभटों को पड़ाइ दिया था ।

(६७९) नारायण के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि राज्य कार्य एवं घर घर से क्या करना है, अगर तो स्वप्न के मनाते हैं ।

(६८०) धन, पौरुष एवं अगर धन का क्या करना है । माता पिता अथवा बुदुम्ब किमके हैं । एक ही पड़ी में नष्ट हो जायेंगे । आयु के नष्ट हो जाने पर कौन रक्ष सकता है ?

रक्मिणी का विलाप करना

(६८१) नारायण को दुःखित देख कर रक्मिणी यहां दौड़ी आई । यह करण विलाप करके विलापने लगी तथा कहने लगी कि हे पुत्र दिव्य अरण्य संयम धारण कर रहे हो ?

(६८२) तू मेरे केवल एक ही पुत्र हुआ और तुम्हें भी होते ही धूमकेतु हर ले गया। हे पुत्र ! तू कनकमाला के घर पर बड़ा हुआ जिस कारण मैं तेरे वचन का सुख भी नहीं देख सकी।

(६८३) फिर आनंद प्रदान करने वाले तुम आये और पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान तुमने कुल को प्रकाशित किया। तुमने सम्पूर्ण राज्य-भोग प्राप्त किये। अब इस भूमि पर कौन रहेगा ?

प्रद्युम्न द्वारा माता को समझाना

(६८४) माता के वचन सुनकर प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि यह सुन्दर शरीर काल के रूठ जाने पर समाप्त हो जावेगा।

(६८५) इसलिये हे माता अब विवाद मत करो तथा माया, मोह और मान का परिहार करो। व्यर्थ शरीर को दुःख मत दो। कौन मेरी माता है और कौन तुम्हारा पुत्र है ?

(६८६) रहट की माल के समान यह जीव फिरता रहता है और कभी स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी पर अवतरित होता रहता है। पूर्व जन्म का जो संबंध होता है उसी के आधार पर यह जीव दुर्जन सज्जन होकर शरीर धारण करता रहता है।

(६८७) हमारा और तुम्हारा सम्बन्ध पूर्व जन्म में था। उसी को कर्म ने यहां भी मिला दिया है। इस प्रकार माता के मन को समझाया। फिर रुक्मिणी अपने घर पर चली गई।

प्रद्युम्न का जिन दीक्षा लेकर तपस्या करना

(६८८) माता रुक्मिणी को समझा कर फिर प्रद्युम्न ने मिनाथ के पास जाकर बैठ गये। उनसे द्वेष क्रोध आदि को छोड़कर पंचमुष्टि केश लौंच किया।

(६८९) उन्होंने तेरह प्रकार के चारित्र्य को धारण किया तथा दश लक्षण धर्म का पालन किया। बाईस प्रकार के परीपह को उन्होंने सहन किया जिसके कारण बाह्य एवं अभ्यन्तर शरीर क्षीण हो गया।

प्रद्युम्न को केवलज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति

(६६०) घातिया कर्मों का नारा करने पर उन्हें तुरन्त केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। फिर अपने ज्ञान-नेत्र द्वारा लोका-लोक की यात्रा करने लगे तथा उनका हृदय अलौकिक ज्ञान के प्रकाश से चमकने लगा।

(६६१) उसी समय इन्द्र, चन्द्र, विशाधर, बलभद्र, धरमेन्द्र, नारायण, सृजन लोग, एय देवी और देवता आये।

(६६२) इन्द्र बरूच्य याणी से स्तुति करने लगा। हे मोह रूपी अन्धकार को दूर करने वाले ! तुम्हारी जय हो। हे प्रद्युम्न ! तुम्हारी जय हो, तुमने ससार जाल को तोड़ डाला है।

(६६३) इस प्रकार इन्द्र ने स्तुति कर धनपति से कहा कि एक बात सुनो। इन मूक केवली की विचित्र श्रद्धियां हैं अतः क्षण भर में ही गन्ध कुटी की रचना करो।

ग्रंथकार का परिचय

(६६४) हे प्रद्युम्न ! तुमने निर्वाण प्राप्त किया जिसका कि मेरे जैसे तुच्छ-बुद्धि ने वर्णन किया है। मेरी अप्रवाह की जानि है जिसकी उत्पत्ति अगरोव नगर में हुई थी।

(६६५) गुण्यती मुपनु माना के वर में अयतार लिया तथा सामह्राज के घर पर उत्पन्न हुआ। एरुद्ध नगर में बसकर यह चरित्र सुना तथा मैंने इस पुराण की रचना की।

(६६६) उम नगर में भायक लोग रहते हैं जो दरा सक्षर घम का पालन करते हैं। दर्शन और ज्ञान के अतिरिक्त उनके दूसरा कोई काम नहीं है मन में जिनेश्वर देव का ध्यान करते हैं।

(६६७) इस चरित को जो कोई पढ़ेगा वह मनुष्य स्वर्ग में देव होगा। यह देव वहा मे पय करये मुक्ति रूपी श्री को करेगा।

(६६८) जो केवल मन से भी भाय पूर्वक सुनेगे उनके भी अगुभ कर्म दूर हो जायेंगे। जो मनुष्य इसका वर्णन करेगा उम पर प्रद्युम्न देव प्रमत्त होंगे।

(६६६) जो मनुष्य इसकी प्रतिलिपि करेगा अथवा तैयार करवाकर अपने साथ रखेगा तथा महान् गुणों से परिपूर्ण, रचना को पढ़ावेगा वह मनुष्य स्वर्ण भण्डार को प्राप्त करेगा ।

(७००) यह चरित्र पुण्य का भण्डार है जो इसे पढ़ेगा वह महापुरुष होगा तथा उसको सपत्ति, पुत्र एवं यश प्राप्त होगा और प्रद्युम्न उसे तुरन्त फल देंगे ।

(७०१) कवि कहता है कि मैं बुद्धि हीन हूँ और अक्षर तथा मात्रा के भेद को भी नहीं जानता हूँ । विद्वानों को मैं हाथ जोड़ कर नमस्कार करता हूँ कि वे मेरी (अक्षर मात्रा की) हीनाधिकता की त्रुटियों पर ध्यान न दें ।

शब्दानुक्रमणी

अ

अइतइ—१२, ४६, ४०४

अइगउ—४६, १६८

अइमो—४३६

अइराल—१४३, ०८१

अइसालाउ—४४

अइतानी—२४५

अइतानी—२६४

अइतानी—४८७

अइतानी—४४०

अइतानी—२१३

अइतानी—२८२

अइतानी—४६०

अइतानी—३७७

अइतानी—५०१

अइतानी—३०८

अइतानी—१८२

अइतानी—४४१

अइतानी—३३१

अइतानी—४४१

अइतानी—४०४

अइतानी—०३ ४६३, ६६३

अइतानी—६६४

अइतानी—६६४

अइतानी—६६४, ४५८, ६८६

अइतानी—४१५

अइतानी—३००

अइतानी—६४८

अइतानी—४०१

अइतानी—२०८

अइतानी—१६२

अइतानी—६

अइतानी—६६, १३२, ३११, ४०७

अइतानी—२००

अइतानी—६४

अइतानी—२०६

अइतानी—३४१, ३६१, ३६२

अइतानी—३८४

अइतानी—३०६

अइतानी—०४४

अइतानी—१४१

अइतानी—४०३

अइतानी—३४६

अइतानी—३६४

अइतानी—१६४, ३३७, ४३१

अइतानी—४४२

अइतानी—०४४

अइतानी—०३६

अइतानी—४००

अइतानी—४३१

अइतानी—४१६

अइतानी—६६१

अइतानी—४६४

अइतानी—०३०

अइतानी—३११ ४१४, ६०३

अइतानी—८

अइतानी—०३८, ४६६

अठवल—३
 अठार—२७६
 अठारह—२०
 अणुद्वय—२६६
 अणुगह—४२१
 अणुगु—१२२, ३११, ३७०
 अणुंत—३४६
 अणुसरइ—२४
 अति—३६, ४२, १३४, १३६,
 २०१, २२७, ३३५, ४२८,
 ६१४
 अतिगले—३०६
 अतिवंत—२६१
 अतिवत्—२६०
 अतिसरूप—४२८
 अतीत—६५६
 अतुल—२०२, ४५६, ४६१, ५०२
 अतुर—५६१
 अंत—२७३
 अंतरिक्ष—३२५
 अंतरीक्ष—४८२
 अंतु—२, ४६
 अयि—३१४
 अदिणि—२७३
 अधिक—११, ३८६, ७०१
 अधिदु—२५३
 अनानत—१४३
 अनंत—१०, ३४६, ५००, ५०४, ६०६
 अनंतु—६
 अनंतु—५६१
 अनागत—६५६
 अनिवार—२०, १२१, २३६, ६११
 अनूपम—६००, ६०२
 अपमाण—४८३

अपय—३६८
 अपवातु—७३
 अप्रमाण—१७५
 अप्पहि—२०७
 अपाण—४८२
 अपार—१८, १६५, २३३, २३४,
 ३५७, ५५६, ६४४
 अपाह—२३०, ५६१
 अपूरव—१६२, २२४
 अफामु—६०४
 अफालित—७६
 अभया—२७४
 अभिनंदणु—८
 अभेडउ—२७६
 अंबमाइ—५
 अमइ—२७०
 अमृत—६५३, ६६२
 अमर—२३२, २८१, ४६२
 अमरदेउ—२१८
 अमरदेव—२१६, २१७
 अमिगिभ—५२६
 अयतज—५३६
 अयाण—३६२
 अर—२११, २३६, ४२२, ५१०
 अरजुन—२२४
 अर्जुन—४५६, ४६८, ४७४, ४६३
 अरडाइ—३५८
 अर्य—३०१
 अर्यु—३७६
 अर्यु—५१८
 अरराइ—३५६
 अरहत—२३१
 अरि—५३८
 अरिदल—१७४

अरियलवण २१
 अरियणु—१७१
 अरिराज—४५
 अरु—६, २०, ३४, ४१, ५१, ७१,
 ६०, ६६, ११३, १६२, १६२,
 २५१, २६०, २६५, ३४५,
 ३६७, ४१६, ४२०, ५०७,
 ५०८, ५१६, ५५६, ६७३,
 ६६६,
 अरुजे—५०२
 अरे—३०३
 अला—१०३
 अलावण—४, ५८०, ६३६, ६४४,
 ६४६
 अलित—२६४
 अलितलि—४२०
 अलियज—२६७
 अलोकण—२५५
 अय—७६, १०७, १४१, १७८,
 १८६, २५२, २६४, २६५,
 २६७, ३०६, ३१०, ३११,
 ३२३, ४२६, ४६८, ४६६,
 ४७१, ४७३, ४८१, ५१५,
 ५१८, ५४१, ५४३, ५५१,
 ६०३, ६०४, ६०३
 अवगी—६८५
 अवगुण—६०६
 अवटाइ—६२७
 अवटालि—५५३
 अवतरइ—६८६
 अवतरणु—१६२
 अवतरित—२३१, ५०२, ५४०,
 ५६५, ६१०, ६६५
 अवतार—६१५

अवतार—६००
 अवधारि—६७
 अवर—३३२, ४१५, ४१८, ४४५,
 ५६१, ५६५, ६३८, ६४७,
 ६६४
 अवरइ—३८१
 अवर—८, २२, २४६, २६७, ३६३,
 ५६३, ५६६, ६६१, ७००
 अवलोइ—५४२
 अवसइ—११०
 अवसर—४३३
 अवहि—५१३, ५६१
 अवाप्त—१८, ६६, १११, ३१४,
 ३६६, ५६५, ६६३
 अविचार—२३३
 अविचार—२१७, ५६६
 अवितेतिवज—५६५
 अवेमि—२८८
 असगुन—३५६
 असंलि—४८५
 असराल—२८१, ५८०
 असरालु—६
 असवार—३३२
 असवारित—३३७
 असिवर—१७६, ४७६, ४६२
 असोली—०३३
 असोम—१० २६, ४१, ५३०
 असुम—६६८
 असुर—२३१, ५३८, ६६६
 असुह—०३५
 असोम—६८, १६५, ५०६, ५३५,
 ६८३, ६८८
 असोमु—३५, १५२, ५३५, ५४५,
 ५६७

असेसह—४६१
 असोम—२६, १०२
 अह—७३
 अइ—१४, ३७६, ४०४, ४७२,
 ४४६, ४५६, ६३३, ६५१
 अहउ—३७८
 अहव—३६
 अहनहइ—१४६
 अहंकाश—२३०
 अहार—४४३, ६५३
 अहाश—३८४
 अहि—१६६, २३०, ३०८
 अहो—३६६
 अहोडी—३०७

आ

आइ—७५, ६४, ६६, ७२, ७५,
 १०७, ११३, ११५, १२२,
 १३६, १६०, १६५, १६८,
 २००, २०१, २०६, २१०,
 २१६, २२०, २२४, २५१,
 २६०, २८१, २६७, ३०२,
 ३४०, ३५६, ३५६, ३८८,
 ३६२, ४१६, ४१७, ४३७,
 ४६५, ४६७, ४६६, ४७३,
 ५०५, ५४८, ५७१, ६१८,
 ६२८, ६४३, ६४५, ६४६,
 ६४६, ६६४, ६८१

आइत—५६४
 आइत—१६७, १७१, ४३३, ६५८
 आइती—३०४
 आइसे—१४५
 पाउ २०६

आए—३६८, ४२६, ५६५, ५७७
 ६४१
 आकउ—१८४, २५६, ४२६
 आकास—२७, २१४
 आक्षित—५७०
 आखउ—३३०, ३७८, ४५५, ४५६
 आखट—२६६
 आखरू—१
 आखहि—४४६
 आगइ—१०७, १६६, १६६, ३८६,
 ४३६, ४५८
 आगम—४, ६६६, ६७०
 आगमणु—२६, ४०८
 आगमु—६७३
 आगलउ—५१४, ६१२
 आगली—३६
 आगय—२६६
 आगातथ—१६८
 आगि—४७८, ५२८, ६७२
 आंगुल—३२४
 आगुली—३६३, ४२२
 आगे—३८६, ५६८
 आगां—५७७
 आघाइ—४०४
 आचल—२४१, ३६७
 आचलइ—१६२
 आचुक—३७५
 आधर—५४
 आज—२८, ७४, २८६, ४२६,
 ४३२, ४६६
 आजि—१०१, ४६१
 आमु—६६, ८७, १८६, २५६, ४१४,
 ४१६, ४१७, ४७५, ४६३,
 ५१५, ५२३, ५५२, ६७६

आठ—८०, ६७३

आठमउ—८

आठयउ—५८७

आठयो—६३२

आडहु—५३३

आडो—५३६

आणइ—२५७, ३७६, ६११

आणांदिउ—१८३

आण्डु—५८

आणि—२६, ४६, ५७, ६३, १००,

११३, १३३, १८५, १६२,

१६७, २०३, २०७, २०८,

२१७, २४४, २४७, २७२,

२७३, ३८८, ३६३, ४०३,

४७१, ४७२, ५६२, ६८७

आणिउ—३२७, ३८६

आणिउउ—३४

आणिह—५८३

आणी—५७२

आण्यो—६०३

आणी—६३

आथि—५६, २७१

आडम—६३८

आडह—३६६

आडि—३४७

आघासण—३८६

आघु—४०४

आनंद—१२७

आनंदिउ—५६०

आनडु—६८३

आप—२४४, २८३

आपइ—२२४

आपण—२६८, ४४१, ४८७

आपणउ—१५५, २७८, ३८७,

३३४, ४०७, ४२१, ४३२,

४८८, ४६४, ६५१

आपणी—४७, १६२, ६३१, ६५३

आपणो—६०, ३७१, ३७५, ५२३

आपणो—३११

आपणो—२०८

आपणउ—५०७

आपणो—४५३

आप्यउ—२०३

आपणु—१७३

आपणु—६७०

आपि—८४

आपिउ—१३३, २०८, २१७

आपो—५२, २६४

आपु—३००

आपुण—३८८

आफइ—२००

आफउ—१६२, ४१२

आफरयउ—४४३

आफह—२६१

आफहु—५५, ६०१, ६०२

आफि—१६३, ३०२

आफो—६३, १६१, २१५, २४७,

आफोह—३०४

आफुहु—६७०

आभरण—१०३, २२६, ६०८

आभिडई—२६१

आम—२१०, ३४७

आय—३५३

आयउ—२८, ३२, ५३, २१६,

२१७, २६३, ३०३, ३६२,

४२८, ५६०, ५६३, ५७५,

६६१

आयम—६२६
 आयमु—४७६
 आयिज—२१६
 आयो—३८, ४५, ६०, १४६,
 १५६, १५८, ३३६, ४५५,
 ५६५, ६८३
 आयौ—२८६
 आरति—५६२, ५७०
 आरंभिज—६६६
 आरुडो—५२५
 आलि—४३१
 आलिगनु—६१०
 आलु—६६
 आलोम—१६२
 आव—१३६, ६८०
 आवइ—३२१, ३६६, ४१४, ४१५
 आवत—४३, ७०, २०६, २६०
 आवतु—१७६
 आवते—३६७
 आवघ—४७७, ४६७
 आवते—३४८
 आव—२०८
 आवधु—४५०
 आवंतु—३२१
 आवट्ट—२५३, ४४६
 आविज—४६६
 आवं—१६६
 वास—३३३, ५१६
 वासीवा—३७७
 वासुपातु—६३०
 वासू—१५१
 वाहाव—३७८, ३७६, ३८०
 वाहि—१६, ५६, १५२, १५४,

१६८, २२६, २४३, २५७,
 २८६, २६८, ३०३, ३०४,
 ३३६, ३७०, ३८०, ४०६,
 ४०६, ४४०, ४६७, ४७१,
 ५००, ५०१, ५१०, ५१६,
 ५३७, ५५०, ६०५, ६०६,
 ६१०, ६७७, ६८६

इ

इक—३४, ३७, ६०, १४१, २५१,
 ३०१, ३२५, ६१५, ६४५,
 इकु—३४, २४६ ४३०
 इकुइ—३६२
 इकुसोवन—१८
 इंगल—१५
 इणि—२६५, ३६२
 इणी—१२३
 इतडज—४३२
 इतनज—२३६, ३३०
 इतडो—१८५, २८६
 इत्वही—६२६
 इतु—३८३
 इयंतरि—६६१
 इंडु—५४१
 इदजालु—२२२
 इन्द्रलोक—१५३
 इन—४८०
 इनउ—४८६
 इह—३३४, ४३८, ४५८
 इनके—४५६
 इनकी—१८६
 इनडी—२०४
 इनी—६०६
 इण्व—५८५, ६८०

इम—४१, १४३, १४५, १४६,
२०३

इराम्वत—६८

इय—६६३

इव—६७२

इह—२८, ३६, ७६, ६६, २७८,
३०५, ३२३, ३३६, ४३८

इहइ—४५३, ५४१

इहर—४५३

इहि—४०, ४४, १२५, १६४, २५२,
२५४, ३२२, ३२६, ३३३,
४३८, ५१७, ५२३, ५३७,
५४७, ५४८, ६३०, ६५१

इहिर—३७१

इहितउ—१७६

उ

उह—६०, ३५६

उकठे—१६१

उत्तलं—३६३

उगालु—६५, १००

उव—१३१

उर्षंग—१५

उषरइ—३६६, ५८१, ६३१

उष्वरइ—५६८

उषी—१३१

उद्यपउ—१७३

उद्यलितउ—५८१

उद्यनी—७१, ८६, १७५, ४८३,
५६३, ५६७

उद्यंगह—१३३, ५५१

उद्यमि—५६०

उद्यर—५६५

उद्यहु—५५४

उद्याहु—१३५

उद्याऊ—२२३

उद्याव—८६

उद्याह—४१६, ५८६

उद्याहु—४४, ८५, २८८, ३०२,
४१३, ५६६, ५६६ ५७५,
५८५, ६२१, ६५४, ६५७

उद्यतल—१०३, ३१४

उज्जाणु—१३८

उर्जणि—२६६

उभाइ—१७०

उभावलि—१३६

उभिल—४१८

उठ—३८१, ६७२

उठइ—४४४, ४६० ५१३, ५५६

उठहि—४३७, ४४२

उठाइ—१३२, १३३, १५६, ५५१

उठावइ—१२५, १४४

उठि—६८, १०१, २४४, २७२,
४३७, ४४३, ५५७, ५५६

उठितउ—२१२, ४६६

उठियोउ—४५१

उठी—४००, ४२५, ५६४

उठीमउ—१८०

उठे—३३६, ३५६, ४८८, ५५८,
५५६

उठी—२८५, २८८

उठी—७३

उलहारि—४०

उतपानि—६६४

उतरइ—५४४

उतरि—१२३, ३२०, ५४०

उतर—२३६, ४१०, ६६१

उत्तम—१५
 उत्तम—३१६
 उत्तारक—५६२, ५८३
 उत्तारण—४२०
 उत्तारि—३४१, ४२२, ५७०, ५८४
 उत्तार्यो—२८७, ५५७
 उत्तारी—१०२
 उत्तिमु—३८०
 उत्तिरि—२६६
 उत्थत्यड—५५७
 उदड—४२, ५८२
 उदधिमाल—२६६, ३०५, ३१२
 ४५५, ४५६
 उदो—३१६
 उदोत—२६३
 उधोत—६८३
 उद्यान—५६, ३३८, २४०
 उपए—२६५
 उपजड—११, १५१, १५३, २३२,
 ४०५, ५०८
 उपजावड—४३१
 उपजी—३८६
 उपणउ—६, ५६४, ५६८, ६६०
 उपणि—२७
 उपणी—३६३
 उपदेस—६१०
 उपनउ—२७, ११७, ५१७, ५५७
 उपनी—१७७, ४०३, ६७६
 उपनो—३३, ३२८, ३७६
 उपनो—०८६
 उतर—११, १८३, १८७, २१४,
 २५८, ३३७, ३४२, ३७७,
 ३८१

उपरा—३८१, ३८२
 उपराउपह—१६७, २०७
 उपरि—३८१, ५११
 उपाइ—३६३
 उपाउ—७६, १६४, १८६, २०२,
 २५२, २६२, ३२३, ४८१,
 ५६१
 उपाय—८२
 उपरइ—६७२
 उभउ—२१६, २६६, ३२०, ४५०
 उभो—६७, ३५७, ४२४
 उभे—८६, २१२, ४३५, ४४२,
 ५६३, ५६५, ६३७
 उभो—२०२, २३८, ३६१, ३७५
 उभो—६
 उमइ—२८६
 उमाले—६८८
 उर—२३०, २५०, ५५२, ६६५
 उरइ—५३२
 उरणि—५७४
 उरुपु—२६५
 उल—४२०
 उलगाणे—३३६
 उवरउ—३७०
 उवह—२०७, ४४३
 उवरं—२८८
 उवसत—२२३
 उवार—४६५
 उवारि—४६५
 उवारु—४६७
 उविहाह—२१७
 उह—८१, ३१३
 उहदे—५२६

ऊ

- ऊँटु—३५८
ऊटू—३५६
ऊण—४२०
ऊतर—६७६
ऊपरऊपर—६१८
ऊमी—२३५
ऊवट—२३५

ए

- एक—३०३, ३८०, ४४४, ४४८,
५८१, ६०२, ६१६
एकइ—५३६, ६५७
एकठा—२५४
एकत—६५४
एकतउ—३८०
एकहि—६१५, ६४६
एकतावक—६४६
एकीतो—४७३
एकु—२५७, २७२, ३५६, ३७८,
३७६, ४३६, ४५७, ५३६,
६०५, ६२०, ६८२, ६६३
एकुइ—३८८
एकुउ—३७६
एकुह—४७३
एगुणसीवार—१०
एतइ—१२६, ४१६, ५८४, ५६३
एतउ—२२१, २६४, ४३३
एतह—११४, ११५, ६१३
एतहि—५५०
एतहु—५७१
एने—३६८, ४२४

- एम—३६६, ५५४, ६११
एम्ब—३६, ६६७
एरछनगर—६६५
एसो—६३३, ६५४
एसे—१५१, ४३४, ४६०, ४७८
एसं—१५३
एसो—२६८, २८३
एसो—१३६, १४८
एस्यो—१४४
ऐह—१८७, २५५, २६५
ऐहु—६५, ३२८, ४०६, ६६७
ऐसी—४८३, ५१२
अंसो—३६४
ऐहु—६२१, ६४३

ओ

ओरइ—६१६

क

- कइ—६५
कइय—३४८
कइवं—३३०
कइसइ—३५
कइसी—४५१
कउ—२, २८४, ३२३, ३३६, ४०२,
४३०, ४८१, ५१६, ५६५,
५८५, ६०६, ६१२, ६५७,
६७६, ६८०, ६६४
कणकंण—६८८
ककण—२३६
कंकणु—२१७
कचनार—३४५
कंचण—१६, १६१, ३१३, ६६६

कंचणमाल—२६५, ५७१
 कंचणमाला—१२६, १३३, १३५
 कच्छु—५१४
 कच्छुक—१११
 कच्छुस—३४०
 कजल—३०
 कठिया—३६२, ३७५
 कठिहा—२३४
 कठीया—३६७
 कठाइ—४३२, ४४६, ४४७
 कण्णखउराउ—१६१
 कण्णय—२६, ३११, ३६६
 कण्णयमान—१३५, २४१, २४५,
 २४६, २५०, ५५२
 कण्णयमुकट्टु—१६५
 कण्णयवीट्ट—३४५
 कण्णिक—६३
 कण्णौ—३३४
 कत—१०२, २३०, ३६२
 कतह्वती—१
 कयंतर—४१७, ४३३, ५६३
 कयनध—४१३, ६६१
 कया—११, १३६, १६३, ४४३,
 ६५२
 कन्ह—५०, ५५२, ५७५, ६०६
 कन्ह—६०, ६३, ६६, ६७
 कनउ—६०३
 कनक—३७५, ५७६, ५६१
 कनक्यालु—३२५
 कनकइइ—२३, ५२०
 कनकमाल—०३, ०४६, ०५१, २६३,
 ०७७, ५७५, ६२२
 कनप—५२०
 कनपमान—२३०

कन्या—२२३, ३०७, ६५६, ६५४
 कनवजी—५७६
 कंदपु—६२४
 कंदर्प—६६२
 कंदप—२१६, २४३, २६१, ४१२,
 ५६०, ५६२, ५६३, ६३५,
 ६३७, ६६२
 कंदपु—५३०, ६३७
 कदलु—६२५
 कंधि—२१३
 कपट—६७
 कपट्ट—५०२
 कपत—३७२
 कपित—६७, २६५, ६४३
 कमाण—६२६
 कमाणु—२७६, २२४
 कमाणु—२७२, ६२७, ६६०
 कमल—३
 कसंडल—२५, ३१, १४६
 कसंडलु—३६०, ३६१, ३६४, ३६५
 कम्मट्टु—६६७
 कम्मण—४२३
 कम्मणु—१४४, २२६, ३२४, ५२२,
 ५६२, ६७३
 कपउ—४३०
 कपट्ट—२०२, २३३
 कपय—२१२
 कर—३, ५, ३३, ६३, ७०, ७२,
 ७६, ७६, १०३, १६१, २११,
 २३४, २३५, ३४३, ३६०,
 ३६५, ३२३, ४११, ४५५,
 ४६६, ४७५, ४७६, ४७६,
 ४७६, ४३३, ४३६, ४४०,
 ७०१

करह—२, २१, ३०, ३६, ५२,
 ६६, ७६, ८२, ८४, ८५,
 ८७, ९५, ९५, ९६, ९७,
 १०६, ११०, १२५, १२७,
 १४०, १४४, १५७, १६४,
 १६८, १८१, १८५, १८८,
 १९०, १९१, २०२, २०८,
 २५०, २५१, २६५, २६६,
 २६६, २८३, २९१, २९२,
 २९५, २९८, ३०८, ३२३,
 ३३२, ३३७, ३४२, ३५५,
 ३५७, ३७७, ३८५, ३९३,
 ३९५, ३९६, ४०५, ४१०,
 ४१३, ४१८, ४२३, ४३६,
 ४४५, ४५१, ४७६, ४९२,
 ४९५, ४९७, ४९९, ५०५,
 ५०७, ५३४, ५६८, ५६९,
 ५८६, ५९७, ५९८, ६०१,
 ६११, ६१२, ६१७, ६३६,
 ६४१, ६३७, ६८१, ६८५
 करई—५०७
 करहस—५६४
 करउ—७, १३, २७६, ४६१, ६४७
 करकह—४८४
 करककण—१०३
 करटहा—३७६
 करण—५६, ६१, १६१, ३०८,
 ४०१, ५४५, ५६४, ६४६, ६८१,
 करत—३२, १११
 करतउ—६०३
 करंत—४२, ६१, ३०१, ३१६,
 ५२६, ५८२, ६८२
 करंति—५६३
 करंतु—१२२, २६२, ५२६

करम—५८८
 करमबंध—१२६
 करघउ—५८४
 करवह—५६६
 करवाल—७०, १७६, ४८६
 करलेहि—७२
 करहं—४
 करहि—१११, १२१, १४३, १८२,
 १८८, ६२६
 करह—४६, ७०, ११३, १४८,
 १६६, १७०, ३०५, ३६१,
 ३८५, ३८६, ४००, ४८१
 ५५४, ६१७, ६४२
 कराइ—१३६, १३६, ४३१, ६५८,
 कराउ—५६, ५७, १००, ३६८
 कराण—६६६
 करावह—११४
 कराहि—५६२
 करि—१६, २६, २७, ५३, ८२,
 ८८, १५८, १६७, १७७,
 १७६, १८६, २१३, २१६,
 २३७, २३८, २३६, २४०,
 २४५, २४६, २५२, २७०,
 २८०, २९४, ३०७, ३३३,
 ३३७, ३५१, ३७७, ३९६,
 ४०५, ४०८, ४१८, ४४८,
 ४६६, ४७०, ४७२, ४९६,
 ५१५, ५२५, ५३१, ५३३,
 ५४०, ५७५, ५७७, ६११,
 ६५८, ६५५, ६६८, ६७५,
 ६८७
 करिवालु—४६७
 करिहा—४७६
 करिहि—११०

करी—६५, १४०, १६६, २१५,
२७६, ३५१, ३७४, ४१८,
४१६, ४८८, ६३६

कवण—३४७

करेइ—८०, २२२, ३६६, ६८६

करै—१३५, २६०, ३५८, ३७८,
५०१, ६६२

कर्म—६६८

कनकमाल—३१६

कतपर—१२७

कतपह—५६१

कतपल—५८६

कतपलु—३२१, ६२१

कलस—१६, ५६३, ५६८, ५७६,
५६१

कलसइ—१६१

कला—२४

कलाप—६८१

कनापु—३०८

कलि—३१

कलिगह—५७८

कलियह—५६१, ५८१

कलियलु—१७३, ३१८

कवण—६६, १४२, १४७, २०५,
२४१, ३१३, ४४७, ५०६,
५३५, ५७३, ५७६, ६८५

कवणई—४०४

कवणु—१०३, १०६, १३५, १३६,
१५७, १८५, १६८, २१०,
२३६, २७७, ३२०, ५०७,
५६४, ५६८, ५७०, ५०१,
५२२, ५७७, ५६२, ६०४,
६५३, ६६८

कवणु—६३

कवणु—६३

कवणु—६३

कवणु—४३२

कवि—३, ५५६

कवित—६३८

कवितु—१, ७, १३

कमु—१४१, ५२४

कमु—५३८

कसमीर—५७८

कह—११५, १६६, २६०

कहइ—४०, ४४, ५०, ६६, ११६,
१२३, १४४, १४६, २२७,
२६३, २७७, ३०५, ३०६,
३१४, ३६६, ३७८, ३७६,
३६३, ४०५, ४२७, ४३७,
४४३, ४४५, ४४६, ४५६,
४५७, ५०८, ५२२, ५३७,
५४१, ५५०, ५६६, ६०७,
६२७, ६३३, ६४१, ६५१,
६७५

कहउ—४८, ६३, २५२, ५४६, ६२६

कहण—७३, १४७, ५०६, ५४६

कहत—७५, १७८, ३००, ६२६

कहति—७४

कहलाउ—४७५, १२८

कहसा—४०५

कहहि—६२६

कहहु—४८, ६३, २५०, २५२,
२८३, २८६, ४०७, ५४६,
६०४

कहा—२६, ७६, १०६, १५१, २२०,
३२६, ४१०, ४१०, ४४६,
४५८, ४५६, ५०७, ५०८,
६२६, ६३६

कहि—३६, ४८, ६०, १४०, १६३,
२३०, ५६५, ६७०

कहि—३६, ४८, ६०, १४०, १६३,
२३०, ५६५, ६७०

कहि—३६, ४८, ६०, १४०, १६३,
२३०, ५६५, ६७०

कहिउ—३३, ३६८, ३८०, ४१३,
 ४१४, ५७०, ६२८, ६६६
 कहिए—१६८, ४४८, ६४०
 कहिठार—५६५
 कहियउ—१६०
 कही १५०, १५६, २६०, २६७
 कहीए—५६७
 कहू—५७, ८५, १००, १०६, १६६,
 १६७, १७०, २५२, २५४,
 २६२, २६०, २६७, २६८,
 ३०१, ३०३, ३०५, ३०६,
 ३२६, ३२८, ३३०, ३८४,
 ३६०, ३६४, ४१०, ४३८,
 ५४३, ५४५, ५६४, ६०७,
 ६२५, ६२५, ६२६, ६४२,
 ६६६, ६७०, ६६८
 कहू—३४, १०४
 कहे—३६७, ४१५, ५१४, ६३२,
 कहे—१६६, २८५, ३३५, ४२१,
 ४४४, ४५५, ४८५, ५१२,
 ६२८
 कहो—३२२
 कहो—२५५, ६०६
 कहघउ—२०५, २५५, ३४०, ३६६,
 ५१५
 कहघो—६२३
 काने—५५
 कानु—४८४
 कान—४२७, ६०४
 कानु—४१६, ५१५
 कानइ—३३६
 काने—४२६
 कानिगो—४८४
 कानइ—१७६

काड—२६६
 कान—३२४, ३६३, ४२२, ४२५,
 ४२६
 कानकेजि—५७८
 कानह—६०, ६६, १००, ४५२, ६६५
 कानहु—५६, ४५८, ५४२, ६०८
 कांपइ—४५०
 कापह—४५३
 कापरछाप—५७६
 कांति—६१२
 काणि—११३, २४१, २४७, २७२,
 ३६१, ५१७
 काम—५७, ३४१, ३४३, ४३३,
 ४३४
 कामबाण—१२, ५४, २३६
 काममुदरो—२३४
 काममूदरो—२१५, ६०७
 कामरस—२४१
 कानिणि—१२१
 कानिणी—३५६, ४१६, ५६३, ५६७,
 ५६८, ५८१
 कारण—२६५, ३६६, ४०६, ४१५,
 ४१६, ५०८
 कारण—१२७, १४०, २४१,
 कारण—२६५
 काल—३१, ६८, १६८, २०५,
 २७६, ४८६, ५०२, ५३६
 कालसवर—१३६, १५६, १७२,
 २५१, २५२, २८५,
 ५४७, ५४८, ६७८
 कालसंवर—२७७
 कालामुर—१६८
 कानि—४४६
 कानु—१६६

कालुगत—६६४
 कालू—४५
 काली—४८४
 कायर—४६१, ५७६
 कासमीर—३
 काह—५६०
 काहउ—१४१, २७२
 काहा—४०८
 काहृस्वउ—३६
 काहे—२५५, ३३३, ३८१
 काहो—१०८, ३५८, ३६२, ३६३
 काहो—१२५, १४३, ३५५, ३८५,
 ३६३, ४७०
 किउ—६६०, ६६१
 किए—६८३
 किकर—२००
 किछु—४०४
 किजइ—५६६
 किजइ—६५६
 कित—३१०, ३३४, ३४०, ३७१,
 ४७१, ४७३
 किहहृ—३६३
 किम—४८, ७३, १७७, ३०३,
 ४५८, ६४७
 किमइ—४४०
 किम्ब—३०२, ४६०, ५५५
 किम्बहउ—५७४
 किमाड—१७
 किमि—२८४
 किगु—४०५, ४०६
 कियउ—१५१, २१०, ३२८, ३२६,
 ३३६, ३६७, ४३२, ४३३,
 ५६२, ६१०, ६१६, ६२६,
 ६५०, ६५६

कियो—८८, १८७
 किरणि—५६५
 किलकइ—५०४
 कितन—५४२
 कीए—२७४, ४४४, ६३०
 कीमइ—१४२
 कीम्बहृ—४३८
 कीमउ—२८, ३२, ४३, ५८, ७६,
 ८६, १७६, १८५, १८६,
 २०१, २४८, २५२, २७२,
 २७३, २८४, ३४२, ३६४,
 ४३६, ४८८, ५८५, ६०६,
 ६१६, ६३०, ६५२, ६७८,
 ६६४
 कीमह—५३०
 कीमो—८८, २८८, ५६१
 कीर—५७८
 कीरति—५८८
 कीरती—२४३
 कीहृ—४७
 कीडा—१३०, १८७
 कुकडहि—६१७
 कुकडा—६१८
 कुकुवार—३८२
 कुकुवारठ—२५०
 कुटम—५५५, ५८५
 कुटगु—५६०
 कुटव—५६१, ६८०, ६६०
 कुंड—२०८
 कुंडल—२३५
 कुंडलपुर—५६, ५६, ८४, ४७२,
 ६२३, ६३२, ६५८
 कुंडलपुरि—३८, ६३५
 कुंडु—३४६

कुतातु—३२, ६५, ११०

कुंघु—१०

कुमर—१७६, १८३, १८७, २५१,
२६४, ६२४, ६७५

कुमरहि—२६४, ५६६

कुमरहि—१६७

कुमरह—२६८

कुमार—२५७, ३०५

कुमार—३३३, ४६१

कुम्बर—२२२, २२७, २५८, २५८,
२५७, २५८, ३५४, ५८५

कुम्बरहि—१८५, २१८, २३०,

कुम्बर—१३३, २१३

कुम्वार—२१४

कुम्वरि—४०, ४१, ३०३, ३०७,

कुम्वार—३६, १३४, १३८

कुरवइ—११४

कुरवि—४६१

कुरखेत—२७६, ६६१

कुल—६८३

कुलदेवी—५३७

कुलमंडल—५६१

कुलह—५०२

कुली—२०

कुवडड—२७०

कुवडा—३६५

कुवर—६२, १३६, १५७, १६५,

१६६, १६७, १७२, १७५,

१७७, १८६, १६२, १६६,

२०३, २२६, २३७, २५७,

२५३, २५४, २६४, २६६,

३०६, ३३१, ३३५, ४३५,

४६४, ५७५, ५५३, ५५४,

५७५, ६१४, ६१५, ६१८,

६२२, ६२४, ६४५, ६५५,

६५७, ६५६

कुवरहि—५८५

कुवरि—३८, ५६, ६६, २१६,

३०८, ३५५, ६२१

कुवर—१५६, १७६, २३८, २५८,

२६५, ३०२, ४७१, ५६०,

६३७

कुसमवाण—२२४

कुसमरस—६६३

कुसल—२६

कुसुमवाण—२३५, ५१६

कूंकू—१२१

कूखि—६००

कूजउ—३४५

कूटइ—२५०, ३४२

कूटहि—३८२

कूटि—४१७

कूड—२४६

कूडीवूधी—१०६

कूडोया—३२, २४६

कूर—४०२

कूवा—१६१, ३१४

कूवे—७

केउ—४७६, ४७७, ४७८, ४६१,

४६२

केतउ—२७३

केते—६२६

केमु—६८१

केम्बु—७०१, ३७०

केला—३४७

केलि—३४६

केव—४४५

केवरड—३४५
 केवल—६६४
 केवलज्ञान—५६४
 केवलज्ञानु—१५२
 केवलणाल—१२
 केवली—१६०, २६०
 केवलु—६६०
 केस—२५०, ४२०, ५२३, ५२४,
 ६२३, ६२२
 केसइ—५२३
 केसव—४२६, ५०१, ५१०, ५२४,
 ५३५, ५५१
 केसु—५०६
 केसे—६४
 कंलासहि—६५६
 कोइ—१, ३२, ४०, ४७, ५५, ६६,
 १०५, १२४, १३४, १६६,
 १६२, १६६, १७६, १२३,
 १६२, २१२, २४३, २६७,
 २७२, ३३६, ३५४, ३५६,
 ४४४, ४२६, ४६७, ५११,
 ५३६, ५४३, ५६६, ५६२,
 ६६३, ६६७
 कोउ—२, ४५६
 कोट—३१४
 कोठि—६६२
 कोण—१६६, ४५६
 कोठि—००, ५१६, ६१७, ६१२
 कोठियुग—१६
 कोठो—३०७, ३०६
 कोठु—१७६
 कोत—४७१, ४७५
 कोनिगु—३६४
 कोनु—४७६

कोम—४६६, ५०२, ५१७, ५२०
 कोपा—३३१
 कोपाहड—७६, ४४१, ४६३, ५१२,
 ५२७, ६४२
 कोपाहडु—३३१, ५२५
 कोपि—६२, २१०, ३४०, ४३५,
 ४७४, ५०६, ५११, ५३७,
 ५४२
 कोपिउ—६७, २५६, ३६३, ६४३
 कोपिय—३०४
 कोपु—३३, ५३३
 कोप्यो—१७२, ४६०, ४७४, ४८०,
 ५१६
 क्यो—५१३, ५२४
 कोमलि—५२
 कोवड—४७४
 कोवडु—६४
 कोवानल—३६
 कोवि—५०२
 कोसु—६२२
 कोह—२२७
 कोन—४६७
 कोतोन्वना—४५६
 कोसाहड—४६६, ५२०
 कोरो—२७६, ६६१
 कोसाद—२३४
 क्षण—३७, ४४०
 क्षप्रो—४४६
 क्षिपति—६२०
 क्षिम—५२५
ख
 खड—४५, २७०
 खउ—४४४, ६१३

खण—३७, २६७, ५६०
 खडी—५३
 खण—३५, १२२, १३१, २१८,
 २२१, २२५, २३७, २८८,
 २६१, २६२, ३६०, ४०२,
 ४२५, ४३०, ४३१, ५३५,
 ५४५, ६२८, ६६६, ६६०
 खत्री—२०, ४६०, ४६५, ४७३,
 ४६५, ५३०, ५१०, ५११,
 ५१२, ५२२, ५३०, ५५६,
 ६०६, ६४८
 खंड—४६, ३०६, ५३४
 खंडव—३६
 खंडव—४६८
 खमार—३६७
 खपड़—६६७
 खयंकर—६६६
 खयंतु—५०२
 खर—५०६, ५३२
 खरठ—३१६, ६४३
 खरण—५४०
 खरी—६१, ६८, १३१, १४०
 खरे—८१, १६१, १८३, ४५८, ५३६,
 ६१५, ६३०
 खरी—४४५
 खल—४४१
 खली—३६५
 खाइ—३५, २०६, ३४०, ३४३,
 ३६१, ४०४, ४४५, ४६६
 खाघी—३३८
 खाजदू—३४५
 खाट—६७
 खान—४४४
 खारि—४६६

खिजकरण—६६७
 खिण—२६४, ५२१
 खिजपालु—६
 खिरणी—३४८
 खीप—३४७
 खीर—१६२, ४०८
 खुटी—३६३
 खुपा—३८४
 खुर—७१
 खुरद—४८३
 खुडव—३६४, ४११
 खुडा—३६६
 खुडे—४०३
 खुज—५७, २१६
 खुत—५३७, ४३८
 खुमु—६५४
 खुयव—५८७
 खुय—५५२
 खुल—६१७, ६०६
 खुलण—१८७
 खुमंयह—१५०, ४६३
 खुह—७३, १७५, ४८३
 खुडा—४८३
 खुदि—३०७, ५३३, ७०१
 खुडी—२७५, २६८, ३७१, ४११
 खुल—३०५
 खुहणी—२७६

ग
 गद—१०४, १११, २४५, ३४६,
 ४४३, ६०८
 गई—४०५, ४०५
 गड—२०८, ३७२, ३८८

गऊ—६३
 गण—६६, १२०, १६६, ३३५,
 ४३५, ४३६, ४४१, ५६७,
 ६१५
 गगन—१६३
 गज—३१६
 गजा—५१, ४६६, ४७४, ४६५
 गणत—२०
 गणहर—५६६, ६७१, ६७४
 गणाइ—१६३
 गणे—३१२, ५७६
 गणै—२३६
 गंजहि—१७५
 गंभीर—१६
 गम्बलि—२०
 गव—५२२, ५०४, ५२७, ५३०,
 ५३२, ५५६, ६४५
 गघड—२६, ४१, ५३, ५६, ६७,
 ६६, १०३, ११६, १३३,
 १३५, १३७, १४५, १४८,
 १५०, १८२, १६१, १६७,
 २१०, २१२, २१६, २२५,
 २३०, २६०, २६४, २६८,
 २७०, २८३, २६६, ३२०,
 ३३७, ३५६, ३६५, ३६८,
 ३७६, ३६८, ४०२, ४१४,
 ४४०, ४१६, ४५२, ४५५,
 ५८६, ६०२, ६३६, ६५६,
 ६४३, ६५८, ६६४, ६७५,
 ६७५
 गयलि—१७३
 गयलिहि—१७५
 गयवर—७०
 गयारह—६, ११

गये—११, ६४, ६१, १०२, १११,
 ११५, २१२, २१५, २२१,
 २५५, २७४, ४७२
 गयो—२०, ८६, १०१, १६३, २०४,
 २४४, २५२, २६५, ४४६,
 ४२०, ६२०, ६०३
 गर्ज—२१
 गर्जइ—१७३
 गरहू—३१६
 गर्भ—१११
 गरव—६६
 गरवो—२१३
 गरहुट—६३
 गस्तइ—५०५
 गरहु—५३८
 गरवो—५४६
 गलि—३३६
 गले—३०६, ६४६
 गलै—१८२
 गहघड—२८२
 गहवरइ—१४०, ५८६
 गहवरि—१४७
 गहि—२०२, २१५, ३२३, ४३८,
 ४४०, ४४६, ४४६, ४५१
 गहित—२५१, २५५, ५४०
 गहिर—१६
 गहोर—३५५
 गहे—६४५
 गाइ—४६८
 गाड—२८४
 गाड गाड—३६
 गाए—६३८
 गाजइ—३८१
 गाजित—४७५

गात्रण—४७८
 गात्रहि—७१
 गात्रे—५६१
 गाढि—६५
 गाढी—६७, ६८
 गाम्ब—१५
 गामति—४२३
 गाघड—१२०, ४५७, ५६७
 गावत—३५६
 गावहि—१२१
 गामु—३८७
 गिरवरि—१८६
 गिरि—२८०, २६५, ३७३, ५४१
 गिरिवर—५०६
 गीत—५६३, ६३८
 गीष—१४४, १८०
 गीषीलि—५०५
 गीम्ब—६४४
 गीम्—३१४
 गीटिकासिधि—१६४
 गीडहि—४७७
 गीडहु—६८
 गीडी—५६३, ५६७
 गीडे—१७३, २५६
 गीण—५२, १३६, १४२, ३११,
 ५२०, ६६६
 गीणउ—७०१
 गीणशिलउ—१२
 गीणबड—६३५
 गीणवंत—५६५, ५६७, ६१२, ६१४
 गीणहु—६२
 गीणे—६४७
 गीणं—६१७

गुपत—४४६
 गुका—१८६, १६७, १६८, २००
 २०१, २१८, २२६
 गुमालु—७५, ११०
 गुर—४०६, ५२१
 गुरहु—७०, ४७५
 गुर्—१३, ४०७
 गुजर—५७६
 गुडी—८६
 गेह—११४
 गेयर—६७, १७३, २३५, ४६५
 गेयर्—२१२, २१३
 गेवर—२४६, ४७५, ४७७
 गोडड—४४६
 गोडड—४३८, ४४०, ४४६, ४५१
 गोतु—४०७
 गोहर—४४१
 गोहिब—४३८
 गोहिला—४८, ६१, १०४, १२६
 ४२२
 गोहिली—४१६

घ

घटड—४०
 घटाउ—६८७
 घटाटोप—४८१
 घडिक—६८०
 घण—१२, १७३, २८१
 घणउ—११, ३६, २६६, ३००,
 ३१६, ३१८, ४०६, ४४८,
 ५४६, ५४०, ५६६, ६४१,
 ६८०
 घणघोर—२०१

घणी—६४, १०८, १०६, १४४
 २४१, २४३, २५७, २८८
 ३६४, ४३४, ४५४,

घण्टे—२४, ६०, ३४७, ३४८
 ३५५, ४२६, ५२६, ५७८,
 ६७८

घण्टी—१४४, ४५३

घंटे—२६३

घर—८८, ११४, १२६, १३६
 १७७, १८४, १६२, २३७
 २८८, २८६, ८६४, ३५८
 ३८३, ३८४, ३६६, ४०६
 ४१४, ४१६, ४२२, ४२५
 ४४३, ५५३, ५६०, ५६२,
 ५६३, ५६४ ५६५, ५६६,
 ५६७, ५७२, ५७४, ५८६,
 ५६६, ५६६, ६०४, ६१३
 ६५२, ६८२, ६८३, ६८७

घरह—४०५

घर घर—८४, १२० ५६३, ५८१,
 ५६१ ६५७

घरणि—१५४, २४३

घरबाह—६७५

घरह—११७, ६६५

घरि—२३०, ४०२, ६१६

घरिघरि—१२१

घाह—३६५, ६६०

घाउ—६८, १७७, ५४५, ५६० ६४७

घाघरी—२६३

घानी—५३१

घारह—२६१

घालह—३८३, ३८८, ५२१

घालउ—१२५

घालहु—४७

घालि—१०४, २५६, २५८, ३६३,
 ४७७, ४८७, ५३८, ६१०

घालिउ—२६०, ५३६, ६०६, ६६०

घालिघउ—६२७, ४५१

घाली—१४२, २८७, ३५०, ३५३

घाले—३५१, ५५३

घाले—१७७

घालयो—२५६, ३३१

घोउ—०५३, ६४३

घुत—४७४

घुतु—१४२

घेह—७१

घेहउ—७१, ३५८

घोह—३३१, ३३४, ३३८, ३४१

घोडो—३४२

घोडो—३२७

घोमि—१२२

घोर—१६८

घोरु—३२६, ३३७

घत—७६

च

चह—३१४

चउ—५२६, ६४७

चउक—५६२

चउत्पठ—८

चउतीसह—१२

चउपास—१८, ३१६

चउवारे—१६

चउरंग—१७३, २८६, २८७, ४६६,
 ५३२

चउरंगु—२६२, २७६

चउरासो—३८८

चउवल—२३
 चउवीस—७
 चउवीसउ—७
 चकचूर—५२
 चक—५१, ८१
 चकला—३८७
 चकवड—४६, १५३
 चकचति—१५०
 चककेसरि—२१
 चकेसरी—५
 चडाइ—६७
 चडाइपउ—५१७
 चडिउ—५२१
 चडिवि—२१३, ३३६
 चडइ—२१४, ३३७, ३५८, ३६६,
 ४३८, ४७७, ५०६, ५०६
 चडउ ३३४
 चडहु—६८
 चदाइ—६५
 चदाई—२८०, ४६६, ६४८
 चदावण—३३५, ३३६, ३५६
 चदावहि—३५७
 चडि—१११, १३०, १३५, १५८
 १८६, २३५, २६५, ३५७
 चडिउ—२५ ३३१
 चढी—३, १८७, ३४३, ३५४
 चढीइ—४६५
 चडे—१०२, २८१, ४६२, ४६६
 चडयो—२६३
 चतुरंग—७२
 चंचल—३२३, ३२४
 चंद—१३६, ६४१
 चंद्रकानि मणि—६०१

चंदन—३७३, ५६३, ६६६
 चंदपउ—८
 चंद्र—२०३, २३४, ५१८, ५४०
 चंद्रवपणि—४२
 चंद्रहंस—५३६
 चंडु ५४१
 चमकइ—५३६
 चमनपउ—६०२
 चमतकार—३३७
 चंपइ—६२
 चंपउ—३४५
 चपि—३६
 चंपिउ—२३१
 चमर—७२
 चमरंत—७२
 चम्बर—२३३
 चपउ—६१३, ६१४
 चर—४२६
 चरण—३३६, ३४०
 चरणु—३७४
 चरहु—३४१
 चरित—२६६, २६७, ४२१, ६६२,
 ६६५
 चरितु—११, १५४, १८३, १६८
 २६५, २७३, ३२० ४२६,
 ४३२, ४६२, ५३५, ६६७,
 ७००
 चरेइ—६८६
 चलंत—५०२
 चलइ—८५, १५२, २०६, २६७
 २६४, ४७६, ५८५
 चलई—३३

चलउ—१७३, १६६, ३०८, ४४८
५१०, ६५२

चलत—२६०, ३१२

चलहु—४६, १०१, ४८१, ५०५
५५४, ५८६

चलित—१२४, १४८, १६४ १७३
२४८, २४६, ३१२, ३२६
३५५, ३६०, ३६५, ४४१,
४०६, ५३२, ५५१, ५६४,
५८१, ५६०, ६५८

चलितउ—१८३

चलियउ—२०८

चली—६१, ८५, २६६, ३०६, ३५६
४१६, ४८३ ५२८, ५६३,
५६८

चलीउ—३४, १३०, ४४५

चले—१०८, १७५, १८५, ३०७
४८२, ५०६, ५०६, ५४०
५६१, ६४८, ६५५, ६६५

चन्वी—३५, ८३, २३७, ६२७

चन्वीउ—३३, २३६

चवइ—४६, ११२, ३४३

चवर—१६६

चवरंग—३२०

चवरंगु—८३

चहि—५३

चहु—१८६

चाउ—२०, २००, ४८१, ४६६
५१६, ५२०, ५०५, ६४८

चाउरगु—४८०

चारि—१०६, ३४४

चारयो—१३०, १४५

चारवइ—५४०

चारार—२३

चारि—३२४, ४५७, ५८१

चारि—८०, ३७४, ३६७, ५६८

चारिसी नानाणो—२५६

चारु—३४७

चारयो—३२४

चातइ—११०, ५७०

चाति—१४५, ५१५

चाते—८८, ४७८, ५६४

चातं—४८७

चात्यो—१४६, ६२८

चावर—५८२

चाहि—१४४, १६७, २२६, ३०३,
६०५, ६०६, ६८६

च है—५४५

चाही—३३४

चिन—१७७, ५१६, ६५६ ६६३

चित्तव—६६०

चित्तह—३६३, ४०३

चित—६१, ६०१

चितइ—३५, ३८, ३४६, ६२२

चितइग—३६

चितियउ—३६७

चितियऊ—६११

चितावइ—४१

चितावपु—६७५

चिदिउ—१२२

चिलु—३१५

चिहू—७२

चिलमाइ—४००, ४०१

चीनइ—६३८

चेही—३६२

चेनामे—६६०

चेरो—३६१

चेपो—१०६

चुटो—१४६
 चुंमड—४२६
 चु मियड—५६०
 चुरड—४०१
 चूटी—२५
 चुन—६३
 चुनह—७=, १७६
 चुल्हि—४०१
 चोपडु—३४२
 चोपास—३१४, ३१७, ३६६
 चोर—५७८
 चोरो—६६, ६६, ७६
 चौहटे—१८, ३६५, ६३७, ६४४
 चौदहसं—११
 चौरो—४७२
 चौहजण—६५६

छ

छड—८६, ६३२
 छठि—१२२, १०७
 छठी—५४७
 छण—६४५
 छणंतरि—६६३
 छत्र—१६६, २३३, ५०३, ५०२
 ५०२,
 छत्रजि—५००, ५२६
 छत्री—०५, १४६, ४८१
 छत्रु—१३७
 छपनकोटि—१२८, ३७३, ४४८
 ४५३, ४६०, ५५८,
 ६५५, ६६५, ६६६,
 ६७१, ६७०,
 छपनकोडि—२०, ४६, ४६६, ४६४,
 ५६५

छरनकोडी—८६
 छल—४७२
 छलि—६३४
 छलु—२४५
 छवाइ—५६०
 छहरस—६६२
 छाइ—८१
 छाए—१७, ५७६
 छाडइ—८४
 छाडि—१६६, १६१, २४१
 छाडी—२७२, ३६६
 छात—४८२
 छाडघो—५५७
 छारु—६८४
 छापड—६८६
 छिनि—८२
 छीनि—२६५, ३०८, ४०२, ५१६,
 ५२१
 छीनी—२६४
 छीने—५२३
 छुआवहु—६४३
 छुरी—२१५, २३४
 छुरीकार—२६०
 छुहारी—३४८
 छुटउं—२७६
 छुरी—४७६
 छेव—४५६
 छोटो—३६६
 छोडइ—२६७
 छोडउ—८५
 छोडहि—४६७

छोडि—४६, ४७, ५४, १८४, २६८,
२७३, ३०७, ३७२, ५१६,
६२६

छोडिउ—२३०, ६५२

छोडो—२१, २२१, २५०, ५१६,
५२०

छोडो—२८७

छोरो—६८, २८७

ज

जह—७, ४०, १०६, २१५, ३००
३०४, ३१७, ३२२, ३३०,
३४६, ४०४, ४४८, ४८८,
५८३, ६४३, ६५४, ६६७
६७६

जहउ—४२६

जहसो—३५२

जहसे—३००

जउ—१३, ७६, २१२, २५६, २७७
२८८, ४४०, ५१६, ५६०
६७४

जअ—१६

जअ—१०३

जअन—५६६

जअ—१७५

जअउ ३१६, ५६६

जअन—१६२

जअ—५२

जअ—१७, ५८२

जअ—३३५, ३३६, ४५६, ७७०,
६०८, ६३०, ६३६, ६५६,
६५७, ७०१

जअसि—२४३

जअसो—२४८, ६६५

जअव—६२६

जअह—७०१

जअ—४५६

जअह—५५, ६६, २५७, ३६६,
३७५, ४००, ४२५, ६२०

जअवहि—५०५

जअउ—१७५

जअत—३१४

जअ—८७, १५३, ४१७, ५६०

जअ—८६

जअ—१६६

जअ—१०५

जअ—५६३

जअकु—६३

जअतो—६३१

जअ—१४१, ५६०

जअभूमि—५०८

जअम—१५५, २५५, ६६७, ६८६

जअ—७१, ५०५, ५०६, ५६१

जअउ—२७४

जअह—१०३, २२६

जअउ—२३१

जअभूषण—१५२

जअवेण—१४

जअह—५०, १७७, २५२, २६८,
३०३, ३१५, ३१७, ३६०

३७१, ४१२, ४१३, ४२५

४७३, ५१०, ५१२, ५२६

५३०, ६१६

जअण—८२

—५५६

जंविज—२६५, ६४३
 जम—५०६, ६८५
 जमसंघि—७७
 जमपायि—५३५
 जमराइ—५०५
 जंभीर—३४७
 जंबइ—६१२
 जंबवती—६०६, ६०७
 जमसंवर—१२६, १३२, २४४, २४७
 २५८, २६२, २६७, २८३
 ४०६, ४५४
 जमसंबह—२३१, २३७, २६४, ४१४
 ५७१, ५७३
 जम्मह—२५२
 जगि—३१४
 जग्मु—६८७
 जंबु—४३
 जय—६६६, ६६७, ६६२
 जयऊ—६
 जयजयकार—५६५
 जयन—१५२
 जर—७
 जरदुमार—६७३
 जरदुमाथ—६७४
 जरासंघ—४६५, ५२५, ५३८
 जरी—२३३
 जल—२०५, ३६५, ५२६
 जलमह—१०६
 जल सोखणी—१६३
 जलहर—५६१
 जब—६८, ६६, १४७, १६३, १६५,
 १६७, २०८, २१६, २६५,
 २६६, २६७, ३७२, ४०६,

४६३, ४५०, ४५३, ४६०,
 ४८१, ६४७, ६१२
 जबइ—५६७
 जबते—५६६
 जबहि—१८३
 जबसंवर—१६५
 जस—३१६
 जमु—७००
 जसोधर—२७०
 जह—२४३, ३१६,
 जहां—३८, ६०, ६२, ६४, ६५
 १०५, १२४, १३०, १५३,
 १५५, १६६, २१८, २२०,
 २०५, २२८, २४०, २५८,
 ३३८, ३४३, ३५२, ३५४,
 ३६१, ४१६, ४२६, ४३४,
 ४५२, ४६३, ४४४, ४६३,
 ५६६, ६४०, ६४६, ६६५
 जहि—३०, ६६, १०६, १४०, १५०
 १७४, २२१, २६३, ३१५
 ३१७, ३१८, ३४६, ३६०
 ४०६
 जाइ—३५, ५८, ६०, ६२, ६७,
 ८५, ७६, ८१, ८३, १०१,
 १०५, ११०, ११४, ११६,
 १३०, १३६, १४१, १४३,
 १५०, १५७, १५६, १६३,
 १७५, १६८, २२०, २२४,
 २३०, २३७, २३८, २४७,
 २४१, २४७, २६१, २६३,
 २७६, २८७, २६४, ३३८,
 ३४४, ३४५, ३३६, ३४२,
 ३५८, ३५६, ३६०, ३६१,
 ३६७, ३६८, ३७१, ३७३,
 ३७५, ३७७, ४०५, ४३५,

५३५, ५६३, ५८६, ५९७,
 ५२६, ५४३, ५५५, ५५८,
 ५५९, ५५७, ५६०, ५६३,
 ६०६, ६१६, ६२६, ६२८,
 ६४३; ६५३, ६५८, ६६०,
 ६६२, ६६८, ६८०, ६६२,
 ६६८

जाइति—४५२

जाके—११२

जागह—१२६

जागरण—१२२

जागह—१२७

जागि—६६, ११७, ६७२

जागित—१२८

जाल—१६०

जाल—१३८, ३००, ३०१, ३०२,

३०४, ३५७, ३६०, ४६०

जालह—३६, १२६, १५४, १५७,

१७७, १६६, १६२, ३१७,

३४४, ४४८, ५३५, ५६६,

६०७, ६१०, ६२४, ६७७,

६७८

जालज—१४६, ४०५, ४६६

जालहि—२०

जालह—६३६

जालि—४, १३३, १३८, १६५,

२०३, २०८, २४१, २४४,

३८७, ५६२

जालिड—६५, ७६, ४२६, ५६५

जालिए—१६

जालिक—४७४, ४८६

जालिति—४३६

जाली—२४१, ४५८, ६४५

जालु—१३८

जालु—१६५, १७५, २७३, ३२०,
 ४६८, ४७४

जालुज—६३३

जालुजी—१७, ७२, ७७, २८०, ३८१

४२७, ४८३, ५३६, ५४१,

५५५, ५८२, ६४३, ७०१

जालु—६६५

जालु—६४७

जालुज—२२, ४६

जालुजराह—६२

जालुजराज—२७, १०६, ६०१

जालुजबोध—४४

जालुकराज—१७

जालुस—४६१, ५२६, ५५५, ५६०,

६३८, ६५५, ६६५, ६६६,

६७५

जालुम्ब—५०२

जालुमराज—४७५, ५१७

जालुमराय—२४२, ६३६

जालुगुराज—६४०

जालुब—४६८, ५५८

जालुबन्धि—४७४

जालुबराज—१२८

जालुवी—४६६

जालुवी—४३८, ४६०, ५०२, ६२५,

६४३

जालुवीनी—४५७

जालुवीराज—५२५

जालुवि—६६५

जालुव—१०३, २२६

जालुव—३२, ५४, ६८, १२२, १४५,

१६३, १८१, २८०, २८२,

२६२, ४११, ५०१, ५१८,

५१६, ५४०, ५४२, ५६४,

६२२

जामवंती—६०८
 जाम्ब—५२८
 जायो—२७४
 जालइ—४४०
 जालामुखी—५
 जागु—५१
 जाह—१७७
 जाहि—१०१, ११२, ३०१, ४३७,
 ४४२, ४६४, ५१६, ६८७
 जाहु—३८६
 जिउ—५४३, ६८६
 जिरजाहुति—५७६
 जिण—७, ११३, १८७, २६६,
 २६७, ३३४, ५१७, ६७७
 जिणइ—४६२, ४७०
 जिणऊ—४६१
 जिणभवण—२६५
 जिणभवणु—१८७, १८६
 जिणभूवण—२७
 जिणमु—१६६
 जिणवर—२, ३१४, ६५६, ६७५
 जिणवरु—१२, ४६१
 जिणवाणी—६६८
 जिणसासण—६
 जिणहु—६६४
 जिणिल—५५२, ६२७, ६५१
 जिणिलउ—२११, ५१४
 जिणिलद—६५६
 जिणिलवि—१७४, ४६१
 जिणु—६५८
 जिणी—५०८
 जिणी—५०२, ६१८
 जिणोसण—६६६
 जितइ—५०२

जिण्यो—४४७
 जिन—६६, ७५, ११६, १५६,
 ३०५, ३५३, ३७१, ४११,
 ४२०, ४८१, ६६४
 जिनके—४६०
 जिनुसरणु—६६७
 जिन्हहि—५०२
 जिन्हि—५३६
 जिण्य—४१२, ४१३, ६६०,
 जिम—१०४, १०६, ४६०, ५०५,
 ५८६, ६८३
 जिमहि—५५६
 जिमू—१८१
 जिमि—१०७, १३६
 जितपउ—१८३
 जिघत—१८५
 जिमकी—५७२
 जिहां—८६
 जिहि—४७, १२७, २६४, २६६,
 २७३, २८४, ३१८, ४८०,
 ५१३, ५५०, ५५२, ५५३,
 ५६५, ५६०, ६००
 जोउ—२२०, २३६, ६६८, ६८६
 जोतइ—५३६
 जोतहु—१६५
 जोनहुणे—७३
 जोतितउ—५३८, ६५१
 जोतपो—५४८
 जोभ—२७७, ४८६, ५३६
 जोव—२३२, ४८५
 जोशण—४०१
 जोवत—३७०
 जोवदानु—५११

जुगत—३०४
 जुगतव—२४०, २४८
 जुगति—४८, ४३४
 जुगतौ—२४६
 जुगल—३६८
 जुगलु—२११, २३६
 जुम्—१६७, २७४, ४६७
 जुम्ह—५४२
 जुम्हणह—२०६
 जुम्हत—४६६, ६४८
 जुम्हू—२१०, ५३६
 जुध—१६५
 जुवस—२३५
 जुवलु—२१७
 जुशी—३४३
 जुम्—१३८, १६८, १८२, २२४,
 ४४८, ५१४,
 जुम्ह—४५१, ४६२
 जुम्हण—४७८
 जुम्हि—१८१, ४६८, ५०१, ५४५
 जुम्हू—१८०
 जुम्हा—६१६
 जुम्ह—१६६
 जुम्हउ—११४, ११६, ६७७
 जुम्ह—०८५
 जुम्हू—४६६
 जुम्हणु—४३१
 जुम्हे—३७५
 जुम्हण—३६०, ४ ३
 जुम्हणु—३६१
 जुम्हणु—३६२
 जुम्हि ५६०

जुम्हि—५५२
 जुम्हण—४००
 जुम्हे—१२४, १८६
 जुम्हहि—३२६
 जुम्हइ—४०, ३०४
 जुम्हस—४७०
 जुम्हणी—४७०, ५७५
 जुम्हु—२६ ४०, ६४, ३७०, ४४८
 जुम्हण—१६
 जुम्ह—३३
 जुम्हइ—२११
 जुम्हि—६३, १४८, १६१, २०२,
 २२२, ३५३, ४५५, ७०१
 जुम्हि—४५८, ६१२
 जुम्हो—४०४
 जुम्होति—६६०
 जुम्होनार—६५३, ६६२
 जुम्हइ—१८६ ३६६

झ

झकोतइ—१६
 झणो—३६२
 झपाण—४८७
 झण—५२५
 झणु—६६०
 झणउ—६६०
 झण—१७०, ३८६
 झणहि—६६६
 झणवार—१२०
 झण—१५५
 झणइ—६७
 झणउ—११६
 झणति—६८

ट

टंक—३६६, ३७०, ३७१

टंकारिउ—२८०

टंकारु—७०, ४६५

टलटल्यउ—५४१

टलित—६७

टलं—११६

टल्यउ—२४६

टांग—३७२

टाटण—४७८

टाल—२५८

टोकौ—३६२

टेकलु—३६०, ३७६

टोइ—४२५

टोपा—८७८

ठ

ठपउ—४४, २७६, ४३६, ५२४,
५६२, ५७५, ५७६, ५८७,
६१६

ठपहु—२२३

ठपे—६५५

ठपो—६०, ५२८, ५६२, ६१६,
६२२

ठपइ—३०

ठपहुइ—३२७

ठाइ—२०, ३०, १०६, १२६, १५७,
२३०, २८३, ४६५, २६६,
३०७, ३४४, ३८६, ४१२,
४३७, ४७३, ४८१, ४८६,
५०४, ५३७, ५४८, ५५१,
५७५, ५८७, ६१५, ६१६,
६२५,ठाउ—२३, २८, ४५, ५६, ५८,
७१, ८०, ८२, १२६, १५२,
१५५, १५६, १६७, १६६,
१७८, १६८, २३७, २४२,
२६६, २६६, ४१२, ४५४,
४७१, ४६३, ४६४, ५०३,
५४३, ५५२, ५७२, ६४०,

ठाउणु—५२२

ठाठा—६८, ६०, ४७६, ५००, ५८०

ठाइउ—२६, ३३, ११६, २८२

ठाडे—४३६

ठाडौ—१०४

ठाडौ—१६०, १६६

ठाण—१८१

ड

डरइ—१६६, ३०८

डरहु—३३४

डसइ—१६८

डहणु—४६८

डामहि—५२६

डोम—१२६, ६३६, ६४८, ६८७

डोरे—११६

डोसइ—३१७

डोलहि—५७६

डोते—२८०

ड

डसइ—२३, ५८२

डसोय—६४३

डसयउ—७६, ४५५

ण

एंकाणु—२१४
 एंबण—१८३, ६१४
 एणर—८५, ५६५
 एवि—१
 एविवि—१२
 एमेमु—६७
 एमणालवण—५६१
 एणण—१२
 एणरि—२२६, ४१६
 एणचल—३१४
 एणाय—२
 एणमि—६८८
 एणय—८५, २६३, ३१५, ३५६,
 ६१०
 एणसज—१२
 एणसह—२१४
 एणवाणा—२३२
 एणमुणह—२७१
 एणोमांयु—१३

त

तह—७६, २१४, ३०३, ३६२,
 ४६५, ५१०, ५१५, ५१६,
 ५२३, ५५०, ५५३, ५५४,
 ६२६, ६६६, ६७८
 तज—२७, ८८, ३३, ३६, ४८,
 ५०, ५८, ५६, ६३, ६५,
 ६८, ८५, ६५, ६५, ६६,
 ६७, ६६, ११६, १०, १५०,
 १६७, ०१०, ०१५, ००६,
 ००७, ०५६, ०५०, २७७,

२७८, २८३, २६७, २६८,
 ३०३, ३०७, ३२७, ३६८,
 ३७१, ३८४, ३८५, ३६८,
 ४०३, ४०५, ४०६, ४१३,
 ४२८, ४३७, ४३८, ४४२,
 ४५७, ४७१, ४७४, ४८६,
 ५०६, ५०८, ५१०, ५१५,
 ५५१, ५८३, ६०१, ६१८,
 ६३७, ६६८, ६७१

तणउ—११, ६६, ११६, १६७,
 २६८, २६६, ३००, ३०५,
 ३१५, ३१८, ३१६, ३२२,
 ३७६, ३७६, ४२१, ४४८,
 ४६६, ४६४, ५४६, ५५०,
 ६०३, ६१८, ६३८, ६६६,
 ६८०, ६८४

तजत्रि—४०
 तउपट—३५१
 तह—१३७, ६४३, ६५३
 तजिउ—३२७
 तण—८६
 तणउ—३६, ६५, २२५, २६८,
 २७८, ३२७, ४०६

तणो—४४, ५६, ६४, १२३, १२८,
 १४८, १५६, १६२, २५१,
 २५२, ३६२, ३८२, ४३३,
 ४७२, ५०६, ५१६, ५६७,
 ६०६, ६२३, ६५०, ६५८

तणउ—३१४
 तणो—३५६, ४३०, ५२३, ५२६,
 ५५८
 तणो—६३८
 तणो—१६६, ५३५
 तणो—११३, ३६७

तसपि—३६
 तत्र—५६१
 तंखण—५०८, ६५५, ६६१
 तंखिणी—४१
 तंखणी—२८८, ४०१, ४१८
 तंखिणी—१२३, २५२, ५६५, ६३५
 तन—४२२
 तनी—५६५
 तनी—३३२
 तप—१६१, २७४
 तपचरणह—६७५
 तपु—६७७
 तर—६७, ३४२
 तरणे—३३३
 तल—६३, १२५, १२६, १६२,
 २४४, ३८१, ५८४
 तलही—१२६
 तव—५०, ६६, ७८, ८३, ८४, ८७,
 १००, ११२, १२६, १४८,
 १६२, १६६, १७१, १७२,
 १७६, १८३, १८४, १८५,
 २०२, २०७, २१०, २२८,
 २३०, २४६, २४४, २४६,
 २६३, २८२, २८७, ३०२,
 ३२०, ३५६, ३५१, ३६६,
 ३७२, ३६६, ४०४, ४०७,
 ४२५, ४२८, ४४२, ४४४,
 ४४७, ४५३, ४५६, ४६६,
 ४६६, ५०२, ५०७, ५१६,
 ५२०, ५२५, ५२७, ५३०,
 ५३१, ५३५, ५३६, ५४६,
 ५५१, ५५४, ५५८, ५५५,
 ५८३, ५८७, ६०५, ६०६,
 ६१५, ६२२, ६४८, ६५१,

६५२, ६५४, ६५५, ६६४,
 ६८४
 तवइ—६८, २६६, २५५, ३४१,
 ३५८, ४३७, ४४५, ४४६,
 ४८८, ५३३, ५३७, ६०२,
 ६१६
 तव्व—५८४
 तवहि—१८५, २२०, ३२६, ४०८,
 ४१२, ४७२, ६०६
 तयही—६८२
 तबु—२६४
 तस—३८५
 तमु—५४, ५६, १४८, १५६, १६२,
 १६५, २३६, ५०७, ६१२
 तह—३६, १२७, १४७, १५१,
 २१७, २२०, २३६, २६३,
 ३४७, ४२१, ४८८, ५६८,
 ५६७, ६०४, ६१३, ६२१,
 ६३४
 तहतह—२२६
 तहा—२५, ३८, ५३, ५६, ६२,
 ८६, ६२, ६४, ६५, १०२,
 १०३, १२२, १२४, १४६,
 १५१, १५२, १५३, १५५,
 १५८, १८०, १६६, २१४
 २१८, २२०, २२५, २२८,
 २४०, २५८, २६१, ३२३,
 ३२६, ३३८, ३४३, ३५२,
 ३५४, ३५५, ३६१, ३६८,
 ३६८, ४१६, ४२६, ४३२,
 ४३४, ४५२, ४५४, ४६३,
 ४७४, ५४४, ५६६, ६०८,
 ६०६, ६१४, ६१६, ६५०,
 ६६३, ६६५

तहि—न, २१, १२६, १५०, १५२,
 १५५, १५६, १६४, १७३,
 १८०, १६०, २०८, २१५,
 २१६, २१६, २२४, २३०,
 २४१, ३२६, ३६३, ४१५,
 ४२८, ४५०, ४५४, ५१७,
 ५६१, ५८६, ५८८, ५६६,
 ६१६, ६४७, ६६८, ७००

तहरि—५६२

ताकी—१५४, २४३, २७१

ताके—१६८, ३२४

ताकी—१५४

ताज—४२७

ताजे—४८३

ताम—३२, ३६, ७७, १२२, १४५,
 १६३, १८१, २६१, २८०,
 २८२, ४११, ५०१, ५१८,
 ५१६, ५२८, ५४०, ५४२,
 ५५५, ५६४, ६१०

तारणी—१६२, २०४

ताल—२४, ६०, २६५, ३६३, ५८०

तालु—५१, ६४

तास—६१३

ताह—१६२

ताहि—५०, ५२, १७७, ३०४,
 ३७०, ४०६, ४४०, ४४२,
 ४२४, ४६१, ६८७

तिउ—३६४

तिजयगण्ड—१२

तिण—६०३

तिलि—६४१

तितउ—३६०

तिव—१६७, १७०, २५०, ४८५
 ४६५

तिनकी—३४४

तिनके—२४

तिनसु—३४३

तिनस्यो—४०२

तिग्हि—१, ६५, ३७२, ६६०

तिग्हु—३४१

तिग्हुहि—१६७

तिनहु—४२२

तिनि—४६, ८८, २६६, ६१६

तिनी—२६

तिपत—५०५

तिम्बइ—२६८

तिम—१६७, १७०, ३५२

तिमुतिमु—३८६

तिय—२६४

तियबर—२०

तिरउ—६६७

तिरिय—४२, २६७, २६६

तिरिपहि—२६७

तिरी—२४३

तितकु—२६, ५६२, ५६६

तिलोत्तम—५५

तिवइ—२६८

तिस—२, ३६, १२८, १५७, ४७३,
 ४८६, ६२५

तिसके—१३४

तिसकी—६२५

तिह—२०४, २८३, २६३

तिहा—२०४

तिहारउ—२४३, २८८

तिहारे—४१४

तिहारे—४८०

तिहारो—३७८, ४४६

तिहारो—२८६, ४२१, ४६३

निद्रि—१४, २०, २२, ३०, ३७,
 ४१, ४२, ४६, ५७, ६६,
 ६४, १०६, ११२, ११३,
 १२६, १५६, १५७, १६४,
 १७०, १८३, १८८, १६८,
 २०१, २०५, २११, २१५,
 २१८, २२५, २३७, २४०,
 २४३, २७१, २७३, २७६,
 २८४, ३०६, ३०७, ३०७,
 ३३५, ३४५, ३५२, ३५५,
 ३७३, ३६१, ४१२, ४१६,
 ४३२, ५१३, ५३६, ५५८,
 ५५१, ५५२, ५७४, ५८७,
 ६००, ६०८, ६०६, ६१०,
 ६२४, ६४१, ६६१

निद्रिठा—६०८

निद्रिस्यो—५५०, ५५३

निद्रि—२१०

तोत्री—२००

तोत्री—२७१

तोत्री—४०२

तोत्रीसंघ—२१

तोत्री—२०३, २४५, २४६, २७१,
 ३०६, ५२१, ५४०, ५८३

तोत्री—२४७

तोत्री—२६३

तोत्री—१२८

तोत्री—५०१

तोत्री—३७१, ४०१

तोत्री—२६१

तोत्री—४२६

तोत्री—३८५

तुम—२८, ४६, ६२, ११३, ११४,
 ११७, १२७, २८६, २६०,
 २६७, ३०२, ३३०, ३३३,
 ३३४, ३८०, ४२४, ४३३,
 ४६४, ४६६, ४७३, ५१५,
 ५२३, ५५०, ६२३, ६२४,
 ६२८, ६२६, ६६७, ६६४,

तुमि—१०८, ३०५, ४४८, ४६४

तुम्ह—१२७, ४२०

तुम्हारर—२६

तुम्हारो—३७०

तुम्हि—२४८, ३४०, ३८०, ४०७,
 ४२०, ६४१

तुम्हि—४७०

तुम्ही—४७२

तुम्ग—३५६

तुम्गु—३२७, ३३१, ३५८

तुम्त—६२३

तुम्तु—१३५, १७१, २१३, २३७,
 २६०, ४८२

तुम्प—५२६

तुम्पद—३३१

तुम्पि—६८, २४६, ३२३

तुम्पिहय—१७३

तुम्पी—६७, ३३५

तुम्पीस—३२४

तुम्पी—३३५, ३४०, ४६५

तुम्पीन—४७७

तुम्पु—३१४, ६११

तुम्पु—२४०, ५०६, ५४६, ५११,
 ६४०

तुम्पुरे—६२६

तुम्पि—५०, १४८, १६७, १६०,
 २४७, २७८, ३१६, ३००,

३५१, ५०५, ५५०, ५१५,
५३०, ६०५

सुग्री—५००
सुहृ—५११
सूते—५००
सूटिगो—५१६
सूठउ—१५०, ५५५, ५६०
सूजी—३७५
सूर—३५
सूरो—५०३
सूव—०५५
सूउ—३६०, ५०६
सूज—५०५
सूग—१५६
सूउउ—६६, १५०, १६७, १५०
सूउह—६०६
सूरे—५१६
सूत—१५२, ३५६, ३५७
सूतो—५५६
सूडड—२१३, २६१
सूडहि—२१०
सूडि—२६१, ३५१, ३५२, ५२०
सूडिवि—६६२
सूडो—२०६
सूपह—५६७, ५७१, ५३०
सूउण—०६, ५६३, ५६५, ५६१,
६५५
सूउणु—५७६
सूरी—३५५
सूहि—७५, २५६, २६३, ३०५,
३३०, ३७२, ३६६, ५००,
५१५, ५४७, ५५५, ५५६,
५५७, ५६६, ५६३, ५११,
५१०, ५२२, ५७५, ५०३,

६००, ६०५, ६०६, ६५३,
६६५

सूहि—६०६

थ

थणहृ—१६०, ०५०
थंम—१६५
थंभीणी—५०१
थरहरड—६६२
थत—५७५, ५२६
थारो—१५१
थाविउ—२५२, २७२
थापे—१२१, ५६१
थाल—३०५, ५५२, ५७०
थालु—६१
थुतिवि—६६३
थुरे—५२२

द

दड—२०, ५१, २७०, ३१५, ३३०,
५२७, ५०५, ६५६
दउ—२००, ५५२
दक्षण—५०५
दणु—२५७
दंत—२१६
दड—५
दम्ब—१५२
दम्बण—३५६
दरउ—५०३
दपण—३१
दबुं—३०१

बल—२१, ७१, ७५, २६१, २७६,
२८३, २८५, ३२०, ४८६,
५२६

बलबल—२१

बलु—७२, ७५, ८३, १७१, २६२,
२८२, २८६, ५३२, ६४६

बल—६, १३६, ३३५, ३३६, ४२६,
४४१, ५२६, ५५६, ६६६

बलइ—४६८

बलदिसार—६७५

बलह—४६६

बहि—५७०

बाउ—२४८, २५४

बाल—३४७, ३४८

बाण—३००

बाहिम्ब—३४७

बांत—३६५

बावानस—७२

बाहिए—१४

बाहिएइ—५०७

बाहिएउ—५०७

बाहिनी—४८४

बाहु—१४८

बिलसाउ—३३४

बिलसावहि—४५६

बिलसावहु—४६४

बिलाइ—४६४

बिलाउ—७४

बिलासइ—१८६, १६७

बिलासउ—४३२

बिलासि—६१०

बिलासिउ—५४

बिषया—४०६

बिलावर—४६६

बिलावहि—४६३

बिलि—२५२

बिलियावइ—६६६

बिगु—५८७

बिजइ—६५६

बिहु—१२३

बिठ—४२६

बिठउ—३२, ३३७

बिठि—७६

बिठु—२८२, ४११

बिठु—६५६

बिन—११, १११, ११५, १६३

बिनउ—३८५

बिनि—६२१

बिपइ—३१३, ६०१, ६६०

बिषस—११०, ४०३, ४०४, ४३०,
६१६

बिषसु—३५६

बिषावइ—६०६

बिस—१६, ४८४

बिसइ—१६१

बिसंतर—४१०

बिसा—४६६, ४८४, ४६८,
५५८

बिसि—१४

बील—४०६

बीर्या—७७५

बीरइ—४४६

बीरं—४८५

बीउ—५६

बीउउ—६२, ८६, ६६, १४७, २०६,
३२०, ४४२, ५१४, ५१८,
५२३, ५४५, ५४०, ५६०,
६३६, ६३७, ६६०,

वीठि—४०, ६३१
 वीठी—२७, ४१, ६८, ६६, २०१,
 २६६
 वीठे—३७, ३४४, ३६७, ६५६
 वीण्ड—६४८
 वीण्ड—२६, २१६, ३३०, ३३६,
 ३७२, ३८७, ५११, ५२०
 वीनी—४४, २२३, २२८, २५८,
 २६७, ३४३, ४०८, ५७५,
 ६५४
 वीने—३५०
 वीप—५७८
 वीपह—१६१
 वीपो—४०२
 वीस—३२४, ६६३
 वीसह—१६, १८, २२, ७२, २१७,
 ३१३, ३१६, ४०३, ४२६,
 ५६२, ५६६
 वीसह—१७
 वीसहि—१६२, ४८२
 वुह—३३, ७१, ७६, २११, २२२,
 २३५, ३०६, ३४१, ३४६,
 ३५३, ४०१, ६१७
 वुहज—१३६
 वुहजे—४, २७०
 वुहजे—२७६
 वुध—१२५, ४०६, ४४५,
 वुधह—३७०
 वुधण—६८६
 वुधे—३०६
 वुधे—६६६
 वुधे—६६७
 वुधे—६
 वुधार—४४२

वुधारि—४३६
 वुधारि—४४१
 वुधारे—६३६
 वुधट्ट—७६, १२०, ६३२, ६८५
 वुह—७, १६१
 वुहागिगि—१०७
 वुह—१११, ११५, १२०, ५८४,
 ६२४, ६५७
 वुलित—६२६
 वुल्पो—६३०
 वुजह—११८, ५२३
 वुजह—५२४
 वुजो—१६७
 वुजो—८१
 वुल—६०, ११४, ११७, ११८, ४३७
 ६१६, ६२०, ६२८, ६४१
 वुलद—६६७
 वुलह—११४
 वुजु—४३५
 वुमह—७१२
 वुमज—३८३
 वुमह—३३३
 वुमि—६६८
 वुम—४७०
 वुमह—४६२
 वुम—६८६, ६६६
 वेह—३, ५, ६५, ७६, ११७, ११८,
 १६७, १७२, १८५, २११,
 २१३, २१७, २२२, २६८,
 २६६, ३००, ३०१, ३०२,
 ३४१, ३६६, ३७७, ४८८,
 ४८२, ४७०, ६००, ६१७,

दे०—६१८, ६२५, ६२६, - ६८४,
 ७००
 दे०—२११, ३२८, ६०३, ६१३,
 ६६६
 दे०—३८, १०५, १३१, १३२,
 १८३, १८६, २८१, ४२५,
 ५०३
 दे०—३१, ३७२, ५१२
 दे०—१३२
 दे०—१३४
 दे०—३३०
 दे०—३२, ४३, १२५, १४१,
 १५६, १५६, १७६, १७७,
 १८४, १६०, १६६, २०२,
 २०५, २३०, २३६, २६०,
 २६६, ३०८, ३१३, ३१५,
 ३२६, ३६५, ४२४, ४३६,
 ४५२, ४६४, ४८७, ४६३,
 ५०५, ५३४, ६४८
 दे०—६८२
 दे०—५८६
 दे०—३१, ४३, ५१८
 दे०—६८, १३१, ३४६
 दे०—४८८
 दे०—३०५
 दे०—१५, २८, ५७, ६२, ३१७,
 ३७०, ५४७, ५८८, ५६४,
 ६६६, ६६७, ६६८
 दे०—६६७
 दे०—५३५
 दे०—१८
 दे०—६७
 दे०—६६६
 दे०—५, १०३, १०६, १०७

दे०—१४, ३७, ३८, ३४४, ५६६
 दे०—१५२, ६८८
 दे०—१२१, ३६५
 दे०—५७
 दे०—१०, २४६, २४८, ३८२,
 ३८३
 दे०—४, १०६, १७१, ३०५, ३४०,
 ३६६, ४२०, ५८८, ६२४,
 ६२७
 दे०—४६
 दे०—५७, ६१
 दे०—१६८
 दे०—५६०
 दे०—१८१, १८२, ४५१, ५३६,
 ६१५
 दे०—१८१, १८१, १८२, २८१,
 ४६२, ४८६, ६३६, ६४२,
 ६५५
 दे०—२७६
 दे०—६६, २७८
 दे०—६३,
 दे०—३३०
 दे०—२३६
 दे०—३७४
 दे०—४४२
 दे०—५८६, ५६०, ६२१, ६२८,
 ६४०, ६४६, ६५८, ६६०,
 ६६२, ६७०, ६७१, ६७२,
 ६७४, ६७६
 दे०—१६, २७, १३६, १४५,
 १५२, १५७, २८६,
 २६६, ३१४, ५३४,
 ५६५, ५७१, ५७७
 दे०—६७२

द्वोपायनु—६७४-

द्वेद—७३, २७६

द्वेसं—३५३

ध

धडउ—४४६

धण—२६६, ३६३

धणुक—६४७

धणय—१६

धणह—७०

धन—५६५, ६००

धनकु—५२०

धनय—४६२, ५१७, ५१६, ५२३

धनसु—५३३

धनहर—७०, ५१६, ५२१, ५२०,
५३६

धनि—५५२

धनिसु—५५३

धनियउ—५१०

धनु—५५२, ६५६

धनुह—२६०

धनुके—३१३

धनुय—७६, ८२, १३७, २००,
४०६, ५५३

धम्मु—६

धर—८१, १६०, २३०, २४४,
२६७, ४१४

धरद—२४, ३१, ६७, १४३, १६६,
२१७, २५०, २५६, २८५,
१६१, २६२, २६०, ३०१,
३५५, ३८५, ४१०, ४३६,
४६६, ५५५, ६३१, ६६०

धरउ—१२५

धरण—१६१

धरणि—५१५, ५६८

धरणिदु—६६१

धरनी—६३०

धरन—२६, १५४, २५२, ३६६

धर्म—२०, १५२, ५६४

धर्मं—५६२, ६५६, ६६६, ६६७

धर्मपूत—१३४

धर्मह—६५०

धर्माधर्म—६६६

धरमु—६७१, ६८६

धरघउ—६१२

धरघो—५३५, ५६०, ६५३

धरहि—२५

धरहु—२८६, ६४२, ६८५

धरि—७, ४३, ८०, १७४, २७१,
४०७, ५७५, ६५२, ६६७

धरिउ—४२६, ५६५, ६६५

धरी—१६, ४४, १३१, २०३, ३६६,
४२२

धरीउ—२१६, ५५५

धरे—३६०, ४०३

धरे—१४६

धवलहर—१५, १८

धवलहह—३१६

धयहर—३१४

धसणयो—२४६

धाइ—२१६, २१७, २३६, ४३१

धाइयो—५३१

धाए—२०५

धाजइ—१४१

धाणुह—७०

धापउ—५५४, ५२६, ५३२

धासंबंरली—१६५

धीजह—१४०
 धीय—५५५, ६२५
 धीर—२५६, ३४६, ४२७, ४५५,
 ४६७, ४६८, ५१०, ५५५,
 ५६६
 धीरु—१६२, २०१
 धुजा—२६३, ३१६, ३१७, ३१८,
 ४८५
 धुलि—६४३
 धुंघाह—४०१
 धुरंधर—६७७
 धुजा—३१६
 धुतु—२७२, २७३
 धुम्योज—४१७
 धुमकेतु—१२२, १२५, १५४
 धोह—६०८
 धोरो—३२५, ३२६
 धोवती—३६०, ३७४
 धोल—६६३

न

नइ—५६३
 नउ—७, १३
 नकुल—४७४
 नक्षत्र—११
 नगर—४२३
 नदी—३६५
 नन्दण—११८, १२०
 नंदणवण—४६
 नंदणवणु—६०
 नंदणु—१२
 नदन—१०४, ११५, ४५३
 नंदनु—५५३

नमस्कार—२६, ४३, १५८, २४०,
 ५६५
 नमस्कार—३६६
 नमणु—४०८
 नमि—१०
 नंघु—७०१
 नयण—३०, १०५, १४१, १४१,
 २२७, ५६०, ६५०
 नयणा—६६
 नयन—५६६
 नयर—१५, ३७, ६०, १२४, १२८,
 २६२, ३२०, ३६२, ४२३,
 ५६१, ५६३, ५६५, ५८६
 नयरि—१२०, १३५, २६६, ३१६,
 ५६७, ५६६, ५८१, ६२८,
 ६४६
 नयरो—४४, ३२०, ५५४, ५६४,
 ५७१, ५६०, ६२१, ६४०,
 ६५७, ६७०, ६७२
 नयह—५६, ८४, २७१, ३१३, ६३६
 नर—६५, १६८, ५६५, ६१३, ६६८,
 ६६७
 नरनाह—४७८
 नरवइ—५४, २५३, २६५, २८०,
 ६००
 नरवं—१६७
 नरायण—२८५
 नरिद—१३२, ६५६
 नरेस—६६, ५७६
 नरेसह—४६१
 नरेसु—१६४, ५३४
 नरु—२२६, ४८०
 नवइ—५

नवड—६
 नवखंड—४६०
 नवणी—१३
 नवि—६३६
 नहि—१६७, ३०७
 नहो—१४७, ४८०, ४६५, ५७३
 ६२०
 नहु—६०, २७८, ५०२, ६२६
 गृहवणु—६६०
 नाइ—६२
 नाइ उ—११६
 नाउ—३२७, ४१६, ४२१, ४२५,
 ५६७, ६१२
 नाक—३६३, ४२२, ४२५
 नाग—२०१
 नागपामी—२०४, २५६, २८२, ३८७
 नागसेज—२०३, २३३
 नागु—१८६, २०१, ४८४
 नाचण—३४
 नाचणि—२४
 नाचहि—५६६
 नाजु—४०१
 नाटक—१३७
 नाण—२०४
 नातह—६६०
 नानारिषि—२५, २८, ३०, ३३, ३५
 ३८, ५६, १४५, १४६,
 १५१, २८३, २८८,
 ४४५, ५४५, ५५४,
 ५५६
 नाम—४०६, ६१४
 नामु—१६८
 नारद—२६, ३१, ३७, ४१, ४६,
 ४८, ५१, १४७, १४६,

१५०, १५२, २८५, २६१,
 २६२, २६७, १०६, ३१३,
 ३१४, ३६६, ४१४, ४५६,
 ५४३, ५४६
 नारदु—३४, ४३, ५३, २६५, ५४४
 नारदुरिषि—५०
 नारायण—२८, ४३, ४७, ५१,
 १०१, १०२, ११४, ११८,
 १२७, २६३, ४००, ३०५,
 ३०६, ४०४, ४०५, ४५२,
 ४६१, ४६५, ४७२, ५३०,
 ५३५, ५४४, ५५१, ५५५,
 ५५५, ५६५, ५६६, ६१०,
 ६२६, ६६५, ६७०, ६७२,
 ६७६, ६८१, ६६१
 नारायणु—२६, २६, ५३, ६४, ६५,
 ७६, ८५, ८६, ६४, ६५,
 ११७, १५३, ३३२, ३६०,
 ४६२, ६४०, ६५०, ६७६
 नारायणु—५२
 नारायणु—८२
 नारि—५५, ८८, ६७, ११५, १२०,
 १४२, २२६, २२७, २७१,
 २७६, ३६५, ४२२, ४२३,
 ४२६, ५४१, ५६३, ५६५,
 ५७०, ५८४, ६०८, ६३४
 नारिण—३४७
 नारो—१२३
 नामु—६६२
 नाहि—४५, ८३
 नाहो—२०७, २६८, २७७, ३३२,
 ३७१, ४५६, ५१५, ५२२,
 ६०५
 न्हाद—२०५, ६०८

म्हामी—२३६
 निकटकु—१८६
 निकलह—४६१
 निकलिउ—३६४
 निकली—२१४, ४२३
 निकालि—३८३, ५४८
 निकामु—३, ८, १३८
 निकुताह—१३२, ५७७
 निकुल—४५६, ४७१, ४६३
 निगहह—६४३
 नीघण—६४७
 निपाति—३५०
 निचू—६३३
 निज—६५
 निजिणि—२१६
 निजु—७०, ४१८
 निति नित—६१, १४०
 निद्रा—६६
 निपजावह—३३८, ३४६
 निपाए—६५६
 निमजत—७२
 निमत्रि—७५
 निमति—५७७
 निमते—५७६
 निमस—२४२
 निमसह—१५२, २७१, ५८७, ५६३,
 ६१६
 निमसं—११६, १६४, ६५४
 निम्यल—१६१
 नियमण—७६
 निपनिय—६६३
 निपरी—१६६
 —१०५, १६२,

निरजामु—६७०, ६६०
 निरवाद्य—६६४
 निरास—२३३
 निरुत—११२, २६३, ३६६, ४१४
 निलउ—६१३, ६६६
 नियली—३४६
 निवारि—५४३
 निवसह—१५६, २२०
 निवसहि—१६, २०
 निरचल—६७०
 निरचे—१६०, ४२७
 निताण—४८३
 निताणह—५६०
 निताणा—६८, ५६८, ५७६
 निति—१२२
 नितिपुत—१२७
 नितिहि—५४७
 निमुणइ—३०५
 निमुणउ—२६६
 निमुणह—११, १७४, ४०१, ४६२,
 ५४६
 निमुणि—२६, ४२, ४८, ५१, ६४,
 १२७, १५८, १७२, १७८,
 १८३, १८७, १८६, २४६,
 २५३, २५६, २६४, २८६,
 ३०१, ३१४, ३१५, ३२०,
 ३२२, ३२८, ३३१, ३८६,
 ४२१, ४२६, ४२७, ४३८,
 ४४१, ४४५, ४५६, ४७४,
 ५०७, ५४३, ५६६, ६००,
 ६०६, ६२८, ६३०, ६३४,
 ६४३, ६५४
 निमुणिउ—३२७
 निमुणी—३०६, ५१०

निमुणोइ—४३०, ६८४

निमुणो—४६६

निमुणो—४४४, ५६५

निमुनहु—३८२

निहचे—६७४

निहाउ—५८०

निहालिउ—२०१

निहुडिउ—३६५

नीकलइ—४७६

नील—२६८

नीची—२६८

नीवू—६५४

नीर—५२८, ५२६

नीरू—१६, ७८, ३७७

नीसरइ—६६८

नेम—२२, ३६, ५८४

नेम्म—५६७

नेमि—१०, ४६१, ६६४

नेमोस्वर—६६१

नेमितरु—१२

नेहु—६२४

न्योते—३६०

न्योत्पो—३६२

प

पइ—६०, ३०४, ३७०, ४८७

पइठउ—३६३

पइठे—३५१, ३५३

पइपइ—४४२

पइसरइ—२००

पइसार—१३८

पउ—२४

पउलि—३१४

पएमु—५५४

पकडि—१६०

पकारि—४५७, ४६३, ५४५

पलारे—३२४

पंलि—४८५

पगाह—१८६

पचारि—३२, १६२, २११, ४५०,

४६५, ४६०, ४६४, ४६६,

५३०, ५३८, ५४३, ५४७,

६३४

पचारे—६७८

पचारं—५४२

पचास—७६

पछिताइ—४१७

पछिताउ—३६

पछितावउ—५१७

पछितावउ—४२६

पछितावो—२८६

पजलइ—३६

पजुलंतु—५२५

पजून—६६४

पजून—५३३

पजूनहा—५२६

पजूसह—११

पटरानी—३७४

पटु—१८२

पठइ—८७, १०४, १२०, ७०१

पठउ—७७

पठए—६०, २५५, ६३६, ६४१,

पठयउ—४३३

पठयो—५८८

पठायो—२१८, २२६, ६१६

पठावइ—६६६

पठितु—१३७

पठे—६०
 पठयो—६२, ६२२, ६२३
 पठइ—४२०
 पठइ—४२०, ४४१
 पठउ—४३६
 पठएपठ—४०५
 पठणु—१३८
 पठह—६३८
 पठहु—१७३
 पठाइ—४३२
 पठि—४२६, ४७६, ५१५
 पठित—७५ १६६, ३३२, ३५६,
 ३७३, ४१२, ४४०, ५५१
 पठिगपउ—३७२
 पठियउ—१७३
 पठियो—४५२
 पठिहाइ—४८४
 पठो—६३, १५३, ५१४
 पठे—४६८, ४६६, ४००, ४०२,
 ४५५, ५५६
 पठइ—३१८
 पठण—१३७
 पठम—६१३
 पठमछ—१३
 पठामणु—३७६
 पठावइ—१७६
 पठे—६१५
 पणमइ—१
 पणवइ—४
 पणवहु—२
 पणि—२६६
 पणवव—०६५
 पनाण—६८६
 पणिणइ—२६६

पतिपाइ—४०५
 पयंतरि—५६२
 पदमपतीरा—४
 पयपूत—१४७
 पदमावती—५
 पदमुप्रभु—८
 पदारय—५२, ३१३
 पच—१३, २४, १६६, ३११, ३१६,
 ४०४, ४३०
 पंचवउ—४३६
 पंचइ—११
 पंचज—१२
 पंचति—४५६
 पंचमु—५६६
 पंचमुवीर—६८८
 पंचसय—१८३
 पंचावणु—१८०
 पचव—४५६
 पचित—७०१
 पंचो—५०२
 पचन—३७४
 पचउउ—३७६
 पच—४६६
 पंचि—७७
 पंचह—४४८
 पमणइ—०२६
 पमणोइ—३
 पमवण—१३४
 पमवाण—४१५
 पमवाणु—६४२
 पम—१३, १६, १०६, ०७१
 पमउइ—०१२
 पमती—०६८
 पमपइ—३७०, ४२४, ४६३

पयसाढ—४४०
 पयाइ—१६४
 पयार—१०७
 पयाल—५६२
 पयालि—१४४, १४६
 पयासइ—१०७
 पयासउ—४१२
 पयासहु—१०८
 पयासु—१२
 पयासो—४०८
 पयाहिए—६६६
 पर—२१६, ४४५, ४६१, ४८८,
 ५२७
 परइ—५४२, ६६७
 परंखिउ—५१५
 परगट—४२७
 परचंड—५५८
 परजसइ—६५७, २७५
 परजल्मउ—४४१
 परजलीउ—२५३
 परजलै—१७०
 परठयो—६२२
 परणइ—४७
 परणउ—५७, ६३४
 परणाउ—३६
 परणी—८८, ३०३
 परबमणु—४१३, ५६६, ६४६, ७००
 परबमनु—६३५
 परबम्बण—१४४
 परबम्बुण—१३०
 परबम्बुनु—३००
 परबवण—२०५, ३१४, ३००, ५८४
 परबवणु—१४५, १५५, १६०, १७३
 १७६, १७८, १८०, १८५

१८६, ४०८, ४२६, ४६४
 ५४२, ५७३, ६५६, ६६६
 ६६८
 ११६ १२३, १२७ १३५,
 १३६, १४६, १५४, १८७
 १६२, ४६२, १६८, २६०
 २२७, २३६, २७७, २६०
 ४६२, ५५१, ६२४, ६७५
 ६७७

परदवन—३८२
 परदवनु—६३४
 परदेस—४०८
 परदेसी—३७०
 परधानु—१८५
 परपंचु—२६५
 परभाव—४०६
 परम—३१०
 परमेसव—६६५
 पर्वत—३५
 पर्वतउ—५४१
 परवतवाण—५३३
 परपउ—७६, १४२
 परयो—५३०
 परसपर—३२१
 परहरी—६६
 परहि—५३२
 प्रदल—१२४
 प्रजलंतु—७५
 प्रजनेइ—२०६
 प्रतिजलद—६८४
 प्रतिपालिउ—२८४
 प्रदवण—५४६
 प्रदवणु—५२२

प्रदवन—४५५
 प्रदवनु—६७६
 प्रदुवनु—१३६, १३८
 प्रमाल—३६७
 प्रमण्ड—४६१
 प्रवाह—५२६
 प्रहार—४६५, ५३४
 प्रहास—४६७
 पराह—२६०
 पराल—१४४, ३०८, ४७०, ५२२
 परालु—५१८
 परान—२७४
 परापति—१८३, १८८, २३०
 परि—२८६, ३०२, ३६१, ६४७,
 ६६२
 परिउ—२५३
 परिगह—२४८, ५१६, ५७७
 परिगहु—५५५, ६२७
 परिणइ—२३५
 परिपूनु—५२
 परिमानहो—५८८
 परिमल—६६३
 परिमतइ—२३
 परिमतु—६८
 परिमह—४५
 परिमहे—६४४
 परिमण—२७५, ५६०, ५६१, ५६२
 परिपाण—२
 परिहरे—६८८
 परिवार—२२, ६३७
 परिहरइ—६५५
 परिहरउ—३८६
 परिहरहु—३८५
 परिहम—६१, ६६, १४५

परिहमु—५८६, ६१७
 परिहानउ—३२०
 परो—३०६, ५०१, ५१२
 परोपर—१८१
 परोवल—१७५
 परोसह—६८६
 पालति—३८२
 परे—२५६, ५०३
 परोसइ—३८८
 परोसिउ—३८६, ३६०
 परोसे—३८७, ४०३
 परोसो—३६३
 पतणइ—६४५, ६४६
 पतणह—२५७
 पलाइ—८३, ३५२, ५१६, ५२५,
 ६४८
 पलाणहु—६८, ६६
 पलाणुउ—१७५
 पलाणु—१७३
 पलाणे—२५८
 पलि—१४४
 पञ्चउ—५०६
 पञ्चण—५६, ७२, २५२, २६६,
 ३५५, ३८६, ४३५, ४४१,
 ६०२, ६३५
 पञ्चलि—२०
 पञ्चलु—५३३
 पञ्चन—५७२
 पञ्चप—२८०
 पञ्चर—६६२
 पञ्चरिष—३३४, ४५६, ४६८, ४६९,
 ४४०
 पञ्चरिषु—४७१, ४६३, ५३३, ६४१,
 ६७७

पवरिशु—७४, १६६, ४६४
 पवरिशु—५३४, ६२४
 पवलि—४४०
 पवहि—१५६
 पवाडउ—६२६
 पवाण—६४२
 पवित्तु—२८
 पसाइ—१४८
 पसाइ—४६४
 पसाउ—७, १३, २८, ८५, १०६,
 १६६, १७२, १८३, १८४,
 २८८, ३२८, ३७७, ६५२
 पसारि—४०
 पसारो—४८६
 पसारं—५३६
 पह—३६, ११४, ११८, १६३, २५६
 २४७, २५१, ३०२, ३०७,
 ४३५, ४४०, ४४१, ४५३,
 ४६५, ५२२, ६०२, ६२३,
 ६४७, ६५२, ६७५
 पहइह—३०३
 पहचाणइ—३२४
 पहण—५१
 पहर—३५२
 पहरइ—४७८, ४६६, ६०७
 पहरे—६०८
 पहरेइ—७८, ८०, १७६, २३५
 पहाणु—१५०, ५६४
 पहार—५३६
 पहिषाणइ—५०
 पहिणइ—११२
 पहु—५३
 पहुन—६, ०५, ७०, ११४, १२२,
 १३५, २६३

पहुतउ—१३०, २८६, २२०, २२४,
 २६१, ३३८, ३३६, ३४३,
 ३४४, ३६७, ४३४, ६४५
 पहुतो—४१६
 पहुते—५६, १७५, २५१, २६६
 ५६०, ६४६, ६६५
 पहुतो—५४५, ६४६, ६५०
 पहुपचाप—२३४
 पहुपपाल—३१४
 पहुमपालु—२११
 पहुत—५७१, ६२८
 पहुतउ—३६०
 पाइ—१०६, १०८, १०६, १२८,
 २००, २२३, २३०, २३७,
 २३८, २६४, ४२०, ४५४,
 ५७४, ५५१
 पाइक—२६०, २६१, ४६०
 पाइकस्यो—२६१
 पडात—११६
 पाउ—१८२, २६८, ३३६, ४८५,
 ५४५, ६४६
 पाल—१६३
 पालर—२५६, ६५०
 पांच—१३६, ४६६
 पाचसइ—२५३
 पाचसं—२५१
 पाचसो—१६५
 पाछइ—३१, ६६, ११२, ४१४, ६१६
 पाछिनउ—४१३
 पाटघरणि—४३
 पाटण—२७१, ५८७
 पाटमहावे—६४०
 पाठइ—४५४
 पाठउ—३३५

पाठयउ—५८५
 पाठयो—४३५, ६५२
 पाडल—३४५
 पाट्टिउ—१६७
 पांइय—६६१
 पांइयह—४६१
 पांडो—२७६, ५५८
 पाण—६३४
 पाणन—६४३
 पाण्डिउ—३६१
 पाण्डिगहन—६५६
 पाण्डिगहण—५८५
 पाण्डिगहन—८८
 पाणो—१६१, ५२८
 पाणोवधणी—१६४
 पातलि—३८८
 पातासगामिनो—१६३
 पापि—५३५
 पाप—३२४, ५८४
 पापह—१६६
 पापउ—६७५
 पापो—४०२
 पाप—१३३, ५६२
 पासक—२४२
 पासकु—१८५
 पासि—६४२
 पासिउ—२४४, ५७३
 पाव—३३६
 पावद—३६०, ३६०
 पावडो—२०३, २११, २३३
 पावद—५८८
 पावह—४४८
 पाव—१०१, २६५, ४१३, ५४०,
 ६००, ६८८

पासि—१६७
 पापु—१०, १२६, ५२०, ६७०,
 ६७४
 पाहह—१२७
 पिउ—२६७
 पिउखजूरी—३४८
 पिता—४०८, ५५०, ६५१
 पिपउ—३६१
 पिपरे—१६२
 पोनियउ—४४८
 पोपरे—३६७
 पुकार—६२५, १२८, २५१, ३४४,
 ५०५, ६४४, ६४५
 पुकारिउ—६६
 पुकारियउ—६७, २४८
 पुकारी—६५
 पुकारघो—३४०
 पुह—५४
 पुण—११६, २३०
 पुण—४, ५४
 पुणि—८४, १०३, १०६, २१४,
 २६३, ५६४
 पुनी—६२०, ६४२
 पुनु—४१३, ४०६, ६६६
 पुन—१८८
 पुंन—५६३, ७००
 पुनबंध—०३०
 पुंनवत—५४५, ५६०, ५६८, ६११
 पुंनवंतु—५११
 पुंनह—०००
 पुंनहि—२३०
 पुंनतु—३३१
 पुंन—३, ६६५, ६६६

पुरयन—५५३
 पुराहयड—५६२
 पुराए—३१८, ३८०, ६६५
 पुरायड—५६२
 पुरि—२०, ३४२, ५५५
 पुरियु—३६२
 पुरी—१६, १५२, ३१३
 पुव—७६
 पुव्व—२४५
 पुव्वह—२६६
 पुप्प—२३६
 पुप्पवाप—२१६
 पुहममात्त—५२७
 पुहमि—१४६, १७०, ३०६, ५५६,
 ५७७, ५७६, ५६२, ६८६,
 पुहमिराय—६७
 पुहिमि—८१
 पुए—६३२
 पुष—१६०, २१५
 पुषड—२६, ६३, २२६, २४०,
 ३२०, ३२६, ४००, ४०७,
 ४०८, ४०६, ४४७, ४७०,
 ६६६
 पुषड—४४७
 पुषडु—१६१
 पुषि—०६, ६२१, ६७१
 पुषिड—१५१, २२६, ४५३
 पुषो—४०८
 पुज—१८८
 पुजड—४०, ०४३, ४०८, ४६७,
 ४६८
 पुजड—६५६
 पुजए—३५७
 पुमा—४६, ५१

पूजी—५६५
 पूंडरीकणी—५६३
 पूत—११२, ११५, ११७, ११६,
 १२७, १४२, १७१, २५२,
 २८५, ३७४, ३६६, ४१४,
 ४१७, ४८८, ४५६, ४६०,
 ४६१, ४६२, ५४६, ५७४,
 ६०४, ६१२, ६३०, ६७६,
 ६७७, ६८१, ६८३
 पूतड—४०५
 पूतहि—२८४, ३०६
 पूतु—२४८, ४१५, ५४६, ५६१,
 ६८५
 पूव—१४०
 पूव्व—५६८
 पूव्वो—६८३
 पूरज—२५४, ४४२
 पूवं—४७, १२६, १४२
 पूरव्व—१५०, १५५, १६८, २, ८,
 २७७
 पूरि—२२, ३६२
 पूरिय—१४२, ४२३
 पूरिहि—५६६
 पूरे—७७, ३६७, ४१५
 पूव—५६५, ६०३
 पूव्व—५६३, ६८६
 पूव्वह—६८७
 वेत्ति—१२५, २४१
 वेट—१४८, ३८६, ४३६, ४४३
 वेम—२६५
 वेमरत्त—०४५
 वेत्तिड—५०७
 वेत्तण—२४६, २४८

पंठा—६०
 पंम—२५७
 पेलणो—२५
 पोरिय—५२२
 पोरिय—४५३, ५४६
 पोरियु—२३०
 पोरियु—६५०

फ

फटिक—१७, ३१४
 फटिकसिला—२२६
 फण—५४१
 फरकित—५०७
 फरहरद—२५
 फरहरं—१४६
 फरहि—३५२
 फरो—४७५
 फन—३५१, ७००
 फलु—२३०
 फले—१६०, ३४५, ३६७
 फलयउ—२०६
 फहरंत—३१६
 फाडियउ—२६५
 फाटहि—५३६
 फारह—२५०
 फिरद—३१, ३३७, ६५६
 फिरत—३५
 फिरहि—४१०
 फिरावः—२१५
 फिरि—३५, ३५०, ५०३, ६६०
 फिरे—३५, ६३५
 फुंवाव—१५६
 फुटि ६३

फुडउ—६०४, ३१४
 फुलावह—२१५
 फुलि—३५, ५५, ११०, ११५,
 १२५, १३७, १५७, १५६,
 १७७, १८५, १६६, १६६,
 २००, २०२, २०४, २१०,
 २१५, २१६, २२१, २२२,
 २२३, २२५, २२५, २३०,
 २३५, २३५, २३६, २४०,
 २४५, २७०, २७१, २७६,
 २६३, २६६, ३०५, ३१०,
 ३२०, ३२६, ३३५, ३५१,
 ३५७, ३६०, ३६२, ३६३,
 ३६४, ३६७, ३७३, ३६५,
 ४०५, ४१४, ४१६, ४२०,
 ४२७, ४२६, ४३०, ४३०,
 ४३६, ४३५, ४५०, ४५५,
 ४७२, ४६५, ४१५, ४२०,
 ५२५, ५५५, ५६६, ६००,
 ६०६, ६१०, ६५०, ६६५,
 ६६६, ६७१, ६७५, ६८१,
 ६८३, ६८५, ६६३, ६६५

फुलिर—६६५

फुनि—२६

फुलद—२६७

फुलवादि—१०१, ३५५, ३५०

फुलि—३६५

फुटि—५३५

फुलो—३५५

फेकरद—५५५

फेरठु—५५

फेद—१५

फोकल—३५५

व

वनीस—२०
 वलिभद्र—५१
 बहुत—२३७, २८०, २८८
 वाढी—८१
 वाण—७६
 व धि—२५६
 वांधिल—२२०, २२१
 वांघो—११८४
 वात—२५०, २५७, २५५, २८५,
 २६०
 वुलाइ—२५१
 वोलइ—७५, २६७, २६०, ३०६
 वोलु—१७८

भ

भइ—६३, ६६, १४६, २५६, ३४१,
 ३५७, ३५६, ३८६, ४२५,
 ४१७, ६४५, ६६३,
 भई—४२४
 भउ—२६६, ५६०, ६४७, ६५६
 भए—११, ६४, ६८, १०२, १२०,
 २१०, ४३३, ४३५, ४३६,
 ४७२, ४८६, ५४८, ५६७,
 ५७६ ६३७, ६५३
 भगति—१०८, २२३, २३७, २३८,
 २६४, ५७३
 भगज—५६७
 भगहु—४६५
 भणद—४५, ५१, १२३, १७५,
 २८३, २८५, ३०१, ३०४,
 ३०७, ३१४, ३००, ३३३,

३३४, ४५२, ४५८, ४८०,
 ४८५, ४१६, ६२०, ६६३

भणंत—५६०
 भणहि—१८७
 भणं—१७६
 भंग—३५
 भगु—३०६, ३६४
 भंजइ—१७५
 भंडाए—३७६, ३६३
 भति—१७
 भती—५५६
 भय—१२
 भयउ—८, ६, २८, ३३, ११३,
 ११६, ११८, ११६, १८७,
 १२८, १३६, १४७, १४८,
 १५१, १७३, १८०, १८५,
 २१६, २२३, २४५, २५४,
 २५५, २६४, २७०, २७५,
 २७६, २८०, २८६, २६६,
 ३२०, ३२६, ३३७, ३५६,
 ३६०, ३६१, ३७३, ३७६,
 ३६४, ३६८, ४०२, ४१३,
 ४३०, ४३०, ४३३, ४५०,
 ४६३, ४७५, ४७६, ४८१,
 ४६६, ५२०, ५२४, ५४७,
 ५४८, ५५२, ५५५, ५६०,
 ५६१, ५६५, ५६६, ५८०,
 ५८५, ५८६, ५६१, ५६३,
 ६०२, ६०३, ६१३, ६१४,
 ६२१, ६३५, ६३६, ६४८,
 ६५४, ६५६, ६५७, ६५८,
 ६६१, ६६४, ६७५, ६८२
 भयो—२८, ६५, ७२, ८५, १०६,
 १५४, २०४, २३८, २६२

२७३, ३५६, ४०६, ४२८,
४७२, ५१६, ५२७, ५३१,
५४३, ५६१, ६२१, ६७६

भये—११५, १८३, २५४

भए—६७५

भर—५४१

भरइ—८५, २५६, ३६४

भरय—१३७

भरत—५२८

भरह—६५६

भरहखेत—१४, १५२, ५६६

भरहु—३६१

भरिउ—४४३, ५५२, ५६२

भरिभाउ—२६६, २८४

भरिवाउ—२१, ७४, ७६, ८३,
१६४, १६६, १७१,
१७८, १८२, १८६, २०२,
२५६, ३२३, ३३६,
४६५, ६४६

भरि—२८६, ३१३, २६८

भरिहि—२४

भरो—६१, ६६, ३४८

भरे—१६१

भरेइ—६१, ५७०

भरोसठ—२५७

भलठ—२८, ३२५, ३८०, ५१४,
६६६

भल्यउ—५४२

भलो—२६०, ३०२

भले—२३३, ५२६, ५७६, ६५४

भलो—४७३

भव—६६७

भवंतर—५६५

नवपायु—६६२

भयियहु—६

भवसु—२६५, ५८३

भहराइ—५३१

भाइ—२४, २६, ६५६,

भाउ—७, १३, २७, १७४, २७०,

२७१, २८६, २६६, ३२८,

३४१, ३७६, ३७७, ४०७,

६०१, ६५२, ६६८

भाख—६४२

भाण—३८८

भागिउ—२५८

भागो—६४६

भाजि—३५६, ४६१

भाजउ—१७१

भाणइ—१६४

भाणज—६५४

भाणु—२६३, ३३६

भाणुजु—६५१

भांति—१८, २४, ३४४, ३५०,

६५५

भातु—३८८

भादो—१७५

भादम्ब—४८३

भान—३२६, ३३६, ६१८, ६७३

भानइ—१८, २८४, ३५६, ६२०

भानउ—१७१, १७८, १८६, ३२६,

३४६

भानकुम्बर—३२७, ३५२

भानकुमार—३२०, ३०८, ३२६,

३३३, ४१६, ५८६,

५६१

भानकुगाण—३२२

भानकुज—२०२

मान्यो—४६५
 मानहि—२६७
 मानिउ—७६
 मानु—३०६, ३३१, ३३२, ३५५,
 ३५६, ३५८
 मानुइ—३८८
 मानौ—२५६
 मामिनी—५१०, ५१३
 भायउ—५६०, ५६२, ६३३, ६५४
 भारउ—३३५
 भारथ—२७६
 भारहु—६६१
 भारु—६७३
 भावरि—८८, ५८५, ६५६
 भावहु—५५७
 भासमु—१७०
 भिटाउ—१००, १०४
 भिडइ—७८, १७६, १८०, २१४,
 ४६६, ४६२
 भिडिउ—२०१, २१६
 भिरे—४६२, ४६०
 भिडे—२८१, ४६८
 भिमिउ—६१०, ६११
 भिगइ—१६५, २६१, ४५१, ४६०,
 ४६८
 भिरउ—२१३
 भिरहु—४७३
 भिरे—६१८
 भितु—३०४, ३०८
 भीरइ—५४३
 भीरहि—४६१
 भील—२६८, ३०७, ३०६
 भीलु—३०२
 भीष्म—८३

भीषमराइ—६५
 भीषमु—४४
 भीषमुराउ—५६, ६८, ७१, ८३, ८५
 भुइ—४५०
 भुंजइ—६५७
 भुंजही—५७८
 भुंजं—६०५
 भुंजिउ—५२३
 भुवण—३१४, ६५६
 भुवन—५४१
 भूलउ—३६१, ३७८, ३७६, ३६१,
 ३६३, ४००, ४०१, ४०२
 भूखे—३४०, ३८४
 भूजइ—१२६
 भूजहि—१११
 भूमि—३७२, ३७३
 भूमिय—३१४
 भूमिह—६८३
 भूली—४११
 भेउ—१६५, १६७, ४६६, ६६६,
 ७०१
 भेट—४४
 भेटइ—१८७
 भेटि—२३८
 भेटिउ—२७, ६२, २३७, ५७३
 भेटी—१५६, ६५३
 भेरि—१२१, १७३, ५६१, ५८०,
 ६५६
 भेस—२६८
 भोग—६१, ५६२, ६६२, ६६३
 भोगत—६८३
 भोगवइ—२६७
 भोगु—२३२, ५८६, ६६१

भोजन—३८५, ४१८, ४६६, ६५३,
६६२

म

मह—५६, ३३०, ४२६, ४४३, ४४५,
४६६, ५३३, ६३२, ६३३,
६६४

महगत—७८, १७६

महपासह—५१७

मद्यह—३५५

मभार—८६, ६०, १००, १४२,
२१२, २२६, ३६५, ४२३,
५६५, ५७२, ६३७

मडव—४३६

मढ—१८

मण—२६६, २६७, २६८, ५१८

मण्ड—३६२

मण्ण—१२, १७, १६८, २६२,
३१४, ३१६, ३१६, ५६६

मणोजो—२२०

मत—२४६

मति—१

मशुराराड—४६५

मद—६७२

मदण—१२

मदसुदु—६५१

मधुर—६७

मंगल—१२१, ५६६

मंगलचार—१२०, ५६३, ५६७

मंगलचार—८७

मंगलु—५६८, ५८१

मंगलुचार—३५७

मंजीरा—६३६

मंडप—६५५

मंडपु—८६, ८८, ५७६, ५६०

महलीक—५७७

मंत—२७, ६१६

मंतु—६०, १६८, १८७

मंत्र—१८७, ६१७, ६२२, ६३२

मंत्रु—५८७

मंद—५८०

मंदाक—३४६

मंदिर—१५, १८, ६०, ६५, २६३,
३१७

मंदिरि—३५६

मन—२५, २६, ३२, ३६, ३८, ५४,

५८, ६५, ६८, ८४, ८७,

१३०, १४३, १४५, १५६,

१६६, १७२, १८६, १६४,

१६७, २०२, २२७, २२८,

२४८, २५६, २८०, २८६,

२८७, २८८, २८६, २६१,

३२२, ३२६, ३२८, ३२६,

३३१, ३४०, ३४६, ३७१,

३७३, ३६२, ३६८, ४०४,

४०५, ४११, ४१२, ४१३,

४१७, ४८८, ४६६, ५३०,

५३३, ५३५, ५४१, ५४२,

५४४, ५५४, ५५५, ५६०,

५६५, ५७५, ६०१, ६०२,

६०७, ६०६, ६१०, ६११,

६१७, ६२०, ६२१, ६२२,

६४२, ६४२, ६५५, ६६५,

६७१, ६८१, . . .

मनमा—३५, ४१, ४८, ६५७,

मनवि—६४७
 मनह—२२२, ५३१, ६६८
 मनाइ—६२५
 मनावइ—४११
 मनावहि—१०७
 मनि—१२२, १५८, २२३, २६८,
 ३०४, ५३८, ५८५, ६६८
 मनु—४२, ३०८, ३२६, ४१३,
 ५६५, ६५८
 मनुइ—५१५
 मनुहारि—३१४
 मनोजउ—२२१, २२२
 मय—३११
 मयजउ—२६२
 मयगल—४६०, ५०४
 मयण—५७, १७०, १७४, १८२,
 १८३, २०२, २०३, २११,
 २१२, २१४, २१८, २२०,
 २२२, २२८, २२६, २३७,
 २३६, ३५४, २५५, २५६,
 २६०, २८३, २८७, २८८,
 २६५, २६७, ३०६, ३२२,
 ३३८, ३४४, ३५८, ३६७,
 ४०१, ४३०, ४३६, ४६३,
 ४८८, ५१८, ५२१, ५३५,
 ५४५, ५५०, ५५४, ५५६,
 ५५७, ५६५, ५६७, ५७५,
 ५८५, ६०१, ६३६, ६५८,
 ६६०, ६६२
 मयणकुवर—६२६
 मयणघइ—५५७
 मयणह—२३०
 मयणहि—५३४

मयण—१७२, १७३, १६०, १६७,
 २००, २१०, २२०, २२५,
 २३८, २४०, २८४, २६२,
 ३१५, ३२०, ३२२, ३६४,
 ४१२, ४४७, ४६२, ५१२,
 ५१६, ५६०, ५६२, ५६६,
 ६०७
 मयमंत—२६१, ५००
 मयमंतु—२०१, २१३, ५०४
 मयरघ—२०७
 मयरघउ—३५५
 मयरढ—२२५, ३६०, ४६६, ५१५,
 ५२१, ५४४
 मयरढउ—२८३, ३६६, ४५७,
 ५२१, ५२४, ५६२
 मयरढहु—१६८
 मयरढु—४६१
 मयरढु—१६६, ५८१
 मयरढे—५२६, ६५२
 मया—१७७
 मयाइ—४१८, ४१६
 मयावउ—३२३, ५२४
 मरइ—१२८, २६६, ४४०
 मरउ—१२५, ४३८
 मरण—७, २६६, ४८१, ६७०
 मरणा—३११, ४७१
 मरणु—५४२, ६७३
 मरवाइ—६२७
 मरवा—३४६
 मरल—५६१
 मरलति—६६
 मरलयउ—२६१
 मरलयागिरि—२१६
 मरलावभ—४५१

मलायट्ट—४००
 मल्लिनाथ—१०
 मलु—६३
 मसाहण—५६०
 मह—४६, ५८, १६७, २५०, २५८,
 २६२, ४८६, ५८६. ७००
 महड—३४६
 महकड—६८, ३४५
 महशरिह—५८
 महणी—२८६
 महतड—६७८
 महंत—२३०, ४२६
 महंतु—५०२
 महमंडल—२४३
 महमहड—३४६
 महमहण—६०, ७३, ४७४, ५०६,
 ५३०, ५६७, ६००, ६११
 महमहणु—५०१, ५१६, ५४६
 महमहनु—५०६
 महल—३०५
 महलई—३०४
 महलउ—६१, ३०१, ३०३, ३०६,
 ४३३, ४३४
 महले—६७, ८३
 महागुणराय—६६६
 महादे—१३३, २७०, ६७३
 महाहउ—२१०, २७४, २७६, ५३६,
 ६६१
 माह—२३२, ५०२
 महिमंडल—५३२
 महियल—५२८
 महियलु—५०६
 मही—६०५

महु—१०, ८५, १८३, ३०१, ५१०,
 ६०६, ६६५
 महुवरि—१२१, ४८५, ५८०, ६५६
 माइ—४१२, ४४७, ५५४, ४५६,
 ४५७, ४५८, ६३४, ६८५,
 ६८७, ६८८
 माइन—६८५
 माग—३०१
 मागइ—३०३, ३२८, ३२६, ३७६,
 ४३१, ५१३, ६६७
 मागि—३७६
 मागित—४१०
 मांगी—५६
 मागो—४५७
 माजि—४७६
 माक—३१, १२४, १३०, १३१,
 १५२, २६६, ३१४, ३१६
 माटी—३४२
 माड—३६४
 माडे—३८८
 माणत—१५१, १५३, २६६
 माणित—५६०
 माणिक—६१, २६३, ५६२, ५७०,
 ५७१
 माणु—३३६, ६८५
 माणुसु—६६८
 मातह—७०१
 माता—२४१, ३१६, ४०५, ४०८,
 ४१७, ४१८, ४३०, ४३२,
 ६६३, ४८७, ६०२, ६०४,
 ६८४
 माते—४७७
 माये—४७८
 मायो—४१७

माघ—६५२—६६६
 मान—१२, ३५, ३६, ४५, १८५,
 २०७, ३२६, ३६४, ४६१,
 ४८०
 मानइ—१०६, ६३३, ६६६
 मानन—२२६
 मानभंग—६३०
 मानहि—४८७
 मानू—६४६
 माया—३६७, ४६६, ६८३
 मायामइ—३५५
 मार—४६१
 मारउ—५१७
 मारज—१७
 मारण—२५५
 मारि—८३, १४४, २५३, २६२,
 ३८७, ५३८, ५४१
 मारिउ—२११, ५२४
 मारिवंतु—२१३
 मास्त—५३१
 मारघो—२७०
 माल—२३६, ३१६, ४५५, ५०३
 मालव—५७८
 माला—१२६
 मालाहि—१३३
 मालि—३५२, ३५३
 माली—३५४
 मास—१६३, ४०३
 मासइ—४२४
 माह—४३०, ४६५, ६२६, ६४५
 माहि—१४, १६, १०१, १२८, ६६६
 मित्र—३६७
 मिल—१२८, १८६
 मिलइ—३४, २०७, ५६२

मित्यउ—१८६, २६६
 मित्यो—४१७
 मिलहि—२२६
 मिलहु—४६६, ४८१, ५८६
 मिलाइ—४६८
 मिलावऊ—५६१
 मिलि—८६, २३०, २५४, २६६,
 ५८४, ५६१
 मिलितउ—४८२, ५६१, ५६०
 मिलितइ—१६०
 मिली—४८, ६१, १०५, २६०,
 ३५६, ४१६, ५४८
 मिले—१६०, १८७, ३०७, ६४७,
 ६५४
 मिति १८७
 मोच—५४३
 मुकट—१६६, २३३, ५८२
 मुकटू—२१७
 मुकति—६६७
 मुकराइ—६४८
 मुकलाइ—२८२, ३५०, ३८२
 मुक्के—७
 मुखमडल—४४८
 मुखह—२
 मुगण्णा—२३२
 मुभ—३१५
 मुंड—१४६, २६१
 मुंडइ—४१६
 मुंडुकेवली—६६३
 मुण्णि—१५१, ५६५
 मुण्णु—१४४, १८०
 मुण्णिवर—२४२
 मुण्णिवर—४८

मुनि—४०, ५३, १५८, १६३, २६८,
३६७, ४१५, ५५०, ५६३,
६७३

मुनिराइ—३६

मुनिसर—५६५

मुंबडी—५२, ६३

मुंबरी—३४३

मुंबरी—६३

मुनिस्वह—२५०

मुनियर—१५२

मुरारि—५०, ६७, ८६, ८८, ६०,
६७, १००, १०३, ५४७,
५७२, ५७५, ६०८

मुह—२०७, २४१, ३००, ५११,
६०५, ६३०, ६६८, ६७८

मुह—१२, १६७

मुहयु—६६

मुहवि—४९१

मुहामुह—२२६

मुहि—१०६, १२३, १४८, २१०,
२४१, २६८, ३००, ३०२,
३०३, ३०७, ४१५, ५५५,
५७३, १३३, ६७६, ६६४

मुही—२६०

मुहु—६२

मुहिक—३८४

मुह—२५

मुहज—४३६

मुंहहु—११३

मुंहि—११२

मुंहिउ—४२१

मुंहो—३६५, ४२२

मुलिमुग्गु—१०

मुप—३०१

मुंडे—२५, १४६, ३६३

मुंबरी—३४१

मेइ—३१८

मेघ—१७६, २८१

मेघकूट १२६, १५६, २३७, ४५४,
५७१

मेघनादु—५२८

मेघवाण—४२७

मेघमाली—५३१

मेडड—४७, १६८, २७८, ४८६,
६७३

मेडण—१२६, २७७

मेडणहार—६११

मेडे—३१७

मेडो—३६७

मेदनी—२१

मेरउ—३२६, ६३०

मेरी—३७१, ५३७, ६६५

मेरु—१४, ६७

मेरो—५४२

मेतइ—८०

मेतउ—५४२

मेहद—७६

मेनीउ—५३३

मेह—५१, १७३, ४८३

मेहउ—३७२

मेहबुदि—१५४

मेहु—५३०

मेगल—१८०, ४६०, ५००

मेडो—३६५, ३६६, ३७२

मेवव—१८१

मेसइ—५२१

मेवयो—४०५

मेदि—२६०, ३५१

मोही—६१८
 मोतो—१७, ६१, ३१३, ५०३,
 ५६२, ५६३, ५७०
 मोपह—२६४, ४६७, ४७१
 मोलु—३४०
 मोस्यो—२६५
 मोसहु—२०६
 मोसिहु—१६०, ५२२
 मोह—२८७, ६८५, ६६२
 मोहणइ—६११
 मोहणी—५५, १६३, २८७
 मोहतिमिरहरसूड—६६२
 मोहि—१७१, २४६, २४८, २६३,
 २६५, ३०४, ३११, ३३०,
 ३८६, ४०८, ४१२, ४३२,
 ४५७, ४५५, ४५६, ४६६,
 ४६३, ५११, ५४६, ५७४,
 ५८३, ६०२, ६०३, ६०४,
 ६७०, ६८३
 मोहिणी—५५७
 मोहहि—१५
 मोहु—४३१
 मोहे—४६६

य

यज—६११
 यइ—१५, ५५, १०८, १०६, १६२,
 २०७, २१०, २२६, २२७,
 २२६, २८५, २६७, ३०४,
 ३१४, ३२०, ३२२, ३३६,
 ३३२, ३३३, ३६२, ३६१,
 ४०६, ४२८, ४२६, ४४७,
 ४४८, ४५२, ४५५, ४५६,

५०१, ५०२, ५०६, ५३८,
 ५४६, ५४७, ५४६, ६८६
 यहर—४२३
 यहु—१२३, ३३२, ३६२, ५०२,
 ५४१, ७००
 याको—५३५
 याण—१११

र

रए—६५५
 रलवाल—२०५
 रलवाले—२०७, ३३६, ३४०, ३४१,
 ३४२
 रलहि—३१५
 रलतु—१२२
 रलहि—६६३
 रवि—१६, २६१, २५३, २६२
 रविउ—३६५
 रवित—४७, २७७
 रचितु—१२६
 रची—४७, २६०
 रच्यो—२६३
 रण—७२, ७३, ८१, ८३, १६५,
 १६६, १७४, १७६, १८१,
 २६१, २८१, ४६१, ४६२,
 ४६७, ४७५, ४७६, ४७७,
 ४६०, ४६१, ४६२, ४६६,
 ४६८, ४६६, ५०१, ५०२,
 ५०६, ५०७, ५१२, ५३७,
 ५३८, ५४२, ५४४, ५४६,
 ५५५, ५५६, ६३४, ६७६
 रलाघोर—५०८
 रलाब—७०

रणवासह—२६, ४१, २३८
 रणहांक—५२७
 रणि—४६१
 रतिनामा—२२७, ५७२
 रथ—५३, ५६, ६५, ३५४, ३५७,
 ३५८, ५२४, ५४०, ५४५
 रथु—५०७
 रथ्यो—२७०
 रथल—३१३, ५०३, ५८७, ५६६,
 ६६०
 रथलचूलु—५८७
 रथलजडित—६०३
 रथलसरसणी—१६३
 रथलह—१६२
 रथलि—१२७, २३६
 रथल—५४०
 रथलनि—५००
 रथल—६५७
 रथलउ—३२६
 रथलउ—१३०, १५८, २४८, ३३१
 रथली—४८, ६५८
 रथले—३३३, ६५५, ६६५
 रथस—२४७, ६६३
 रथु—११
 रथोई—३६१
 रथु—५८, १७३, १७६, ४०५, ४८२,
 ५३२, ६४५
 रथु—२६८, ४०४, ४५०, ६७१
 रथु—३४०, ४४६, ५७६
 रथु/टमाल—६८५
 रथुटान—४४३
 रथुवउ—५३३, ५३८
 रथुवर—५५६
 रथुवष—२६२

रहस—२६
 रहस्यउ—१२७
 रहसु—६७१
 रहाइ—१४५, १५७, २१६, २८५,
 ५४५, ४६५, ६८०, ६८१
 रहाए—६०
 रहायो—२८४
 रहि—७४, ८१
 रहिउ—२०५, ६२६
 रहिवर—७०, १७५, २५६, ५००,
 ५०४, ५२६, ५२६
 रहे—६४४
 रहे—५३७
 रहोगे—६८३
 राइ—६६, १८५, ५७७, ५७६, ६४१
 राइर—१६
 राउ—२१, ६४, १२६, १३३, १३७
 १५३, १६६, १७२, १७४,
 १७७, १८३, १८४, १६१,
 २३८, २५४, २५६, २६६,
 २६६, २७०, २८२, २८४,
 २८६, २८८, ३६६, ३७२,
 ३७३, ४५४, ५०३, ५६०
 राकी—१७१
 रालि—८४, २०५, ५२३
 रालिउ—२५७
 रालिवउ—१८५
 राग—३२४
 राज—२२, २३२, ५६२, ५६८,
 ६०५, ६११, ६५८, ६७७
 राजकुवरि—२३५
 राजा—६६, १३४, १६२, २५१,
 २५७, २५८, २६६, ६४५,
 राजु—१११, १८६, १६१, ५२३,

५७६, ५८६, ५९१

राजभोग—६७६

राडि—२७५

राडी—८१

राणी—६१, १११, १३३, २७४,
३७६, ३७७, ३७६, ३८३,
३८८, ३९१, ३९३, ३९४,
३९५, ४०५

राणो—५२६

राति—११०

राम—२७५

रामहिउ—२६४

राय—२५५, २५७, ५३०, ५८६,
६४०

राति—३५८, ३८३, ५३६, ५५३

राजपउ—३६५, ४३८

रालियाउ—४४६

रावण—२७५

रावत—७०, ७५, १७८, ६१, ४६०

रावतयो—२६१

रावल—४२४, ४२६

रावलइ—६५०

रावलुहो—३३८

रिधि—६६६

रोति—६६३

रिड—३६३

रिग—६६६

रिबभु—८

रिधि—२६, ३०, ३३, ४६, ४६,
१५६, २६८, ५५५

रिताड—३४, ३५, ३००, ३३६,
४३८, ४४५, ४४६, ५८३,
६३४

रिसाणउ—४११

रिसाणा—२५६

रिसानो—२८२

रोति—३६४

रोप्य—५४४

रवमणी—५०६

रविमणो—४४७, ५०८, ५८३, ५९६
६४०, ६५३

रकमिणी—४७, १०४, १०७, १०८,
१०९, १४८, २४३, ४७२, ५४६

रकमिणि—१०२

रकमोणी—१५४

रकमोणी—१५६

रकुमिणी—६०१

रुख—३५१

रुधि—५३३

रुवतु—६६

रुप—३१, ३२, ३६, ३६, ५५, ६८,
६७, १०३, १३४, १६०,
३१८, २१६, ३११, ३३८,
४०३, ४५०, ५०२, ५६८,
६१२, ६३४, ६३६, ६५०,
६८४

रुपचंद—८५, ६२३, ६३६, ६४५,
६४६, ६५८

रुपचडु—८४, ६२५, ६३४, ६५०

रुपणि—४०३

रुधि—४५१

रुपिणि—५०, ६१, ६२, ६५, ६७,
६६, ८४, ६०, ६५, ६६,
१०२, १०४, ११६, ११७,
१२७, १४०, १४३, १४६,
१४७, १६०, १६३, २३१,

३६६, ४०५, ४०७, ४११,
 ४१३, ४१७, ४१८, ४१९,
 ४२५, ४२६, ४२८, ४२९,
 ४४१, ४५६, ४६३, ४६५,
 ४६६, ४६७, ४६८, ४७१,
 ४८०, ५१०, ५११, ५१२,
 ५१५, ५४२, ५४४, ५६१,
 ५६५, ५७४, ६०२, ६०५,
 ६२५, ६५२, ६७८, ६८१,
 ६८७, ६८८

हमिली—५६, ७३, ११०, १२६,
 ३६८, ४०६, ४१८, ४२७,
 ४५३, ४५४, ५५२, ५६७,
 ६०६, ६२३, ६३१

हमिम—४२८

हमो—३६७

हमोण—५३, ७६, ४५, ६२२,

हमोणी—५४, ४३४

हमु—६१०

हमुकुवर—६२२

हपो—४३२

हठे—६८४

हसइ—४१०

हहइ—१२

हहडे—२६५

हहिइ—५०४

हेस—३०

रोइ—४२५

रोपडु—६४३

रोरे—५६१

रोवइ—१४१, २५१

रोवति—३५६

रोस—२८०

रोहिलि—५

ल

लइ—६६, ७१, ७६, १०२, २१२,
 २३३, २४८, २४९, २७४,
 ३०८, ३२६, ४७४, ४४७,
 ४४०, ४६७, ५६०, ५६३,
 ६४६, ६५०

लइय—६७, ३०७

लउ—२२१, ४७४, ५३५

लए—१६५, ३५४, ४८६, ४६५,
 ६३६, ६४४

लकलणवंत—४२

लक्षण—३६, १३४, १३६, १३७,
 ४२८, ६८६, ६६६

लक्षणवंतु—४२८, ६१४

लकुडि—६

लखण—१३२, ३११

लगन—४४, ८७, ४७५

लगार्ड—६८

लगि—२७४, ३२२

लइइ—३८२

लउरु—१३८

लउहि—३७१

लउडु—३८१

लडी—३६५

संका—३७५, ३५२

संघे—२६५

सयउ—१३३, १३४, १८४, २७०,
 २८०, २८६, ३६०, ३६५,
 ४०८, ४१३, ५२०, ५२५,

५३३, ५४०, ५४७, ५५१,
 ५५३, ६५८, ६६१, ६७४,
 ६८२

सयो—४५०, ५३१

लरइ—४५१, ४६१, ५२५,
 लबंग—३४८
 लवर बुहि—१४
 लह—५८०
 लहइ—२, ५५३
 लहउ—२७३
 लहणौ—२७८
 लहरि—१६
 लाइ—६०, १०६, २७५, ६२०,
 लाउ—५७८
 लाए—६४६
 लागइ—१०८, ११२, २२२, २२३,
 २६४, ३००, ४३१, ४७२,
 लागउ—६००
 लागणह—११३
 लागने—४३३
 लागह—१२७
 लागि—२७५
 लागी—७३, १०८, १४७, २३६,
 २६०, ३१२, ३८३, ५७४,
 ६८४
 लागे—२३०, ४८७
 लागो—२३७, २३८, ५०६, ५४६
 लाघण—४०२
 लाज—१७६, २४६, ५१३
 लाजइ—१७१
 लाठी—३६०, ३७१
 लाहु—४०३
 लाहु—२७०, ३६०, ४०३, ४०४
 लाम—१८३, २०४, २३१, ५४८
 लामइ—१७८, २७८, ३०२
 लामु—६५०
 लायउ—४२६
 लालची—४४४

लावण—६८४
 लावह—५७, ३५३, ४००, ४११,
 ७०१
 लाउ—३११
 लाखाइ—५३
 लालि—६८६
 लालितु—१३७
 लालियावइ—६६६
 लाली—५५
 लाल्यो—४८६
 लायउ—५३, १३७, १८७, ४१४,
 ५८५, ६१५
 लियो—५८, ८२, २४४
 लिलाट—३०
 लीए—४६३
 लीजहि—२४५
 लीय—३६५
 लीयउ—४२६, ४६६, ५२७
 लीयो—४०२, ५३६
 लुवधि—२४७, २७२
 लुवधं—२६५
 लेइ—५, ६४, ६६, ७८, ८६,
 ११६, १६६, १७२, १७६,
 १६२, २०६, २११, २२७,
 २३५, २३६, ३७७, ४६८,
 ४७७, ४७८, ४७६, ४६७,
 ५६८, ६२०, ६२५, ६७५,
 ६८६
 लेउ—१०४, १६५, ६०० ६२६
 लेकर—३८७
 लेखणि—३
 लेगयो—१५४
 लेचलयउ—५१०
 लेचयो—४६४

सेण—१४२, १४६
 सेजइ—४५७
 सेतइ—२०६
 सेनि—२३६
 सेहि—७२, १४४, २६८, ३०१,
 ४१०, ६०७, ६७६
 सेठु—६६, ७५, १४६, ३४०, ४२०,
 ४६४, ४६६, ४७४, ६२०
 सेहै—२७७
 सेंगय—१५६
 सेोइउ—६७
 सेोग—२७, ६०, ३४६,
 सेोगु—३००, ३३२, ३८६, ३६०,
 ३६२, ४२३, ४५२, ५८६,
 ६६१
 सेोटइ—४३१
 सेोणु—३८७
 सेोपि—२६३
 सेोपिपउ—५६५
 सेोपी—७३
 सेोपण—६६०
 सेोपणमाणु—६६०
 सेोपणु—५०७

व

वइ—३६, ५७८, ५६०, ५६६,
 ६००, ६४१, ६६३, ६६७
 वइठइ—१४३
 वइठउ—२३, ३५, ६४, २४८,
 २४८, ४६३, ६६८
 वइठे—६२, २५१, ३१८, ४३४, ६०८
 वइठो—३५, ११७, ५६६, ६५०
 वइमाइ—३४१

वइसाहि—१०३
 वइसाहिउ—५६२, ५६६
 वइसि—३८५
 वलाणइ—६६८
 वलाणु—६६४
 वचन—५४६, ६२८, ६३२
 वद्ययलि—६०६
 वजइ—१७३
 वज्ज—५२, ६३, २०६, २५८,
 २६४, ५२४
 वज्जहि—५६६
 वटवाल—३००
 वडउ—३३२, ३६२, ४२३, ४३६,
 ४५३
 वडी—३३, ३०१
 वडे—३८७, ३८८, ३६५,
 वण—५६, १०१, १३०, १३१,
 १६६, १८७, २१२, २००,
 २२१, २२५, २०६, २४०,
 २५४, ३३६, ३४२, ४८५,
 ६६६
 वण्ण—६६३
 वणवेइ—५५
 वणवेवो—१०५
 वणवर—३१४
 वणवाल—६६
 वणवासी—६६४
 वणह—८६, १००, १४२, २१२,
 २२४, २२६, ३३८
 वणिज—२७२
 वणिसण—३३
 वतीस—
 वतीस—८०
 वतीसी—१३२

यगनि—६३१
 यवतु—२१५
 वंदे—२७
 वधाए—५६७
 वधावउ—११६, ११७, ११८, ५६३
 वधावा—१२०
 वधु—४५०
 वधी—४६५
 वन—१३०, २२५, ३३८, ४७४,
 वनलंड—१२४
 वर्गपउ—८
 वनवासा—६७४
 वंग—५७८
 वंदनमाल—१७, ८६
 वंबर—३५०, ३५१, ३५३, ३५४
 वंदरुवेउ—२०६
 वंदल—३५०
 वदे—२६५, ६६०
 वंचउ—१६३
 वंधि—१८३
 वंधिवि—३४६
 वंस—११०, ५७६, ६२५, ६५५
 वपु—१२
 वभंगु—१६८
 वभर—१२, ३१८, ३६३, ३७८,
 ३८२, ४४३
 वभरगु—३६०, ३६३
 वयठउ—५३, ११६, २२०, ५६०
 वयरी—१०८, २२६
 वयण—२६, ४६, ६१, ६२, ७७,
 ६६, ६७, १४१, १५८,
 १७०, १७६, १८६, १६२,
 २४०, २४६, २५३, २५६,
 २८६, २८६, २६८, ३१६,

३७१, ३६७, ४२१, ४२७,
 ४३८, ४४१, ४५४, ४५५,
 ४७०, ५१०, ५५६, ५६६,
 ६००, ६०२, ६२७, ६२८,
 ६३०, ६३१, ६३५, ६५४,
 ६७६, ६८४
 वयणु—६०, ६४, १४६, १६०,
 २६५, ३०१, ३१५, ३३१,
 ३७८, ३८४, ४१२, ४२६,
 ४३०, ४३२, ५१६
 व्यंजन—३८८
 वयर—१२३
 वयराउ—४६८
 वयह—८४
 वयसंदरु—१७०
 वयसरि—५८
 वयसारि—११६
 वयसारियउ—५६२
 वर—४४, २०१, २०६, २२६, २३६,
 २५६, ३१५, ३४३, ३५६,
 ४११, ४२८, ४६७, ५०२,
 ५४६, ५५६, ५५८, ५६१,
 ५६८, ५७०
 परजइ—५८३
 वाजे—३७४
 वरुं—३१६
 वरुंड—५४६
 वरत—२६६, ६५६
 वरतु—४०८
 वरंगिलि—६६७
 वरम्हइ—५३६
 वरम्हइ—४७४
 वररगिणी—५६५

वरस—१३६, ५५३
 वरसङ्—७८
 वरसहि—२८१
 वरहासेण—२१८
 वरहाचारि—३६८
 वरहाज—६३७
 वृद्धि—१३६, ५४७
 वराह—२१८
 वरि—६०५
 वरिस—१५७, १६०, १६३, ५४८,
 ६७१
 वरिसज—५३०
 वरिसहि—१७६
 वरिसुद्ध—१४५
 वरी—२६, ३०६,
 वर—७००
 वल—१३२, २०२, २८७, २६३,
 ४०६, ४५३, ४५६, ४६१,
 ५०२, ५७६, ६४३, ६८०
 वलि—११६, ४६६
 वलिवेड—४६०, ५५८
 वलिभद्र—२७, ७८, ६२, ११३,
 ३१५, ४३३, ४३४,
 ४४४, ४४५, ४४६,
 ४४८, ४६७, ४६४
 वलियज—२३०
 वलियो—४६५, ४६७, ५०१
 वलिवंत—१२७, ५३६
 वलिवंतज—२०३
 वलो—४५८
 वलोभद्र—४४२
 वलु—६६, २७६, ३०७, ४६४,
 ४८८, ६६६, ६५१

वलु—३४५
 वलुतिरि—३४५
 वलुदिउ—३६८
 वलुवेज—३७३
 वलह—१४, १५, २०, १०१, ३१३,
 ३१४, ४६०
 वलई—२१६
 वलते—६६५
 वलंत—२२७
 वलतु—२२१
 वलत—१६२, २१७, २३६, ३०१,
 ३०२
 वलत्र—४, १०३, २०६
 वलनु—३००
 वलसहि—२०, ६६६
 वलसा—८८
 वलसारि—४५७
 वलो—४७०
 वलुण—२००
 वलुवेज—३७१, ३७२
 वलुवेव—३१७, ३६७, ४६६, ४६४,
 ४६८
 वलह—७६, ८०, १०५, १०७, २४५,
 ३१६, ३१७, ३१८, ३१९,
 ३७६, २२३, २५५, ३१६,
 ३१७, ३१८, ३१९, ३७६,
 ४००, ६०४
 वलह—४००, ५०१
 वलउ—३६५
 वल—१४१
 वलहयज—०८२, ४३८

बहहि—५०४, ६४३
 बहि—१३०, ५२८, ५२९
 बहिला—११०, २७६, ६०६
 बहिलि—६४३, ६५४
 बहिली—१०६
 बहृ—३६, ४२, ६१, ६६, १०१,
 १०५, १३७, १७३, २२३,
 २६२, ३१४, ३१६, ३४८,
 ३५०, ३५६, ३८०, ४१८,
 ४१६, ४३८, ४५०, ४५१,
 ४६६, ५२४, ५५७, ५६१,
 ५६३, ५७५, ५७६, ५८१,
 ५८६, ५९०, ५९७, ६०३,
 ६१२, ६३७, ६५६, ६५८,
 ६६३, ६७५, ६६१
 बहृडि—८४, ८५, २६१, ५१३,
 ६८७
 बहृडी—२७६
 बहृत—१८, २४, ४४, ६१, १०५,
 ११५, २३७, २३८, २६४,
 ३२२, ३४४, ३४७, ३८८,
 ४१६, ४३१, ४४३, ५७३,
 ५७६, ५८६, ६०५, ६१६,
 ६३२, ६३६, ६५५, ६७७,
 ६८३
 बहृतई—४६८
 बहृतु—५४६, ५६१
 बहृपलि—१६४
 बहृमती—४
 बहृरि—४११, ६१६
 बहृर—३२८
 बहृरिणी—६३४
 बहृत—४६०, ६४१, ६६६
 बहृतु—१२७

बहे—५२६
 बहै—१६२
 बहोडि—४३७
 बहोडी—२२१, २७७, ३७१, ४३७,
 ६१७
 बहोरी—२८७
 बाइ—१०८, ४८०, ४८४
 बाइस—८६, ६८६
 बातर—३२५
 बातरुयठ—३२५
 बाण—३२४
 बाचइ—६६७
 बाजइ—२४, ५८०
 बाजरा—४८३
 बाजत—६५६
 बाजहि—४, १२१, १७५, ५६१
 बाजे—१७५
 बाट—३०४, ३०७, ४८४
 बाइह—४३६
 बाडि—१०२, ३४४
 बाडित—३१४
 बाडी—१०५, ३४३, ३४६, ३५०,
 ३५१, ३५३, ३५४
 बाउइ—६२४
 बाडित—५०६
 बाडी—२७५
 बाण—७८, ७६, ८२, १३८, १७६,
 २८१, ५१८, ५२१, ५२३,
 ५३१, ५३३, ६४७
 बाणनि—५१, ६२, ८१
 बाणि—२
 बाणि से—१६
 बाणी—६६२

वायु—५३५, ५५३
 वात—२६, ४२, ४८, ५३, ७५,
 ६३, ६४, ६६, ११६, १५०,
 १५४, २६७, ३२६, ३६६,
 ३८२, ३८३, ४४४, ४४७,
 ४५३, ४७०, ४७२, ४८०,
 ५१२, ५२२, ५५०, ५६५,
 ६२३, ६२६, ६३०, ६३१,
 ६३३, ६७१, ६७४
 वाटर—३४६
 वाधि—७, ६५
 वाधिउ—८५, ५१७, ६४६, ६५२
 वाधि—४४६
 वाप—४६२
 वावहि—२८५
 वापी—२५८, ३६२, ३६८
 वायु—६८०
 वाभण—३२५, ३३५, ३६५, ३७०,
 ३७५, ३७६, ३७८, ३८०,
 ३६०, ३६३, ३६४, ४३७,
 ४३६, ४४२, ४४३
 वाभणु—३२६, ३२७, ३६३, ३८०,
 ३६१, ४३८
 वाभन—१३१
 वाभन १२५
 वामा—७४
 व्याह—४०६, ६२१
 व्याह ६२१
 वार—११, ४३, ६०, ७६, ८६,
 २६०, ३१२, ३८३, ४००,
 ५६५, ५६७, ५६१, ६२०
 वारवइ—१६
 वारवार—१०८
 वारमइ—१५६, २४२, ५७२, ५६६

वारम्बइ—३१२
 वारह—१६, १५७, ६७०
 वारहसइ—१२६
 वारहे—१६०
 वारहण—२०
 वारि—७८, १६१, ६८१
 वाह—११
 वाल—१७७, २६४, ३००
 वालउ—१६८, १७०, १८८, ४३०,
 ५७३
 वाललपंत—३५२
 वाला—४२६
 वालु—१६६
 वालुका—३२७
 वाले—१६७, ३८२, ६४२
 वालेहि—१७७
 वालं—१७१
 वालो—१७६
 वावण—१५५
 वावडी—१०५, ३६०, ३६३, ३६४
 वावरी—१०२, १०४
 वावो—२१४
 वावोस—११
 वास—२३, ६६३
 वासु—३
 वासुपुसु—६
 वाह—४०१, ४५७, ४६३, ५४५
 वाहिर—३८३, ४४६, ६४३, ६८६
 वाहिरो—४०६
 वाहु—३६६
 वाहुड—५११
 वाहुडि—८६, १७७, २४६, ३०८,
 ४३६, ५५३, ६०६, ६६०,
 ६६६

वाहुडिउ—३७२
 वाहुडी—१३३, १५८, ३६५, ६०६
 वाहुरि—१४०, १६३, २४८, ४५३,
 ६२५, ६५८, ६६६
 वाहुरी—१७७, ३४३
 वाहुरे—४२२
 वाउ—६८६
 वाउतलण—२२५
 वाकाहड—११२
 वागनिहि—४३४
 वाग्रह—३७६
 वागडु—१६४
 वागाह—२८५
 वागुचीन—३३६
 वागोड—२५२, ४२५, ५१३
 वाघन—६
 वाघारि—३६, ६३, २१०, २२७
 वाघाट—३०५, ३२०, ३८४, ६०६,
 ६०७, ६०६
 वाघाहल—४८६
 वाघित्त—६६३
 वाघोही—१४२
 वाघउ—४२३
 वाघउरे—३४७
 वाघपतंज—०३४
 वाघपमणु—०१६
 वाघपागिरि—१८७
 वाघाहर—३८, १८४, २०६, २६५,
 ३१८, ४५२, ६१६, ६०१,
 ६६१
 वाघाहुरनी ६००
 वाघारि—४५, ००१
 वाघाह—२२१, ०६२, ४५१
 वाहु—५८६

वाजोगु—३३२, ३६२, ४५२, ४४८
 वाहु—७६
 वाणवड—२११
 वाणहु—३४
 वाणामु—६७४, ६६०
 वाणु—१
 वापारि—५७६
 वावेह—१५०, ५६३
 वाघा—१२६, १३२, १६१, २०३,
 २०५, २२२, २३३, २४५,
 २४६, २४७, २४८, २४९,
 २५५, २६३, २६५, २६३,
 ३६४, ३८२, ४०६, ४१८,
 ४५४, ४८८, ६५१
 वाघातारणी—१६४
 वाघाघर—५८६
 वाघानन—६५७
 वाघाना—१४०
 वाघन—६२, ६४, ४३४
 वाघउ—३६६
 वाघनड—०७, ११८, ४२०, ५८८
 वाघाण—२५३
 वाघोड—२४
 वाघ—३२३, ३२६, ३२८, ३३३,
 ३३४, ३३७, ३६२, ३५७,
 ३८०, ३८१, ३८५, ३६०,
 ३६५, ४३५, ४३६, ४३७,
 ४४२, ४४६, ४६८, ४७१
 वाघह—४४५
 वाघह—३४५
 वाघरित्त—३२, ४२५
 वाघु—३०६, ३३०, ३८७, ३६२
 वाघउ—३६६, ४०१
 वाघिउ—१६०

विमल—६
 विमल—२५, ५३, २६१, २६२,
 २६५, ३१२, ३२०, ४८५,
 ४८७, ५५६
 विमलह—४६२, ५४४
 विमलण—१३३, ६५५
 विमलण—१२४
 विमलण—१३३, १३५, १८६
 विमलण—४६६
 विमल—२६६
 विमलण—१३०, ३१८
 विमलणह—१३१
 विमलण—१२२, २६७
 विमल—३१
 विमलण—२६६
 विमलण—३८४
 विमल—४२३, ४२६
 विमल—८४, १०२, १६२, ३४४,
 ३४७, ३५१
 विमल—२०६
 विमल—१५७, ३६६, ४०६, ४३०,
 ६१७, ६२२
 विमल—१३६
 विमल—२०५
 विमल—२५४
 विमल—३१
 विमल—३६५
 विमल—८३, २१५, २६६, २६७,
 ५०१, ५२४, ६३१, ६७६
 विमल—२६२, ३०६, ४१५
 विमलह—१४३
 विमलह—१६०, ३६१, ६२१
 विमलण—६३०

विलजो—६०, १४०, ३५६, ३६१,
 ४०५
 विलजो—६७८
 विलतरण—२२५
 विलताह—४००, ६८१
 विलसाह—५८६
 विलसाह—५६२, ६६२
 विलास—११३, ६६२, ६६३
 विलिल—१४६
 विवाण—१५८
 विवाणह—२८१
 विवाणह—३०६, ५८१, ५८४
 विवाणह—४६, ४७
 विवाह—२२७
 विवाह—६२२
 विवाह ४४, ४८, ८७, २२३,
 २८६, ४१३, ५८५, ५८६,
 ५८६, ६५४, ६५५
 विवाह—१०७
 विवाह—५६
 विवाह—२०१, २०७, २२६, ३३१
 विवाह पातिलो—६३३
 विल—१६६, २७०
 विलतागी—४७६
 विलतर—१६
 विलताह—६६
 विलताह—५३५
 विलताह—१४३, १८५, २५०, ४०५,
 ४५५, ६११, ६३१
 विमलारी—३२
 विमलारी—१४५
 विमलारी—१६०, २०२, २०६, २१४,
 २१५
 विमलारी—२१४

विसाड—२२२
 विसाले—२६६
 विसाहु २१६
 विसुर—५६६
 विसुरइ—४१२
 वितेपइ—१५
 विस्नु—५२१, ५४५
 वितास—२६६
 विहडाइ—५३१, ६००
 विहडाउ—४६१
 विहलघण—५४
 विहलंघन—२५०
 विहसि—५६, ६४, २६०, ३७०,
 ४२६, ४५८
 विहसत—६०
 विहसंतु—२५, ११७
 विहसिउ—६०६
 विहसाइ—२६, १५६, २००
 विहसेइ—६१
 विहि—४०, ४८६
 विहिणा—६६१
 विहिसाइ—६६८
 विहु—६८६
 वीजाहराउ—१५३
 वीजु—५३६
 वीडा—१७२
 वीण—४, ५८०
 वीणा—३०३, २३३
 वीद्या—२७७
 वीनयो—६३
 वीय—१३
 वीर—७८, ८१, १३६, १५५, १६३,
 १८१, १८२, १८६, २०१,
 २०६, २१२, २२१, २३६,

३४३, ४०३, ४२७, ४४७,
 ४४६, ४५८, ४६७, ४६२,
 ४६८, ५०२, ५१०, ५४६,
 ५५६, ५५८, ५६१, ६३७
 वीरा—३५२
 वीरु—१०, १३०, १६०, १६६,
 २०७, २०८, २०६, २१०,
 २१४, २२०, २२४, २२५,
 २२६, २५६, ३१५, ३४५,
 ३४६, ३६२, ५०१
 वीवी—१६७
 वीस—३३५, ३३६
 वीसक—४४१
 वुम्राण—१८५
 वुभाइ—५२८
 वुभिवि—१३७
 वुधि—१, २६८, ३६४, ४३५, ४८८
 ७०१
 वुडि—४१८, ६३५, ६७६
 वुरो—६३०
 वुसाइ—१८७, ६२२
 वुलाय—१०४
 वुल्लिउ—१८३
 वृचइ—२२७, २६६, ६४०
 वृभइ—१, १३६
 वृभिउ—१३८
 वृढउ—३२५, ३३४
 वृढे—३३२
 वृधी—४८१
 वृद—३११
 वृरं—४८५
 वृलाइ—४००
 वेग—५६, ७२, १३५, २६८, ३५४,
 ५७२, ५८७, ५८६

वेगड—३६८
 वेगि—६१, १६५, १७०, २५३
 २८६, २६०, ४३५, ४४१,
 ६०२, ६०५, ६३६
 वेगु—६३४
 वेगे—२८६
 वेगा—५४३
 वेटा—३६
 वेटी—३६, ६२४, ६२७
 वेदिपड—१४
 वेण—६५६
 वेताल—५०४
 वेतालु—३२
 वेधि—६४
 वेद—८७, ३२८, ३७४, ३८०, ५६८
 ५८१
 वेदहड—४३०
 वेस—३४८
 वेसज—१२५
 वेसा—५७६
 वेसु—३४५
 वेसु—३०६
 वेकार—६३६
 वेडज—१०१, ३८७
 वेडि—३८१
 वेडो—१०५, ३८८, ४२६
 वेडो—३४२
 वेद—१५५
 वेदप—६११
 वेदुं बरु—४७४
 वेस—२०
 वेसद—४८५
 वेसण—३६६

वंसंदर—७६
 वंसुंदर—६४३
 वंसरहि—३८१
 वोछी—४८१
 वोल—४५, ३७८, ४२१, ४५७
 ४७३, ५६०, ६३१
 वोलइ—४३, ४५, ५६, ८४, ६६
 ६७, ६६, १००, १०६
 ११७, १४६, १५२, १६७
 २०६, २६६, २८८, ३०६
 ३१३, ३६८, ३८४, ४०६
 ४४५, ४४७, ४६४, ४६३
 ५४४, ५५४, ५५६, ५७३
 ५७४, ५८३, ६०७, ६२५
 ६३५,

वोलत—६४३
 वोलति—६४२
 वोलते—६४३
 वोलि—११६
 वोलिउ—५१६
 वोलियड—६६
 वोलियड—५१७
 वोले—६०५
 वोलै—१४८, ६०६
 वोलो—४७३
 वोल्यो—१७८, ५०१

श प स

शींगी—३५
 शयंयु—६
 शण—३०, ३६

सनमधु—६८
 सनवधु—४०६
 सनाह—४७८
 सनीःचर—११
 सनेह—६०३
 सनेह—५८८, ६४२
 संक—३६६, ३७१
 संख—५१, १२१, ३५८, ५६६
 ५८०, ६५६
 संगह—२६८
 संग्राम—२१०, ४६७, ४६६, ४६३
 ४६८, ५००, ५०६, ५४६
 ५५५, ५५६
 संग्रामु—२६६, ५०८
 संघरह—२७५, २८३, ३८८, ६७२
 सघरह—१६५, ६७१
 संघरुषड—५१०
 संपरि—२८६
 संपरी—३५१
 संपरे—४०३
 संपार—४६१
 संघार—४६२
 संघारणु—७६
 संघारण—२३४
 सघरह—३०
 संचारिड—५१६
 संजमु—५६४, ६६६, ६७३, ६७५
 संजुन—७२
 संजुन—३२०, ४८२, ५७१
 सजोमु—४०
 सति—६
 संनाडु—१४०, १४२
 संतोषी—१६३

संवेसड—३६८
 संवेह—४०६
 संवेहु—१६, ३०५, ५३०
 संघारण—८०
 सन्मधु—६८७
 सन्यास—३३१
 संसार—६५६
 संसारि—६६७
 संसार—२३१
 संहरे—३६०
 संहार—१६१
 सपतड—१५६, २०८, २४०, ३५५
 ४६३, ५४४
 सपतड—१५०
 सपत्नी—६८१
 सपते—८४
 सपराण—८१, १८१
 सपराणु—२६
 सपरान—४५८
 सफलु—२३१, ४०६, ५६२
 सव—२२, १११, १६२, १७५, १८७
 २५४, २५५, ३५०, ३५६
 ३५३, ३६४, ४०५, ४७३
 ४८१, ५०२, ५१२, ५८६
 ५६३, ६३८
 सवधु—२४
 सवधु—२३०
 सभा—०३, ५३, ३३०, ३३७
 ३७०, ३७३, ४५७, ४६३
 ४६४,
 सभा—११०, २५५, ३१२, ३६०
 ४५८
 सभाड—२५७, ५६६
 सभासह—५२१

सभालि—४७७, ५३६
 सभालिज—७६
 सम—७७, २४३, ४२८, ५२२, ५६२
 समजसरण—६६५
 समभाइ—६६, १४५, ३६२, ६२८
 समभावइ—६८७
 समय—२०६
 सभवि—२६४
 सभाविज—१८४
 समविनारायण—६५८
 सम्बरि—३०३, ४०६
 समयमुहं—१२
 समरगिणि—७६
 समराण—१७५
 समरो—४८८
 समवसरण—१५१, ६६४
 समहाइ—२७६
 समाण—१५
 समाधान—४००
 समान—१५
 समु—३३२, ५७३
 समुभार—१५०, २८५, ३८३, ४००
 ४८०, ५५०, ६८८
 समुभावं—४८६
 समुद—३२७
 समुदु—४५७, ६५६
 समुदु—१२५, ५५७
 समुदं—५५८
 समेलि—३८६
 संपतज—६५, २७५
 संपनि—७००
 सनु—४५, ६६, १६५, २८३, ५०८
 ५५३, ५६५, ५६६, ६२४
 ६४६

संभयज—५६३, ६१०
 संभये—१११
 संभरि—५७६
 संवकुम्बाव—६१२, ६२४
 संवकुवर—६१६, ६१८
 संवतु—११
 सम्बल—२३५
 सम्हारइ—४७६
 संसयह—५६६
 सम्हालि—१२३, १६२, ४५०, ४५१
 सयपंच—२२८
 सयन—२६०, ३२०, ४७४, ४८३,
 ४८८, ५१०, ५१४, ५२६,
 ५२८, ५५६, ५७७, ६४६
 सयना—५१२, ५६४
 सयनु—४८७, ५०८, ५७२,
 सयल—२५८, ३५०, ३८५, ३६०,
 ३६१, ४६६, ५२६, ५५८,
 ५६१, ५६३, ५६४, ५८६,
 ५८७, ५८६, ५६१, ६१४,
 ६६८
 सयलह—४६१
 सयलु—३७, ३८६, ४१३, ५१०,
 ५५५, ५७७
 सर—६४, १७६, २२४
 सरण—१३
 सरणा—३११
 सारलि—१४४
 सरधंशु—६४३
 सरवर—२०८
 सारस—११, ६६३
 सारसती—४
 सारसुती—१
 मरस्यती—६२८

सरिस—१०२, २६५, २६४, ४२५,
४६३, ४७०, ५३६, ५६१

सरिसो—४६५

सरोर—५४, ५०८, ६८५

सरोरह—६८४

सरोरह—२३६, ३४६

सर—१, ५२०

सख्य—३८, ३६, ४२, १३६, २२७,
२३८, ४२८, ६१४

सख्यु—१३४

सखे—२८१, ३२०

सखोवर—२०४

सखोवरह—३, २०५

सख—६४, २१३, ५५६

सखकिउ—५०६

सखहण—६३६, ६६१

सखहिउ—२३०

सखि—२१६

सख—५७६, ६३८, ६४३, ६४६

सखई—३६७, ४१५

सखइ—६११

सखतिसाच—६१

सखतिसाचु—५८६

सखद—५६६

सखनि—३७५

सखनु—४८७

सखल—१७५, ४५१, ५०२, ६४३

सखसिद्धि—१६४

सखारि—५६८

सख्य—४२२

सखह—४६१

सखु—२, १३५, १३७, १३८, १८३,
१६२, २७६, ३००, ३८७,

३८८, ३८९, ३९०, ३९१,
४४४, ४६२, ४६८

सखुव—५८०

सखु—५८४

सखिसु—१३६

सखि—१७, ४२, ७३, १०६, २६३

सखिगलह—८२

सखिभाइ—३०, ६१५

सखिहर—६१२

सखइ—५३७, ६८६

सखण—५२६

सखवेउ—४५६

सखणो—४७०, ४६७

सखन—८३

सखनाण—१३३

सखनाणु—५०

सखस—६०५

सखाइ—५३७

सखाउ—११०, २६८

सखारइ—५२७

सखारउ—१४१

सखारि—३३, ३३१, ३४०, ४६६,
५३२

सखि—३१६

सखिउ—१२

सखिनाण—३१८, ३६७

सखिनाणु—४१५

सखिणो—४६३

सखिणो—६१, १०५

सखोण—४८६

सखु—११०, २१०, ३४०, ५१६,
५६०

सखेट—४६, ५७, ६४१

सखोवर—५१

सहोदरि—४४
 सहोदर—२१
 सहोदर—१६६, २२०
 सहोदरि—६४०
 सहोदर—५६५, ६०३
 सहो—१३१
 सहपत्र—५१५
 सागात्पा—६४६
 साचउ—३७०, ४२१,
 साज—४०६
 साजइ—४७६
 साजहुइ—४७५
 साजि—४७६, ४७७, ४७६, ४०६
 साजिउ—५०, १७३
 साजियउ—५६
 साजहि—१७५
 साजहु—६६, ४७५
 साजे—२५६
 साजुह—४७५
 साजे—४७६
 साण—२०७
 सात—५१, ६२
 सातउ—६४
 सांति—३२
 साय—०४, २६६, ५०२, ५३०,
 ६४६
 सायि—५१३
 सायु—६६६
 सायु—५५७
 सायिउ—५१०, ५२७
 सायु—३०४
 साय—३२४
 साभइ—६२६

साभकुमार—६३६
 सामकुम्वार—६४६
 सामहण—२७६, ५७७
 सामहराज—६६५
 सामि—१२, १५०
 सामिउ—२१, ४६१
 सामिकुमार—६७३
 सामिणि—१०६, ४२०
 मामी—१६६, २६४, ३५३, ४०७,
 ६६४
 सामुहे—५६१
 सायर—१६, १५२, ४७५
 सायरह—३७४
 सार—६०, ६४, १२०, १५६, ३१२,
 ३६७, ३७५, ४००, ४३५,
 ५०५, ६२०, ६३६, ६४५
 सारंगपालि—२६, ५१७
 सारंगपालि—६३
 सारंगमणि—७७
 सारवि—५०, ५६, ४०५, ५०७,
 ५०६
 सारथी—४०६
 सारद—१, २, ३
 सारिउ—१५५
 सारी—६५
 सार—५, ११, ३६, १३४, १३६,
 ३४५, ३७०, ३००, ४४०,
 ४७१, ६०३, ६०४, ७००
 सावयलोय—६६६
 सासउ—६७१
 सासण—५
 सायु—१२

साहस—२१
 साहस—१६२, १६८, २०८, २५६,
 २६७, २७३, ३४६, ४२७,
 ४५८, ५६८, ५४६, ५५६,
 सिञ्ज—४६०, ५४६, ५४८, ६३७
 सिलस—२१७
 सिगली—३७३
 सिगिरि—४८२, ५५६
 सिन्धु—४१०
 सिधि—६६६
 सिद्धि—२३१
 सिगा—६४४
 सिगार—३०
 सिगाव—३५०
 सिध—१३८, १६५, १८१, १८२,
 ३१७, ४४८, ४५१
 सिधरह—१६४, १६८, १७४, १८३
 सिधासण—२६, ५६६
 सिधासणु—२०३, ३६६, ५६२
 सिधुव—३४६
 सिधु—१६६
 सिंह—१७४, ४५०, ४६०
 सिधासु—४८४
 सिर—२३, ३३३, २५०, २५६,
 २७२, २८६, ३६३, ३७८,
 ३८२, ४१६, ४२१, ४२६,
 ४२६, ५६०, ५६०, ५७०,
 ५८२, ५८३, ६५६
 सिरि—३४५
 सिस—२५८
 सिता—३५, १२५, १२५, १२६,
 १३१, १३२, १५५, २३०,
 २४४, २५६
 सिध—१८३

सिहवार—५७६
 सिद्ध—११२, ११६, १६४, १६५,
 २१०, २४५, ३२०, ४१४,
 ५८८, ५८६
 सीञ्ज—१६०
 सीस्यञ्ज—४५३, ५२२
 सीसङ्ग—६५३, ६६२
 सीतल—६
 सीङ्गार—३७५
 सीपञ्ज—४१६
 सीपा—२७५
 सीतम्बन्त—६१४
 सीस—१, ६२
 सीसु—८२, ६४३
 सीहङ्गार—४४२, ५६१
 सीहङ्गार—४३५,
 सीहवारि—६३७
 सीहिलि—१६६
 सीहु—१६६
 सुसङ्ग—२०
 सुसङ्गे—३५८
 सुङ्ग—५८८
 सुङ्गन—७१
 सुङ्गी—३६५, ४०१
 सुत—६१, १११
 सुतह—६८२
 सुसासण—१००
 सुसु—६२६
 सुसण—४८६
 सुसणु—४८६
 सुसणु—१८३
 सुसणु—३१६

सुजन—५७३
 सूजाणु—५०
 सुभद्र—७१
 सुहु—१२
 सुफार—८७
 सुष्यज—४१७
 सुणइ—३८४, ६६३,
 सुणहु—२७१
 सुणि—२६५, ४५८, ६६४
 सुणित—१३७, २६५, ६६४
 सुणिव—६६४
 सुणे—४२६
 सुणेइ—६७६
 सुणो—६२३
 सुण्यो—३७६
 सुतारि—५५
 सुवसणु—१४, २७४
 सुदिन—४२६
 सुधणु—६६५
 सुधाकारणी—१६३
 सुधि—६८, १४४, १४८, १५७,
 १६६
 सुन्दरि—३२, ४१, ३१२, ४२१
 सुनोर—३६८
 सुपनला—२७५
 सुपवित्त—१२
 सुपामु—८
 सुरिनतह—६७६
 सुपियार—६१५
 सुपियाह—१३६, ७७३
 सुभ—१६३
 सुभइया—४५६
 सुभ हरिणी—१६३
 सुभान—६२०

सुभानकुबर—६२१
 सुभाकु—६१४, ६७३
 सुभासुकुवह—६१६
 सुभु—५०७
 सुमति—८
 सुमिरी—४१८, ४८८, ६३५
 सुयण—५६१
 सुर—१८३, २०५, २३०, ५३८,
 ५६५, ५६६, ६००, ६०३,
 ६१३, ६६६, ६६८, ६६३,
 ६६६
 सुरा—१४६
 सुरंगिनि—५४१
 सुरजनुहु—२७८
 सुरवेज—२१६
 सुरतारि—५०
 सुरवणि—५५२
 सुरभवण—६७७
 सुरयणु—६६१
 सुररिदु—६६४
 सुरसोइ—२३२
 सुरसुंदरि—४१, ४३, ४५, ४८
 सुरिदु—६६१
 सुरेस्वर—६६२
 सुवंद—५१६
 सुवरीयज—२७८
 सुवाता—६६३
 सुविचार—१८
 सुविमु—६
 सुमवानु—४५
 सुरह—२६४
 सुरह—७०, १७५, १७६, ४७५,
 ५४३, ५५६, ५५८, ६७८
 सुहनि—४८०

सुहृन्नु—४८६
 सुहृत्—४७७, ४६८
 सुहृण—४८७, ४६६
 सुहृदंसल—२७४
 सुहृनालो—२२७
 सुहृल—५३६
 सुहाइ—३२६
 सुहिनास—२७१
 सुके—१६१
 सुम्ह—२३, ६८, १७३, ५०३, ६०२
 सुण्ड—५१४, ५६६
 सुव—२०
 सुवरे—१४३
 सुविर—६५७
 सुवृ—१६८
 सुवृती—६४३
 सुवर—२१६
 सुवा—८७
 सुहो—१२०
 सुहृत्—३५७
 सुसल—२३४
 सुसि—२७१, २७२
 सुसो—२७२
 सुस—४, १०३
 सुसो—६४५
 सुसो—५०१
 सुसोचरि—२६०
 सुसोचरी—२०५
 सुसुत—८
 सुसुवृ—२२१
 सुसु—४७६
 सुसु—२८, ६२, २११, ४४५, ५८८,
 ६१३, ६६६

सुसुवा—२१५
 सुसुस—५०६
 सुसुपात—४४, ६६, ७१, ७४, ७५,
 ७६, ७७, ७६, ८३, ६२७
 सुसुसे—११६
 सुसुस—८०
 सुसुस—२८८, ५५७
 सुसुना—५०३
 सुसुड—३५, ३८, ४२, ४३, ४७,
 १०५, १०७, ११२, ११४,
 ११८, १२४, १३१, १७०,
 १८८, १९०, १९६, १९६,
 २१३, २१५, २१८, २२५,
 २३५, २४०, २५०, २५२,
 २३५, २३८, २४६, २६४,
 ४०६, ४१५, ४२५, ४३१,
 ४६७, ५३५, ५६६, ५६८,
 ६०४, ६०६, ६२५
 सुसुड—१०७, ५२१
 सुसुसु—२७०
 सुसुसुसो—१६३, ३६५
 सुसुसुत—२७२
 सुसुसुतो—३०१
 सुसुसुवो—२६६
 सुसुसुसु—५५५
 सुसुसुसु—५६३
 सुसुसुसु—१४, १४६, २४०, ५६६
 सुसुसुसु—८०, १६१, २२६, २३१,
 २३३
 सुसुसुसु—६
 सुसुसुसु—१८३, १८६, १६२, ५४८
 सुसुसुसु—६३२
 सुसुसुसु—१०८

सोहद—४२, ५२, १०३, २३४,
३१६, ६०८

सोहउ—६८७

सोहि—३०३

सोहिहि—१७, ४६७, ४६७

स्तुति—६६८

स्मरि—४६१, ४६३

स्यंघराउ—१८४

स्यंघरय—५४७

स्यंघराउ—१८४

स्वर्ग—६८६, ६६७

स्वर्ग—५६४

स्वाति—१२

स्वामि—६३५

स्वामो—४, ६५, ११८, १४७, १४८
५६५, ५६७, ६२३

स्याउ—५०५

स्याली—३४

ह

हइ—८७, ६३, २२५, ३२७, ४०६,
४४६, ४७१, ४८०, ५६३

हइवर—७६१

हुउ—१५४, १२८, १६६, २६३,
२७३, ३००, ३२८, ३७०,
३८०, ४१७, ४६४, ४७३,
५३६, ६००, ६२३, ६६७,
६७८, ६८०, ७०१

हकराउ—३७६

हकारउ—३७६

हकारि—५८, ११६, १२०, २५३,
३४०, ४७५, १०७, ६१६

हउइ—५०६

हउई—५३२

हउह—२७५

हउि—१५४, २६७, ४१३, ४१४

हउिलइ—६७

हउी—५०८, ५१२

हउे—५७६

हउइ—५१

हउउ—६२

हउवंत—३५३

हउो—६४७

हउय—२०६

हउति—१२४

हउलेवो—८८

हउलेवउ—५८५, ६५६

हउियार—३५४

हउियार—४६७, ४७१, ४७६

हउंत—३

हउंतगमिलि—४२

हउम—४१०, ४११, ४२५, ४३७

हउमइ—६५०

हउमारउ—१८५, ३०६

हउमारी—११३, ३०८

हउमारे—२८६

हउमि—२७, १४३, १४४, ३८४,
४४२, ६४१, ६४२

हउम्बु—२४८

हउप—४८२, ५०४, ५२६, ५२६,
५३२, ५५६, ६४५

हउप—५४, २३६

हउपवर—५००

हउया—२७१, २७२

हउर—१२७, ४५८, ६६३

हउइ—६

हरज—१४२
 हरण—७
 हरण्यो—१८६
 हरसिउ—३२०
 हरि—३६, ६६, ११६, १४३, १६२,
 ३४४, ४५८, ४८०, ५०६,
 ५१६, ५४७, ६५०, ६७३
 हरिउ—१२७
 हरिदेउ—१०७, ५१३
 हरिनंबला—३०३
 हरिनंबनु—३०२
 हरिराउ—२३, ६०, ७६, ४६३,
 ४६४, ५६०, ५७३
 हरिलइ—७६,
 हरिलयउ—१४७
 हरिवंसइ—१२
 हरिव्यो—२८८
 हरिसय—१६६
 हरी—१२१, ४७२, ६७८, ६८२
 हरीसइ—६६
 हव—३१४
 हरे—६५५
 हरेइ—६
 हल—४६७
 हसउ—६४
 हलहर—४५, ११६, ३३४, ४४५,
 ४३६, ४४१, ४४७, ४५२,
 ४६१, ४७२, ४६७, ६६१,
 हलहर—५६, ८६, १४३, ४४६
 हलहर—५६, १४३, ४४६
 हलहल—६६५, ६७१, ६७२
 हलहलु—६४, ४४८

हलावभु—७८
 हलित—४७४
 हलितउ—४७४
 हली—३५१
 हलु—४५०
 हलुवइ—६६७
 हवइ—४२१
 हसइ—१०७
 हसाइ—३७३
 हसि—६५, ६७, १००, १४६, ४४४,
 ५१२, ५१५, ५४६, ६२२,
 ६५१, ६५२,
 हसिउ—५५१
 हस्तो—१६१
 हहउ—३६
 हहि—२२८
 हहु—३८०
 हाइ—१०६
 हाक—४८२, ५०६, ५२७, ५३७
 हाकइ—४६१
 हाकि—७८, १६०, १६६, २६१
 हाकी—४६५
 हाट—६४४
 हाडी—३८८
 हाप—६, ०५, ३१, ५२, ६२, ११७,
 १०५, १३१, १४६, १४८,
 १५५, १७२, १६६, २०२,
 २०६, २२२, २३४, २८०,
 २६६, ३०६, ३४३, ३७७,
 ४१५, ४००, ४६६, ४६७,
 ५०६, ५२०, ५३१, ५३३,
 ५३५, ५४०, ६४४, ६४६,
 ६४८, ६७३

हायह—२११, २३५
 हायि—७७, ८२, २१३, २४६
 हायु—३८७
 हार—६०३
 हारइ—११२, ११३
 हारसु—६०४
 हारि—२६२, ६१६
 हारिउ—१८२, ५१५
 हारी—४१६
 हाक—२३४, ५६६, ६००, ६०१,
 ६०४, ६०६, ६०६, ६१०
 हारं—६१७
 हालइ—५०६
 हासउ—३७३
 हासो—२६१, ३३२, ४२२
 हाहाकाह—५०१
 हिस—३२४
 हिय—१४०
 हिय अलोक—१६३
 हियइ—१६६
 हियह—६०१
 हियउ—१४१, २६५, ३४०, ४२६,
 ६२६, ६७८
 हिवस—५१६
 हीएह—४०६
 हीण—१७८, ७०१
 हीणु—६३४
 हीणउ—२४६, ५५१, ६३०
 हीपरा—१६०
 हइ—११, १२४, १७१, १७३, २००
 ४२२, ५३३, ६४४

हुतासण—२५३
 हुतो—३५०
 हुते—६३६
 हुतो—२६६
 हरि—८५
 हुथो—१३५
 हेम—२६०, ३०१, ६२६, ६५६
 हैवर—१८०, ४७५, ४६२
 होइ—१, ६, ७, ३५, ४०, ४३,
 ४८, १०४, १०७, १०६,
 ११२, ११४, ११७, १३१,
 १६८, १७६, १८३, १८६,
 १६०, १६२, १६६, २०२,
 २१५, २२५, २३२, २३५,
 २४०, २४३, २४८, २५०,
 २६७, २७८, ३१०, ३३५,
 ३३८, ३३६, ३६४, ३६५,
 ३८३, ३६१, ४०६, ४१५,
 ४२७, ४४४, ४६४, ४७८,
 ४८१, ५०५, ५११, ५१३,
 ५१४, ५३५, ५३६, ५५३,
 ५५५, ५८६, ६०४, ६०७,
 ६३३, ६७०, ६७५, ६८४,
 ६६७, ६६६
 होइहि—१६२
 होउ—१३, ५७३
 होण—५६८
 होहि—७४

१५१	१७	दुःख	दुःख
१५१	१८	दुःख	दुःख
१५२	६	नेत्रों	नेत्रों
१५३	८	सहेलयो	सहेलियों
१५४	१	पहिल	पहिले
१५४	६	के	का
१५४	२३	प्रद्यम्न	प्रद्युम्न
१७०	२३	विधाओं	विधाओं
१८५	१६	रूप धारण वनाकर	रूप धारण कर
१९२	२०	के	से
१९२	२०	समा	सभा
२१४	५	रूपचन्द	रूपचन्द
२१४	८	बहुरूपिणी	बहुरूपिणी
२१४	२४	रूपचन्द	रूपचन्द
२१५	७	"	"
२१५	१६	"	"
२१५	१६	"	"
२२०	२३	अभ्यपतये	अभ्यंतर

